लेखाशास्त्र

साझेदारी खाते

कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक

12120

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

12120 – लेखाशास्त्र
कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-727-2

प्रथम संस्करण
अप्रैल 2007 चैत्र 1929
पुनर्मुद्रण
नवंबर 2007, दिसंबर 2008,
जनवरी 2010, जनवरी 2011,
मार्च 2013, मार्च 2019,
नवंबर 2019 और अप्रैल 2021 (NTR)
संशोधित संस्करण
अक्तूबर 2022 कार्तिक 1944
पुनर्मुद्रण
मार्च 2024 चैत्र 1946
दिसंबर 2024 अग्रहायण 1946

PD 22T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007, 2022

₹ 135.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. कॉम्प्लेक्स, ओखला, इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम.वी. श्रीनिवासन*
मुख्य संपादक : *बिज्ञान सुतार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी): *जहान लाल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *अमिताभ कुमार*
संपादक : *बिज्ञान सुतार*
उत्पादन अधिकारी : *दीपक कुमार*

आवरण
श्वेता राव

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितनी वार्षिक केलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षा और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती हैं। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन सी ई आर टी इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इस पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर आर. के. ग्रोवर की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान दिया, इस

© NCERT not to be republished

योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन सी ई आर टी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन

कोविड–19 महामारी को देखते हुए, विद्यार्थियों के ऊपर से पाठ्य सामग्री का बोझ कम करना अनिवार्य है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020* में भी विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री का बोझ कम करने और रचनात्मक नज़रिए से अनुभवात्मक अधिगम के अवसर प्रदान करने पर ज़ोर दिया गया है। इस पृष्ठभूमि में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सभी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित करने की शुरुआत की है। इस प्रक्रिया में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पहले से ही विकसित कक्षावार सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखा गया है।

पाठ्य सामग्रियों के पुनर्संयोजन में निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है —

- एक ही कक्षा में अलग–अलग विषयों के अंतर्गत समान पाठ्य सामग्री का होना;
- एक कक्षा के किसी विषय में उससे निचली कक्षा या ऊपर की कक्षा में समान पाठ्य सामग्री का होना;
- कठिनाई स्तर;
- विद्यार्थियों के लिए सहज रूप से सुलभ पाठ्य सामग्री का होना, जिसे शिक्षकों के अधिक हस्तक्षेप के बिना, वे खुद से या सहपाठियों के साथ पारस्परिक रूप से सीख सकते हों;
- वर्तमान संदर्भ में अप्रासंगिक सामग्री का होना।

वर्तमान संस्करण, ऊपर दिए गए परिवर्तनों को शामिल करते हुए तैयार किया गया पुनर्संयोजित संस्करण है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्‌द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

आर. के. ग्रोवर, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), स्कूल आफ़ मैनेजमेंट स्टडीज़, इग्नू, नयी दिल्ली।

सदस्य

एच.वी. झांब, *रीडर,* खालसा कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
एन. के. ककड़, *निदेशक,* महाराजा अग्रसेन इंस्टीट्यूट आफ़ मेनेजमेंट, रोहणी, नयी दिल्ली
एस.एस. सहरावत, *सहायक आयुक्त,* केंद्रीय विद्यालय संगठन, चंडीगढ़
एस.सी.हुसैन, *प्रो.फ़ेसर,* वाणिज्य विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली
ओबल रेड्डी, *प्रो.फ़ेसर,* वाणिज्य विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश
डी. के. वेद, *प्रो.फ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी नयी दिल्ली
दीपक सहगल, *रीडर,* दीन दयाल उपाध्याय कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
राजेश बंसल, *पीजीटी वाणिज्य,* रोहतगी ए.वी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नयी सड़क, दिल्ली
वनिता त्रिपाठी, *लेक्चरर,* वाणिज्य विभाग, दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकॉनोमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सविता शंगारी, *पीजीटी वाणिज्य,* ज्ञान भारती स्कूल, साकेत, नयी दिल्ली
सुधीर सपरा, *पीजीटी वाणिज्य,* केंद्रीय विद्यालय, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश

हिन्दी अनुवाद

अमर सिंह सचान, *अनुवादक,* आर. के. पुरम, नयी दिल्ली
राजेश बंसल, *पीजीटी वाणिज्य,* रोहतगी ए.वी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नयी सड़क, दिल्ली

सदस्य-समन्वयक

शिप्रा वैद्या, *प्रोफ़ेसर* (वाणिज्य), सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, इस पुस्तक के निर्माण एवं पुनरीक्षण में सहयोग देने हेतु पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति का आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, सविता सिन्हा, *प्रोफ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष* (सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग) के प्रति भी अपनी कृतज्ञता अर्पित करती है, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक को पूर्ण रूप देने में अपना अमूल्य योगदान दिया। हम उन सभी वाणिज्य शिक्षकों के भी आभारी हैं, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक की क्यू. आर. कोड की अतिरिक्त पाठ्य सामग्री तैयार करने में अपना योगदान दिया है।

परिषद्, इस संस्करण के पुनर्संयोजन के लिए पाठ्यक्रमों, पाठ्यपुस्तकों एवं विषय सामग्री के विश्लेषण हेतु दिए गए महत्वपूर्ण सहयोग के लिए सविता शांगरी, *पी.जी.टी* (सेवानिवृत्त), साकेत, नयी दिल्ली; सीमा श्रीवास्तव, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, डाइट, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली; संदीप सेठी, *पी.जी.टी.*, एस.वी. पब्लिक स्कूल, जयपुर; गुरमीत सिंह ग्रेवाल, *सी.ए.* एवं *एकेडमिक*, वसंत कुंज, नयी दिल्ली; सुंदर सिंह सहरावत, *डी.सी.* (सेवानिवृत्त), सक्षम अपार्टमेंट्स, सेक्टर 10, द्वारका, नयी दिल्ली; और शिप्रा वैद्य *प्रोफ़ेसर*, वाणिज्य, डी.ई.एस.एस., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली के प्रति आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, मुसर्रत परवीन, कॉपी एडीटर; अनिल शर्मा, प्रूफ रीडर के सहयोग हेतु अपना हार्दिक आभार ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक को पूर्ण रूप देने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी संदर्भ में प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. का सहयोग भी उल्लेखनीय है।

© NCERT not to be republished

विषय-सूची

आमुख *iii*

पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन *v*

अध्याय 1 साझेदारी लेखांकन – आधारभूत अवधारणाएँ **1**

1.1 साझेदारी की प्रकृति 2
1.2 साझेदारी विलेख 3
1.3 साझेदारी खातों के विशिष्ट पहलू 5
1.4 साझेदारों के पूँजी खातों का अनुरक्षण 5
1.5 साझेदारों के बीच लाभ का विभाजन 9
1.6 एक साझेदार को लाभ की गारंटी 27
1.7 पूर्व समायोजन 33

अध्याय 2 साझेदारी फर्म का पुनर्गठन: साझेदार का प्रवेश **49**

2.1 साझेदारी फर्म के पुनर्गठन के प्रकार 49
2.2 साझेदार का प्रवेश 50
2.3 नया लाभ विभाजन अनुपात 51
2.4 त्याग अनुपात 54
2.5 ख्याति 57
2.6 संचित लाभों और हानियों का समायोजन 78
2.7 परिसंपत्तियों का पुनर्मूल्यांकन और दायित्वों का पुनर्निर्धारण 79
2.8 पूँजी का समायोजन 85
2.9 वर्तमान साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन 97

अध्याय 3 साझेदारी फर्म का पुनर्गठन – साझेदार की सेवानिवृत्ति/मृत्यु **110**

3.1 सेवानिवृत्त/मृत्त साझेदार को देय राशि का निर्धारण 110
3.2 नया लाभ विभाजन अनुपात 111
3.3 अभिलाभ अनुपात 112
3.4 ख्याति का व्यवहार 117

© NCERT not to be republished

3.5 परिसंपत्तियों तथा दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन के लिए समायोजन 123
3.6 संचित लाभों तथा हानियों का समायोजन 126
3.7 सेवानिवृत्त साझेदार को देय राशि का निपटारा 129
3.8 साझेदारों की पूँजी का समायोजन 138
3.9 साझेदार की मृत्यु 145

अध्याय 4 साझेदारी फर्म का विघटन **163**
4.1 साझेदारी का विघटन 163
4.2 फर्म का विघटन 164
4.3 खातों का निपटारा 165
4.4 लेखांकन व्यवहार 167

© NCERT not to be republished

12120CH02

साझेदारी लेखांकन — आधारभूत अवधारणाएँ

1

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के उपरांत आप :

- *साझेदारी को पारिभाषित कर सकेंगे तथा उसकी अनिवार्य विशिष्टताएँ सूचीबद्ध कर सकेंगे;*
- *साझेदारी विलेख का अर्थ समझ सकेंगे तथा इसकी विषय वस्तु का उल्लेख कर सकेंगे;*
- *भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के उन प्रासंगिक प्रावधानों को पहचान सकेंगे; जो लेखांकन प्रक्रिया के लिए उपयुक्त हैं;*
- *स्थिर एवं अस्थिर पूँजीपद्धति के अंतर्गत साझेदारों के पूँजी खाते तैयार कर सकेंगे;*
- *साझेदारों में लाभ हानि विभाजित कर सकेंगे और लाभ–हानि विनियोजन खाता तैयार कर सकेंगे;*
- *पूँजी तथा आहरणों पर विभिन्न स्थितियों के अंतर्गत ब्याज परिकलन कर सकेंगे;*
- *साझेदारों को प्रदत्त न्यूनतम लाभ–राशि की गारंटी से संबंधित लेखा व्यवहारों को समझ सकेंगे;*
- *साझेदारों के खातों में पूर्व त्रुटियों के संशोधनों हेतु आवश्यक समायोजन कर सकेंगे;*
- *एक साझेदारी फर्म के अंतिम खातों को तैयार कर सकेंगे।*

अभी तक आपने एकल स्वामित्व के वित्तीय विवरणों के बारे में सीखा है। अतः जब व्यवसाय विस्तारित होता है तब व्यवसाय की देखभाल तथा उसके जोखिमों को उठाने के लिए अधिक पूँजी एवं अधिक मानव संसाधनों की आवश्यकता होती है। ऐसी परिस्थितियों में व्यवसायी लोग साझेदारी को अपनाकर संगठन की रचना करते हैं। साझेदारी फर्म के लिए लेखांकन की कुछ अपनी विशिष्टताएँ होती हैं। उदाहरण के लिए, एक साझेदारी फर्म तब अस्तित्व में आती है जब कम से कम दो व्यक्ति एक साथ मिलकर व्यवसाय को प्रारंभ करने पर सहमत होते हैं और लाभ का विभाजन करते हैं। उत्तरदायित्व निभाने के साथ–साथ प्राप्त होने वाले लाभों को साझेदारों द्वारा वहन किया जाता है। साझेदारों के बीच बहुत सारे मुद्दों पर, संभवतः कोई विशिष्ट अनुबंध नहीं हो सकता; ऐसी स्थितियों में भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 लागू होता है। ठीक इसी प्रकार से, इसमें बहुत सारे लेन–देन होते हैं जैसे कि पूँजी पर ब्याज, आहरणों पर ब्याज, तथा साझेदार के पूँजी खाते का अनुरक्षण व उसकी विशिष्टताएँ। साझेदार की मृत्यु या जब किसी नए साझेदार को फर्म में शामिल करना है; तब ऐसी विशिष्ट परिस्थितियों में लेखांकन में विशेष प्रतिपादन की आवश्यकता पड़ जाती है। इसलिए ऐसी परिस्थितियों में लेखांकन में विशिष्ट निरूपणों की ज़रूरत पड़ती है जिन्हें स्पष्ट करने की आवश्यकता होती है।

यह अध्याय साझेदारी लेखांकन के आधारभूत पहलुओं की व्याख्या प्रस्तुत करता है, जैसे कि लाभ का विभाजन, पूँजी खाते का अनुरक्षण आदि। इसमें साझेदार की प्रविष्टि, अवकाश ग्रहण, मृत्यु तथा फर्म के विघटन जैसी परिस्थितियों के निष्पादन को अनुवर्ती अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है।

© NCERT not to be republished

1.1 साझेदारी की प्रकृति

जब दो या दो से अधिक व्यक्ति एक व्यवसाय स्थापित करने और उसके लाभों एवं हानियों की भागीदारी के लिए सहमत होते हैं तो वे साझेदारी या भागीदारी में माने जाते हैं। साझेदारी के बारे में, भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के अनुभाग 4 में बताया गया है कि *''साझेदारी उन व्यक्तियों के बीच एक संबंध है जो एक ऐसे व्यवसाय के लाभ को बाँटने के लिए सहमत है जिसका संचालन उन सबके द्वारा या उनमें से किसी एक के द्वारा किया जाता है।''*

जब एक व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ व्यक्तिगत रूप से साझेदारी में सम्मिलित होता है तो उसे 'साझेदार' कहते हैं और एक साथ मिलकर 'फर्म' कहलाते हैं। जिस नाम के अंतर्गत व्यवसाय संचालित होता है उसे 'फर्म का नाम' कहते हैं। एक साझेदारी फर्म में साझेदारों द्वारा इसे संस्थापित करने के अलावा अन्य कोई सत्ता नहीं होती है। अतः साझेदारी की अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण विशिष्टताएँ हैं:

1. *दो या दो से अधिक व्यक्ति* – साझेदारी गठन में एक समान लक्ष्य के साथ कम से कम दो व्यक्तियों को साथ आना चाहिए। दूसरे शब्दों में एक फर्म के गठन में कम से कम दो साझेदार हो सकते हैं। हालाँकि यहाँ पर एक फर्म का गठन करने के लिए व्यक्तियों की अधिकतम संख्या की एक सीमा है।
2. *अनुबंध या समझौता* – साझेदारी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच अनुबंध या समझौते का ही परिणाम होती है जो व्यवसाय चलाते व लाभ-हानि बाँटते हैं। अतः व्यवसाय चलाने तथा आपसी संबंधों के लिए समझौता (अनुबंध) साझेदारों के बीच एक आधार होता है। यह आवश्यक नहीं है कि साझेदारों के बीच समझौता लिखित रूप में हो। एक मौखिक समझौता भी वैध है लेकिन किसी भी विवाद से बचने के लिए, यह प्राथमिकता दी जाती है कि साझेदार एक लिखित समझौता करें।
3. *व्यवसाय* – समझौता किसी व्यवसाय को चलाने के लिए किया जाना चाहिए। किसी परिसंपत्ति मात्र के सह-स्वामित्व से स्वतः साझेदारी का गठन नहीं हो जाता है। उदाहरण के लिए, यदि रोहित एवं सचिन संयुक्त रूप से एक भू-भाग खरीदते हैं तो वे उस परिसंपत्ति के संयुक्त रूप से प्लाट्स के मालिक हैं, साझेदार नहीं। लेकिन यदि वे यह कार्य लाभ कमाने के लिए करते हैं और लाभ के लिए ज़मीन को खरीदते व बेचते हैं तो उन्हें साझेदार कहा जाएगा।
4. *पारस्परिक अभिकरण* – साझेदारी का एक व्यवसाय सभी साझेदारों द्वारा या फिर उनमें से किसी एक द्वारा चलाया जा सकता है। इस कथन के दो महत्वपूर्ण आशय होते हैं। पहला, व्यवसाय चलाने के लिए प्रत्येक साझेदार अधिकृत है। दूसरे, सभी साझेदारों के बीच आपस में एक पारस्परिक एजेंसी का संबंध विद्यमान है। प्रत्येक साझेदार व्यवसाय चलाने के लिए प्रमुख होने के साथ-साथ दूसरे साझेदारों के लिए एक अभिकर्त्ता भी है। वह अपने काम के द्वारा दूसरों को फर्म के व्यवसाय के हित में आबद्ध कर सकता है तथा दूसरों के कामों से उनके साथ संबद्ध हो सकता है। पारस्परिक अभिकरण का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यदि पारस्परिक अभिकरण (एजेंसी) के तत्त्व का अभाव है तो कोई कह सकता है कि यहाँ तथाकथित साझेदारी नहीं है।

© NCERT not to be republished

5. *लाभ का विभाजन* – साझेदारी या भागीदारी का एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व यह है कि साझेदारों के बीच समझौता निश्चित रूप से व्यवसाय के लाभों एवं हानियों को बाँटने के लिए होना चाहिए। यद्यपि साझेदारी अधिनियम के अंतर्गत परिभाषा के विवरण में साझेदारी को उन लोगों के बीच संबंध के रूप में बताया गया है जो व्यवसाय के लाभों को बाँटने के लिए सहमत होते हैं, जिसमें हानि भी नकारात्मक लाभ के रूप में लागू होती है। अतः लाभों की भागीदारी के साथ-साथ हानियों की भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। हालाँकि, यदि कुछ लोग धमार्थ कार्य-कलापों के लिए किसी प्रकार का समझौता करते हैं तो इसे साझेदारी नहीं कहा जाएगा।
6. *साझेदारी के उत्तरदायित्व* – प्रत्येक साझेदार संयुक्त रूप से दूसरे साझेदारों के साथ तथा स्वतंत्र रूप से भी, फर्म के सभी कार्यों के लिए उत्तरदायी होता है, जब तक कि वह एक साझेदार है। केवल यही नहीं, एक साझेदार के एक फर्म के लिए असीमित उत्तरदायित्व होते हैं। अतः फर्म के कामों के लिए एक साझेदार की जिम्मेदारी संयुक्त रूप से संबद्ध होती हैं तथा उसकी परिसंपतियाँ भी फर्म के ऋण चुकाने हेतु आबद्ध होती हैं।

1.2 साझेदारी विलेख

साझेदारी का अस्तित्व साझेदारों के बीच समझौते के परिणामस्वरूप आता है। यह समझौता लिखित या मौखिक हो सकता है। यद्यपि साझेदारी अधिनियम के अनुसार समझौता निश्चित रूप से लिखित होना अपेक्षित नहीं होता। तथापि जब भी यह लिखित में हो; जिस अभिलेख में साझेदारों के बीच समझौते के विवरण समाहित हों तो, ऐसे अभिलेख को साझेदारी विलेख कहते हैं। सामान्य तौर पर, साझेदारों के बीच संबंधों को प्रभावित करने वाले सभी पहलुओं की सूचना समाहित होती है; जिसमें व्यवसाय के उद्देश्य, प्रत्येक साझेदार द्वारा पूँजी निवेश की मात्रा, साझेदारों द्वारा लाभों एवं हानियों की भागीदारी का अनुपात तथा पूँजी पर ब्याज तथा ऋणों पर ब्याज आदि की साझेदारों की हकदारी की बातें सम्मिलित होती हैं।

साझेदारी विलेख की शर्तों को सभी साझेदारों की सहमति से बदला जा सकता है। विलेख को स्टांप अधिनियम (स्टैंप एक्ट) के प्रावधान के अनुसार उचित प्रकार से प्रारूपित एवं तैयार किया जाना चाहिए और अधिमानतः रजिस्ट्रार के साथ पंजीकृत कराया जाना चाहिए।

साझेदारी विलेख की विषय-वस्तु

साझेदारी विलेख में सामान्यतः निम्नलिखित विवरण होते हैं:
- फर्म का नाम एवं पता तथा उसका मुख्य व्यवसाय;
- सभी साझेदारों के नाम व पते;
- प्रत्येक साझेदार द्वारा लगाई गई पूँजी की राशि;
- फर्म की लेखांकन अवधि;
- साझेदारी प्रारंभ करने की तिथि;
- बैंक खातों का संचालन करने के बारे में नियम;
- लाभ एवं हानि के विभाजन का अनुपात;

© NCERT not to be republished

- पूँजी, ऋणों एवं आहरणों आदि पर ब्याज की दर;
- अंकेक्षक की नियुक्ति का तरीका, यदि कोई हो;
- वेतन, कमीशन आदि, यदि किसी साझेदार को देय हो;
- प्रत्येक साझेदार के अधिकार, कर्त्तव्य तथा उत्तरदायित्व;
- एक या अधिक साझेदारों के दिवालिएपन के कारण पैदा होने वाली हानि का निष्पादन;
- फर्म के विघटन पर खातों का निपटारा;
- साझेदारों के बीच होने वाले आपसी विवादों का निपटान;
- एक साझेदार का प्रवेश, सेवानिवृत्ति तथा मृत्यु की स्थिति में अनुपालित किए जाने वाले नियम; तथा
- व्यवसाय संचालन से संबंधित कोई भी अन्य मसला।

  सामान्यत:, एक साझेदारी विलेख के अंतर्गत वे सभी मसले समाहित होते हैं जो साझेदारों के बीच संबंधों को प्रभावित करते हैं। हालाँकि यदि कुछ विशिष्ट मुद्दों पर विलेख में अभिव्यक्ति नहीं हुई है तो ऐसी स्थिति में भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के प्रावधान लागू होंगे।

1.2.1 लेखांकन हेतु अनुकूल प्रावधान

साझेदारी खातों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण प्रावधान निम्नवत हैं:

(अ) *लाभ व हानि विभाजन अनुपात* – यदि समझौता विलेख लाभ विभाजन अनुपात पर अस्पष्ट या मौन है तब फर्म के लाभ व हानि को सभी साझेदारों द्वारा बराबर विभाजित किया जाता है, चाहे फर्म में उनके द्वारा लगाई गई पूँजी की भागीदारी कुछ भी हो।

(ब) *पूँजी पर ब्याज* – फर्म में लगाई गई पूँजी राशि पर कोई भी साझेदार ब्याज पाने के लिए, वस्तुतः अधिकृत नहीं है।

(स) *आहरण पर ब्याज* – यदि विलेख में इस बारे में कोई उल्लेख नहीं है तो साझेदारों द्वारा निकाली गई (आहरित) राशि पर कोई ब्याज नहीं लिया जाएगा।

(द) *प्रवृद्ध राशि पर ब्याज* – यदि कोई साझेदार फर्म के व्यवसाय के उद्देश्य हेतु प्रवृद्ध राशि लगाता है तो वह इस राशि पर ब्याज पाने के लिए अधिकृत होगा जो उसे 6% प्रतिवर्ष की दर से देय होगी।

(य) *फर्म के कार्यों हेतु पारिश्रमिक* – कोई भी साझेदार फर्म के व्यवसाय चलाने के लिए किसी प्रकार का वेतन या पारिश्रमिक पाने का तब तक हकदार नहीं है जब तक कि इस बारे में साझेदारी विलेख में कोई प्रावधान न दिया गया हो।

उपरोक्त प्रावधानों के अलावा, भारतीय साझेदारी अधिनियम यह स्पष्टीकृत करता है कि साझेदारों के बीच समझौते में यह विषय महत्त्व रखते हैं।

(अ) यदि एक साझेदार फर्म के किसी लेन-देन से अपने लिए कोई लाभ प्राप्त करता है या फर्म से संबंधित परिसंपत्ति व्यवसाय इस्तेमाल करता है या उसके लिए फर्म का नाम इस्तेमाल करता है तो वह फर्म के लिए किसी भी लाभ या भुगतान के लिए उत्तरदायी होगा।

(ब) यदि एक साझेदार फर्म के व्यवसाय के समान ही किसी व्यवसाय को चलाता है या वह फर्म से प्रतियोगिता करता है तो वह फर्म के लिए उत्तरदायी होगा व अपने व्यवसाय से प्राप्त लाभों को फर्म के लिए देय होगा।

© NCERT not to be republished

स्वयं जाँचिए- 1

1. मोहन और श्याम एक फर्म के साझेदार हैं। यदि उनका साझेदारी विलेख निम्नलिखित मामलों में मूक है तो आप बताएँ कि क्या उनके दावे वैध हैं?
   (i) मोहन एक सक्रिय साझेदार है। वह प्रतिवर्ष 10,000 रु. का वेतन चाहता है।
   (ii) श्याम ने फर्म को एक प्रवृद्ध ऋण दिया हुआ है; वह प्रतिवर्ष 10% की दर से ब्याज का दावा करता है।
   (iii) फर्म में पूँजी के रूप में मोहन ने 20,000 रु. तथा श्याम ने 50,000 रु. दिए हैं। मोहन बराबर लाभ चाहता है।
   (iv) श्याम अपनी पूँजी पर 6% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज प्राप्त करना चाहता है।
2. आप बताएँ कि निम्नलिखित कथन सही है या गलत।
   (i) साझेदारों के बीच बिना किसी लिखित सामझौते के एक वैध साझेदारी गठित की जा सकती है।
   (ii) प्रत्येक साझेदार व्यवसाय को प्रमुख रूप से चलाने के साथ-साथ दूसरे साझेदार के लिए अभिकर्ता का भी काम करता है।
   (iii) एक बैंकिग फर्म में अधिकतम साझेदारों की संख्या 20 तक हो सकती है।
   (iv) साझेदारों के बीच विवाद के समाधान की प्रविधि साझेदारी विलेख का भाग नहीं हो सकती है।
   (v) यदि विलेख मौन है तो साझेदार द्वारा आहरित राशि पर ब्याज अनुपात 6% प्रतिवर्ष की दर से देय होगा।
   (vi) यदि विलेख ब्याज दर के बारे में मौन है तो फर्म में साझेदार के ऋण पर 12% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देय है।

1.3 साझेदारी खातों के विशिष्ट पहलू

साझेदारी फर्म के लिए लेखांकन निष्पादन ठीक उसी प्रकार से होता है जिस प्रकार से एकल स्वामित्व के व्यवसाय वाली फर्मों का होता है। केवल निम्नलिखित पहलू अपवाद स्वरूप है।

- साझेदार के पूँजी खाते का अनुरक्षण;
- साझेदारों के बीच लाभ एवं हानि का वितरण;
- पिछले लाभों के गलत विनियोग के लिए समायोजन;
- साझेदारी फर्म का पुनर्गठन; तथा
- साझेदारी फर्म का विघटन।

ऊपर बताए गए प्रथम तीन पहलुओं को अध्याय के आगामी अनुभागों में शामिल किया गया है तथा शेष पहलुओं को पुस्तक के अनुवर्ती अध्यायों में सम्मिलित किया गया है।

1.4 साझेदारों के पूँजी खातों का अनुरक्षण

साझेदारों तथा फर्म से संबंधित सभी लेन-देन को उनके पूँजी खातों के माध्यम से खातों में अभिलेखित किया जाता है। इसके अंतर्गत पूँजी के रूप में लगाई गई धनराशि, पूँजी की निकासी, लाभ का भाग, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज, साझेदार का वेतन तथा साझेदार का कमीशन आदि शामिल होता है।

© NCERT not to be republished

यहाँ पर दो विधियाँ हैं जिनमें साझेदारों के पूँजी खातों को अनुरक्षित किया जा सकता है। ये है: (i) स्थिर पूँजी विधि, तथा (ii) अस्थिर पूँजी विधि है। इन दोनों के बीच यह अंतर निहित है कि क्या साझेदार के पूँजी खाते में प्रत्यक्ष रूप से पूँजी की निकासी अतिरिक्त/आहरण के रूप में लेखाबद्ध की गई हैं अथवा नहीं।

(अ) *स्थिर पूँजी विधि* – स्थिर पूँजी विधि के अंतर्गत साझेदारों की पूँजी तब तक स्थिर रहती है जब तक कि साझेदारों के समझौते के अनुसार अतिरिक्त पूँजी को सन्निविष्ट न किया जाए अथवा पूँजी के एक भाग की निकासी न की जाए। सभी प्रकार के लेन-देन; जैसे कि लाभ की भागीदारी, पूँजी पर ब्याज, आहरण आदि एक अलग खाते में आलेखित किए जाते हैं, जिसे साझेदार का चालू खाता कहते हैं। साझेदारों के पूँजी खाते एक जमा शेष प्रदर्शित करते हैं जो कि साल-दर-साल तक ठीक वैसे ही शेष रह सकते हैं जब तक कि उनमें इस अवधि के दौरान अतिरिक्त पूँजी का सन्निवेश या आहरण न किया जाए। जबकि दूसरी ओर चालू खाता नाम शेष या जमा शेष प्रकट कर सकता है। चालू खाते के तुलनपत्र नाम शेष को परिसंपत्ति की तरफ और जमा शेष यदि है तो उसको देनदारियों की ओर प्रदर्शित किया जाता है।

स्थिर पूँजी विधि के अंतर्गत पूँजी खाता एवं चालू खाता निम्नवत प्रदर्शित किया जाता है:

साझेदार का पूँजी खाता

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
	बैंक(पूँजी का स्थायी आहरण)		xxx		प्रारंभिक शेष (प्रारंभिक शेष)		xxx
	जमा शेष (अंतिम शेष)		xxx		बैंक (नवीन पूँजी सन्निविष्ट)		xxx
			xxx				**xxx**

साझेदारों का चालू खाता

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
	प्रारंभिक शेष (यदि नाम शेष का प्रारंभिक शेष है)		xxx		शेष (प्रारंभिक शेष जमा के मामले में)		xxx
	आहरण		xxx		वेतन		xxx
	आहरणों पर ब्याज		xxx		कमीशन		xxx
	विनियोजन		xxx		पूँजी पर ब्याज		

© NCERT not to be republished

	(हानि का भाग)				लाभ व हानि विनियोजन		xxx
	अंतिम शेष (अंतिम शेष जमा के मामले में)		xxx		(लाभ का भाग)		
					अंतिम शेष (अंतिम शेष जमा के मामलें में)		xxx
			xxx				**xxx**

चित्र 1.1: *स्थिर पूँजी विधि के अंतर्गत साझेदार का पूँजी और चालू खाता*

(ब) *अस्थिर पूँजी विधि* – अस्थिर पूँजी विधि के अंतर्गत केवल एक खाता अर्थात पूँजी खाता ही प्रत्येक साझेदार के लिए तैयार किया जाता है। इसमें सभी समायोजन होते हैं जैसे कि लाभ एवं हानि का भाग, पूँजी पर ब्याज, साझेदार का वेतन या कमीशन आदि सभी साझेदार के पूँजीखाते में सीधे अभिलेखित किए जाते हैं जिसके कारण पूँजी खाते का शेष समय-समय पर अस्थिर (घट-बढ़) होता रहता है। यही कारण है कि इस विधि को (घट-बढ़) अस्थिर पूँजी विधि कहा जाता है। किसी भी निर्देश के अभाव में पूँजी खाते को इस विधि के द्वारा तैयार किया जाना चाहिए। इस पूँजी खाते को (घट-बढ़) अस्थिर पूँजी के अंतर्गत तैयार करने हेतु निम्न प्रारूप प्रस्तुत है:

साझेदारों का पूँजी खाता

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
	शेष आ/ला (यदि अंतिम शेष नाम पक्ष में है)		xxx		शेष आ/ला (यदि प्रारंभिक शेष जमा पक्ष के हैं)		xxx
	आहरण		xxx		बैंक(पूँजी सन्निविष्ट नई)		xxx
	आहरण पर ब्याज		xxx		वेतन		xxx
	लाभ–हानि विनियोजन (हानि का भाग)		xxx		पूँजी पर ब्याज		xxx
	अंतिम शेष आ/ले (यदि अंतिम शेष जमा पक्ष में है)		xxx		लाभ–हानि विनियोजन (लाभ का भाग)		
					शेष आ/ले (यदि अंतिम शेष नाम पक्ष में है)		xxx
			xxx				**xxx**

चित्र 1.2 : *अस्थिर पूँजी विधि के अंतर्गत साझेदार पूँजी खाते का प्रारूप*

1.4.1 स्थिर एवं अस्थिर पूँजी खातों के बीच अंतर

स्थिर एवं अस्थिर पूँजी विधि के बीच अंतर के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में निम्नवत दिया गया है:

अंतर के आधार	*स्थिर पूँजी*	*अस्थिर (घट-बढ़) पूँजी*
(i) खातों की संख्या	इस विधि के अंतर्गत प्रत्येक साझेदार के लिए दो खाते अलग सुस्थापित किए जाते हैं, अर्थात् 'पूँजी खाता' तथा 'चालू खाता' होते हैं।	प्रत्येक साझेदार का एक खाता होता है अर्थात् पूँजी खाता इस विधि के अंतर्गत होता है।
(ii) संलेख संबंधी मदें	आहरण, वेतन, पूँजी पर ब्याज आदि के लिए सभी समायोजन चालू खातों खातों में हस्तांतरित किए जाते हैं, न कि पूँजी खातों में।	आहरण, पूँजी पर ब्याज आदि के सभी समायोजन पूँजी खातों में हस्तांतरित किए जाते हैं।
(iii) स्थिर शेष	पूँजी खाता शेष सामान्यत: अपरिवर्तित ही रहता है, केवल कुछ विशिष्ट अपवाद स्थितियों को छोड़कर।	पूँजी खाते का शेष साल-दर-साल परिवर्तित होता रहता है
(iv) जमा शेष	इसमें पूँजी खाते सदैव जमा शेष प्रदर्शित करते हैं।	इसमें पूँजी खाते एक नाम शेष प्रदर्शित कर सकते हैं।

स्वयं जाँचए II

1. सौम्या और विमल एक फर्म में 3:2 अनुपात में लाभ-हानि की भागीदारी के आधार पर साझेदार हैं। 01 अप्रैल, 2013 को उनके पूँजी खाते एवं चालू खाते में शेष निम्नवत है:

	सौम्या (रु.)	*विमल* (रु.)
पूँजी खाते	3,00,000	2,00,000
चालू खाते (जमा)	1,00,000	80,000

साझेदारी विलेख में प्रावधान रखा गया है कि सौम्या को 500 रुपये प्रतिमाह का वेतन दिया जाएगा जबकि विमल को प्रतिवर्ष 4,000 रुपये कमीशन के रूप में मिलेंगे। पूँजी पर ब्याज की दर 6% प्रतिवर्ष रखी गई। वर्ष भर के लिए सौम्या एवं विमल के आहरण क्रमश: 30,000 रुपये तथा 10,000 रुपये थे। इन समायोजनों के पूर्व फर्म का कुल लाभ 2,49,000 रुपये था। सौम्या के आहरणों पर ब्याज 750 रुपये तथा विमल के आहरणों पर 250 रुपये था।

लाभ एवं हानि विनियोजन खाता और साझेदारों के पूँजी एवं चालू खातों को तैयार करें।

2. सोनिया, चारू तथा स्मिता ने 01 अप्रैल, 2013 को एक साझेदारी फर्म की शुरुआत की है। उन्होंने क्रमश: 5,00,00 रुपये, 4,00,000 रुपये तथा 3,00,000 रुपये की पूँजी की भागीदारी की है और उन्होंने लाभ को 3:2:1 के अनुपात में बाँटने का निर्णय लिया है। साझेदारी विलेख में प्रावधान है कि सोनिया को

प्रतिमाह 10,000 रुपये वेतन के रूप में, तथा चारू को प्रतिवर्ष 50,000 रुपये कमीशन के रूप में प्राप्त होंगे। इसके साथ ही उन्हें पूँजी पर 6% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज भी प्राप्त होगा। सोनिया के आहरण 60,000 रुपये, चारू के 40,000 रुपये तथा स्मिता के 20,000 रुपये हैं। (आहरण पर सोनिया से 2,700 रुपये, चारू 1,800 रुपये तथा स्मिता के आहरण पर 900 रुपये ब्याज के रूप से प्रभारित किए गए हैं। लाभ व हानि खाते के अनुसार वर्ष 2013-14 की कुल लाभ राशि 3,56,600 रुपये थी।

(i) आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि आलेखित करें।

(ii) लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार करें।

(iii) साझेदारों के पूँजी खाते बनाएँ।

नोट : किराये का भुगतान व्यापारिक व्यय है अतः लाभ पर प्रभार माना जायेगा।

1.5 साझेदारों के बीच लाभ का विभाजन

फर्म के सभी साझेदारों में लाभ हानि का विभाजन एक सहमति के अनुपात में किया जाता है। यदि साझेदारी विलेख इस संबंध में मौन है तब फर्म के लाभ एवं हानि को सभी साझेदारों द्वारा समान रूप से वहन किया जाता है।

आप जानते हैं कि एकल स्वामित्व की स्थिति में कुल लाभ या हानि, जैसा कि लाभ व हानि खाते द्वारा अभी निश्चित किया है, सीधे स्वामी के पूँजी खाते में स्थानांतरित किया जाता है। हालाँकि यदि यह साझेदारी का मामला है तब कुछ खास समायोजनों जैसे कि आहरण पर ब्याज, पूँजी पर ब्याज, वेतन व साझेदारार का कमीशन आदि को समायोजित करने की आवश्यकता होती है। इस उद्देश्य के लिए रिवाज के अनुसार यह आवश्यक है कि फर्म के लिए एक लाभ व हानि विनियोग खाता तैयार किया जाए जो कि निश्चित करे कि साझेदारों के बीच लाभ सहभाजन अनुपात में लाभ एवं हानि वितरण की अंतिम राशियाँ दर्शायी गई हैं।

1.5.1 लाभ एवं हानि विनियोग खाता

लाभ एवं हानि विनियोग खाता सिर्फ़ फर्म के लाभ व हानि खाते का विस्तार मात्र है। यह प्रकट करता है कि साझेदारों के बीच लाभ को कैसे विनियोजित या विभाजित किया जाता है। सभी समायोजन जैसे कि साझेदारों के वेतन, साझेदार के कमीशन, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज आदि विषयों को इस खाते के माध्यम से कैसे करना है। यह इस खाते के लाभ व हानि के शेष को दर्ज करके प्रारंभ किया जाता है। लाभ व हानि विनियोग खाते की तैयारी के लिए रोज़नामचा प्रविष्टियाँ तथा विभिन्न समायोजनों को करने के बारे में नीचे दिया गया है:

रोज़नामचा प्रविष्टियाँ

1. *लाभ एवं हानि खाते के शेष को लाभ एवं हानि विनियोग खाते में हस्तांतरण के लिए*

(क) यदि लाभ एवं हानि खाता एक जमा शेष (कुल लाभ) दर्शाता है

लाभ एवं हानि खाता   नाम

    लाभ एवं हानि विनियोग खाते से

(ख) यदि लाभ एवं हानि खाता एक नाम शेष (निवल हानि) दर्शाता है

लाभ एवं हानि विनियोग खाता   नाम

    लाभ एवं हानि खाते से

© NCERT not to be republished

2. *पूँजी पर ब्याज के लिए*
   (क) पूँजी से पूँजी खाते पर ब्याज की जमा के लिए
   पूँजी खाता पर ब्याज नाम
   साझेदार के पूँजी/चालू खाते से (व्यक्तिगत)
   (ख) पूँजी पर ब्याज खाते से लाभ एवं हानि विनियोग खाते में हस्तांतरण के लिए
   लाभ एवं हानि विनियोग खाता नाम
   पूँजी पर ब्याज खाते से
3. *आहरणों पर ब्याज*
   (क) आहरण पर ब्याज का साझेदार के पूँजी खाते पर प्रभार के लिए
   साझेदार का पूँजी/चालू खाता नाम
   आहरण पर ब्याज खाते से
   (ख) आहरण पर ब्याज का लाभ एवं हानि खाते में हस्तांतरण हेतुः
   आहरण के ब्याज
   आहरण पर ब्याज खाते से नाम
   लाभ एवं हानि विनियोग खाते से
4. *साझेदार का वेतन*
   (क) साझेदार का वेतन साझेदार के पूँजी खाते में जमा करने हेतुः
   साझेदार का वेतन खाता नाम
   साझेदार का पूँजी/चालू खाते से
   (ख) साझेदार का वेतन लाभ एवं हानि विनियोग खाते में हस्तांतरण हेतुः
   लाभ एवं हानि विनियोग खाता नाम
   साझेदार का वेतन खाते से
5. *साझेदार का कमीशन*
   (क) साझेदार के कमीशन को साझेदार के पूँजी खाते में जमा करने हेतुः
   साझेदार का कमीशन खाता नाम
   साझेदार के पूँजी/चालू खाते से (व्यक्तिगत)
   (ख) साझेदार को भुगतान किया गया कमीशन लाभ एवं हानि विनियोग खाते में ले जाने परः
   लाभ एवं हानि विनियोग खाता नाम
   साझेदार के कमीशन खाते से
6. *विनियोजन के बाद लाभ या हानि की भागीदारी*
   (क) यदि लाभ हैः
   लाभ एवं हानि विनियोग खाता नाम
   साझेदार के पूँजी/चालू खाते से (व्यक्तिगत)
   (ख) यदि हानि हैः
   साझेदारों का पूँजी खाता नाम
   लाभ एवं हानि विनियोग खाता

टिप्पणी– यदि किसी वर्ष फर्म की हानि होती है तो साझेदारों को पूँजी ब्याज, वेतन आदि नहीं दिया जाएगा।

© NCERT not to be republished

लाभ एवं हानि विनियोग खाता

नाम *जमा*

विवरण	*राशि (रु.)*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
लाभ एवं हानि (यदि हानि है)	xxx	लाभ एवं हानि (यदि लाभ है)	xxx
पूँजी पर ब्याज	xxx	आहरणों पर ब्याज	xxx
साझेदार का वेतन	xxx		xxx
साझेदार का कमीशन	xxx		
साझेदार के ऋण पर ब्याज	xxx		
साझेदार की पूँजी (लाभ का वितरण)	xxx		
	xxx		**xxx**

चित्र 1.3: *लाभ एवं हानि विनियोग खाते का प्रारूप*

उदाहरण *1*

समीर तथा यासमीन क्रमशः 15,00,000 रु. तथा 10,00,000 रु. पूँजी लगाकर साझेदार बने हैं। वे लाभों को 3:2 के अनुपात में बाँटने को सहमत हैं। आप यह दर्शाएँ कि इन दोनों साझेदारों के पूँजी खातों में लेन-देन कैसे अभिलेखित होगें, यदि मामले (1) में स्थिर पूँजी है, तथा मामले (2) में अस्थिर (घट-बढ़) पूँजी है। खाता पुस्तकें, प्रत्येक वर्ष 31 मार्च को बंद होती है।

विवरण	*समीर (रु.)*	*यासमीन (रु.)*
01 जुलाई, 2014 में विनियोजित पूँजी समावेश	3,00,000	2,00,000
पूँजी पर ब्याज	5%	5%
आहरण (2014–15 में)	30,000	20,000
आहरण पर ब्याज	1,800	1,200
वेतन	20,000	
कमीशन	10,000	7,000
वर्ष 2014–15 में हानि का भाग	60,000	40,000

© NCERT not to be republished

हल

स्थिर पूँजी विधि

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम *जमा*

तिथि	विवरण	ब.पृ.सं.	समीर राशि (रु.)	यासमीन राशि (रु.)	तिथि	विवरण	ब.पृ.सं.	समीर राशि (रु.)	यासमीन राशि (रु.)
	शेष आ/ले		18,00,000	12,00,000		शेष आ/ला		15,00,000	10,00,000
						(अतिरिक्त पूँजी)		3,00,000	2,00,000
			18,00,000	**12,00,000**				**18,00,000**	**12,00,000**

साझेदारों के चालू खाते

नाम *जमा*

तिथि	विवरण	ब.पृ.सं.	समीर राशि (रु.)	यासमीन राशि (रु.)	तिथि	विवरण	ब.पृ.सं.	समीर राशि (रु.)	यासमीन राशि (रु.)
	आहरण		30,000	20,000		पूँजी पर ब्याज		82,500	55,000
	आहरण पर ब्याज		1,800	1,200		साझेदार का वेतन		20,000	7,000
	लाभ एवं हानि		60,000	40,000		कमीशन		10,000	
	शेष आ/ले		20,700	800					
			1,12,500	**62,000**				**1,12,500**	**62,000**

कार्यकारी टिप्पणी:
पूँजी पर ब्याज का परिकलन :

			रु.		रु.
समीर	1 वर्ष के लिए 15,00,000 रु. पर 5%	= 5	$\frac{15,00,000}{100}$	=	75,000
	6 माह के लिए 3,00,000 रु. पर 5%	= 5	$\frac{3,00,000}{100} \quad \frac{6}{12}$	=	7,500
					82,500
यासमीन	1 वर्ष के लिए 10,000 रु. पर 5%	= 5	$\frac{10,000}{100}$	=	50,000
	6 माह के लिए 2,00,000 रु. पर 5%	= 5	$\frac{2,00,000}{100} \quad \frac{6}{12}$	=	5,000
					55,0000

अस्थिर पूँजी विधि

साझेदारों का पूँजी खाता

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*समीर राशि (रु.)*	*यासमीन राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*समीर राशि (रु.)*	*यासमीन राशि (रु.)*
	आहरण		30,000	20,000		शेष आ/ला		15,00,000	10,00,000
	आहरण पर ब्याज		1,800	1,200		बैंक		3,00,000	2,00,000
	लाभ एवं हानि		60,000	40,000		पूँजी पर ब्याज		82,500	55,000
	शेष आ/ले		18,20,700	12,00,800		वेतन		20,000	7,000
						कमीशन		10,000	
			19,12,500	**12,62,000**				**19,12,500**	**12,62,000**

उदाहरण 2

अमित, बाबू एवं चारू 01 अप्रैल, 2015 को एक व्यवसाय हेतु साझेदारी फर्म स्थापित करते हैं। उन्होंने क्रमशः 50,000 रु., 40,000 रु. तथा 30,000 रु. पूँजी के रूप में लगाया है और वे 3:2:1 के अनुपात में लाभ व हानि की भागीदारी के लिए सहमत हैं। अमित को प्रतिमाह 1,000 रु. वेतन के रूप में देय है तथा बाबू को प्रति वर्ष कमीशन के रूप में 5,000 रु. देय है। इसके साथ यह भी प्रावधान है कि पूँजी पर 6% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देय होगा। इस वर्ष के आहरण — अमित 6,000 रु., बाबू 4,000 रु. तथा चारू 2,000रु. हैं। आहरणों पर ब्याज के रूप में अमित से 270 रु., बाबू के आहरण पर 180 रु. तथा चारू से 180रु. प्रभारित किए गए हैं। लाभ एवं हानि खाते के अनुसार कुल निवल लाभ 31 मार्च, 2016 की समाप्ति पर 35,660 रु. तथा साझेदारों के बीच लाभ एवं हानि वितरण को दिखाने हेतु लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार करें।

हल

लाभ एवं हानि विनियोग खाता

नाम *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*		*राशि (रु.)*
अमित का वेतन		12,000	लाभ व हानि खाता (निवल लाभ)		35,660
बाबू का कमीशन		5,000	आहरणों पर ब्याजः		
पूँजी पर ब्याजः			अमित	270	
अमित	3,000		बाबू	180	
बाबू	2,400		चारू	90	540
चारू	1,800	7,200			

लाभ की भागीदारी का पूँजी खातों में हस्तांतरण: अमित 6,000 बाबू 4,000 चारू 2,000	12,000		
	36,200		**36,200**

उदाहरण 3

येदु, मधु और विधु साझेदार है और 2:2:1 के अनुपात में लाभ व हानि की भागीदारी के लिए सहमत है। अप्रैल 01, 2019 को उनकी स्थिर पूँजी इस प्रकार है: येदु 5,00,000 रु., मधु 4,00,000 रु. और विधु 3,50,000 रु.। साझेदारी संलेख के अनुसार येदु को प्रतिमाह 2,000 रु. का वेतन देय है; विधु को 18,000 रु. का कमीशन देय है। इसके अतिरिक्त साझेदारों को 5% पूंजी पर ब्याज मिलना भी देय है। मार्च 31, 2020 को यदि फर्म को 75,000 रु. की हानि होती है तो ऐसी दशा में लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार करें।

हल

येंदु, मधु और विधु की पुस्तकें
लाभ व हानि विनियोग खाता

ववरण	*राशि (रु.)*	*विवरण*		*राशि (रु.)*
लाभ एवं हानि (शुद्ध हानि)	75,000	साझेदारों का चालू खाता (हानि का वितरण) येदु– 30,000 मधु– 30,000 विधु– 15,000		75,000
	75,000			**75,000**

उदाहरण 4

अभिताभ एवं बाबुल 3: 2 के अनुपात में लाभ की भागीदारी करते हुए क्रमशः 50,000 रु. तथा 30,000 रु. लगाकर एक फर्म के साझेदार हैं। पूँजी पर 6% वार्षिक ब्याज दर पर सहमति है। बाबुल को

© NCERT not to be republished

प्रतिवर्ष 2,500 रु. का वेतन लेने की अनुमति है। वर्ष 2019-20 वर्ष का लाभ, बाबुल के वेतन प्रभारित करने तथा पूँजी पर ब्याज के परिकलन के पश्चात राशि 11,750 रु. है।

वर्ष के अंत में 31 मार्च, 2020 को लाभ का विभाजन दर्शाते हुए साझेदारों के पूँजी खाते तैयार करें।

हल

लाभ एवं हानि विनियोग खाता

नाम *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
बाबुल का वेतन		2,500	लाभ व हानि (निवल लाभ बाबुल के वेतन से पूर्व)	15,000
पूँजी पर ब्याज :				
अमिताभ		3,000		
बाबुल		1,800		
साझेदारों के पूँजी खातों में हस्तांतरित लाभ:				
अमिताभ	4,170			
बाबुल	2,780	6,950		
		14,250		**14,250**

अमिताभ का पूँजी खाता

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*रो.ब. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
2020				2019			
31 मार्च	शेष आ/ले		57,170	01अप्रैल	शेष आ/ला		50,000
				31मार्च	पूँजी पर ब्याज		3,000
				31मार्च	लाभ एवं हानि विनियोजन (लाभ का भाग)		4,170
			57,170				**57,170**

बाबुल का पूँजी खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (रु.)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (रु.)
2016 31मार्च	शेष आ/ले		37,080	2019 01अप्रैल	आ/ला शेष वेतन		30,000 2,500
				2016 31मार्च	पूँजी पर ब्याज		1,800
				31मार्च	लाभ एवं हानि विनियोजन (लाभ का भाग)		2,780
			37,080				**37,080**

स्वयं जाँचिए - 2

1. राजू एवं जय एक व्यवसाय में 01 अप्रैल, 2015 से साझेदार हैं। *लिखित या मौखिक रूप में कोई भी समझौता नहीं है।* इन दोनों ने क्रमशः 4,00,000 रु. तथा 1,00,000 रु. की पूँजी की भागीदारी की है। इसके अतिरिक्त राजू ने 01 अक्तूबर, 2015 को प्रवृद्ध राशि के रूप में 2,00,000 रु. दिए हैं, 01 जुलाई, 2016 को राजू एक दुर्घटना का शिकार हो गया और 30 सितंबर, 2015 तक व्यवसाय में भाग नहीं ले पाया। वर्ष की समाप्ति पर 31 मार्च, 2016 को लाभ 50,600 रु. प्राप्त हुआ। दोनों साझेदारों के बीच लाभ वितरण को लेकर विवाद पैदा हो गया।

राजू का दावा है:

(i) उसे पूँजी एवं ऋण पर 10% वार्षिक की दर से ब्याज दिया जाना चाहिए।

(ii) लाभ को पूँजी के अनुपात में वितरित किया जाना चाहिए।

जय का दावा है:

(i) निवल लाभ को बराबर-बराबर बाँटा जाना चाहिए।

(ii) राजू की बीमारी की अवधि के लिए उसे 1,000 रु. प्रतिवर्ष की दर से पारिश्रमिक दिया जाना चाहिए।

(iii) उसे पूँजी और ऋण पर 6% वार्षिक दर से ब्याज दिया जाना चाहिए। आपसे अपेक्षा की जाती है कि दोनों के बीच विवाद को 1932 अधिनियम के अनुसार प्रत्येक मुद्दे का सही समाधान करें:

2. रीना एवं रमन क्रमश 3,00,000 रु. तथा 1,00,000 रु. की पूँजी लगाकर साझेदार हैं। 01 अप्रैल, 2015 से 31 मार्च, 2016 की समाप्ति तक, (लाभ व हानि खाता के अनुसार) व्यापार लाभ 1,20,000 रु. था। पूँजी पर प्रतिवर्ष 6% की दर से ब्याज की अनुमति है। रमन को प्रतिवर्ष 30,000 रु. वेतन प्राधिकृत किया गया था। दोनों साझेदारों के आहरण क्रमशः 30,000 रु. तथा 20,000 रु. थे। रीना के आहरण पर ब्याज 1,000 रु. तथा रमन पर ब्याज 500 रु. है।
रीना एवं रमन को बराबर का साझेदार मानते हुए लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार करें।

1.5.2 पूँजी पर ब्याज का परिकलन

वास्तव में, पूँजी पर ब्याज प्रभारित करने के लिए कोई भी साझेदार अधिकृत नहीं है; जब तक कि यह सभी साझेदारों द्वारा विलेख में जान-बूझकर (स्पष्टत:) सहमति प्राप्त न हो। साझेदारों को सहमत दर पर ब्याज देय होता है जिसमें उस अवधि का उल्लेख रहे, जब पूँजी उस वित्त वर्ष के दौरान व्यवसाय में विनियोजित रही हो। सामान्यत: पूँजी पर ब्याज दो परिस्थितियों में प्रदान किया जाता है (i) जब साझेदारों द्वारा असमान राशि की पूँजी की भागीदारी की जाए, लेकिन लाभ की भागीदारी समान हो, और (ii) पूँजी की भागीदारी समान हो परंतु लाभ की भागीदारी असमान हो।

पूँजी पर ब्याज का परिकलन और लेखांकन अवधि के दौरान केवल पूँजी की निकासी (आहरण) या सन्निवेश पर किया जाता है। उदाहरण के लिए, मोहिनी, रोशनी और नवीन एक साझेदारी में क्रमश: 3,00,000 रु., 2,00,000 रु. और 1,00,000 रु. के साथ व्यवसाय प्रारंभ करते हैं। उन्होंने लाभ एवं हानि पर बराबर भागीदारी का निर्णय लिया और इस बात पर भी सहमत हुए कि पूँजी पर 10% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देय होगा। 10% की दर से यह ब्याज मोहिनी के लिए 30,000 रु., (3,00,000 रु. पर 10% की दर से) रोशिनी के लिए 20,000 रु. (20,000 रु. पर 10% की दर से) तथा नवीन के लिए 10,000 रु. (1,00,000 रु. पर 10% की दर से) का योग तैयार हुआ।

एक अन्य प्रकरण मंसूर व रेशमा का लीजिए, जो एक कार्य में साझेदार हैं तथा उनके पूँजी खातों में 01 अप्रैल, 2019 को क्रमश: 2,00,000 रु. तथा एक 3,00,000 रु. शेष दर्शाया गया है। मंसूर 01 अगस्त, 2019 को 1,00,000 रु. की अतिरिक्त पूँजी लगाता है और रेशमा 01 अक्तूबर, 2019 को 1,50,000 रु. अतिरिक्त लगाती है, पूँजी पर 6% वार्षिक की दर से ब्याज अनुमत है। इसे निम्नानुसार किया जाएगा।

मंसूर के लिए $\left(2{,}00{,}000 \text{ रु.} \times \frac{6}{100}\right) + \left(1{,}00{,}000 \text{ रु.} \times \frac{6}{100} \times \frac{8}{12}\right)$

$= 12{,}000 \text{ रु.} + 4{,}000 \text{ रु.} = 16{,}000 \text{ रु.}$

रेशमा के लिए $\left(1{,}50{,}000 \text{ रु.} \times \frac{6}{100}\right) + \left(1{,}50{,}000 \text{ रु.} \times \frac{6}{100} \times \frac{6}{12}\right)$

$= 9{,}000 \text{ रु.} + 4{,}500 \text{ रु.} = 13{,}500 \text{ रु.}$

जब दोनों ही वित्त वर्ष के दौरान पूँजी व अतिरिक्त का आहरण करते हैं तो पूँजी पर ब्याज दर का परिकलन निम्नानुसार होता है:

(i) साझेदारों के पूँजी खाते के प्रारंभिक शेष पर, पूरे वर्ष के लिए ब्याज का परिकलन

(ii) यदि वित्त वर्ष के दौरान किसी साझेदार द्वारा अतिरिक्त पूँजी लगाई जाती है तो अतिरिक्त पूँजी पर ब्याज का परिकलन लाई गई तिथि से वर्ष के अंतिम दिन तक होती है।

(iii) पूँजी आहरण की दशा में पूँजी पर ब्याज की गणना इस प्रकार होगी:
वर्ष के प्रारम्भ से प्रारंभिक पूँजी पर निकाली गई पूँजी की तिथि तक सर्वप्रथम ज्ञात की जाएगी; इसके पश्चात् कम हुई पूँजी पर शेष अवधि के लिए ज्ञात होगी। वैकल्पिक रूप से इसे संबंधित अवधि के लिए रह गई निवेशित पूँजी पर भी ज्ञात किया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 5

सलोनी और सृष्टि एक फर्म में साझेदार हैं। उनका पूँजी खाता 01 अप्रैल 2015 को क्रमशः 2,00,000 रु. तथा 3,00,000 रु. शेष दर्शाता है। 01 जुलाई, 2015 को सलोनी ने 50,000 रु. अतिरिक्त पूँजी और सृष्टि ने 60,000 रु. अतिरिक्त पूँजी लगाई । अपने निजी उपयोग हेतु सलोनी ने, 01 अक्तूबर, 2015 को 30,000 रु. तथा सृष्टि ने 01 जनवरी, 2016 को, 15,000 रु. का आहरण किया। 8% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज अनुमत था। वित्त वर्ष 2015–16 के दौरान दोनों साझेदारों की पूँजी पर ब्याज देय का परिकलन कीजिए।

हल

पूँजी पर ब्याज का परिकलन दर्शाता लेखा विवरण—

सलोनी के लिए

2,00,000 रू. पर 3 माह का ब्याज $= \frac{Rs.3,00,000 \times 8 \times 3}{100 \times 12}$ =6,000 रु.

जोड़ा : 2,50,000 रू. पर 3 माह का ब्याज $= \frac{Rs.2,50,000 \times 8 \times 3}{100 \times 12}$ =5,000 रु.

जोड़ा : 2,20,000 रू. पर 6 माह का ब्याज $= \frac{Rs.2,20,000 \times 6 \times 8}{100 \times 12}$ =8,800 रु.

सृष्टि के लिए

3,00,000 रू. पर 3 माह का ब्याज $= \frac{Rs.3,00,000 \times 8 \times 3}{100 \times 12}$ =6,000 रु.

जोड़ा : 3,60,000 रू. पर 6 माह का ब्याज $= \frac{Rs.3,60,000 \times 8 \times 6}{100 \times 12}$ =14,400 रु.

जोड़ा : 2,20,000 रू. पर 3 माह का ब्याज $= \frac{Rs.3,45,000 \times 8 \times 3}{100 \times 12}$ =300 रु.

कभी–कभी साझेदारों की प्रारंभिक पूँजी नहीं दी गई होती है। ऐसी स्थिति में पूँजी पर ब्याज की गणना से पूर्व साझेदारों की अंतिम पूँजी पर अतिरिक्त पूँजी, आहरित पूँजी आहरणों, लाभ व हानि में भाग, यदि साझेदारों के पूँजी खातों में दर्शाया गया है, संबंधित समायोजनों की सहायता से प्रारंभिक पूँजी की गणना की जाती है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 6

जोश एवं क्रिश साझेदार हैं और लाभ एवं हानि के लिए 3:1 अनुपात पर सहमत हैं। वित्त वर्ष 2015–16 के अंत में उनकी पूँजी 1,50,000 रु. तथा 75,000 रु. थी। वर्ष 2015–2016 के दौरान आहरण जोश के नाम 20,000 रु. तथा क्रिश के नाम आहरण 5,000 रु. था। जिसे उनके पूँजी खाते में नाम पक्ष में डाला गया है। ब्याज प्रभारित करने से पहले उनका लाभ 16,000 रु. था। क्रिश 01 अक्तूबर, 2015 को 16,000 रु. अतिरिक्त पूँजी फर्म में लाया जिसे लाभ सहभाजन अनुपात में डाला गया। पूँजी पर 12% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज गणना करें।

हल

प्रारंभ में पूँजी का परिकलन दर्शाता लेखा-विवरण

विवरण	*जोश का खाता (रु.)*	*क्रिश का खाता (रु.)*
वर्ष के अंत में पूँजी	1,50,000	75,000
जोड़ा: वर्ष के दौरान आहरण	20,000	5,000
	1,70,000	**80,000**
घटाया : लाभ का हिस्सा	12,000	(4,000)
	1,58,000	**76,000**
घटाया : अतिरिक्त पूँजी	–	(16,000)
	1,58,000	**60,000**

पूँजी पर ब्याज होगा, जोश के लिए 18,960 रु. (1,58,000 रु. का 12%) और क्रिश के लिए 960 रु. निम्न परिकलन के अनुसार

$$\left(60{,}000 \text{ रु.} \times \frac{12}{100}\right) + \left(16{,}000 \text{ रु.} \times \frac{12}{100} \times \frac{6}{12}\right) = 7{,}200 \text{ रु.} + 960 \text{ रु.}$$

$$= 8{,}160 \text{ रु.}$$

1.5.2.1 पूँजी में परिवर्तन एवं आहरण (जोड़ना व घटाना)

जैसे कि पहले स्पष्ट किया गया है, पूँजी पर ब्याज तभी दिया जाएगा जब फर्म लेखांकन वर्ष में लाभ अर्जित करती है। अंतः वर्ष के दौरान फर्म को हानि होने पर पूँजी पर ब्याज नहीं दिया जाता है और यदि किसी वर्ष फर्म का अर्जित लाभ साझेदारों की पूँजी पर ब्याज की देय राशि से कम है, तो ऐसी दशा में ब्याज का भुगतान लाभ की राशि के आधार पर सीमित किया जाएगा। ऐसी स्थिति में लाभों का विभाजन प्रभावकारी ढंग से पूँजी पर ब्याज के अनुपात में किया जा सकेगा।

Reprint 2025-26

उदाहरण 7

अनुपम एवं अभिषेक 3:2 के अनुपात में लाभ हानि की भागीदारी करने वाले साझेदार हैं। 01 अप्रैल, 2017 को उनका पूँजी खाता क्रमशः 1,50,000 रु. तथा 2,00,000 रु. दर्शाता है। 31 मार्च, 2018 को वर्ष की समाप्ति पर पूँजी पर ब्याज का व्यवहार निम्नलिखित विकल्पों में से प्रत्येक के लिए दर्शाएँ:

(अ) यदि पूँजी पर ब्याज के भुगतान के लिए साझेदारी विलेख मूक है और वर्ष का लाभ 50,000 रु. है।

(ब) यदि साझेदारी विलेख पूँजी पर 8% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज का प्रावधान रखता है तथा फर्म को उस वर्ष के दौरान 10,000 रु. की हानि होती है।

(स) यदि साझेदारी विलेख में पूँजी पर 8% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देने का प्रावधान है और फर्म उस वर्ष के दौरान 50,000 रु. का लाभ अर्जित करती है।

(द) यदि साझेदारी विलेख में पूँजी पर 8% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देने का प्रावधान है और उस वर्ष के दौरान अर्जित किया गया लाभ 15,000 रु. है।

हल

(अ) विलेख में विशिष्ट प्रावधान की अनुपस्थित की स्थिति में; साझेदारों की पूँजी पर कोई ब्याज देय नहीं होगा। हालाँकि उपलब्ध लाभ दोनों साझेदारों के बीच (3:2 के) अनुपात में विभाजित होगा।

(ब) चूँकि लेखावर्ष के दौरान फर्म को घाटा हुआ है। अतः किसी भी साझेदार की पूँजी पर ब्याज देय अनुमत नहीं है। फर्म के घाटे को दोनों साझेदारों द्वारा लाभ भागीदारी के अनुपात में वहन किया जाएगा।

(स)

अनुपम को 1,50,000 रु. पर 8% की दर से ब्याज	12,000 रु.
अभिषेक को 2,00,000 रु. पर 8% की दर से ब्याज	16,000 रु.
	28,000 रु.

जैसा कि सहमत दर पर ब्याज देने के लिए लाभ पर्याप्त है। अतः पूँजी पर बनी पूरी ब्याज राशि को लाभ से प्राप्त करने की अनुमति है, जहाँ ब्याज देने के बाद 22,000 रु. (50,000 रु. – 28,000 रु.) शेष हैं। जिसे उनके लाभ सहभाजन अनुपात में बाँटा जाएगा।

(द) – चूँकि फर्म का वार्षिक लाभ 14,000 रु. है और साझेदारों की पूँजी पर ब्याज 28,000 रु. बकाया है। अतः ब्याज का भुगतान उपलब्ध लाभ भुगतान के आधार पर किया जाएगा। अर्थात 14,000रु. । इस प्रकार अनुपम को 6,000 रु. तथा अभिषेक को 8,000 रु. प्राप्त होंगे। इस प्रकार से प्रभावी तौर पर फर्म का लाभ विभाजन ब्याज के अनुपात पर होगा अर्थात 3: 41।

स्वयं जाँचिए 3

1. रानी एवं सुमन क्रमश: 80,000 रु. एवं 60,000 रु. की पूँजी लगाकर एक फर्म की साझेदार हैं। वर्ष 2019-20 के दौरान रानी ने 10,000 रु. आहरित किए और सुमन ने 15,000 रु. आहरित किए। पूँजी पर ब्याज प्रभारित करने से पहले फर्म का लाभ 50,000 रु. था जिसे रानी एवं सुमन के बीच 3:2 के अनुपात में विभाजित किया गया।
   रानी एवं सुमन की पूँजी 12% प्रतिवर्ष की दर से, वर्ष के अंत 31 मार्च, 2020 को ब्याज का परिकलन कीजिए।
2. प्रिया एवं काजल ने 5:3 के अनुपात से लाभ की भागीदारी पर एक फर्म स्थापित की। 01 अप्रैल, 2019 को उनकी स्थिर पूँजी इस प्रकार थी : प्रिया 6,00,000 रु. तथा काजल 8,00,000 रु. । 31 मार्च, 2020 को वित्त वर्ष के अंत में फर्म का लाभ 1,26,000 रु. था। इनके बीच लाभ विभाजन बताएँ (अ) जबकि पूँजी पर ब्याज के अलावा और कोई समझौता नहीं है, (ब) जबकि एक स्पष्ट समझौता हुआ है कि पूँजी पर ब्याज 12% प्रतिवर्ष की दर से भुगतान अनुमत है।

1.5.3 आहरणों पर ब्याज

साझेदारी विलेख में यह प्रावधान हो सकता है कि फर्म के अतिरिक्त निजी कार्य हेतु साझेदार द्वारा आहरण पर ब्याज प्रभारित हो। जैसा कि पहले बताया गया है कि यदि साझेदारों के बीच इस बारे में कोई स्पष्ट समझौता नहीं है तो ब्याज प्रभारित नहीं होगा। लेकिन, यदि साझेदारी विलेख में ऐसा प्रावधान है तो सहमत दर पर ब्याज को उतनी अवधि के लिए प्रभारित किया जा सकता है जितने समय के लिए लेखा वर्ष में साझेदार पर बकाया है। आहरणों पर ब्याज के प्रभारित होने से साझेदारों द्वारा व्यवसाय से धन आहरित करने की प्रवृत्ति हतोत्साहित होती है।

आहरणों पर ब्याज का परिकलन विभिन्न स्थितियों में निम्नानुसार प्रभारित किया जाता है :

जब प्रतिमाह में स्थिर राशि को आहरित किया जाता है।

कई बार साझेदारों द्वारा एक स्थिर धन राशि एक समान अवधि के अंतर से आहरित की जाती है जैसे कि प्रत्येक माह में या प्रत्येक तिमाही में। ऐसी स्थिति में पूरी समयावधि का परिकलन इस बात पर निर्भर करेगा कि क्या धन का आहरण माह के प्रारंभ में (पहले दिन) या माह के मध्य में, या प्रत्येक माह के अंतिम दिन किया जाता है। मान लीजिए प्रतिमाह के पहले दिन आहरण किया जाता है तो कुल राशि पर ब्याज 6½ माह के लिए और यदि आहरण हर माह के अंत में किया जाता है तो ब्याज 5½ माह के लिए परिकलित किया जाएगा। यदि आहरण माह के मध्य में होता है तो 6 माह के लिए परिकलन होगा।

© NCERT not to be republished

मान लीजिए कि आशीष अपने निजी उपयोग हेतु 31 मार्च, 2016 को वर्ष की समाप्ति के दौरान प्रति माह 10,000 रु. का आहरण करता है, तो विभिन्न अवधि की स्थितियों में ब्याज का परिकलन निम्नानुसार होगा :

(अ) *जब धन को प्रत्येक माह की आरंभ में आहरित किया जाता है*

$$\text{औसत अवधि} = \frac{\text{प्रथम आहरण से माह की संख्या} + \text{अंतिम माह से आहरण की संख्या}}{2} = \frac{12+1}{2} = 6½ \text{ माह}$$

$$\text{आहरण पर ब्याज} = \frac{1,20,000 \text{ रु.} \quad 8 \quad 13 \quad 1}{100 \quad 2 \quad 12} = 5,200 \text{ रु.}$$

(ब) *जब धन को हर माह के अंत में आहरित किया जाता है*

$$\text{औसत अवधि} = \frac{\text{प्रथम आहरण से माह की संख्या} + \text{अंतिम माह से आहरण की संख्या}}{2} = \frac{12-1}{2} = 5½ \text{ माह}$$

$$\text{आहरणों पर ब्याज} = \frac{1,20,000 \text{ रु.} \quad 8 \quad 11 \quad 1}{100 \quad 2 \quad 12} = 4,400 \text{ रु.}$$

(स) जब धन को प्रतिमाह के मध्य में आहरित किया जाता है।
जब धन को माह के बीच में आहरित किया जाता है तब कुल अवधि में न तो कुछ जोड़ा जाता है और न ही कुछ घटाया जाता है।

$$\text{औसत अवधि} = \frac{\text{प्रथम आहरण से माह की संख्या} + \text{अंतिम माह से आहरण की संख्या}}{2} = \frac{12}{2} = 6 \text{ माह}$$

$$\text{आहरणों पर ब्याज} = \frac{1,20,000 \text{ रु.} \quad 8 \quad 6 \quad 1}{100 \quad 2} = 4,800 \text{ रु.}$$

जब हर तिमाही में स्थिर राशि को आहरित किया जाए

जब धन राशि एक साझेदार द्वारा प्रत्येक तिमाही में आहरित की जाती है तो ब्याज के परिकलन के उद्देश्य के लिए कुल समयावधि का अभिनिश्चय इस बात पर निर्भर करता है कि क्या धन राशि को हर तिमाही के प्रारंभ में निकाला गया या हर तिमाही के अंत में। यदि प्रत्येक तिमाही के प्रारंभ में राशि आहरित की गई है तो ब्याज का परिकलन पूरे वर्ष के लिए परिकलित ब्याज 7½ माह की अवधि अर्थात् $\frac{12+3}{2}$ के लिए लागू होगा और यदि प्रत्येक तिमाही के अंत में निकाला जाता है तो इसे 4½ अर्थात् $\frac{9+0}{2}$ माह के लिए परिकलित किया जाएगा।

मान लीजिए कि सतीश एवं तिलक एक फर्म में साझेदार हैं तथा लाभ व हानि की भागीदारी बराबर करते हैं। लेखा वर्ष 2015–16 के दौरान सतीश ने हर तिमाही की शुरुआत में 30,000 रु. आहरित किए। यदि इन आहरणों पर 8% प्रतिवर्ष की दर पर ब्याज लिया जाता है तो वर्ष के अंत में प्रभारित ब्याज की राशि का परिकलन निम्नानुसार होगा:

© NCERT not to be republished

आहरणों पर ब्याज का परिकलन दर्शाता लेखा विवरण

तिथि	*राशि* (रु.)	*समयावधि*	*ब्याज* (रु.)
01 अप्रैल, 2019	30,000	12 मास	$30,000 \quad \frac{8}{100} \quad 1 = 2,400$
01 जुलाई, 2019	30,000	9 मास	$30,000 \quad \frac{9}{12} \quad \frac{8}{100} = 1,800$
01 जुलाई, 2019	30,000	6 मास	$30,000 \quad \frac{6}{12} \quad \frac{8}{100} = 1,200$
01 जनवरी, 2020	30,000	3 मास	$30,000 \quad \frac{3}{12} \quad \frac{8}{100} = 600$
योग	**1,20,000**		**6,000**

वैकल्पिक रूप से, पूरे लेखांकन वर्ष के दौरान कुछ आहरित राशि पर ब्याज परिकलित किया जा सकता है अर्थात इस स्थिति में 1,20,000 रु. की राशि 7½ (12 + 9 + 6 + 3)/4 माह की अवधि के लिए निम्नानुसार हैं:

$$1,20,000 \text{ रु.} \quad \frac{8}{100} \quad \frac{15}{2} \quad \frac{1}{12} = 6,000 \text{ रु.}$$

(ब) *यदि धनराशि को प्रत्येक तिमाही के अंत में आहरित किया जाता है*

आहरणों पर ब्याज के परिकलन का लेखा विवरण

तिथि	*राशि* (रु.)	*समयावधि*	*ब्याज* (रु.)
30 जून, 2019	30,000	9 माह	$30,000 \quad \frac{9}{12} \times \frac{8}{100} = 1,800$
30 सितंबर, 2019	30,000	6 माह	$30,000 \quad \frac{6}{12} \quad \frac{8}{100} = 1,200$
31 दिसंबर, 2019	30,000	3 माह	$30,000 \quad \frac{3}{12} \quad \frac{8}{100} = 600$
31 मार्च, 2020	30,000	0 मास	
योग	**1,20,000**		**3,600**

© NCERT not to be republished

वैकल्पिक रूप से लेखांकन वर्ष के दौरान आहरित कुल राशि का इस प्रकार भी परिकलन किया जा सकता है, अर्थात 1,20,000 रु. पर 4½ माह की अवधि का ब्याज:

$$= 1,20,000 \text{ रु. } \frac{8}{100} \; \frac{9}{2} \; \frac{1}{12} = 3,600 \text{ रु.}$$

जब विविध धन राशियों को भिन्न समय अंतरालों पर आहरित किया जाता है

जब साझेदार भिन्न-भिन्न धनराशि को भिन्न समय अंतरालों पर आहरित करते हैं, तब ब्याज का परिकलन उत्पाद विधि का उपयोग किया जाता है। उत्पाद विधि के अंतर्गत, प्रत्येक आहरण के लिए, धन आहरण को उस अवधि द्वारा बहुगुणित करते हैं जो कि लेखा वर्ष के दौरान आहरित रहता है। इसमें परिकलित अवधि आहरण की तिथि से लेकर लेखांकन वर्ष के अंतिम दिन तक शामिल होती है। अतः परिकलित उत्पादों का योग किया जाता है। उदाहरण के लिए शहनाज अपने निजी उपयोग के लिए फर्म से 31 मार्च, 2016 के समापन वर्ष के दौरान निम्नलिखित धन राशियाँ आहरित करती है। उत्पाद विधि द्वारा आहरणों पर ब्याज को परिकलित करें, यदि इन पर 7% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज प्रभारित किया जाए।

तिथि	*राशि (रु.)*
01 अप्रैल, 2015	16,000
30 जून, 2015	15,000
31 अक्तूबर, 2015	10,000
31 दिसंबर, 2015	14,000
01 मार्च, 2016	11,000

इन आहरणों पर ब्याज का परिकलन निम्नानुसार होगा

आहरणों पर ब्याज के परिकलन का लेखा विवरण

तिथि	*राशि (रु.)*	*समयावधि*	*उत्पाद (रु.)*
01 अप्रैल, 2015	16,000	12 मास	1,92,000
30 जून, 2015	15,000	9 मास	1,35,000
31 अक्तूबर, 2015	10,000	5 मास	50,000
31 दिसंबर, 2015	14,000	3 मास	42,000
01 मार्च, 2016	11,000	1 मास	11,000
योग			**4,30,000**

© NCERT not to be republished

उत्पाद विधि द्वारा, आहरणों पर ब्याज निम्नवत परिकलित होगा

ब्याज = उत्पाद की योग राशि दर $\frac{1}{12}$

= 4,30,000 रु. $\frac{7}{100}$ $\frac{1}{12}$ = $\frac{30,100}{12}$ = 2,508 रु. (लगभग)

उदाहरण 8

जॉन अब्राहम 'माडर्न टूर एवं ट्रैवल कंपनी' में साझेदार है तथा लेखा वर्ष के अंत 31 मार्च, 2015 को निजी प्रयोग हेतु अपनी पूँजी खाते धन को आहरित करते हैं। निम्न वैकल्पिक स्थितियों पर ब्याज का परिकलन करें, यदि ब्याज की दर 9% प्रतिवर्ष की है।

(अ) यदि वह प्रति माह के प्रारंभ में 3,000 रु. प्रतिमाह आहरित करता है।

(ब) यदि प्रत्येक माह के अंत में, वह 3,000 रु. आहरित करता है।

(स) यदि निम्नलिखित राशि विभिन्न तिथियों पर आहरित की जाती है : 01 जून, 2019 को 12,000 रु.; 31 अगस्त, 2019 को 8,000 रु.; 30 सितंबर 2019 को 3,000 रु.; 30 नवंबर 2019 को 7,000 रु. तथा; 31 जनवरी, 2020 को 6,000 रु.

हल

(अ) जैसा कि महीने के प्रारंभ में ही 3,000 रु. की स्थिर राशि आहरित की गई है। अतः ब्याज का परिकलन औसत अवधि 6½ माह के लिए किया जाएगा।

आहरणों पर ब्याज $= \frac{36,000 \quad 9 \quad 13 \quad 1}{100 \quad 2 \quad 12}$ = 1,755 रु.

(ब) जैसा कि महीने के अंत में 3,000 रु. की राशि प्रतिमाह निकाली गई है। अतः ब्याज का परिकलन एक औसत अवधि 5½ माह के लिए किया जाएगा।

आहरणों पर ब्याज $= \frac{36,000 \quad 9 \quad 11 \quad 1}{100 \quad 2 \quad 12}$ = 1,485 रु.

आहरणों पर ब्याज के परिकलन को दर्शाता लेखा विवरण

1 *तिथि*	*2* *आहरित राशि* *(रु.)*	*3* *अवधि* *(माह में)*	*4* *ब्याज* *(रु.)*
01 जून, 2019	12,000	10	12,000 $\frac{9}{100}$ $\frac{10}{12}$ = 900
31 अगस्त, 2019	8,000	7	8,000 $\frac{9}{100}$ $\frac{7}{12}$ = 420
30 सितंबर, 2019	3,000	6	3,000 $\frac{9}{100}$ $\frac{6}{12}$ = 135
30 नवंबर, 2019	10,000	4	7,000 $\frac{9}{100}$ $\frac{4}{12}$ = 210
31 जनवरी, 2020	6,000	2	6,000 $\frac{9}{100}$ $\frac{2}{12}$ = 90
कुल ब्याज			**1,755**

© NCERT not to be republished

उदाहरण 9

मनु, हैरी तथा अली एक फर्म में साझेदार हैं और वे लाभ एवं हानि के बराबर के भागीदारी के लिए सहमत हैं। फर्म से हैरी एवं अली निम्नलिखित आहरण अपने स्वयं के इस्तेमाल हेतु वर्ष 2016-17 के दौरान करते हैं:

तिथि	हैरी (रु.)	अली (रु.)
2016		
01 अप्रैल	5,000	7,000
01 जुलाई	8,000	4,000
01 दिसंबर	5,000	5,000
2017		
01 मार्च	4,000	9,000

यदि ब्याज दर 10% वार्षिक है तो आहरणों पर ब्याज को परिकलित कीजिए जबकि प्रत्येक वर्ष 31 मार्च को खाता पुस्तकें बंद होती हैं।

आहरणों पर ब्याज का परिकलन दर्शाता लेखा विवरण

हैरी			अली		
राशि (रु.)	अवधि (मासों में)	उत्पाद (रु.)	राशि (रु.)	अवधि (मासों में)	उत्पाद (रु.)
5,000	12	60,000	7,000	12	84,000
8,000	9	72,000	4,000	9	36,000
5,000	4	20,000	5,000	4	20,000
4,000	1	4,000	10,000	1	10,000
		1,56,000			**1,50,000**

ब्याज की राशि

हैरी $= \dfrac{1,56,000 \quad 10 \quad 1}{100 \quad 12}$ = 1,300 रु.

अली $= \dfrac{1,50,000 \quad 10 \quad 1}{100 \quad 12}$ = 1,250 रु.

स्वयं करें

2. गोविंद एक फर्म का साझेदार है। वह लेखा वर्ष 2016–17 के दौरान निम्नलिखित राशियाँ आहरित करता है।

तिथि	रु.
30 अप्रैल, 2016	6,000
30 जून, 2016	4,000
30 सितंबर, 2016	8,000
31 दिसंबर, 2016	3,000
31 जनवरी, 2017	5,000

© NCERT not to be republished

उपर्युक्त आहरणों पर 6% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज प्रभारित किया जाएगा। खाते प्रत्येक वर्ष 31 मार्च की समाप्ति पर बंद होते हैं।

2. राम और श्याम समान रूप से लाभ-हानि की भागीदारी करने वाले साझेदार हैं। राम नियमित रूप से निजी खर्च हेतु पूरे वित्त वर्ष 2016-17 के दौरान प्रत्येक माह की पहली तिथि को 1,000 रु. आहरित करता है। यदि आहरणों पर 5% की वार्षिक दर से ब्याज प्रभारित किया जाता है तो राम के आहरणों पर ब्याज का परिकलन कीजिए।
3. वर्मा और कौल एक फर्म में साझेदार हैं। साझेदारी विलेख की सहमति के अनुसार 6% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज प्रभारित है। वर्मा ने 01 अप्रैल, 2016 से 31 मार्च, 2017 तक प्रतिमाह, माह के प्रारंभ में ही 2,000 रु. आहरित किए हैं। जबकि कौल ने 01 अप्रैल, 2016 से प्रत्येक तिमाही के प्रारंभ में 3,000 रु. आहरित किए हैं। साझेदारों के आहरणों पर ब्याज परिकलित करें।

जब आहरणों की तिथि स्पष्टीकृत न हो

जब सभी आहरणों की राशि का विवरण तो दिया गया हो परंतु आहरणों की तिथि सुस्पष्ट न हों तब यह माना जाता हैं कि पूरे साल भर धनराशि को अनियमित रूप से निकाला गया है। *उदाहरण के लिए;* शकीला अपनी फर्म से 31 मार्च, 2016 को लेखा वर्ष की समाप्ति तक वर्ष भर के दौरान 60,000 रु. निकाले हैं और उस पर 8% प्रतिवर्ष की ब्याज प्रभारित होती है। इसमें अवधि को 6 माह माना जाएगा, जो कि एक औसत अवधि है और यह माना गया है कि पूरे वर्ष के दौरान अनियमित रूप से राशि आहरित हुई है। प्रभारित ब्याज की राशि 2,400 रु. को इस प्रकार परिकलित करना है।

$$\left(60{,}000 \text{ रु.} \times \frac{8}{100} \times \frac{6}{12}\right) = 2{,}400 \text{ रु.}$$

1.6 एक साझेदार को लाभ की गारंटी

कई बार एक फर्म में एक साझेदार को एक न्यूनतम राशि की गारंटी के साथ शामिल किया जाता है और इसे उसके फर्म से प्राप्त लाभ के भाग के रूप में माना जाता है। यह आश्वासन फर्म के सभी वरिष्ठ साझेदारों द्वारा एक विशेष अनुपात में दिया जा सकता है या फिर निजी तौर से एक वरिष्ठ साझेदार द्वारा भी हो सकता है। इस प्रकार के गारंटी प्राप्त साझेदार को न्यूनतम गारंटीकृत राशि तब देय होती है जब उसके लाभ का भाग लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार गारंटीकृत राशि से कम हो। उदाहरण के लिए, मधुलिका एवं रक्षिता एक फर्म में साझेदार हैं और अपनी फर्म में कनिष्का को 25,000 रु. की न्यूनतम गारंटी देने के साथ, फर्म में उसका भाग मानकर, उसे फर्म में लाना चाहती है। अब मान लीजिए कि फर्म वर्ष के दौरान 1,20,000 रु. का लाभ अर्जित करती है तथा उनकी लाभ विभाजन अनुपात की सहमति, साझेदारों के बीच 2:3:1 के अनुपात की है। अनुपात के अनुसार 1,20,000 रु. में मधुलिका को 40,000 रु. (2/6 1,20,000 रु.) रक्षिता को 60,000 रु. (3/6 1,20,000 रु.) लाभ मिलता है। हालाँकि हिसाब के बाद कनिष्का का भाग, गारंटीकृत राशि से 5,000 रु. कम पड़ता है, जो उसके साझेदारों की राशि से कम है। इस राशि को गारंटी देने वाले साझेदारों मधुलिका एवं रक्षिता द्वारा उनके लाभ विभाजन अनुपात में वहन किया जाएगा जो इस स्थिति में 2:3 है। मधुलिका के भाग में लाभ की कमी 2,000 रु. (2/5 5,000 रु.) और रक्षिता के भाग में

© NCERT not to be republished

3,000 रु. आती है। अब फर्म का कुल लाभ सभी साझेदारों के बीच निम्नानुसार विभाजित होगा : मधुलिका को 38,000 रु. मिलेंगे (उसके भाग 40,000 रु. में 2,000 रु. की कमी) रक्षिता को 57,000 रु. (उसके भाग 60,000 रु. में 3,000 रु. की कमी), कनिष्का को 25,000 रु. (20,000 रु. + 2,000 रु. + 3,000 रु.)।

यदि केवल एक साझेदार गारंटी देता है, मान लीजिए वर्तमान केस में केवल रक्षिता गारंटी देती है, तब कमी की पूरी राशि (5,000 रु.) केवल रक्षिता द्वारा ही वहन की जाएगी। ऐसे मामले में लाभ का वितरण इस प्रकार होगा : मधुलिका 40,000 रु., रक्षिता 55,000 रु. (60,000 रु. – 5,000 रु.) और कनिष्का 25,000 रु. (20,000 रु. + 5,000 रु.)।

उदाहरण 10

मोहित एवं रोहन अपनी फर्म में 2:1 के अनुपात में लाभ एवं हानि के विभाजन के साझेदार हैं। वे अपने साथ राहुल को एक साझेदार के रूप में अपनी फर्म में 1/4 लाभ विभाजन के रूप में शामिल करते हैं और कम-से-कम 50,000 रु. देने की गारंटी देते हैं। लेखा वर्ष के अंत में 31 मार्च, 2015 को उनकी फर्म को 1,60,000 रु. का लाभ हुआ। इसके लिए लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार कीजिए :

मोहित, रोहन और राहुल की पुस्तकें
लाभ एवं हानि विनियोग खाता

नाम *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
मोहित की पूँजी			लाभ व हानि (निवल लाभ)	1,60,000
(लाभ का भाग)	80,000			
घटाया: भाग में कमी	(6,667)	73,333		
रोहन की पूँजी	40,000			
(लाभ का भाग)				
घटाया: (भाग में कमी)	(3,333)	36,667		
राहुल की पूँजी	40,000			
(लाभ का भाग)				
जोड़ा: कमी को प्राप्त किया:				
मोहित से	6,667			
रोहन से	3,333	50,000		
		1,60,000		**1,60,000**

कार्यकारी टिप्पणी

राहुल को फर्म में प्रवेश देने के बाद, लाभ विभाजन का नया अनुपात 2:1:1 है। साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात के आधार पर लाभ निम्नवत आता है :

मोहित = 1,60,000 रु. $\frac{2}{4}$ = 80,000 रु.

रोहन = 1,60,000 रु. $\frac{1}{4}$ = 40,000 रु.

राहुल = 1,60,000 रु. $\frac{1}{4}$ = 40,000 रु.

चूँकि राहुल को लाभ के रूप में 50,000 रु. की न्यूनतम गारंटी दी गई है। अतः वह गारंटी की शेष राशि 10,000 रु. मोहित एवं रोहन के द्वारा लाभ व हानि विभाजन अनुपात में वहन की जाएगी जो कि 2:1 है।

मोहित के लाभ में कमी आएगी 2/3 10,000 रु. = 6,667 रु.
रोहन के लाभ में कमी आएगी 1/3 10,000 रु. = 3,333 रु.

इस प्रकार से, मोहित को 80,000 रु. – 6,667 रु. = 73,333 रु. प्राप्त होगा और रोहन को 40,000 रु. –3,333 रु. = 36,667 रु. प्राप्त होगा और राहुल को 40,000 रु. + 6,667 रु. + 3,333 रु. = 50,000 रु. फर्म से लाभ के रूप में प्राप्त होगा।

नए लाभ विभाजन अनुपात में परिकलन

नए साझेदार राहुल का भाग $\frac{1}{4}$ है। शेष लाभ $1-\frac{1}{4}=\frac{3}{4}$ है। यह शेष लाभ मोहित एवं रोहन के बीच 2:1 के अनुपात में विभाजित होगा।

मोहित का नया भाग = $\frac{3}{4}\ \frac{2}{3}=\frac{2}{4}$

रोहन का नया भाग = $\frac{3}{4}\ \frac{1}{3}=\frac{1}{4}$

अतः, लाभ विभाजन अनुपात = $\frac{2}{4}:\frac{1}{4}:\frac{1}{4}$ = 2:1:1

उदाहरण 11

अरूण, वरूण और तरूण लॉ फर्म में साझेदार हैं और 5:3:2 के अनुपात में लाभ व हानि का विभाजन करते हैं। साझेदारी संलेख के अनुसार :

(i) पूँजी पर ब्याज 5% प्रतिवर्ष

(ii) अरूण को 6,00,000 रू. के वार्षिक शुल्क की गारन्टी फर्म द्वारा दी गई है।

(iii) तरूण को पूँजी पर ब्याज के अतिरिक्त 2,50,000 रू. के लाभ की गारण्टी दी गई है। यदि किसी वर्ष यह धनराशि कम है तो इस कमी की पूर्ति अरूण और वरूण 2:3 के अनुभाग में पूरा करेंगे।

© NCERT not to be republished

मार्च 31, 2019 को अरूण ने 3,20,000 रू. का शुल्क अर्जित किया तथा फर्म का लाभ 8,60,000 रू. रहा। यदि अप्रैल 01, 2019 को साझेदारों की पूँजी 30,00,000 रू. (अरूण), 3,00,000 रू. (वरूण) और 2,00,000 रू. (तरूण) है तो लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार करें तथा कार्यकारी टिप्पणियाँ भी दें।

हल

अरुण, वरुण और तरुण की पुस्तकें
मार्च 31, 2019 को लाभ एवं हानि विनियोग खाता

ववरण	राशि (रु.)	विवरण	राशि (रु.)
पूँजी पर ब्याज		लाभ व हानि?	8,60,000
अरूण – 15,000		(शुद्ध लाभ)	
वरूण – 15,000			
तरूण – 10,000	40,000	अरूण की पूँजी	2,80,000
साझेदारी पूँजी खाता :			
अरूण – 5,50,000			
(–)कमी – (12,000)	5,38,000		
वरूण – 3,30,000			
(–)कमी – (18,000)	3,12,000		
तरूण – 2,2,000			
(+)कमी की पूर्ति			
अरूण – 12,000			
वरूण – 18,000	2,50,000		
	11,40,000		**11,40,000**

उदाहरण 12

जॉन एवं मैथ्यू 3:2 के अनुपात से लाभ एवं हानि का विभाजन करते हैं। वे अपने साथ मोहंती को 1/6 लाभ के विभाजन पर शामिल करते हैं। जॉन ने व्यक्तिगत रूप से पूँजी पर 10% वार्षिक की दर से ब्याज प्रभारित करने के बाद यह गारंटी दी कि यह लाभ राशि प्रति वर्ष 30,000 रु. से कम नहीं रहेगी। फर्म में साझेदारों की पूँजी इस प्रकार से है : जॉन 2,50,000 रु., मैथ्यू 2,00,000 रु. तथा मोहंती रु. 1,50,000 रु. को 31 मार्च, 2015 को वर्ष की समाप्ति पर, पूँजी पर ब्याज निकालने से पहले लाभ 1,50,000 रु. था। यदि नया लाभ विभाजन अनुपात 3:2:1 है तो लाभ एवं हानि विनियोग खाता प्रदर्शित करें।

© NCERT not to be republished

हल

जॉन, मैथ्यू और मोहंती की पुस्तकें

लाभ एवं हानि विनियोग खाता

नाम *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
पूँजी पर ब्याज :			निवल लाभ	1,50,000
जॉन	25,000			
मैथ्यू	20,000			
मोहंती	15,000	60,000		
पूँजी खाता:				
जॉन	45,000			
घटाया: (भाग की कमी)	(15,000)	30,000		
मैथ्यू		30,000		
मोहंती	15,000			
जोड़ा: (मोहंती में) जॉन से प्राप्त कमी का भाग	15,000	30,000		
		1,50,000		**1,50,000**

कार्यकारी टिप्पणी :

पूँजी पर ब्याज निकालने के बाद लाभ 90,000 रु. है जिसे 3:2:1 के अनुपात में वितरित किया गया, जो इस प्रकार से है: जॉन 45,000 रु. (3/6 90,000 रु.), मैथ्यू 30,000 रु. और मोहंती 15,000 रु.। इसमें मोहंती को दी गई गारंटी के अनुसार लाभ की कमी 15,000 रु. है जिसे जॉन द्वारा वहन किया जाएगा। इस प्रकार से जॉन को 45,000 रु. – 15,000 रु. = 30,000 रु. मिलते हैं और मैथ्यू को 30,000 रु. तथा मोहंती को 30,000 रु. (15,000 रु. + 15,000 रु.) मिलते हैं।

उदाहरण 13

महेश एवं दिनेश लाभ एवं हानि का विभाजन 2:1 अनुपात में करते हैं। उन्होंने 01 जनवरी, 2016 को अपनी फर्म में राकेश को 1/10 (दसवें भाग) का भागीदार बनाते हैं और उसे कम से कम 25,000 रु. की गारंटी देते हैं। महेश एवं दिनेश अपनी नाम भागीदारी पूर्ववत ही रखते हैं परन्तु राकेश की गारंटी के खाते में कोई कमी आने पर उसे मिलकर क्रमश: 3:2 के अनुपात में वहन करने पर सहमत हो जाते हैं। वर्ष की समाप्ति पर 31 दिसंबर, 2016 को फर्म से 1,20,000 रु. लाभ प्राप्त होता है। इसके लिए लाभ व हानि विनियोग खाता तैयार करें।

© NCERT not to be republished

महेश, दिनेश और राकेश की पुस्तकें
लाभ एवं हानि विनियोग खाता

नाम *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
पूँजी खाते:			निवल लाभ	1,20,000
(लाभ की भागीदारी हेतु)				
महेश	72,000			
(6/10 1,20,000 रु.)				
घटाया: शेयर की कमी	(7,800)	64,200		
दिनेश	36,000			
(3/10 1,20,000 रु.)				
घटाया: शेयर की कमी	(5,200)	30,800		
राकेश	12,000			
जोड़ा: कमी से				
प्राप्ति का भाग:				
महेश	7,800			
दिनेश	5,200	25,000		
		1,20,000		**1,20,000**

कार्यकारी टिप्पणी:

नया लाभ विभाजन अनुपात निम्नानुसार परिकलित होगा:

राकेश की भागीदारी का 1/10 (दसवाँ) भाग है। शेष लाभ 9/10 महेश एवं दिनेश के बीच विभाजित किया जाएगा, जिसका अनुपात 2 : 1 है

यहाँ महेश की लाभ में भागीदारी होगी $\frac{2}{3} \quad \frac{9}{10} = \frac{3}{10}$

दिनेश की लाभ में भागीदारी होगी $\frac{1}{3} \quad \frac{9}{10} = \frac{3}{10}$

अब नया अनुपात बनता है $\frac{3}{5} : \frac{3}{10} : \frac{1}{10}$ या 6 : 3 : 1

लाभ में महेश की भागीदारी = 1,20,000 रु. $\frac{6}{10}$ = 72,000 रु.

लाभ में दिनेश की भागीदारी = 36,000 रु.

लाभ में राकेश की भागीदारी = 12,000 रु.

यहाँ राकेश के लाभ में आई कमी को महेश तथा दिनेश द्वारा 3 : 2 के अनुपात में वहन की जाएगी। इसमें महेश 13,000 रु. का 3/5, अर्थात 7,800 रु. और राकेश 13,000 रु. का 2/5, अर्थात 5,200 रु. वहन करेगा। इस प्रकार से, फर्म का लाभ निम्नानुसार विभाजित होगा :

महेश को प्राप्त होंगे 72,000 रु. – 7,800 रु. = 64,200 रु.

दिनेश को प्राप्त होंगे 36,000 रु. – 5,200 रु. = 30,800 रु.

राकेश को प्राप्त होंगे 12,000 रु. + 7,800 रु. + 5,200 रु. = 25,000 रु.

© NCERT not to be republished

स्वयं करें

कविता एवं ललित 2:1 के अनुपात में लाभ विभाजन के साझेदार हैं। दोनों मोहन को अपने साथ लाभ 2,500 रु. की न्यूनतम गारंटी के साथ व्यवसाय में साझेदार बनाने को सहमत हो गए। साथ ही तय किया कि यदि गारंटी में कमी हुई तो वे लाभ विभाजन अनुपात में इसे वहन करेंगे। कविता एवं ललित के बीच लाभ नहीं बदला। वर्ष 2006-07 के लिए फर्म का अर्जित लाभ 76,000 रु. था। साझेदारों के बीच लाभ का वितरण दर्शाएँ।

1.7 पूर्व समायोजन

कई बार अंतिम लेखे तैयार करने के बाद, लेन-देन के अभिलेखन में चूक या त्रुटियाँ या संक्षेप में लेखा विवरण की तैयारी में गलतियाँ दृष्टिगत होती हैं एवं भागीदारों में लाभ विभाजित किया जा चुका होता है। यह चूक, पूँजी पर ब्याज, आहरणों पर ब्याज, साझेदारों के ऋण पर ब्याज या साझेदार के वेतन या कमीशन अथवा सीमा से बाहर के खर्चो से संबंधित हो सकती हैं। इसके साथ हो सकता है कि साझेदारी विलेख में या लेखांकन व्यवस्था में बदलाव के प्रावधान की बातें हो सकती हैं। इन सभी प्रकार के चूक या त्रुटि के प्रभाव को सुधारने के लिए समायोजन की आवश्यकता होती है। यहाँ पर पुराने खाता लेखों को बदलने की अपेक्षा आवश्यक समायोजनों को लाभ एवं हानि समायोजन खातें/या फिर सीधे संबंधित साझेदार के पूँजी खाते के द्वारा किया जा सकता है। इसे निम्नलिखित उदाहरण की मदद से वर्णित किया गया है।

रमीज एवं जहीर बराबर के साझेदार हैं। 01 अप्रैल, 2015 को उनकी पूँजी क्रमश: 50,000 रु. तथा 1,00,000 रु. है। वित्त वर्ष के समापन में 31 मार्च, 2016 को लेखा खाता तैयार करने के उपरांत यह पाया गया कि साझेदारी विलेख में वर्णित 6% प्रतिवर्ष ब्याज की दर को, लाभ विभाजित करने से पहले, पूँजी खातों में नहीं जमा किया गया है। उपर्युक्त स्थिति को इस प्रकार से सरलीकृत किया जा सकता है। साझेदारों के खातों में परिकलन से प्राप्त पूँजी खाते के ब्याज को जमा नहीं किया गया है जो कि रमीज के लिए 3,000 रु. (6 100 50,000 रु.) तथा जहीर के लिए 6,000 रु. (6 100 1,00,000 रु.) = कुल राशि 9,000 रु. होती है। यदि पूँजी पर ब्याज दिया होता तो फर्म के लाभ में 9,000 रु. कम हो जाते। इस ऋटि के कारण, लाभ एवं हानि खाते के अनुसार लाभ की संपूर्ण राशि (9,000 रु. के समायोजन के बिना) को साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात पर विभाजित किया जाएगा। इस त्रुटि का संशोधन किस प्रविष्टि द्वारा किया जाएगा।

(अ) लाभ व हानि समायोजन खाते के माध्यम से

		(रु.)	(रु.)
(i) लाभ एवं हानि समायोजन खाता	नाम	9,000	
रमीज के पूँजी खाते से			3,000
जहीर के पूँजी खाते से			6,000
(पूँजी पर ब्याज)			
(ii) रमीज का पूँजी खाता	नाम	4,500	
जहीर का पूँजी खाता	नाम	4,500	
लाभ एवं हानि समायोजन खाते से			9,000
(समायोजन पर हानि)			

© NCERT not to be republished

(ब) साझेदारों के पूँजी खातों में सीधे समायोजित

साझेदारों के पूँजी खातों में प्रत्यक्ष समायोजन हेतु साझेदारों के पूँजी खातों में त्रुटि के निवल प्रभाव ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम एक विवरण तैयार किया जाता है जिसके माध्यम से समायोजन प्रविष्टियाँ अभिलेखित की जाती हैं।

पूँजी पर ब्याज छोड़ने (विलोपन) के लिए किए जाने वाले समायोजन को दर्शाता खाता विवरण

विवरण	*रमीज* (रु.)	*जहीर* (रु.)
(i) वह राशि जिसे पूँजी पर ब्याज के रूप में जमा किया जाना चाहिए।	3,000 (जमा)	6,000(जमा)
(ii) वह राशि जो वास्तविक रूप से लाभ के भाग के रूप में जमा की गई। (9,000 रु. बराबर विभाजित)	4,500 (नाम)	4,500 (नाम)
(i) और (ii) के बीच विभेद (निवल प्रभाव)	**नाम 1,500 (आधिक्य)**	**जमा 1,500 (कमी)**

इस से तात्पर्य यह है कि रमीज के खाते में 1,500 रु. अतिरिक्त जमा हुए जबकि जहीर के खाते में 1,500 रु. कम जमा हुए। इस चूक को सुधारने के क्रम में रमीज की पूँजी से 1,500 रु. नाम किया जाना तथा 1,500 रु. जहीर के खाते में जमा किया जाना चाहिए। इस समायोजन के लिए रोज़नामचा प्रविष्टि निम्नानुसार होगी:

		(रु.)	(रु.)
रमीज का पूँजी खाता	नाम	1,500	
जहीर के पूँजी खाते से			1,500
(पूँजी पर ब्याज समायोजन के लिए)			

उदाहरण *14*

नुसरत, सोनू तथा हिमेश एक फर्म में 5:3:2 के अनुपात से लाभ व हानि के विभाजन पर साझेदार हैं। साझेदारी विलेख में प्रावधान है कि आहरणों पर 10% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज प्रभारित किया जाए। मार्च 31, 2015 में वर्ष की समाप्ति पर नुसरत, सोनू तथा हिमेश के आहरण क्रमश: 20,000 रु., 15,000 रु. तथा 10,000 रु. थे। अंतिम लेखा तैयार करने के बाद यह पाया गया कि आहरणों पर ब्याज के बारे में ध्यान नहीं दिया गया। आवश्यक समायोजन रोज़नामचा प्रविष्टि बनाएँ।

हल

आहरणों पर ब्याज के लिए समायोजन किए जाने वाला लेखा विवरण प्रदर्शन

विवरण	*नुसरत* (रु.)	*सोनू* (रु.)	*हिमेश* (रु.)	*कुल* (रु.)
वह राशि जिसे आहरणों पर ब्याज के रूप में नाम किया जाना चाहिए था	2,000 (नाम)	1,500 (नाम)	1,000 (नाम)	4,500
वह राशि जिसे लाभ के भाग के रूप में जमा किया जाना चाहिए था	2,250 (जमा)	1,350 (जमा)	900 (जमा)	4,500
अपेक्षित समायोजन	**जमा 250 (कमी)**	**जमा 150 (आधिक्य)**	**जमा 100 (आधिक्य)**	

आहरणों पर ब्याज के समायोजन के लिए रोज़नामचा प्रविष्टि निम्न होगी:

		(रु.)	(रु.)
सोनू का पूँजी खाता	नाम	150	
हिमेश का पूँजी खाता	नाम	100	
नुसरत के पूँजी खाते से			250
(आहरणों पर ब्याज के विलोपन के लिए समायोजन)			

स्वयं करें

1. गुप्ता एवं सरीन एक फर्म में 3:2 के अनुपात में लाभ के सहभाजन पर साझेदार हैं। उनकी स्थिर पूँजी: गुप्ता 2,00,000 रु. तथा सरीन 3,00,000 रु. है। वर्ष के लिए लेखा तैयार करने के पश्चात यह बात सामने आई कि साझेदारी विलेख में, पूँजी पर 10% वार्षिक की दर से ब्याज देने का प्रावधान है, जिसे लाभ के बँटवारें से पहले साझेदारों के पूँजी खाते में जमा नहीं किया गया। त्रुटि के संशोधन हेतु समायोजन प्रविष्टि को अभिलेखित करें।
2. कृष्णा, संदीप तथा करीम 3:2:1 के अनुपात में लाभ की भागीदारी के आधार पर साझेदार हैं। उनकी स्थिर पूँजी है : कृष्णा 1,20,000 रु., संदीप 90,000 रु. तथा करीम 60,000 रु.। वर्ष 2016-17 के लिए ब्याज को 6% वार्षिक के अनुसार जमा किया गया, जबकि 5% वार्षिक की दर से होना चाहिए था। समायोजन प्रविष्टि का अभिलेखन लाभ व हानि समायोजन खाता तैयार कर के करें।
3. लीला, मीरा तथा नेहा एक फर्म में साझेदार हैं और उन्होंने 31 मार्च, 2016 के वर्ष की समाप्ति पर 9% प्रति वर्ष की दर से तीनों वर्ष के लिए ब्याज छोड़ दिया। उनकी स्थिर पूँजी जिस पर ब्याज देना अनुमत था वह पूरी अवधि के दौरान इस प्रकार था: लीला 80,000 रु., मीरा 60,000 रु. और नेहा 1,00,000 रु. । पिछले तीन वर्षों तक उनका लाभ भागीदारी का अनुपात निम्नानुसार था :

वर्ष	लीला	मीरा	नेहा
2016-17	2	2	2
2015-16	4	5	1
2014-15	1	2	2

समायोजन प्रविष्टि का अभिलेखन करें।

© NCERT not to be republished

इस अध्याय में प्रस्तुत शब्दावली

- साझेदारी
- साझेदारी फर्म
- साझेदारी विलेख
- स्थिर पूँजी खाता
- अस्थिर पूँजी खाता
- लाभ व हानि समायोजन खाता
- पूँजी पर ब्याज
- आहरणों पर ब्याज
- औसत अवधि
- एक साझेदार को लाभ की गारंटी
- लाभ एवं हानि विनियोग खाता
- साझेदारों का चालू खाता

सारांश

1. *साझेदारी एवं उसकी अनिवार्य विशिष्टताओं की परिभाषा :* साझेदारी को इस प्रकार से परिभाषित किया गया है– ''व्यक्तियों के बीच संबंध, जो एक व्यवसाय के लाभों की हिस्सेदारी के लिए सहमत होते हैं, जिसे सभी व्यक्तियों द्वारा या किसी एक व्यक्ति द्वारा संचालित किया जाता है।'' साझेदारी की अनिवार्य विशिष्टताएँ ये हैं (i) एक साझेदारी को स्थापित करने में कम–से–कम दो व्यक्ति अवश्य होने चाहिए; (ii) यह एक सहमति/समझौते द्वारा तैयार होती है; (iii) यह समझौता कुछ कानूनी कार्रवाहियों को वहन करने वाला होना चाहिए; (iv) लाभ एवं हानि विभाजन; तथा (v) साझेदारों के बीच पारस्परिक अभिकरण का संबंध।

2. *साझेदारी विलेख से तात्पर्य एवं विषय वस्तु :* एक ऐसा अभिलेख जिसमें साझेदारों के बीच सहमति के साथ शर्तें आदि समाहित होती हैं, साझेदारी विलेख कहलाता है। इसके अंतर्गत साझेदारों के बीच संबंधों को प्रभावित करने वाले सभी पहलू शामिल होते हैं जिसमें व्यवसाय के उद्देश्य, प्रत्येक साझेदार द्वारा पूँजी का सहयोग, साझेदारों द्वारा किया जाने वाला लाभ व हानि विभाजन अनुपात, पूँजी पर ब्याज हेतु साझेदारों के अधिकार, ऋण एवं आहरणों पर काम आदि के साथ–साथ साझेदार के प्रवेश, अवकाश ग्रहण, मृत्यु तथा फर्म के विघटन आदि के नियम आदि सम्मिलित होते हैं।

3. *लेखांकन पर लागू होने वाले साझेदारी अधिनियम 1932 के प्रावधान:* यदि एक साझेदारी विलेख कुछ विशेष बातों के बारे में मूक होता है तो भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के उपयुक्त प्रावधान लागू होते हैं। साझेदारी अधिनियम के अनुसार, साझेदारों में लाभ की भागीदारी एक समान होती है, कोई भी साझेदार पारिश्रमिक के लिए अधिकृत नहीं होता, पूँजी पर कोई ब्याज अनुमत नहीं होता और आहरणों पर ब्याज प्रभारित नहीं होता है। हालाँकि; यदि कोई साझेदार फर्म को ऋण देता है तो वह व्यक्ति 6% प्रति वर्ष ब्याज दर से ब्याज पाने का हकदार होता है।

4. *स्थिर एवं अस्थिर पूँजी विधि के अंतर्गत पूँजी खातों की तैयारी करना:* फर्म की पुस्तकों में सभी साझेदारों से जुड़े हुए लेन–देन को उनके पूँजी खातों में अभिलेखित किया जाता है। पूँजी खातों को अनुरक्षित करने के किए दो विधियाँ होती हैं जो कि ये हैं: (i) अस्थिर पूँजी विधि; (ii) स्थिर पूँजी विधि। अस्थिर पूँजी विधि के अंतर्गत एक साझेदार से संबंधित सभी लेन–देन सीधे उसके पूँजी खातों में अभिलेखित किए जाते हैं। स्थिर पूँजी विधि के अंतर्गत पूँजी की राशि सदैव स्थिर ही रहती है। इस विधि के अंतर्गत, पूँजी पर ब्याज, आहरणों पर ब्याज, आहरणों, वेतन, कमीशन, लाभ या हानि का भाग एक अलग खाते में अभिलेखित किया जाता है, जिसे 'साझेदार का चालू खाता' कहा जाता है।

© NCERT not to be republished

5. *लाभ एवं हानि का वितरण:* साझेदारों के बीच लाभ व हानि का वितरण लाभ एवं हानि विनियोग खाते के माध्यम से दर्शाया जाता है, जो कि केवल लाभ एवं हानि खाते का विस्तार मात्र होता है। इसके अंतर्गत ब्याज के साथ पूँजी तथा साझेदारों के लिए अनुमत वेतन एवं कमीशन को नाम किया जाता है और निवल लाभ एवं हानि तथा आहरणों पर ब्याज को जमा किया जाता है। साझेदारों के बीच लाभ एवं हानि के शेष को लाभ विभाजन अनुपात में वितरित किया जाता है और उनसे संबंधित पूँजी खातों में हस्तांतरित कर दिया जाता है।

6. *एक साझेदार की न्यूनतम लाभ गारंटी का निपटारा:* कभी–कभी एक साझेदार को लाभ के भाग के रूप में एक न्यूनतम राशि की गारंटी दी जाती है। यदि किसी वर्ष, लाभ वितरण अनुपात के अनुसार परिकलन के बाद उसके भाग का लाभ गारंटीकृत राशि से कम होता है तो यह कमी गारंटी प्राप्त साझेदार के भाग में सहमति के अनुपात में भुगतान किया जाता है।

7. *पूर्व समायोजनों का निपटारा:* यदि अंतिम लेखा खाते तैयार किए जा चुके हैं और इसके बाद कोई त्रुटि ध्यान में आती है जैसे कि पूँजी पर ब्याज, आहरणों पर ब्याज, साझेदारों का वेतन, कमीशन इत्यादि से संबंधित है तो आवश्यक समायोजनों को साझेदार के पूँजी खातों में लाभ एवं हानि समायोजन खाते के माध्यम से किया जा सकता है जो कि इस त्रुटि का संशोधन है।

8. *एक साझेदारी फर्म के अंतिम खाते तैयार करना :* यहाँ पर एक स्वामित्व वाली फर्मों तथा साझेदारी फर्मों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं होता है, सिवाय इसके कि साझेदारी फर्म में एक अतिरिक्त खाता होता है जिसे लाभ व हानि विनियोग खाता कहते हैं। यह साझेदारों के बीच लाभ व हानि विभाजन को प्रदर्शित करता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

लधु उत्तर प्रश्न

1. साझेदारी विलेख क्या है? परिभाषा दीजिए।
2. एक साझेदारी समझौता लिखित में क्यों होना चाहिए।
3. उन मदों की सूची बनाएँ जो कि एक साझेदार के खातों में नाम या जमा में डाली जाती है:
   (i) जब पूँजी स्थिर हो।
   (ii) जब पूँजी अस्थिर हो।
4. लाभ व हानि समायोजन खाता क्यों तैयार किया जाता है? वर्णन करें।
5. कोई दो परिस्थितियाँ बताएँ जिनमें साझेदारों की स्थिर पूँजी परिवर्तित हो सकती है।
6. प्रत्येक तिमाही के पहले दिन यदि एक स्थिर राशि का आहरण होता है, जिसके लिए आहरणों पर ब्याज के परिकलन हेतु क्या अवधि मानी जाएगी?
7. साझेदारी विलेख में स्पष्ट न होने की स्थिति में, निम्नलिखित से संबंधित नियमों की व्याख्या करें :
   (i) लाभ या हानि विभाजन
   (ii) साझेदारों की पूँजी पर ब्याज
   (iii) साझेदारों के आहरणों पर ब्याज
   (iv) साझेदारों के ऋणों पर ब्याज
   (v) एक साझेदार का वेतन

© NCERT not to be republished

दीर्घ उत्तर प्रश्न

1. साझेदारी क्या है, इसकी प्रमुख विशिष्टताओं की व्याख्या करें।
2. भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के उन प्रमुख प्रावधानों की व्याख्या करें जो साझेदारी विलेख में अनुपस्थिति होने की दिशा में लागू होते हैं।
3. व्याख्या करें कि एक साझेदारी समझौते का लिखित में होना क्यों उत्तम माना जाता है।
4. वर्णन करें कि विभिन्न स्थितियों में किए गए आहरणों पर ब्याज कैसे परिकलित किया जाता है।
5. आप वर्तमान साझेदार के साथ लाभ विभाजन अनुपात को कैसे बदलेंगे? अपने उत्तर की व्याख्या के लिए कल्पित अंकों को अपनाएँ।

संख्यात्मक प्रश्न

1. त्रिपाठी एवं चौहान एक फर्म में 3:2 के अनुपात में लाभ व हानि विभाजन के साझेदार हैं और उनकी पूँजी 01 अप्रैल, 2019 को क्रमशः, 60,000 रु. एवं 40,000 रु. है। वर्ष के दौरान वे 30,000 रु. का लाभ कमाते हैं। साझेदारी विलेख के अनुसार दोनों साझेदार वेतन के रूप में प्रति माह 1,000 रु. वेतन के अधिकारी है तथा पूँजी पर 5% प्र. व की दर से ब्याज के लिए सहमत हैं। आहरण पर 5.1 प्र. व ब्याज भी निश्चित किया गया है। नियमित अवधि का पालन न करते हुए त्रिपाठी ने 12,000 रु. व चौहान ने 8,000 रु. आहरित किए हैं। पूँजी स्थिर है इस आधार पर साझेदार का पूँजी और चालू खाता तैयार करें।
   (**उत्तर:** त्रिपाठी का चालू खाता शेष 3,600 रु. तथा चौहान का चालू खाता शेष 6,400 रु. है। त्रिपाठी की पूँजी 60,000 रु. और चौहान की पूँजी 40,000 रु. है)

2. अनुभा एवं काजल एक फर्म में 2:1 के अनुपात के लाभ व हानि विभाजन के साझेदार हैं, उनकी पूँजी क्रमशः 90,000 रु. तथा 60,000 रु. है। वर्ष के दौरान लाभ 45,000 रु. है। साझेदारी विलेख के अनुसार दोनों साझेदार वेतन के लिए अनुमत है जिसमें अनुभा 700 रु. प्रति माह तथा काजल को 500 रु. प्राप्त होते हैं। वर्ष के दौरान आहरण अनुभा 8,500 रु. तथा काजल 6,500 रु. थे। आहरणों पर 5% की दर से ब्याज प्रभारित होता है। साझेदार का पूँजी खाता तैयार करें और मान कर चलें की पूँजी अस्थिर है।
   (**उत्तर:** अनुभा का पूँजी खाता शेष 1,09,860 रु. तथा काजल का पूँजी खाता शेष 70,140 रु.)

3. हर्षद एवं धीमान 01 अप्रैल, 2019 से साझेदार हैं। इनके बीच कोई साझेदारी समझौता हस्ताक्षरित नहीं किया है। दोनों ने क्रमशः 4,00,000 रु. तथा 1,00,000 रु. पूँजी के रूप में लगाएँ हैं। इसके साथ ही हर्षद ने 01 अक्तूबर, 2019 को, 1,00,000 रु. अग्रिम राशि लगाई है। अस्वस्थ होने के कारण हर्षद 01 अगस्त से 30 सितंबर, 2016 तक व्यवसाय में भाग नहीं ले सका। वर्ष के अंत में 31 मार्च, 2020 में फर्म को 1,80,000 रु. का लाभ प्राप्त हुआ। लेकिन निम्न बातों के लिए हर्षद एवं धीमान के बीच विवाद पैदा हो गया।
   हर्षद का दावा है:
   (i) उसे अपनी पूँजी एवं दिए गए ऋण पर 10% प्रति वर्ष की दर से ब्याज मिलना चाहिए ।
   (ii) लाभ को पूँजी के अनुपात में वितरित किया जाना चाहिए।
   धीमान का दावा है:
   (i) लाभ का वितरण एक समान होना चाहिए;

(ii) हर्षद की अनुपस्थिति में व्यवसाय अकेले चलाने के लिए उस अवधि का पारिश्रमिक 2,000 रु. प्रतिमाह की दर से मिलना चाहिए;

(iii) पूँजी एवं ऋण पर 6% प्रतिवर्ष की दर ब्याज अनुमत किया जाना चाहिए।

आप से यह अपेक्षा की जाती है कि हर्षद एवं धीमान के बीच विवाद हल करें। इसके साथ ही लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार करें।

(**उत्तर :** लाभ में हर्षद का भाग 88,500 रु. लाभ में धीमान का भाग 88,500 रु.)

4. 01 अप्रैल, 2019 को आकृति एवं बिंदु वस्त्र निर्माण के व्यवसाय में साझेदारी करती हैं परंतु कोई भी लिखित समझौता नहीं है। उन्होंने क्रमश 5,00,000 रु. तथा 3,00,000 रु. की पूँजी लगाई और 01 अक्तूबर, 2019 को फर्म में 20,000 रु. ऋण के रूप में दिए, जिस पर ब्याज के लिए कोई लिखित समझौता नहीं हुआ। 31 मार्च, 2020 को वर्ष की समाप्ति पर फर्म का लाभ 43,000 रु. हुआ। दोनों साझेदार लाभ के बँटवारें के आधार पर ब्याज के सवाल पर सहमत नहीं हो सकें आप से अपेक्षा की जाती है कि आप दोनों के बीच लाभ के बँटवारें का समाधान, लाभ व हानि विनियोग खाता तैयार करके निकालें साथ ही उत्तर के लिए उचित तर्क प्रस्तुत करें।
(**उत्तर :** लाभ की भागीदारी समान है। आकृति व बिंदु 21,200 रु. पाती हैं)

5. राखी और शिखा क्रमशः 2,00,000 रु. तथा 3,00,000 रु. की पूँजी लगाकर साझेदार बनती हैं। वर्ष की समाप्ति 2015–16 पर लाभ 23,200 रु. होता है। उनके साझेदारी समझौते के अनुसार उनके लाभ का बँटवारा पूँजी के अनुपात में करें परंतु इससे पहले शिखा को 5,000 रु. प्रतिमाह का वेतन तथा साझेदार की पूँजी पर 10% वार्षिक की दर से ब्याज दें। वर्ष के दौरान राखी ने 7,000 रु. तथा शिखा ने 10,000 रु. आहरित किए हैं। आप से अपेक्षा की जाती है कि आप लाभ एवं हानि विनियोग खाता तथा साझेदारों का पूँजी खाता तैयार करें।
(**उत्तर :** राखी की पूँजी 34,720 रु. तथा शिखा 52,000 रु. हेतु हानि हस्तांतरित)

6. लोकेश एवं आज़ाद 3: 2 के अनुपात से लाभ के आधार पर साझेदारी करते हैं जिसमें उन्होंने क्रमशः 50,000 रु. तथा 30,000 रु. लगाए हैं। पूँजी पर 6% की वार्षिक दर से ब्याज प्रभारित करना तय है तथा आज़ाद को वेतन के रूप में 25,000 रु. प्रतिवर्ष देय अनुमत है। वर्ष 2013 के दौरान आज़ाद का वेतन निकालने के बाद लाभ की राशि 12,550 रु. बनती है। इसमें लाभ की राशि का 5% भाग कमीशन के रूप में मैनेजर को देय है। लाभ के विभाजन को दर्शाने वाला खाता तथा साझेदारों का पूँजी खाता तैयार करें।
(**उत्तर :** लोकेश की पूँजी 4,170 रु. तथा आज़ाद की पूँजी 2,780 रु. लाभ हस्तांतरित)

7. मनीष एवं गिरीश के साझेदारी समझौते में यह प्रावधान है कि :
   (i) लाभ का विभाजन बराबर होगा;
   (ii) मनीष को प्रतिमाह 400 रु. का वेतन अनुमत होगा;
   (iii) गिरीश, जो कि बिक्री विभाग का प्रबंध करता है उसे महेश के वेतन को अनुमत करने के बाद कमीशन के रूप में, निवल लाभ से 10% प्र. व कमीशन के रूप में प्राप्त होंगे।
   (iv) साझेदारों की स्थिर पूँजी पर 7% प्र. व की दर से ब्याज देय होगा।
   (v) साझेदारों के वर्ष भर के आहरणों पर 5% की दर से व्याख्या प्रभारित होगी;
   (vi) मनीष एवं गिरीश की स्थिर पूँजी क्रमशः 1,00,000 रु. तथा 80,000 रु. हैं। उनकी वार्षिक आहरित राशि क्रमशः 16,000 रु. एवं 14,000 रु. है। 31 मार्च, 2019 को वर्ष की समाप्ति पर लाभ की राशि 40,000 रु. है।

© NCERT not to be republished

फर्म के लिए लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार करें।

(**उत्तर :** मनीष एवं गिरीश के पूँजी खातों में 10,290 रु. हस्तांतरित किए गए)

8. राम, राजू एवं जॉर्ज एक फर्म में 5:3:2 के अनुपात में लाभ विभाजन पर साझेदार हैं। साझेदारी विलेख के अनुसार जॉर्ज को प्रतिवर्ष 10,000 रु. लाभ के भाग के रूप में प्राप्त होंगे। वर्ष 2019 में निवल लाभ की राशि 40,000 रु. है। लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार करें।

   (**उत्तर :** राम की पूँजी में 18,750 रु., राजू की पूँजी में 11,250 रु. तथा जॉर्ज की पूँजी में 10,000 रु. लाभ हस्तांतरित किया गया)

9. अमन, बबीता एवं सुरेश एक फर्म में साझेदार हैं, इनका लाभ विभाजन अनुपात 2:1:1 है। हालाँकि सुरेश को प्रतिवर्ष लाभ के भाग के रूप में न्यूनतम 10,000 रु. की गारंटी दी हुई है। यदि लाभ में कोई कमी आती है तो वह खाता बबीता द्वारा पूरा किया जाएगा। 31 मार्च, 2019 तथा 2016 को क्रमश: 40,000 रु. तथा 50,000 रु. का लाभ प्राप्त हुआ। दो वर्ष का लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार करें।

   (**उत्तर :** वर्ष 2015 के लिए अमन की पूँजी में 16,000 रु. तथा बबीता की पूँजी में 14,000 रु. तथा सुरेश की पूँजी में 10,000 रु. लाभ को तथा वर्ष 2019 में अमन की पूँजी में 24,000 रु., बबीता की पूँजी में 24,000 रु. तथा सुरेश की पूँजी में 12,000 रु. नाम के हस्तांतरित किए गए)

10. सिम्मी एवं सोनू एक फर्म में साझेदार हैं जो लाभ एवं हानि का विभाजन 3:1 के अनुपात में करते हैं। 31 मार्च, 2016 को वर्ष की समाप्ति पर निवल लाभ 50,000 रु. है।

    निम्नलिखित सूचनाओं को ध्यान में रखते हुए लाभ एवं हानि विनियोग खाता और पूँजी खाते तैयार करें:

    (i) 01 अप्रैल, 2019 को साझेदारों की पूँजी;
    सिम्मी 30,000 रु.; सोनू 60,000 रु.;

    (ii) 01 अप्रैल, 2015 को चालू खाते का शेष;
    सिम्मी 30,000 रु. (जमा); सोनू 1,50,000 रु. (जमा);

    (iii) वर्ष के दौरान साझेदारों की आहरण राशि;
    सिम्मी 20,000 रु.; सोनू 15,000 रु.;

    (iv) पूँजी पर अनुमत ब्याज दर 5% प्रतिवर्ष;

    (v) आहरणों पर प्रभारित ब्याज दर 6% प्रतिवर्ष; एक औसत के अनुसार 6 माह की अवधि;

    (vi) साझेदारों का वेतन : सिम्मी 12,000 रु. तथा सोनू 9,000 रु. । इसके साथ ही साझेदारों का चालू खाता दर्शाएँ।

    (**उत्तर :** सिम्मी की पूँजी में 94,162 रु. तथा सोनू की पूँजी में 31,388 रु. लाभ हस्तांतरित किया गया।)

11. अरविंद और आनन्द साझेदार हैं और 8 : 3:1 के अनुपात में लाभ व हानि को बांटते हैं। अप्रैल 01, 2019 को उनके पूँजी खाते इस प्रकार थे : अरविन्द 4,40,000 रु. और आनन्द 2,60,000 रु.। साझेदार संलेख के अनुबंध के अनुसार साझेदारों को 5% प्र.व. पूँजी पर ब्याज और आहरण पर 6% प्र.व. ब्याज मान्य है। इसके अतिरिक्त अरविन्द को 35,000 रु. का वेतन भी दिया जाएगा। साझेदारों के आहरण इस प्रकार हैं : अरविन्द 40,000 रु. और आनन्द 28,000 रु.। 31 मार्च, 2020 को फर्म की हानि 32,400 रु. थी। लाभ व हानि विनियोग खाता तैयार करें।

    (**उत्तर:** आहरण पर ब्याज: अरविन्द 1,200 रु., आनन्द 840 रु., हानि का बंटवारा : अरविन्द 22,770 रु., आनन्द 7,590 रु.)

12. रमेश और सुरेश एक फर्म में साझेदार हैं तथा उनके लाभ विभाजन अनुपात उनकी पूँजी के अनुसार है जो कि व्यवसाय के प्रारंभ में क्रमश: 80,000 रु. तथा 60,000 रु. लगाई गई थी। फर्म ने 01 अप्रैल, 2015 से व्यवसाय

© NCERT not to be republished

शुरू किया। साझेदारी समझौते के अनुसार पूँजी और आहरणों पर क्रमशः 12% और 10% प्रतिवर्ष ब्याज की दर अनुमत है। रमेश और सुरेश क्रमशः 2,000 रु. तथा 3,000 रु. प्रतिमाह को वेतन के रूप में प्राप्त करते हैं।

वर्ष की समाप्ति पर 31 मार्च, 2016 को उपर्युक्त समायोजनों के करने से पूर्व लाभ 1,00,300 रु. था और रमेश तथा सुरेश के आहरण क्रमशः 40,000 रु. तथा 50,000 रु. थे। आहरणों की राशि पर ब्याज रमेश के लिए 2,000 रु. तथा सुरेश के लिए 2,500 रु. बनते हैं। इनकी पूँजी को अस्थिर मानते हुए लाभ एवं हानि विनियोग खाता तथा साझेदारों का पूँजी खाता तैयार करें।

(**उत्तर :** रमेश की पूँजी में 10,000 रु. तथा सुरेश की पूँजी में 1,200 रु. लाभ हस्तांतरित किया गया।)

13. सुकेश एवं विनीता एक फर्म में साझेदार हैं। उनका साझेदारी समझौता निम्नलिखित प्रावधानों से युक्त है, जिसके अनुसार :

(i) सुकेश एवं विनीता द्वारा लाभ विभाजन अनुपात 3:2;

(ii) पूँजी पर 5% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देय है;

(iii) विनीता को प्रतिमाह 600 रु. वेतन के रूप में प्राप्त होने चाहिए;

31 दिसंबर, 2016 को उनके लेखा खातों से निम्नलिखित शेष निष्कर्ष रूप में प्राप्त हुए हैं:

पूँजी तथा आहरणों पर ब्याज का परिकलन

	सुकेश (रु.)	*विनीता* (रु.)
पूँजी खाते	40,000	40,000
चालू खाते	(जमा) 7,200	(जमा) 2,800
आहरण	10,850	8,150

पूँजी पर ब्याज एवं साझेदार का वेतन निकालने से पहले इस वर्ष में फर्म का निवल लाभ 9,500 रु. रहा। लाभ एवं हानि विनियोग खाता तथा साझेदारों के चालू खाते तैयार करें।

(**उत्तर :** सुकेश की पूँजी में 3,300 रु. तथा विनीता की पूँजी में 2,200 रु. हस्तांतरित हुआ)

14. राहुल, रोहित एवं करन ने 01 अप्रैल, 2014 को क्रमशः 20,00,000 रु. 18,00,000 रु. तथा 16,00,000 रु. से व्यवसाय शुरू किया। वर्ष 2015-16 पर उनका लाभ 1,35,000 रु. था तथा साझेदारों के आहरण राहुल 50,000 रु., रोहित 50,000 रु. तथा करन 40,000 रु. था। लाभों को साझेदार के बीच 3:2:1 में वितरित किया गया। पूँजी पर 5% प्रति वर्ष की दर से ब्याज परिकलित कीजिए।

(**उत्तर :** राहुल 1,00,000 रु., रोहित 90,000 रु., करन 80,000 रु.)

15. सूरजमुखी और गुलाब ने 01 अप्रैल, 2019 को क्रमशः 2,50,000 रु. तथा 1,50,000 रु. के साथ व्यवसाय शुरू किया। 01 अक्तूबर, 2015 को उन्होंने तय किया कि दोनों की पूँजी 2,00,000 रु. प्रत्येक होनी चाहिए। पूँजी सन्निवेश और रोकड़ आहरण के द्वारा उचित समायोजन किए गए। पूँजी पर 10% की दर से ब्याज अनुमत है। 31 मार्च, 2020 को पूँजी पर ब्याज परिकलित कीजिए।

(**उत्तर :** सूरज की पूँजी पर ब्याज 22,500 रु. तथा गुलाब की पूँजी पर ब्याज 17,500 रु. है)

16. 31 मार्च, 2016 के बाद खाता पुस्तकें बंद होने पर मांउटेन, हिल एवं रॉक की पुस्तकें क्रमशः 4,00,000 रु., 3,00,000 रु. तथा 2,00,000 रु. पर थीं। तंदतर यह पाया गया कि पूँजी पर 10% की दर से ब्याज का विलोपन है। पूरे वर्ष का लाभ 1,50,000 रु. था तथा साझेदारों के आहरण मांउटेन 20,000 रु., हिल 15,000 रु. तथा

रॉक 10,000 रु. थे। पूँजी पर ब्याज परिकलित करें।

(**उत्तर :** पूँजी पर ब्याजः माउंटेन 37,000 रु., हिल 26,500 रु. तथा रॉक 16,000 रु.)

17. नीलकांत एवं महादेव के तुलन पत्र का 31 मार्च, 2020 को निष्कर्ष निम्नवत है।

31 मार्च, 2020 को तुलन पत्र

देनदारियाँ	*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
नीलकांत की पूँजी	10,00,000	विविध परिसंपत्तियाँ	30,00,000
महादेव की पूँजी	10,00,000		
नीलकांत का चालू खाता	1,00,000		
महादेव का चालू खाता	1,00,000		
लाभ व हानि विनियोजन (मार्च 2007)	8,00,000		
	30,00,000		**30,00,000**

पूरे वर्ष के दौरान महादेव का आहरण 30,000 रु. है तथा वर्ष 2016 के दौरान लाभ 10,00,000 रु. है। वर्ष के अंत 31 मार्च, 2016 को पूँजी पर ब्याज 5% प्रति वर्ष की दर से परिकलित करें।

(**उत्तर :** नीलकांत की पूँजी पर ब्याज 50,000 रु. तथा महादेव की पूँजी 50,000 रु. है)

18. ऋषि एक फर्म में साझेदार है। 31 मार्च, 2016 तक वह निम्न आहरण करता है।

01 मई, 2019	12,000 रु.
31 जुलाई, 2019	6,000 रु.
30 सितंबर, 2019	9,000 रु.
30 नवंबर, 2019	12,000 रु.
01 जनवरी, 2020	8,000 रु.
31 मार्च, 2020	7,000 रु.

आहरणों पर 9% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देय है। आहरणों पर ब्याज परिकलित कीजिए।

(**उत्तरः** आहरणों पर ब्याज 2,295 रु.)

19. मोली और गोलू के पूँजी खाते 01 अप्रैल, 2016 को क्रमशः 40,000 रु. तथा 20,000 रु. का शेष दर्शाते हैं। वे 3:2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। पूँजी पर 10% की दर से ब्याज अनुमत है तथा आहरणों पर 12% की दर से प्रभार अनुमत है। गोलू ने 01 अगस्त, 2016 को 10,000 रु. का ऋण फर्म को दिया। वर्ष के दौरान मोली ने 1,000 रु. प्रति माह के प्रारंभ में आहरित किए, जब कि गोलू ने प्रति माह के अंत में 1,000 रु. आहरित किए। उपर्युक्त समायोजनों के करने से पूर्व लाभ 20,950 रु. था। आहरणों पर ब्याज परिकलित कीजिए तथा साझेदारों के पूँजी खाते तैयार कीजिए।

(**उत्तर :** आहरणों पर ब्याजः मोली 7,810 रु., गोलू 660 रु.; लाभः मोली 9,594 रु., गोलू 6,396 रु.)

© NCERT not to be republished

20. राकेश एवं रोशन एक फर्म में 3:2 के अनुपात में लाभ विभाजन से क्रमशः 40,000 रु. तथा 30,000 रु. के साथ साझेदार हैं। उन्होंने अपने निजी उपयोग हेतु निम्नलिखित आहरण वर्ष भर किए हैं।

राकेश	*माह*	*रु.*
	03 मई, 2019	600
	30 जून, 2019	500
	31 अगस्त, 2019	1,000
	01 नवंबर, 2019	400
	31 दिसंबर, 2019	1,500
	31 जनवरी, 2020	300
	01 मार्च, 2020	700
रोशन	*प्रत्येक माह के प्रारंभ में*	400

6% वार्षिक की दर से आहरण पर ब्याज प्रभारित होना है। आहरणों पर ब्याज परिकलित कीजिए जबकि प्रतिवर्ष 31 मार्च, 2016 को खाता पुस्तकें बंद होती हैं।

(**उत्तर:** राकेश के आहरणों पर ब्याज 126.5 रु.; रोशन के आहरण पर ब्याज 156 रु. के निकट पूर्णांक किए गए)

21. हिमांशु प्रतिमाह 2,500 रु. आहरित करता है। साझेदारी विलेख के अनुसार आहरणों पर 12% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देय है। 31 मार्च, 2016 को वर्ष की समाप्ति पर हिमांशु के आहरणों पर ब्याज का परिकलन करें।

(**उत्तर :** आहरणों पर ब्याज 1,650 रु. है)

22. भाराम एक फर्म में साझेदार है। वह 12 महीनों तक प्रत्येक माह के अंत में 3,000 रु. आहरित करता है। फर्म के लेखा खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को बंद होते हैं। यदि ब्याज दर 10% वार्षिक है तो आहरणों पर ब्याज का परिकलन करें।

(**उत्तर :** आहरणों पर ब्याज 1,950 रु. है)

23. राज एवं नीरज एक फर्म में साझेदार हैं। 01 अप्रैल, 2015 को उनकी पूँजी क्रमशः 2,50,000 रु. तथा 1,50,000 रु. थी। वे लाभ की भागीदारी बराबर करते हैं। 01 जुलाई, 2015 को वे निर्णय लेते हैं कि उन दोनों की पूँजी 1,00,000 रु. प्रत्येक होनी चाहिए। उनकी पूँजी में आवश्यक समायोजन रोकड़ को सन्निविष्ट करके अथवा आहरित करके किया गया। पूँजी पर 8% वार्षिक की दर से ब्याज अनुमत है। वर्ष की समाप्ति 31 मार्च, 2015 पर दोनों साझेदारों की पूँजी पर ब्याज की संगणना करें।

(**उत्तर :** राज को 11,000 रु. तथा नीरज को 9,000 रु. मिले)

24. अमित और भोला एक फर्म में साझेदार हैं। उनका लाभ विभाजन अनुपात 3:2 है। उनके साझेदारी विलेख के अनुसार आहरणों पर ब्याज की दर 10% वार्षिक प्रभारित होनी है। वर्ष 2014 के दौरान उनके आहरण क्रमशः 24,000 रु. तथा 16,000 रु. थे। यह मानकर कि उन्होंने पूरे वर्ष नियमित रूप से राशियाँ आहरित की थी। इसी आधार पर आहरणों पर ब्याज परिकलित कीजिए।

(**उत्तर :** अमित का आहरण 1,200 रु. तथा भोला का 800 रु. है)

© NCERT not to be republished

25. हरीश एक फर्म में साझेदार है। वह वर्ष 2015-16 के दौरान निम्नलिखित आहरित करता है:

	रु.
01 मई 2019	4,000
01 अगस्त 2019	10,000
30 सितंबर 2019	4,000
31 दिसंबर 2019	12,000
31 मार्च 2019	4,000

आहरणों पर प्रभारित होने वाली वार्षिक ब्याज दर 7½% है। मार्च 2020 के लिए हरीश के आहरणों पर ब्याज की राशि परिकलित कीजिए।

(**उत्तर** : आहरण पर ब्याज़ 1,800 रु.)

26. मेनन एवं टॉमस एक फर्म में साझेदार हैं। वे लाभ का विभाजन बराबर करते हैं। आहरणों पर 10% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज प्रभारित होना है। वर्ष 2015-16 के लिए यह मानकर मेनन की आहरित राशियों पर ब्याज परिकलित करें कि: (i) वर्ष भर प्रत्येक माह के प्रारंभ में, (ii) प्रत्येक माह के मध्य में, तथा (iii) प्रत्येक माह के अंत में आहरण किए हैं।

(**उत्तर** : आहरणों पर ब्याज : (i) 1,300 रु.; (ii) 1,200 रु.; तथा (iii) 1,100 रु.)

27. 31 मार्च, 2016 को लेखा खाते बंद होने के बाद, राम, श्याम तथा मोहन की पूँजी शेष क्रमशः 24,000 रु. 18,000 रु. तथा 12,000 रु. प्रकट होती हैं। लेकिन बाद में यह पता चलता है कि पूँजी पर 5% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज शामिल होने से रह गई है। 31 मार्च, 2016 को वर्ष के अंत में यह लाभ राशि 36,000 रु. होती है तथा साझेदारों के आहरण: राम 3,600 रु., श्याम 4,500 रु. तथा मोहन 2,700 रु. होती है। राम, श्याम एवं मोहन का लाभ विभाजन अनुपात 3:2:1 है। पूँजी पर ब्याज परिकलित कीजिए।

(**उत्तर** : राम की पूँजी पर ब्याज 480 रु., श्याम की पूँजी पर 525 रु. तथा मोहन की पूँजी पर 435 रु. है)

28. अमित, सुमित व समीक्षा 3:2:1 के अनुपात में लाभ विभाजन के साझेदार हैं। अमित एवं सुमित द्वारा समीक्षा के न्यूनतम लाभ 8,000 रु. की गारंटी ली गई। 31 मार्च, 2016 को लाभ 36,000 रु. था। साझेदारों के बीच लाभ वितरण की राशि ज्ञात करें।

(**उत्तर** : लाभ : अमित 16,800 रु., सुमित 11,200 रु. तथा समीक्षा 8,000 रु.)

29. पिंकी, दीप्ति व काकु एक फर्म में 5:4:1 के अनुपात में साझेदार हैं। काकू को यह सुनिश्चित किया गया कि उसके लाभ का भाग कभी भी 5,000 रु. से कम नहीं होगा, यदि ऐसा हुआ तो यह पिंकी व दीप्ति द्वारा समान रूप से वहन किया जाएगा। वर्ष का लाभ 40,000 रु. हुआ। लाभ विभाजन को दर्शाते हुए आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दर्शाएँ।

(**उत्तर** : पिंकी व दीप्ति द्वारा वहन की गई कमी 500 रु. प्रत्येक)

30. अभय, सिद्धार्थ व कुसुम एक फर्म में साझेदार हैं और उनका लाभ विभाजन अनुपात 5:3:2 का है। कुसम को लाभ शेयर के रूप में 10,000 रु. की गारंटी दी गई है। यदि कोई कमी आई तो इसे सिद्धार्थ के खाते से पूरा किया जाएगा। 31 मार्च, 2016–17 वर्ष के अंत में लाभ क्रमश : 40,000 रु. तथा 60,000 रु. था। लाभ व हानि विनियोग खाता तैयार कीजिए।

© NCERT not to be republished

(**उत्तर :** वर्ष 2016 – अभय 20,000 रु., सिद्धार्थ 10,000 रु., कुसुम 10,000 रु., वर्ष 2007– अभय 30,000 रु., सिद्धार्थ 18,000 रु., कुसुम 12,000 रु.)

31. राधा, मैरी व फ़ातिमा 5:4:1 के अनुपात में लाभ विभाजन करती हैं। फ़ातिमा को गारंटी दी गई है कि उसके लाभ का भाग 5,000 रु. से कम नहीं होगा, यदि कोई कमी होती है तो लाभ की कमी को राधा व मैरी द्वारा 8:2 के अनुपात में वहन किया जाएगा। वर्ष के अंत 31 मार्च, 2020 को लाभ 35,000 रु. था। साझेदारों के बीच लाभ विभाजन करते हुए आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि तैयार करें।
(**उत्तर :** कमी वहन की गई, राधा 900 रु. और मैरी 600 रु.)

32. क, ख, एवं ग एक फर्म की साझेदारी में लाभ विभाजन क्रमशः 3:2:1 के अनुपात में करते हैं। हालाँकि ग के भाग के लिए क एवं ख ने न्यूनतम 8,000 रु. की स्थिर गारंटी दी हुई है। वर्ष के अंत में 31 मार्च, 2020 को लाभ 36,000 रु. होता है। लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार करें जिसमें प्रत्येक साझेदार के लिए अंतिम प्राप्य राशि का संकेत हो।
(**उत्तर :** लाभ क 13,200 रु., ख 8,800 रु. तथा ग 8,000 रु. है)

33. अरूण, बॉबी एवं चिंटू एक फर्म में 2:2:1 के अनुपात में लाभ विभाजन के साझेदार हैं। साझेदारी विलेख की गारंटी के अनुसार कंपनी का लाभ कुछ भी हो किंतु चिंटू को कम-से-कम 6,000 रु. प्राप्त होने हैं। चिंटू के खाते में ऐसी गारंटी की कोई भी अतिरेक अरूण के द्वारा वहन की जाएगी। एक लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार करें जो साझेदारों के बीच लाभ के वितरण को दर्शाता, यदि मान लीजिए कि वर्ष 2016 के लिए लाभ (i) 2,50,000 रु. (ii) 3,60,000 रु. हुआ हो।
(**उत्तर :** (i) अरूण को लाभ 90,000 रु., बॉबी के 1,00,000 रु. तथा चिंटू को 60,000 रु.; (ii) अरूण को लाभ 1,44,000 रु., बॉबी को 1,44,000 रु. तथा चिंटू को 72,000 रु.)

34. अशोक, बृजेश एवं शीना, एक फर्म में 2:2:1 के अनुपात में लाभ व हानि का विभाजन करते हुए साझेदार हैं। अशोक एवं बृजेश यह गारंटी देते हैं कि शीना को किसी भी वर्ष 20,000 रु. से कम लाभ नहीं दिया जाएगा। वर्ष के अंत 31 मार्च, 2016 के लिए लाभ की राशि 70,000 रु. होती है। लाभ एवं हानि विनियोग खाता तैयार कीजिए।
(**उत्तर :** लाभ – अशोक को 25,000 रु., बृजेश को 2,500 रु. और शीना को 20,000 रु.)

35. राम, मोहन और सोहन एक फर्म में क्रमशः 5,00,000 रु., 2,50,000 रु. तथा 2,00,000 रु. की पूँजी के साथ साझेदार हैं। पूँजी पर 10% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज के प्रावधान के बाद लाभ को निम्नानुसार विभाजित करें। राम 1/2, मोहन 1/3 और सोहन 1/6। लेकिन राम एवं मोहन ने सोहन को कम से कम 25,000 रु. प्रति वर्ष देने की गारंटी दी है। वर्ष के अंत में 31 मार्च, 2017 के लिए, पूँजी पर ब्याज प्रभारित करने से पहले, निवल लाभ 2,00,000 रु. है। आप से अपेक्षा है कि लाभ का परिकलन करें।
(**उत्तर :** लाभ : राम को 48,000 रु., मोहन को 32,600 रु. तथा सोहन 25,000 रु.)

36. अमित, बबीता एवं सोना एक फर्म में साझेदार हैं। उनका लाभ 3:2:1 के अनुपात में विभाजित हैं तथा निम्न बातों को ध्यान में भी रखना है:

© NCERT not to be republished

(i) सोना के गारंटी के रूप में लाभ का भाग 15,000 रु. प्रति वर्ष से कम न हो।

(ii) बबीता इस प्रभाव के साथ गारंटी देती है कि जब वह फर्म में नौकरी करती थी तब से उसे 5 साल के औसत कुल प्रभार या फीस (जो 25,000 रु. है) के बराबर होनी चाहिए और आज उसके द्वारा अर्जित फीस इससे कम नहीं होगी। वर्ष के अंत में 31 मार्च, 2017 के लिए कुल लाभ 75,000 रु. होता है और फर्म हेतु बबीता के द्वारा अर्जित कुल फीस 16,000 रु. है।

आप से लाभ एवं हानि विनियोग खाता को दर्शाने की अपेक्षा की जाती है (लेकिन दिए गए अकेले प्रभाव को अपनाने के बाद)

(**उत्तर :** लाभः अमित की पूँजी 41,400 रु., बबीता 27,600 रु. तथा सोना को 1,500 रु. हस्तांतरित हुए)

पश्च समायोजन

37. वर्ष के अंत में 31 मार्च, 2020 के लिए क,ख एवं ग का निवल लाभ 60,000 रु. था और यही राशि इन साझेदारों के बीच 3:1:1 के अनुपात में वितरित की गई। इसके बाद यह बात पता चली कि निम्नलिखित लेन-देन को लेखा खातों में नहीं अभिलेखित किया गया है:

(i) पूँजी पर ब्याज की दर 5% प्रतिवर्ष

(ii) आहरणों पर ब्याज जो कि क के 700 रु.; ख के 500 रु.; ग के 300 रु. हैं।

(iii) साझेदारों का वेतन क के 1,000 रु.; ख के 1,500 रु. प्रति वर्ष

(iv) एक सहमतिपूर्ण कमीशन क के लिए 6,000 रु., ख के लिए 6,000 रु. जो कि एक फर्म की विशेष लेन-देन से पैदा हुआ है। समायोजन प्रविष्टियों का अभिलेखन करें।

(**उत्तर :** क के नाम 2,500 रु., ख के 2,400 रु. जमा तथा ग के 1,000 रु. जमा)

38. हैरी, पोर्टर एवं अली एक फर्म में 2:2:1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं ''जो कई वर्षों से विद्यमान है; लेकिन अली चाहता है कि वह भी फर्म में हैरी एवं पोर्टर के समान बराबर का लाभ का भागीदार बने। इसके साथ ही वह चाहता है कि वह लाभ विभाजन पिछले तीन वर्षों से पूर्व प्रभावी तरीके से प्राप्त हो। इस बारे में हैरी एवं पोर्टर एक समझौता करते हैं।

पिछले तीन वर्षों का लाभ

वर्ष	(रु.)
2013-14	22,000
2014-15	24,000
2015-16	29,000

एक एकल समायोजन रोज़नामचा प्रविष्टि के द्वारा लाभ का समायोजन प्रदर्शित करें।

(**उत्तर :** हैरी (नाम) 5,000 रु., पोर्टर (नाम) 5,000 रु. तथा अली (जमा) 10,000 रु.)

39. मनु एवं सृष्टि एक फर्म में 3:2 के अनुपात में लाभ विभाजन के साझेदार हैं। 31 मार्च, 2017 को उनके फर्म का तुलन पत्र निम्नानुसार है:

© NCERT not to be republished

31 मार्च, 2017 के अनुसार तुलन-पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*		*राशि (रु.)*
मनु की पँजी	30,000		आहरण:		
सृष्टि की पूँजी	10,000	40,000	मनु	4,000	
			सृष्टि	2,000	6,000
			अन्य परिसंपत्तियाँ		34,000
		40,000			**40,000**

31 मार्च, 2017 के वर्ष के अंत में लाभ को सहमत अनुपात के आधार पर वितरित किया गया लेकिन पूँजी पर ब्याज की दर 5% वार्षिक तथा आहरणों पर 6% वार्षिक असावधानी से जाँच द्वारा ली गई। एक औसत अवधि 6 माह के लिए आधार बनाकर आहरण पर ब्याज का समायोजन करें। समायोजन प्रविष्टि प्रदान करें।
(**उत्तर :** मनु (जमा) 288 रु. तथा सृष्टि (नाम) 288 रु.)

40. 31 मार्च, 2017 को एलविन, मोनू एवं अहमद के पूँजी खाते पर लाभ, आहरणों आदि के समायोजन हुए थे जो कि एलविन 80,000 रु., मोनू 60,000 रु. तथा अहमद की 40,000 रु. थी। इसके तदंतर ही यह पता चला कि पूँजी तथा आहरणों पर ब्याज छूट गया है, जिसे शामिल किया जाना था।
ये साझेदार पूँजी पर 5% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज लेने के लिए अधिकृत थे। इस वर्ष के दौरान आहरण इस तरह थे : एलविन 20,000 रु., मोनू 15,000 रु. तथा अहमद 9,000 रु.। साझेदारों द्वारा आहरणों पर प्रभारित ब्याज राशि इस प्रकार थी : एलविन 500 रु., मोनू 360 रु. तथा अहमद 200 रु.। वर्ष की निवल लाभ राशि 1,20,000 रु. थी और लाभ विभाजन अनुपात 3:2:1 था।
(**उत्तर :** एलविन (नाम) 570 रु., मोनू (जमा) 10 रु. एवं अहमद (जमा) 560 रु.)

41. आज़ाद एवं बिन्नी बराबर के साझेदार हैं। उनकी पूँजी क्रमश: 40,000 रु. तथा 80,000 रु. थी। वर्ष के अंत में खातों को तैयार करने के बाद यह पता चला कि साझेदारी विलेख में प्रस्तावित 5% प्रतिवर्ष की ब्याज दर को लाभ वितरण से पहले पूँजी खातों में नहीं जमा किया गया है। यह तय किया गया कि अगले वर्ष के प्रारंभ में एक समायोजन प्रविष्टि तैयार की जाए। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि अभिलेखित करें।
(**उत्तर :** आज़ाद (नाम) 1,000 रु. तथा बिन्नी (जमा 1,000 रु.)

42. मोहन, विजय व अनिल साझेदार हैं, उनके पूँजी खातों में क्रमश: 30,000 रु. 25,000 रु. तथा 20,000 रु. शेष हैं। इन अंकों पर पहुँचने के साथ 31 मार्च, 2017 को वर्ष की समाप्ति पर लाभ राशि 24,000 रु. साझेदारों के खातों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में जमा किया गया। गणना के दौरान मोहन, विजय तथा अनिल का आहरण क्रमश: 5,000 रु., 4,000 रु. तथा 3,000 रु. थी। तंदतर निम्न विलोपन देखे गए।
(अ) पूँजी पर 10% वार्षिक की दर से ब्याज प्रभारित नहीं किया गया।
(ब) आहरणों पर ब्याज मोहन 250 रु., विजय 200 रु., अनिल 150 रु. खाता पुस्तकों में अभिलेखित नहीं हुए हैं।
रोज़नामचा प्रविष्टि द्वारा आवश्यक सुधार अभिलेखित करें।
(**उत्तर :** अनिल का पूँजी खाता नाम 550 रु. तथा मोहन का पूँजी खाता जमा 550 रु.)

© NCERT not to be republished

43. अंजू, मंजू व ममता साझेदार है जिसमें उनकी स्थिर पूँजी क्रमशः 10,000 रु. 8,000 रु. व 6,000 रु. है। साझेदारी विलेख के अनुसार पूँजी पर 5% वार्षिक दर से ब्याज देय अनुमत है। लेकिन पिछले तीन वर्षों से प्रविष्टि नहीं डाली गई है। इन वर्षों के दौरान लाभ विभाजन अनुपात निम्नवत था।

वर्ष	अंजू	मंजू	ममता
2016	4	3	5
2017	3	2	1
2018	1	1	1

नए वर्ष हेतु आवश्यक एवं समायोजन प्रविष्टियाँ तैयार करें, अर्थात अप्रैल 2017 हेतु प्रविष्टियाँ दें।

(**उत्तर :** ममता (नाम) 200 रु., अंजू (जमा) 100 रु. तथा मंजू (जमा) 100 रु.)

स्वयं जाँचिए हेतु जाँच सूची

स्वयं जाँचिए – 1

1. (i) अवैध (ii) अवैध (iii) वैध (iv) अवैध
2. (i) सही (ii) सही (iii) सही (iv) गलत (v) गलत (vi) गलत

स्वयं जाँचिए – 2

1. (i) ऋण पर 6% वार्षिक ब्याज दिया गया।
   (ii) पूँजी एवं आहरणों पर प्रभारित कोई ब्याज अनुमत नहीं।
   (iii) साझेदार को वेतन व कमीशन नहीं दिया गया।
   (iv) लाभ को समान विभाजित किया।
2. लाभः रीना, 33,750 रु.; रमन, 33,750 रु.

स्वयं जाँचिए – 3

1. पूँजी पर ब्याज राशिः रानी, 9,000 रु.; सुमन, 6,300 रु.
2. (अ) लाभः प्रिया, 78,750 रु. काजोल, 47,250 रु.
   (ब) लाभः शून्य। पूँजी पर ब्याजः प्रिया, 54,000 रु. काजोल, 72,000 रु.

© NCERT not to be republished

12120CH03

साझेदारी फर्म का पुनर्गठन: साझेदार का प्रवेश

2

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के उपरांत आप :

- *साझेदारी फर्म के पुनर्गठन की अवधारणा और विधियों का वर्णन कर सकेंगे।*
- *साझेदार के प्रवेश पर, फर्म की पुस्तकों में किए जाने वाले आवश्यक समायोजनों की पहचान कर सकेंगे।*
- *नए लाभ विभाजन अनुपात का निर्धारण एवं त्याग अनुपात की गणना कर सकेंगे।*
- *ख्याति को परिभाषित तथा इसको प्रभावित करने वाले तत्त्वों को बता सकेंगे।*
- *ख्याति के मूल्यांकन की विधियों का वर्णन कर सकेंगे।*
- *साझेदार के प्रवेश पर विभिन्न परिस्थितियों में ख्याति के व्यवहार का वर्णन कर सकेंगे।*
- *परिसंपतियों के पुनर्मूल्यांकन और दायित्वों के पुनर्निर्धारण के लिए आवश्यक समायोजन कर सकेंगे।*
- *नए लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार प्रत्येक साझेदार की पूँजी का निर्धारण (यदि आवश्यक हो) तथा आवश्यक समायोजन कर सकेंगे।*
- *विद्यमान साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन अनुपात के परिवर्तन होने पर आवश्यक समायोजन कर सकेंगे।*

साझेदारी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य एक समझौता है जो एक व्यवसाय के लाभों को बाँटने के लिए सहमत होते हैं, जिनका संचालन उन सबके द्वारा या उन सबकी ओर से उनमें से किसी के द्वारा किया जाता है। विद्यमान समझौते में किसी प्रकार का परिवर्तन, साझेदारी फर्म का पुनर्गठन कहलाता है। परिणामस्वरूप वर्तमान समझौते का अंत होता है तथा उसके स्थान पर नया समझौता निर्मित होता है जो कि साझेदारी फर्म के सदस्यों के मध्य संबंधों को बदल देता है। हालाँकि फर्म जारी रहती है। आमतौर पर साझेदारी फर्म का पुनर्गठन विभिन्न परिस्थितियों में हो सकता है, जैसे कि नए साझेदार का प्रवेश, लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन, साझेदार की सेवानिवृत्ति, साझेदार की मृत्यु या दिवालिया होना। इस अध्याय में हम नए साझेदार के प्रवेश पर या लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन होने पर लेखांकन व्यवहारों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

2.1 साझेदारी फर्म के पुनर्गठन के प्रकार

सामान्यत: साझेदारी फर्म का पुनर्गठन निम्न में से किसी एक स्थिति में होता है

नए साझेदार का प्रवेश : जब किसी फर्म को अतिरिक्त पूँजी या प्रबंधकीय सहायता की आवश्यकता पड़ती है तो एक नए साझेदार को प्रवेश दिया जा सकता है। साझेदारी अधिनियम 1932 के प्रावधानों के अनुसार किसी व्यक्ति को साझेदारी फर्म में सभी वर्तमान साझेदारों की स्वीकृति पर ही प्रवेश मिल सकता है, जब तक कि इसके विपरीत कोई समझौता नहीं हुआ हो। उदाहरण के लिए, हरी और हक साझेदार हैं तथा उनका लाभ विभाजन अनुपात 3:2 है। वह 01 अप्रैल, 2017 को फर्म

© NCERT not to be republished

के लाभों में 1/6 भाग के लिए जॉन को नए साझेदार के रूप में प्रवेश देते हैं। इस परिवर्तन के कारण फर्म में तीन साझेदार होंगे तथा फर्म पुनर्गठित होगी।

विद्यमान साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन : कभी–कभी साझेदार अपने वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन करने का निर्णय लेते हैं। इस कारण विद्यमान साझेदारों के भाग में परिवर्तन हो सकता है। उदाहरण के लिए, राम, मोहन और सोहन फर्म के लाभों का विभाजन 3:2:1 के अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। 01 अप्रैल, 2017 से सोहन द्वारा अतिरिक्त पूँजी लाए जाने के कारण वह लाभों का विभाजन समान रूप से करने का निणर्य लेते हैं, जिसके फलस्वरूप वर्तमान समझौते में परिवर्तन होगा तथा फर्म पुनर्गठित होगी।

विद्यमान साझेदार की सेवानिवृत्ति : साझेदार की सेवानिवृत्ति से आशय एक साझेदार द्वारा फर्म के व्यवसाय से, उसके अस्वस्थ होने, अधिक आयु होने तथा व्यवसाय में रुचि परिवर्तन के कारण व्यवसाय से बाहर निकल जाने से है। यदि साझेदारी ऐच्छिक है तो एक साझेदार किसी भी समय सेवानिवृत्त हो सकता है। उदाहरण के लिए, राय, रवि और राव फर्म में लाभों का विभाजन 2:2:1 के अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। अस्वस्थ होने के कारण, 31 मार्च, 2017 को रवि सेवानिवृत्त होता है। परिणामस्वरूप पुनर्गठित साझेदारी फर्म में अब केवल दो साझेदार रह जाएंगे।

साझेदार की मृत्यु : किसी साझेदार की मृत्यु पर भी साझेदारी फर्म का पुनर्गठन किया जा सकता है, यदि विद्यमान साझेदार, फर्म के व्यवसाय को भविष्य में पहले की तरह जारी रखने का निर्णय लेते हैं। उदाहरण के लिए, एक्स, वाई और ज़ेड लाभों का विभाजन 3:2:1 में करते हुए साझेदार हैं। 31 मार्च, 2016 को एक्स की मृत्यु हो जाती है तथा वाई और ज़ेड भविष्य में समान लाभ विभाजन में व्यवसाय को जारी रखने का निर्णय लेते हैं। वाई और ज़ेड द्वारा भविष्य में समान लाभ में व्यवसाय जारी रखने पर फर्म पुनर्गठित होगी।

2.2 साझेदार का प्रवेश

जब किसी चालू फर्म को अतिरिक्त पूँजी अथवा प्रबंधकीय सहायता अथवा दोनों की आवश्यकता होती है तो फर्म के साझेदार विद्यमान संसाधनों की पूर्ति के लिए नए साझेदार को प्रवेश देने का निर्णय करते हैं। एकल व्यवसाय के संदर्भ में, नए व्यक्ति का स्वामी के रूप में प्रवेश होना साझेदारी का रूप लेता है। साझेदारी अधिनियम 1932 के अनुसार, किसी व्यक्ति को साझेदारी फर्म में प्रवेश सभी वर्तमान साझेदारों की स्वीकृति पर ही मिल सकता है, जब तक कि इसके विपरीत समझौता न हुआ हो। नए साझेदार के प्रवेश के साथ ही साझेदारी फर्म पुनर्गठित होती है तथा नए व्यवसाय को साझेदारी फर्म के रूप में संचालन के लिए एक नए समझौते का निर्माण होता है। नए साझेदार को प्रवेश पर फर्म से दो मुख्य अधिकार प्राप्त होते हैं।

1. फर्म की परिसंपत्तियों में भाग लेने का अधिकार।
2. फर्म के भावी लाभों में भाग लेने का अधिकार।

साझेदारी फर्म की परिसंपत्तियों के अधिकार हेतु साझेदार नकद या अन्य वस्तु के रूप में एक स्वीकृत राशि पूँजी के रूप में लाता है। इसके अतिरिक्त, एक स्थापित फर्म की स्थिति में जो कि अपनी पूँजी पर

सामान्य प्रतिफल से अधिक लाभ अर्जित कर रही है, नए साझेदार को एक अतिरिक्त पूँजी लानी होगी जो कि प्रीमियम या ख्याति कहलाती है। प्राथमिक रूप से यह विद्यमान साझेदार को फर्म के अधिलाभ में से उसके भाग की हानि की क्षतिपूर्ति हेतु लाई जाती है। सामान्यत: नए साझेदार के प्रवेश के समय निम्न महत्वपूर्ण बिंदु होते हैं:

1. नया लाभ विभाजन अनुपात;
2. त्याग अनुपात;
3. ख्याति का मूल्यांकन एवं समायोजन;
4. परिसंपत्तियों का पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों का पुनर्निर्धारण;
5. संचित लाभों (संचय) का वितरण, और
6. साझेदारों की पूँजी का समायोजन।

2.3 नया लाभ विभाजन अनुपात

जब नए साझेदार को प्रवेश मिलता है तो उसे पुराने साझेदारों के लाभ में से अपना भाग प्राप्त होता है। दूसरे शब्दों में नए साझेदार के प्रवेश पर पुराने साझेदार अपने हिस्से के कुछ भाग का त्याग नए साझेदार के पक्ष में करते हैं। नए साझेदार का लाभ का वितरण क्या होगा तथा वह विद्यमान साझेदारों से यह किस प्रकार अधिग्रहित करेगा, इसका निर्णय पुराने साझेदारों तथा नए साझेदार के मध्य आपसी सहमति द्वारा किया जाता है। हालाँकि यदि यह वर्णित न हो कि नया साझेदार पुराने साझेदारों से अपना भाग किस प्रकार लेगा तो यह मान लिया जाता है कि वह इसे उनके लाभ विभाजन अनुपात में ही प्राप्त करेगा। किसी भी स्थिति में, साझेदार के प्रवेश पर, पुराने साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन अनुपात, आने वाले साझेदार को दिए जाने वाले लाभ विभाजन अनुपात में उनके सहयोग के अनुसार किया जाएगा। इसलिए यहाँ सभी साझेदार के मध्य नए लाभ विभाजन अनुपात के निर्धारण की आवश्यकता होगी। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि नया साझेदार अपने भाग का अधिग्रहण किस प्रकार पुराने साझेदारों से करता है, जिसके लिए अनेक संभावनाएँ है। अब हम इसे एक उदाहरण की सहायता से समझेंगे।

उदाहरण 1

अनिल और विशाल साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 3:2 के अनुपात में करते हैं। वे सुमित को नए साझेदार के रूप में 1/5 भाग के लिए प्रवेश देते हैं। अनिल, विशाल और सुमित के नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना कीजिए।

हल

सुमित का भाग $= \frac{1}{5}$

शेष भाग $= 1-\frac{1}{5} = \frac{4}{5}$

अनिल का नया भाग = $\frac{4}{5}$ का $\frac{3}{5}$ = $\frac{12}{25}$

विशाल का नया भाग = $\frac{4}{5}$ का $\frac{2}{5}$ = $\frac{8}{25}$

अनिल, विशाल और सुमित का नया लाभ विभाजन 12: 8: 5 होगा।

टिप्पणी: यह माना गया है कि नया साझेदार अपना भाग पुराने साझेदारों से पुराने अनुपात में लेता है।

उदाहरण 2

अक्षय और भारती साझेदार हैं और 3:2 के अनुपात में लाभ विभाजित करते है। वे दिनेश को 1/5 भाग के लिए फर्म में प्रवेश देते हैं जिसे वह अक्षय और भारती से बराबर अनुपात में प्राप्त करता है। अक्षय, भारती और दिनेश के नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना कीजिए।

हल

दिनेश का भाग = $\frac{1}{5}$ या $\frac{2}{10}$

अक्षय का भाग = $\frac{3}{5} - \frac{1}{10} = \frac{5}{10}$

भारती का भाग = $\frac{2}{5} - \frac{1}{10} = \frac{3}{10}$

अक्षय, भारती और दिनेश के बीच नया लाभ विभाजन अनुपात 5:3:2 होगा।

उदाहरण 3

अंशु और नीतू एक फर्म में साझेदार हैं और 3:2 के अनुपात में लाभ विभाजित करते हैं। वे ज्योति को 3/10 भाग के लिए फर्म में प्रवेश देते हैं, जिसे ज्योति अंशु से 2/10 भाग और नीतू से 1/10 भाग प्राप्त करती हैं। अंशु, नीतू और ज्योति के नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना कीजिए।

हल

ज्योति का भाग = $\frac{3}{10}$

अंशु का नया भाग = $\frac{3}{5} - \frac{2}{10} = \frac{4}{10}$

नीतू का नया भाग = पुराना भाग – त्याग किया गया भाग

= $\frac{2}{5} - \frac{1}{10} = \frac{3}{10}$

अंशु, नीतू और ज्योति के बीच नया लाभ विभाजन अनुपात 4:3:3 होगा।

उदाहरण 4

राम और श्याम फर्म में साझेदार हैं और 3:2 के अनुपात में लाभ बाँटते हैं। वे घनश्याम को नए साझेदार के रूप में शामिल करते हैं। इसके लिए राम 1/4 भाग और श्याम 1/3 भाग का त्याग करते हैं। राम, श्याम और घनश्याम के नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना कीजिए।

हल

राम का पुराना भाग	=	$\frac{3}{5}$
राम द्वारा त्याग किया गया	=	$\frac{3}{5}$ का $\frac{1}{4} = \frac{3}{20}$
राम का नया भाग	=	$\frac{3}{5} - \frac{3}{20} = \frac{9}{20}$
श्याम का पुराना भाग	=	$\frac{2}{5}$
श्याम द्वारा त्याग किया गया	=	$\frac{2}{5}$ का $\frac{1}{3} = \frac{2}{15}$
श्याम का नया भाग	=	$\frac{2}{5} - \frac{2}{15} = \frac{4}{15}$
घनश्याम का नया भाग	=	राम का त्याग + श्याम का त्याग
	=	$\frac{3}{20} + \frac{2}{15} = \frac{17}{60}$

राम, श्याम और घनश्याम का नया लाभ विभाजन अनुपात 27:16:17 होगा।

उदाहरण 5

दास और सिन्हा एक फर्म में साझेदार हैं और 4:1 के अनुपात में लाभ विभाजित करते हैं। वे फर्म में पाल को 1/4 भाग के लिए शामिल करते हैं, जिसे पाल पूर्णतः दास से प्राप्त करता है। साझेदारों का नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात कीजिए।

हल

पाल का भाग	=	$\frac{1}{4}$
दास का नया भाग	=	पुराना भाग – त्याग किया गया भाग
	=	$\frac{4}{5} - \frac{1}{4} = \frac{11}{20}$
सिन्हा का नया भाग	=	$\frac{1}{5}$

दास, सिन्हा और पाल का नया लाभ विभाजन अनुपात 11:4:5 होगा।

© NCERT not to be republished

2.4 त्याग अनुपात

वह अनुपात जिसे फर्म के पुराने साझेदार नए साझेदार के पक्ष में त्याग करने के लिए सहमत होते हैं, त्याग अनुपात कहलाता है। साझेदार द्वारा किए गए त्याग की गणना इस प्रकार की जाती है:

लाभ में पुराना भाग – लाभ में नया भाग

जैसा कि पहले कथित है, नए साझेदार के लिए आवश्यक है कि वह किसी फर्म के पुराने साझेदारों को अधिलाभ में हुई उनके भाग की हानि की क्षतिपूर्ति करे, जिसके लिए वह एक अतिरिक्त राशि लाता है जिसे ख्याति या प्रीमियम कहते हैं। इस राशि का विभाजन साझेदारों में उस अनुपात में किया जाता है जिस भाग में वह नए साझेदार के पक्ष में त्याग करते हैं, जो त्याग अनुपात कहलाता है।

सामान्यतः साझेदारों के मध्य यह अनुपात स्पष्ट रूप से दिया होता है जो कि पुराना अनुपात, समान त्याग तथा विशिष्ट अनुपात के रूप में हो सकता है। समस्या वहाँ उत्पन्न होती है जहाँ पर नए साझेदार द्वारा पुराने साझेदार से अधिग्रहित किया गया भाग नहीं दिया गया हो, बल्कि इसके बदले में नया लाभ विभाजन अनुपात दिया गया हो। इस प्रकार की स्थिति में त्याग अनुपात की गणना प्रत्येक साझेदार के नए भाग में से उसके पुराने भाग को घटाकर की जाती है। उदाहरण 6 से 8 में देखें कि इस स्थिति में त्याग अनुपात की गणना किस प्रकार की गई है।

उदाहरण 6

रोहित और मोहित एक फर्म में साझेदार हैं जो 5:3 के अनुपात में लाभ विभाजित करते हैं। वे विजय को लाभ में 1/7 भाग के लिए फर्म में शामिल करते हैं तथा फर्म के भावी लाभ को 4:2:1 के अनुपात में विभाजित करने का निर्णय लेते हैं। रोहित और मोहित के त्याग अनुपात की गणना कीजिए।

हल

रोहित का पुराना भाग $= \frac{5}{8}$

रोहित का नया भाग $= \frac{4}{7}$

रोहित का त्याग $= \frac{5}{8} - \frac{4}{7} = \frac{3}{56}$

मोहित का पुराना भाग $= \frac{3}{8}$

मोहित का नया भाग $= \frac{2}{7}$

मोहित का त्याग $= \frac{3}{8} - \frac{2}{7} = \frac{5}{56}$

रोहित और मोहित का त्याग अनुपात 3:5 होगा।

उदाहरण 7

अमर और बहादुर एक फर्म में साझेदार हैं और 3:2 के अनुपात में लाभ विभाजित करते हैं। वे मेरी को नए साझेदार के रूप में 1/5 भाग के लिए प्रवेश देते है। अमर और बहादुर का नया लाभ विभाजन अनुपात 2:1 होगा। उनके त्याग अनुपात की गणना कीजिए।

हल

मेरी का भाग $= \frac{1}{4}$

शेष भाग $= 1 - \frac{1}{4} = \frac{3}{4}$

3/4 भाग को अमर और बहादुर के 2:1 अनुपात में विभाजित किया जाएगा।
अत:

अमर का नया भाग $= \frac{3}{4}$ का $\frac{2}{3} = \frac{6}{12}$ या $\frac{2}{4}$

बहादुर का नया भाग $= \frac{3}{4}$ का $\frac{1}{3} = \frac{3}{12}$ या $\frac{1}{4}$

अमर, बहादुर और मेरी का नया लाभ विभाजन अनुपात 2:1:1 होगा।

अमर का त्याग $= \frac{3}{5} - \frac{2}{4} = \frac{2}{20}$

बहादुर का त्याग $= \frac{2}{5} - \frac{1}{4} = \frac{3}{20}$

अमर और बहादुर के बीच त्याग अनुपात 2:3 होगा।

उदाहरण 8

रमेश और सुरेश एक फर्म में साझेदार हैं तथा 4:3 के अनुपात में लाभ का विभाजन करते हैं। वे मोहन को नए साझेदार के रूप में शामिल करते हैं। रमेश, सुरेश और मोहन का नया लाभ विभाजन अनुपात 2:3:1 होगा। पुराने साझेदारों के प्राप्त अथवा त्याग अनुपात की गणना कीजिए।

हल

रमेश का पुराना भाग $= \frac{4}{7}$

रमेश का नया भाग $= \frac{2}{6}$

रमेश का त्याग = $\frac{4}{7}-\frac{2}{6}=\frac{10}{42}$

सुरेश का नया भाग = $\frac{3}{6}$

सुरेश का पुराना भाग = $\frac{3}{7}$

सुरेश का अधिलाभ = $\frac{3}{6}-\frac{3}{7}=\frac{3}{42}$

मोहन का भाग = $\frac{1}{6}$ या $\frac{7}{42}$

रमेश का त्याग = सुरेश का प्राप्त लाभ + मोहन का प्राप्त लाभ

= $\frac{3}{42}+\frac{7}{42}=\frac{10}{42}$

इस स्थिति में सारा त्याग रमेश द्वारा किया गया है।

स्वयं जाँचिए 1

1. अ और ब साझेदार हैं और 3:1 के अनुपात में लाभ विभाजित करते हैं। वे स को 1/4 भाग के लाभ के लिए प्रवेश कराते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात होगा :

   (अ) अ $\frac{9}{16}$, ब $\frac{3}{16}$, स $\frac{4}{16}$

   (ब) अ $\frac{8}{16}$, ब $\frac{4}{16}$, स $\frac{4}{16}$

   (स) अ $\frac{10}{16}$, ब $\frac{2}{16}$, स $\frac{4}{16}$

   (द) अ $\frac{8}{16}$, ब $\frac{9}{16}$, स $\frac{10}{16}$

2. एक्स और वाई लाभ का विभाजन 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। ज़ैड 1/5 भाग के साझेदार के लिए प्रवेश लेता है। नया लाभ विभाजन अनुपात क्या होगा यदि ज़ैड 3/20 एक्स से तथा 1/20 वाई से लेता हैं।

   (अ) 9:7:4 (ब) 8:8:4 (स) 6:10:4 (द) 10:6:4

3. अ और ब लाभ और हानि का विभाजन 3:1 में करते हैं, स 1/4 भाग के लिए प्रवेश करता है। अ और ब का त्याग अनुपात :

   (अ) बराबर (ब) 3:1 (स) 2:1 (द) 3:2

© NCERT not to be republished

2.5 ख्याति

साझेदारी खातों में ख्याति भी एक विशेष पहलू है, जिसका फर्म के पुनर्गठन के समय जो कि लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन और साझेदार के प्रवेश और सेवानिवृत्ति या मृत्यु के समय समायोजन करना आवश्यक होता है (मूल्यांकन यदि दिया नहीं हो)।

2.5.1 ख्याति का अर्थ

एक सुस्थापित व्यवसाय को कुछ समय पश्चात प्रतिष्ठा और विस्तृत व्यवसाय संबंधों का लाभ होने लगता है। यह व्यवसाय को नए स्थापित व्यवसाय की तुलना में अधिक लाभ कमाने में सहायता करता है। लेखांकन में ऐसे लाभ के मौद्रिक मूल्य को ख्याति कहते हैं।

यह एक आभासी परिसंपत्ति समझी जाती है। दूसरे शब्दों में ख्याति किसी व्यवसाय की प्रसिद्धि का ऐसा मूल्य है, जिससे कि वह उस व्यवसाय में लगी हुई अन्य इकाइयों द्वारा अर्जित किए गए सामान्य लाभ की अपेक्षा अधिक लाभ अर्जित करती है। सामान्यत: यह देखा गया है कि जब एक व्यक्ति ख्याति की राशि का भुगतान करता है तो वह भुगतान उसे अधिक लाभ प्राप्त करने की स्थिति में पहुँचा देता है, जिसे वह मात्र अपने प्रयत्नों से प्राप्त नहीं कर सकता था।

दूसरे शब्दों में ख्याति को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है ''फर्म की ख्याति संभावित अधिक आय का वर्तमान मूल्य है'' या ''व्यवसाय का वह पूँजीकृत मूल्य है जो कि उसकी विभेदात्मक लाभ क्षमता से जुड़ा होता है''। अत: ख्याति तभी विद्यमान होगी जब फर्म सामान्य लाभों से अधिक लाभ अर्जित करती है। जिस फर्म में हानि हो रही हो या सामान्य लाभ हो रहे हों, उस फर्म की ख्याति नहीं है।

2.5.2 ख्याति के मूल्य को प्रभावित करने वाले घटक

ख्याति के मूल्य को प्रभावित करने वाले मुख्य घटक निम्न हैं :

1. *व्यवसाय का स्वरूप :* ऐसी फर्म जो उच्च मूल्य वृद्धि उत्पादों का उत्पादन करती है या जिनके उत्पादों की माँग स्थिर रहती है, अधिक लाभ कमाती है। अत: ऐसी फर्मों की ख्याति अधिक होती है।
2. *स्थान :* यदि व्यवसाय केंद्रीय स्थान पर स्थित है या उस स्थान पर जहाँ ग्राहकों की अधिक भीड़ है तो ख्याति का मूल्य बढ़ने लगता है।
3. *प्रबंध निपुणता :* एक सुप्रबंधित फर्म ऊँची उत्पादकता और लागत कुशलता के कारण अधिक लाभ अर्जित करती है, जिससे उसकी ख्याति के मूल्य में वृद्धि होती है।
4. *बाज़ार की स्थिति :* एकाधिकार की स्थिति या सीमित प्रतियोगिता, फर्म को अधिक लाभ अर्जित करने के योग्य बनाती है, इससे भी फर्म की ख्याति के मूल्य में वृद्धि होती है।
5. *विशेष लाभ :* जिस फर्म को आयात लाइसेंस, बिजली की निम्न दर व निरंतर आपूर्ति का आश्वासन, माल पूर्ति के दीर्घकालीन ठेके, सुप्रसिद्ध सहयोगी, पेटेंट, व्यापारिक चिह्न आदि के विशेष लाभ प्राप्त हों, उसकी ख्याति का मूल्य ऊँचा होगा।

2.5.3 ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता

सामान्यत:, व्यवसाय के विक्रय के समय ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता होती है किंतु साझेदारी फर्म के संदर्भ में निम्न परिस्थितियों में भी यह आवश्यकता उत्पन्न हो सकती है :

1. वर्तमान साझेदारों के बीच लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन;
2. नए साझेदार का प्रवेश;
3. साझेदार का सेवानिवृत्त होना;
4. साझेदार की मृत्यु;
5. फर्म का विघटन चालू व्यवसाय के रूप में फर्म की बिक्री सम्मिलित; और
6. साझेदारी फर्मों का एकीकरण।

2.5.4 ख्याति मूल्यांकन की विधियाँ

चूँकि ख्याति एक आभासी परिसंपत्ति है इसलिए इसके मूल्य की वास्तविक गणना करना बहुत कठिन है। साझेदारी फर्म की ख्याति का मूल्यांकन करने की विभिन्न विधियों को अपनाया जा चुका है। किसी एक विधि द्वारा गणना तथा दूसरी विधि द्वारा ख्याति की गणना के मध्य अंतर पाया जा सकता है इसलिए वह विधि जिसके द्वारा ख्याति की गणना की जानी है, का विद्यमान साझेदार तथा नए साझेदार के मध्य स्पष्ट रूप से वर्णन होना चाहिए।

ख्याति मूल्यांकन की निम्नलिखित प्रमुख विधियाँ हैं :

1. औसत लाभ विधि;
2. अधिलाभ विधि;
3. पूँजीकरण विधि।

2.5.4.1 औसत लाभ विधि

इस विधि में पिछले कुछ वर्षों के औसत लाभ को एक निश्चित वर्षों की स्वीकृत संख्या से गुणा करके ख्याति का मूल्यांकन किया जाता है। यह इस मान्यता पर आधारित है कि प्रारंभिक कुछ वर्षों में नया व्यवसाय कोई लाभ अर्जित नहीं करता है। अत: वह व्यक्ति जो चालू व्यवसाय खरीदता है वह ख्याति के लिए उस राशि का भुगतान अवश्य करता है जिसे वह लाभ के रूप में व्यवसाय के प्रारंभिक कुछ वर्षों में प्राप्त कर सकता है। अत: ख्याति की गणना करने के लिए गत वर्षो के औसत लाभ को उन भावी वर्षो की संख्या से गुणा किया जाएगा, जिनमें भावी लाभ अर्जित होने की संभावना हो।

उदाहरण के लिए, यदि व्यवसाय के गत वर्षों का औसत लाभ 20,000 रु. है और यह आशा कि अगले तीन वर्षो में भी इतना ही लाभ प्राप्त करेगा, तो ऐसी स्थिति में ख्याति का मूल्य 60,000 रु. (20,000 रु. $\times$ 3) होगा।

उदाहरण 9

गत पाँच वर्षों में एक फर्म का लाभ इस प्रकार है : वर्ष 2012, 4,00,000 रु.; वर्ष 2013, 3,98,000 रु, वर्ष 2014, 45,000 रु.; वर्ष 2015, 4,45,000 रु. और वर्ष 2016, 5,00,000 रु.। पाँच वर्षों के औसत लाभों के चार वर्षों के क्रय के आधार पर फर्म की ख्याति की गणना कीजिए?

हल

वर्ष	*लाभ (रु.)*
2012	4,00,000
2013	3,98,000
2014	4,50,000
2015	4,45,000
2016	5,00,000
योग	**21,93,000**

$$\text{औसत लाभ} = \frac{\text{गत पाँच वर्षों का कुल लाभ}}{\text{वर्षों की कुल संख्या}} = \frac{21,93,000 \text{ रु.}}{5} = 4,38,600 \text{ रु.}$$

$$\text{ख्याति} = \frac{\text{औसत लाभ}}{\text{क्रय वर्षों की कुल संख्या}}$$

$$= 4,38,600 \text{ रु.} \quad 4 = 17,54,400 \text{ रु.}$$

ख्याति की उपर्युक्त गणना इस मान्यता पर आधारित है कि भविष्य में लाभ की स्थिति में परिवर्तन होने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त उदाहरण साधारण औसत पर आधारित है। यदि फर्म के कार्यकलापों में कमी अथवा वृद्धि की स्थायी प्रवृति है तो वर्तमान वर्ष के लाभों को पिछले वर्ष के लाभों से अधिक भार दिया जाता है, वांछनीय है क्योंकि औसत निकालने का आधार, वर्ष के लाभों को क्रमशः 1, 2, 3, 4 भार देकर किया जाता है (देखें उदाहरण 10 और 11)।

उदाहरण 10

एक फर्म के गत पाँच वर्षों के लाभ इस प्रकार हैं :

वर्ष	*लाभ (रु.)*
2012–13	20,000
2013–14	24,000
2014–15	30,000
2015–16	25,000
2016–17	18,000

© NCERT not to be republished

ख्याति के मूल्य का निर्धारण भरित औसत लाभ के 3 वर्ष के क्रय के आधार पर कीजिए। वर्ष 2012-13, 2013-14, 2014-15, 2015-16 और 2016-17 को क्रमशः 1,2,3,4,5 भार प्रदान करें।

हल

31 मार्च को वर्ष की समाप्ति	*लाभ (रु.)*	*भार*	*गुणांक (रु.)*
2012-13	20,000	1	20,000
2013-14	24,000	2	48,000
2014-15	30,000	3	90,000
2015-16	25,000	4	1,00,000
2016-17	18,000	5	90,000
		15	**3,48,000**

भरित औसत लाभ = $\frac{3,48,000 \text{ रु.}}{15}$ = 23,200 रु.

ख्याति = 23,200 रु. 3 = 69,600 रु.

उदाहरण 11

एक फर्म की ख्याति के मूल्य की गणना गत चार वर्षों के भरित औसत लाभ के तीन वर्षों के क्रय के आधार पर करें। गत चार वर्षों का लाभ इस प्रकार है : 2013, 20,200 रु.; 2014, 24,800 रु.; 2015, 20,000 रु. और 2016, 30,000 रु.। प्रत्येक वर्ष को भार प्रदान किया है : 2013-1; 2014-2; 2015-3; और 2016-4

आपको निम्न सूचनाएं दी गई हैं :

1. 01 सितंबर, 2015 को संयंत्र की मरम्मत पर 6,000 रु. के खर्च को आगम पर प्रभारित किया गया। उक्त राशि का घटते हुए शेष विधि से 10% प्रतिवर्ष ह्रास का समायोजन करते हुए ख्याति की गणना हेतु पूँजीकृत करें।
2. वर्ष 2014 के लिए अंतिम स्टॉक को 2,400 रु. से अधिक मूल्यांकन किया गया है।
3. ख्याति मूल्यांकन के लिए 4,800 रु. प्रबंधकीय लागत के वार्षिक प्रभार को भी सम्मिलित किया है।

© NCERT not to be republished

हल

समायोजित लाभ की गणना	*2013* (*रु.*)	*2014* (*रु.*)	*2015* (*रु.*)	*2016* (*रु.*)
घटाया: दिया गया लाभ	20,200	24,800	20,000	30,000
प्रबंधकीय लागत	(4,800)	(4,800)	(4,800)	(4,800)
जोड़ा: पूँजीगत व्यय	15,400	20,000	15,200	25,200
आगम पर प्रभार	–	–	6,000	–
	15,400	20,000	21,200	25,200
घटाया: नहीं लगाया गया ह्रास	–	–	(200)	(580)
	15,400	20,000	21,000	24,620
घटाया: अंतिम स्टॉक का अधिक मूल्यांकन	–	(2,400)	–	–
	15,400	17,600	21,000	24,620
जोड़ा: प्रारंभिक स्टॉक का अधिक मूल्यांकन	–	–	2,400	–
समायोजित लाभ	**15,400**	**17,600**	**23,400**	**24,620**

भरित औसत लाभ की गणना :

(*रु.*)

वर्ष	*लाभ*	*भार*	*गुंणाक*
2013	15,400	1	15,400
2014	17,600	2	35,200
2015	23,400	3	70,200
2016	24,620	4	98,480
योग			**2,19,280**

भरित औसत लाभ = $\frac{2,19,280 \text{ रु.}}{10}$ = 21,928 रु.

ख्याति = 21,928 रु. 3 = 65,784 रु.

हल की टिप्पणी

(i) 2015 के लिए ह्रास = 6,000 रु. का 10%, 4 माह के लिए
= 6,000 रु. 10/100 4/12 = 200 रु.

(ii) 2016 के लिए ह्रास = 6,000 रु. का 10% – 200 रु., एक वर्ष के लिए
= 5,800 रु. 10/100 + 580 रु.

(iii) 2014 का अंतिम स्टॉक 2015 वर्ष का प्रारंभिक स्टॉक होगा।

© NCERT not to be republished

2.5.4.2 अधिलाभ विधि

ख्याति मूल्यांकन की औसत लाभ विधि (सामान्य या भरित) से आधारभूत मान्यता यह है कि जब नया व्यवसाय स्थापित किया जाता है तो यह अपने संचालन के प्रथम प्रारंभिक कुछ वर्षों में कोई लाभ अर्जित नहीं कर पाता। अतः उस व्यक्ति को जो चालू व्यवसाय खरीदता है ख्याति के रूप में व्यवसाय के प्रथम कुछ वर्षों से प्राप्त होने वाले लाभ के बराबर राशि का भुगतान करना होता है। यह विवादपूर्ण है कि क्रेता का वास्तविक लाभ उसके कुल लाभ में निहित नहीं है। यह लाभ की उस मात्रा तक सीमित है जो समान व्यवसाय में विनियोजित पूँजी पर सामान्य प्रतिफल से अधिक है। अतः ख्याति का मूल्यांकन वास्तविक लाभ के आधार पर नहीं बल्कि अधिलाभ के आधार पर करना वांछनीय है। सामान्य लाभ पर वास्तविक लाभ का आधिक्य अधिलाभ कहलाता है।

$$\text{सामान्य लाभ} = \frac{\text{फर्म की पूँजी} \quad \text{प्रतिफल की सामान्य दर}}{100}$$

फर्म की पूँजी में साझेदारों की पूँजी और संचय एवं अधिशेष शामिल हैं। अमूर्त परिसंपत्तियों और ख्याति को सम्मिलित नहीं किया जाता है।

मान लीजिए एक चालू फर्म 1,50,000 रु. की पूँजी पर 18,000 रु. का लाभ अर्जित करती है और प्रतिफल की सामान्य दर 10% है। सामान्य लाभ 15,000 रु. (1,50,000 10/100) निकाला जाएगा। इस स्थिति में अधिलाभ 3,000 रु. (18,000 रु. – 15,000 रु.) होगा। अतः इस विधि में निम्न चरण सम्मिलित हैं:

1. औसत लाभ की गणना करें,
2. विनियोजित पूँजी पर प्रतिफल की सामान्य दर के आधार पर सामान्य लाभ की गणना करें,
3. औसत लाभ में से सामान्य लाभ घटाकर अधिलाभ की गणना करें, और
4. अधिलाभ को दिए गए वर्षों के क्रय से गुणा करके ख्याति की गणना करें।

उदाहरण 12

एक व्यवसाय की लेखा पुस्तकें यह दर्शाती हैं कि 31 दिसंबर, 2014 को 5,00,000 रु. फर्म की पूँजी है और पिछले पाँच वर्षों का लाभ इस प्रकार हैं : 2012, 40,000 रु.; 2013, 50,000 रु.; 2014, 55000 रु.; 2015, 70,000 रु. और 2016, 85,000 रु.। आपको व्यवसाय के अधिलाभों के 3 वर्षों के क्रय के आधार पर ख्याति की गणना करनी है। प्रतिफल की सामान्य दर 10% दी हैं।

हल

$$\text{सामान्य लाभ} = \frac{\text{फर्म की पूँजी} \quad \text{सामान्य प्रतिफल दर}}{100}$$

$$= \frac{5,00,000 \text{ रु.} \quad 10}{100} = 50,000 \text{ रु.}$$

© NCERT not to be republished

औसत लाभ

वर्ष	*लाभ (रु.)*
2012	40,000
2013	50,000
2014	55,000
2015	70,000
2016	85,000
योग	**3,00,000**

औसत लाभ = 3,00,000 रु./5 = 60,000 रु.
अधिलाभ = 60,000 रु. – 50,000 रु. = 10,000 रु.
ख्याति = 10,000 3 = 30,000 रु.

उदाहरण 13

अनु और बनू फर्म की पूँजी 1,00,000 रु. और बाज़ार ब्याज दर 15% है। प्रत्येक साझेदार का वार्षिक वेतन 6,000 रु. हैं। पिछले तीन वर्षों के लाभ इस प्रकार हैं : 30,000 रु.; 36,000 रु.; और 42,000 रु.। ख्याति का मूल्यांकन गत तीन वर्षों के औसत अधिलाभ पर दो वर्षों के क्रय पर होगा। फर्म की ख्याति की गणना करें।

हल

पूँजी पर ब्याज = 1,00,000 रु. $\frac{15}{100}$ 15,000 रु.............(i)
जोड़ा: साझेदारों का वेतन = 6,000 2 12,000 रु.............(ii)
सामान्य लाभ (i + ii) = 27,000 रु.
औसत लाभ = 30,000 रु. + 36,000 रु. + 42,000 रु. = $\frac{1,08,000 \text{ रु.}}{3}$
= 36,000 रु.
अधिलाभ = औसत लाभ – सामान्य लाभ
= 36,000 रु. – 27,000 रु.
= 9,000 रु.
ख्याति = अधिलाभ क्रय वर्षों की संख्या
= 9,000 रु. 2
= 18,000 रु.

© NCERT not to be republished

2.5.4.3 पूँजीकरण विधि :

इस विधि से ख्याति का मूल्यांकन दो प्रकार से किया जाता है :

(अ) औसत लाभ का पूँजीकरण, या (ब) अधिलाभ का पूँजीकरण।

(अ) *औसत लाभों का पूँजीकरण :* इस विधि में ख्याति का मूल्य प्रतिफल की सामान्य दर के आधार पर औसत लाभ के पूँजीकृत मूल्य में से व्यवसाय में विनियोजित वास्तविक पूँजी (निवल परिसंपत्ति) को घटाकर निर्धारित की जाती है। इसमें निम्न चरण सम्मिलित हैं :

(i) पिछले कुछ वर्षों के कार्य संपादन के आधार पर औसत लाभ निश्चित कीजिए।

(ii) प्रतिफल की सामान्य दर के आधार पर औसत लाभ का पूँजीगत मूल्य निम्न प्रकार ज्ञात करें:

$$\frac{\textbf{औसत लाभ}}{\textbf{प्रतिफल की सामान्य दर}} \quad \mathbf{100}$$

(iii) कुल परिसंपत्तियों (ख्याति को छोड़कर) में से बाह्य दायित्व घटाकर व्यवसाय में विनियोजित फर्म की वास्तविक पूँजी (निवल परिसंपत्तियाँ) ज्ञात करें।

फर्म की पूँजी = कुल परिसंपत्तियाँ (ख्याति व अन्य अमूर्त परिसंपत्तियों को छोड़कर) – बाह्य दायित्व।
बाह्य दायित्व में दीर्घ कालीन और लघु कालीन दायित्व सम्मिलित हैं।

(iv) औसत लाभों के पूँजीकृत मूल्य में से निवल परिसंपत्तियों को घटाकर ख्याति के कुल मूल्य की गणना करें अर्थात (ii)–(iii)

उदाहरण 14

एक व्यवसाय पिछले कुछ वर्षों में 1,00,000 रु. का औसत लाभ अर्जित करता है और इसी प्रकार के व्यवसाय में प्रतिफल की सामान्य दर 10% है। यदि व्यवसाय की निवल परिसंपत्तियों का मूल्य 8,20,000 रु. दिया है तो पूँजीगत औसत लाभ विधि द्वारा ख्याति के मूल्य का निर्धारण करें।

हल

औसत लाभों का पूँजीगत मूल्य

$$= \frac{1,00,000 \quad 100}{10} = 10,00,000 \text{ रु.}$$

ख्याति = पूँजीकृत मूल्य – निवल परिसंपत्तियाँ
= 10,00,000 रु. – 8,20,000 रु.
= 1,80,000 रु.

(ब) *अधिलाभों का पूँजीकरण :* ख्याति का निर्धारण, अधिलाभों का पूँजीकरण करके सीधे ज्ञात किया जा सकता है। इस विधि के अंतर्गत औसत लाभों का पूँजीकरण करने की आवश्यकता नहीं हैं। इसके अंतर्गत निम्न चरण आते हैं—

(i) फर्म की पूँजी ज्ञात करें जिसे कुल परिसंपत्तियों में से बाह्य दायित्वों को घटाकर प्राप्त किया जाता है।

© NCERT not to be republished

(ii) फर्म की पूँजी पर सामान्य लाभ की गणना करें।

(iii) दिए गए गत वर्षों के औसत लाभ की गणना करें।

(iv) औसत लाभ में से सामान्य लाभ की राशि को घटाकर अधिलाभ की राशि की गणना करें।

(v) अधिलाभ की राशि को प्रतिफल की सामान्य दर गुंणाक से गुणा करें, अर्थात

$$\text{ख्याति} = \frac{\text{अधिलाभ}}{\text{सामान्य प्रतिफल की दर}} \quad 100$$

दूसरे शब्दों में ख्याति के मूल्य को अधिलाभ पर पूँजीकृत किया जाता है। इस विधि से ख्याति की राशि की गणना उसी प्रकार से की जाती है जैसा कि औसत लाभों को पूँजीकृत करके किया जाता है।

उदाहरण के लिए, उदाहरण 14 में दी गई संख्याओं के प्रयोग करने पर औसत लाभ 1,00,000 रु. है तथा सामान्य लाभ 82,000 रु. (8,20,000 रु. का 10%) होगा; अधिलाभ 1,80,000 रु. (1,00,000 रु. – 82,000 रु.) निकलेगा, ख्याति 18,000   100/10 = 1,80,000 रु. होगी।

उदाहरण 15

1. एक फर्म की ख्याति को पिछले पाँच वर्षों के औसत लाभों के तीन वर्षों के क्रय के आधार पर लगाया जाता है जो कि इस प्रकार हैं :

वर्ष	*लाभ (हानि) (रु.)*
2012	10,000
2013	15,000
2014	4,000
2015	(5,000)
2016	6,000

2. यदि फर्म की कुल पूँजी 1,00,000 है और प्रतिफल की सामान्य दर 8% है। पिछले 5 वर्षों का औसत लाभ 12,000 रु. है और ख्याति का अनुमान तीन वर्षों के अधिलाभों पर लगाया जाता हैं।
3. राम ब्रदर्स का औसत लाभ 30,000 रु. हैं और पूँजी 2,00,000 रु. हैं। व्यवसाय में सामान्य प्रतिफल की दर 10% है। अधिलाभ की पूँजीकरण विधि का प्रयोग करते हुए ख्याति का मूल्य ज्ञात करे।

हल

1. कुल लाभ = 10,000 रु. + 15,000 रु. + 4,000 रु. + 6,000 रु. – (5,000 रु.) = 30,000 रु.
   औसत लाभ = 30,000/5 = 6,000 रु.
   ख्याति = औसत लाभ 3 = 6,000 रु. 3 = 18,000 रु.

© NCERT not to be republished

2. औसत लाभ = 12,000 रु.

सामान्य लाभ = 1,00,000 $\frac{8}{100}$ = 8,000 रु.

अधिलाभ = औसत लाभ – सामान्य लाभ = 12,000 रु. – 8,000 रु. = 4,000 रु.

ख्याति = अधिलाभ 3 = 4,000 रु. 3 = 12,000 रु.

3. सामान्य लाभ = 2,00,000 रु. 10/100 = 20,000 रु.

अधिलाभ = औसत लाभ – सामान्य लाभ = 30,000 रु. – 20,000 रु. = 10,000 रु.

ख्याति = अधिलाभ 100 / प्रतिफल की सामान्य दर

= 10,000 रु. 100/10 = 1,00,000 रु.

2.5.5 ख्याति का व्यवहार

जैसा कि पहले भी बताया गया है कि नया साझेदार फर्म के लाभों में स्वयं के दावे की पूर्ति और पुराने साझेदारों के लाभों के अनुपात में हुई कमी की क्षतिपूर्ति अतिरिक्त धनराशि से करता है जिसे नये साझेदार द्वारा लाई गई ख्याति का प्रतिफल कहते हैं।

2.5.5.1 जब नया साझेदार ख्याति की धनराशि नकद लाता है

ऐसी स्थिति में जब पुराने साझेदार नए साझेदार द्वारा लाई गई ख्याति के अंश को त्याग अनुपात में विभाजित करते हैं तब यदि यह राशि सीधे तौर पर पुराने साझेदारों को व्यक्तिगत रूप से दी जाती है तो फर्म की पुस्तकों ने कोई प्रवृष्टि नहीं होती है। परन्तु यदि यह राशि फर्म के माध्यम से दी गई है तो निम्न रोजनामाचा प्रविष्टयाँ होगी :

(i)	बैंक खाता ख्याति का प्रतिफल खाता (ख्याति के अंश का भुगतान)	नाम
(ii)	ख्याति खाता पुराने साझेदारों का पूँजी खाता (प्रत्येक साझेदार) (त्याग अनुपात पर ख्याति का विभाजन)	नाम

वैकल्पिक रूप से, इसे नए साझेदार के पूँजी खाते के जमा पक्ष में लिखा जाता है और तद्पश्चात् पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में त्याग अनुपात की दर से समायोजन होता है। ऐसी स्थिति में निम्नलिखित रोजनामचा प्रविष्टियाँ होंगी :

© NCERT not to be republished

(i)	बैंक खाता नए साझेदा का पूँजी खाता (नए साझेदार द्वारा ख्याति का अंश)	नाम
(ii)	नए साझेदार का पूँजी खाता पुराने साझेदारों की पूँजी खाता (प्रत्येक साझेदार) (त्याग अनुपात पर लाई गई ख्याति की धनराशि का पुराने साझेदारों को विभाजन)	नाम

यदि साझेदार यह निर्णय लेते हैं कि उनके पूँजी खाते के जमा पक्ष पर लिखी गई ख्याति पर प्रतिफल की राशि व्यवसाय में ही रहेगी तो ऐसी स्थिति में कोई भी अतिरिक्त रोजनामचा प्रविष्टि नही की जाएगी। किन्तु यदि पुराने साझेदार ख्याति की राशि पूर्णत: अथवा आंशिक रूप से आहरित करने का निर्णय लेते हैं नीचे दी गई अतिरिक्त प्रविष्टि की जाएगी :

पुराने साझेदारों का पूँजी खाता नाम
(प्रत्येक साझेदार)
बैंक खाता
(आहरित की गई ख्याति की राशि)

उदाहरण 16

सुनील और दिलीप फर्म में साझेदार हैं और लाभ तथा हानि का विभाजन 5:3 के अनुपात में करते हैं। सचिन फर्म में 1/5 भाग के लाभ के लिए प्रवेश करता है। वह पूँजी के लिए 20,000 रु. और ख्याति के भाग के लिए 4,000 रु. चेक द्वारा लाता है। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।

(अ) जब ख्याति की राशि को व्यवसाय में रखा जाता है।
(ब) जब ख्याति की पूर्ण राशि को निकाल दिया जाता हैं।
(स) जब ख्याति की राशि का 50 प्रतिशत निकाला जाता है।

हल

(अ) जब ख्याति की राशि वर्तमान साझेदारों के खातों में जमा की जाती है और व्यवसाय की पुस्तकों में दर्शायी जाती है।

© NCERT not to be republished

सुनील, दिलीप और सचिन की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	विवरण	रो. पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
(i)	बैंक खाता नाम सचिन के पूँजी खाते से ख्याति पर प्रतिफल खाते से (सचिन द्वारा पूँजी व ख्याति के लिए लाई गई राशि)		24,000	 20,000 4,000
(ii)	ख्याति खाता नाम सुनील के पूँजी खाते से दिलीप के पूँजी खाते से (सुनील व दिलीप को 5:3 के अनुपात में ख्याति का हस्तांतरण)		4,000	 2,500 1,500

विकल्प: यदि ख्याति को खाता पुस्तकों में नहीं दर्शाया जाये तो नीचे दी गई प्रविष्टियाँ अभिलेखित की जाएँगी:

			रु.	रु.
(i)	रोकड़ खाता	नाम	24,000	
	सचिन के पूँजी खाते से			24,000
(ii)	सचिन का पूँजी खाता		4,000	
	सुनील के पूँजी खाते से			2,500
	दिलिप के पूँजी खाते से			1,500

टिप्पणी : यह माना गया है कि त्याग अनुपात, पुराने लाभ विभाजन अनुपात के समान है।

(ब) जब वर्तमान साझेदारों द्वारा ख्याति की पूर्ण राशि को निकाल लिया जाता है :

रोज़नामचा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
1. 2. 3.	उपरोक्त (अ) की तरह उपरोक्त (अ) की तरह सुनील का पूँजी खाता नाम दिलीप का पूँजी खाता नाम बैंक खाते से (सुनील और दिलीप द्वारा ख्याति के भाग का रोकड़ निकालने पर)		 2,500 1,500	 4,000

(स) जब वर्तमान साझेदारों को जमा की गई ख्याति की राशि का 50 प्रतिशत निकाला जाता हैं

रोज़नामचा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	नाम (रु.)	जमा (रु.)
1. 2. 3.	उपरोक्त (अ) की तरह उपरोक्त (अ) की तरह सुनील का पूँजी खाता नाम दिलीप का पूँजी खाता नाम रोकड़ खाते से (ख्याति के 50 प्रतिशत भाग के बराबर रोकड़ निकालने पर)		 1,250 750	 2,000

© NCERT not to be republished

उदाहरण 17

विजय और संजय फर्म में साझेदार हैं और लाभ व हानि का विभाजन 3:2 के अनुपात में करते हैं। वे अजय को लाभ में 1/4 भाग के लिए साझेदारी में प्रवेश कराने का निर्णय लेते है। अजय 30,000 रु. पूँजी के लिए और ख्याति के लिए आवश्यक राशि की रोकड़ लाता है। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 20,000 रु. में हुआ। नया लाभ विभाजन अनुपात 2:1:1 हैं। विजय और संजय अपने भाग की ख्याति को आहरित करते हैं। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

हल

(अ) अजय अपने भाग की ख्याति के लिए 5,000 रु. लाता है (20,000 रु. का 1/4)

(ब) त्याग अनुपात 2 : 3 की गणना निम्न हैं :

विजय के लिए, पुराना अनुपात 3/5 और नया अनुपात 2/4, अत: उसका त्याग अनुपात होगा

$$= \frac{3}{5} - \frac{2}{4} = \frac{12-10}{20} = \frac{2}{20}$$

संजय के लिए, पुराना अनुपात 2/5 और नया अनुपात 1/4, अत: उसका त्याग अनुपात होगा

$$= \frac{2}{5} - \frac{1}{4} = \frac{8-5}{20} = \frac{3}{20}$$

विजय, संजय और अजय की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	विवरण		रो.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
1.	बैंक खाता	नाम		35,000	
	अजय के पूँजी खाते से				30,000
	ख्याति पर प्रतिफल खाते से				5,000
	(अजय द्वारा पूँजी और ख्याति की लाई गई राशि)				
2.	ख्याति खाता	नाम		5,000	
	विजय के पूँजी खाते से				2,000
	संजय के पूँजी खाते से				3,000
	(अजय द्वारा लाई गई ख्याति की राशि का विजय व संजय द्वारा त्याग अनुपात में विभाजन)				
3.	विजय का पूँजी खाता	नाम		2,000	
	संजय का पूँजी खाता	नाम		3,000	
	बैंक खाते से				5,000
	(अपने भाग की ख्याति के रोकड़ का अजय व संजय द्वारा निकाले जाने पर)				

टिप्पणी : विकल्प के तौर पर (1) तथा (2) की रोज़नामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी:

© NCERT not to be republished

विजय, संजय और अजय की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	विवरण		रो.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
1.	रोकड़ खाता	नाम		35,000	
	अजय के पूँजी खाते से				35,000
	(अजय द्वारा लाई गई पूँजी 30,000 रु. और ख्याति 5,000 रु.)				
2.	अजय का पूँजी खाता	नाम		5,000	
	विजय के पूँजी खाते से				2,000
	संजय के पूँजी खाते से				3,000
	(अजय द्वारा लाई गई ख्याति की राशि का विजय और संजय द्वारा 2:3 के त्याग अनुपात में बँटवारा)				

जब ख्याति पुस्तकों में विद्यमान हो : यदि साझेदारी के प्रवेश पर फर्म की पुस्तकों में ख्याति की राशि विद्यमान हो तो प्रवेश के समय इस राशि को अपलिखित किया जाएगा। उदाहरण 17 में, फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 20,000 रु. हुआ तथा अजय जो कि 1/4 भाग के लिए प्रवेश करता है, अपने भाग की ख्याति के लिए 5,000 रु. लाता है। मान लीजिए, फर्म की पुस्तकों में ख्याति का मूल्य 10,000 रु. पहले से दर्शाया गया है तथा इसको रखने के लिए कोई निर्णय नहीं हुआ है। इस स्थिति में, निम्न अतिरिक्त रोज़नामचा प्रविष्टि का अभिलेखन किया जाएगा :

तिथि	विवरण		रो.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	विजय का पूँजी खाता	नाम		6,000	
	संजय का पूँजी खाता	नाम		4,000	
	ख्याति खाते से				10,000
	(ख्याति को पुराने अनुपात में अपलिखित करने पर)				

उदाहरण 18

श्रीकांत और रमन फर्म में साझेदार हैं और लाभ तथा हानि का विभाजन 3:2 के अनुपात में करते हैं। वे 1/3 भाग के लाभ के लिए वेंकट को साझेदारी में प्रवेश कराने का निर्णय लेते है। वेंकट अपनी पूँजी के लिए 30,000 रु. लाता है। वह अपने भाग की ख्याति की आवश्यक राशि लाने की प्रतिज्ञा करता है। प्रवेश की तिथि को ख्याति का मूल्यांकन 24,000 रु. हुआ। 12,000 रु. की ख्याति पुस्तकों में पहले से मौजूद है।

© NCERT not to be republished

वेंकट अपने भाग की ख्याति के लिए आवश्यक राशि लाता है और वर्तमान ख्याति खाते को अपलिखित करने के लिए सहमत होता है।

फर्म की लेखा पुस्तकों में आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।

हल

श्रीकांत, रमन और वेंकट की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*		*रो.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
1.	बैंक खाता	नाम		38,000	
	वेंकट के पूँजी खाते से				30,000
	ख्याति पर प्रतिफल खाते से				8,000
	(अपने भाग की पूँजी व ख्याति की राशि लाने पर)				
2.	ख्याति पर प्रतिफल खातों से	नाम		8,000	
	श्रीकांत के पूँजी खाते से				4,800
	रमन के पूँजी खाते से				3,200
	(वेंकट द्वारा लाई गई ख्याति की राशि पुराने साझेदारों द्वारा त्याग अनुपात में विभाजित)				
3.	श्रीकांत का पूँजी खाता	नाम		7,200	
	रमन का पूँजी खाता	नाम		4,800	
	ख्याति खाते से				12,000
	(पुस्तकों में वर्तमान ख्याति को पुराने अनुपात में अपलिखित करने पर)				

टिप्पणी : क्योंकि नया साझेदार लाभ में अपने भाग के लिए श्रीकांत और रमन से जिस अनुपात में अधिग्रहण करेगा उसके बारे में कुछ वर्णित नहीं है। यह दर्शाता है कि वह वेंकट के पक्ष में लाभ के भाग का त्याग अपने पुराने अनुपात में करेंगे जो कि 3:2 है।

2.5.5.2 जब नया साझेदार पूर्णत: अथवा आंशिक ख्याति नही लेकर आता है।

इस स्थिति में नये साझेदार द्वारा नहीं लायी गई धनराशि को नये साझेदार के चालू खाते में नाम और पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में त्याग अनुपात की दर से जमा किया जाएगा।

इसमें दो परिस्थितियाँ हो सकती हैं:

(i) पुस्तकों में ख्याति विद्यमान है।

(ii) पुस्तकों में ख्याति विद्यमान नहीं है।

जब ख्याति पुस्तकों में विद्यमान नहीं है तब पुराने साझेदारों के खातों के जमा पक्ष पर ख्याति की राशि लिखी जाएगी और नये साझेदार के खाते को नहीं लाई गई ख्याति की राशि से नाम किया जाएगा। इस संदर्भ में रोज़नामचा प्रविष्ट इस प्रकार होगी।

© NCERT not to be republished

नये साझेदार का चालू खाता नाम
पुराने साझेदारों का पूँजी खाता
(प्रत्येक साझेदार)

कभी–कभी नया साझेदार आंशिक रूप से ख्याति का प्रतिफल लेकर आता है। ऐसी स्थिति में नए साझेदार के चालू खाते को नहीं लाई गई ख्याति की राशि से नाम किया जाएगा।

उदाहरण के लिए— 50,000 रु. के ख्याति के अंश के लिए नया साझेदार केवल 20,000 रु. लेकर आता है। ऐसी स्थिति में निम्नलिखित रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

(i)	बैंक खाता नाम ख्याति का प्रतिफल खाता (नये साझेदार द्वारा लाया गया ख्याति पर प्रतिफल)	20,000	 20,000
(ii)	ख्याति पर प्रतिफल खाता नाम नये साझेदारों का पूँजी खाता नाम पुराने साझेदारों के पूँजी खाते से	20,000 30,000	 50,000

उदाहरण 19

आहुजा और बरूआ फर्म में साझेदार हैं और लाभ और हानि का विभाजन 3:2 के अनुपात में करते हैं। वे चौधरी को 1/5 भाग के लाभ के लिए प्रवेश कराने का निर्णय लेते हैं जिसे वह आहुजा और बरूआ से बराबर अनुपात में प्राप्त करेगा। ख्याति का मूल्यांकन 30,000 रु. हुआ। चौधरी पूँजी के लिए 16,000 रु. लाता है तथा वह ख्याति के कोई भी राशि लाने की स्थिति में नहीं है। फर्म की पुस्तकों में ख्याति खाता विद्यमान नहीं है। फर्म की पुस्तकों में ख्याति खाता पूर्ण मूल्य से खोला जाएगा। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन करें।

हल

आहुजा, बरूआ और चौधरी की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
1.	बैंक खाता नाम चौधरी के पूँजी खाते से (पूँजी की राशि लाने पर)		16,000	 16,000
2.	चौधरी का चालू खाता नाम आहुजा के पूँजी खाते से बरूआ के पूँजी खाते से (ख्याति की राशी पुराने साझेदारों के खातों के जमा पक्ष में लिखी गई)		30,000	 18,000 12,000

जब ख्याति की राशि विद्यमान हो

यदि प्रवेश के समय ख्याति फर्म की पुस्तकों में विद्यमान है तो इस धनराशि को पुराने साझेदारों के पूंजी खातों से उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में विभाजित किया जाएगा। इसके पश्चात् ख्याति की नई राशि का प्रभाव पुराने साझेदारों के पूंजी खातों के जमा पक्ष की ओर और नये साझेदार के चालू खाते के नाम पक्ष की ओर पड़ेगा। रोजनामचा प्रविष्टियाँ इस प्रकार होगी:

(i)	पुराने साझेदारों का पूँजी खाता नाम ख्याति खाते से	(लाभ विभाजन अनुपात में)
(ii)	ख्याति की नई राशि के लिए पुराने साझेदारों का पूँजी खाता नाम (प्रत्येक साझेदार)	(लाभ विभाजन अनुपात में)

उदाहरण 20

राम और रहिम फर्म के साझेदार हैं और लाभ व हानि का विभाजन 3 : 2 के अनुपात में करते है। राहुल लाभ में 1/3 भाग के लिए साझेदारी करता है। वह पूँजी के लिए 10,000 रु. लाता है। किंतु वह अपने भाग की ख्याति लाने में असमर्थ है जिसका मूल्यांकन 30,000 रु. किया गया है। निम्न परिस्थितियों के लिए आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

(अ) जब फर्म की पुस्तकों में ख्याति का खाता नहीं खोला गया है;

(ब) जब फर्म की पुस्तकों में ख्याति का मूल्य 15,000 रु. दर्शाया गया है; और

हल

(अ) *जब ख्याति की राशि पुस्तकों में विद्यमान नहीं है:*

राम और रहीम की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	बैंक खाता नाम राहुल पूँजी खाते से (राहुल द्वारा पूँजी की राशि लाई गई)		10,000	 10,000
	राहुल का पूँजी खाता नाम राम के पूँजी खाते से रहीम के पूँजी खाते से (नहीं लाई गई ख्याति की राशि राहुल के चालू नाम खाते में नाम और पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में जमा की गई)		30,000	 18,000 12,000

(ब) *जब ख्याति की राशि पुस्तकों में 15,000 रु. से दर्शाया गई :*

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	बैंक खाता	नाम		10,000	
	राहुल के खाते से				10,000
	(राहुल द्वारा पूँजी की राशि लाई गई)				
	राहुल का पूँजी खाता	नाम		15,000	
	राम के पूँजी खाते से				9,000
	रहीम के पूँजी खाते से				6,000
	(नहीं लाई गई ख्याति की राशि राहुल के चालू खाते में नाम और पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में जमा की गई)	नाम			
	राम का पूँजी खाता	नाम		9,000	
	रहीम का पूँजी खाता	नाम		6,000	
	ख्याति खाता				15,000

बॉक्स 1

लेखांकन मानक - 26, अमूर्त परिसंपत्ति की उपयुक्तता

यह मानक अप्रैल 01, 2003 से आरंभ होने वाले लेखांकन अवधि के लिए अमूर्त्त परिसंपत्तियों पर किये गए खर्च संबंधी सूचनाओं के प्रकटन से संबंधित है। इस मानक के अनुसार अमूर्त्त परिसंपत्ति को पहचान योग्य, गैर मुद्रा, अभौतिक अस्तिव, उत्पादन अथवा माल और सेवाओं अथवा प्रशासनिक उद्देश्यों की पूर्ति या नियंत्रण के संदर्भ में परिभाषित किया गया है।

अमूर्त्त परिसंपत्ति के संबंध में लेखांकन मानक 26 की महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ निम्नलिखित हैं :

1. अमूर्त्त परिसंपत्ति की पहचान लेखांकन मानक 26 के मापदण्ड के अनुरूप की जायेगी।
2. आंतरिक रूप से अर्जित ख्याति की पहचान संपत्ति के रूप में नहीं की जायेगी।
3. आंतरिक रूप से अर्जित ब्राण्ड, मस्तूल शिखर, प्रकाशन, शीर्ष आदि अमूर्त्त परिसंपत्तियाँ नहीं मानी जाएगी।
4. अमूर्त्त परिसंपत्तियों का अपलेखन अति शीघ्र हो जाना चाहिए अर्थात् किसी भी दशा में परिसंपत्ति की अनुमानित जीवनकाल, जो कि सामान्यत: 10 वर्ष से अधिक नहीं हो सकता है, के पश्चात् पुस्तकों में नहीं दर्शायी जा सकती है।

लेखांकन मानक 26 से आशय यह है कि :

(अ) क्रम की गई ख्याति को अभिलेखन पुस्तकों में किया जाएगा और इसे परिसंपत्ति के रूप में दर्शाएगें। ऐसी स्थिति में इसे शीघ्र ही पुस्तकों से अपलिखित करना चाहिए, परन्तु किसी दशा में यदि अपलेखन एक से अधिक लेखांकन अवधि में निश्चित किया गया है तो यह अवधि 10 वर्ष से अधिक नहीं हो सकती है। लेखांकन मानक के संदर्भ में यदि साझेदारी पुनर्गठन पर ख्याति तुलन पत्र में दर्शायी गई है तो उसे तत्काल अपलिखित किया जाएगा।

(ब) अर्जित ख्याति का अभिलेखन संपत्ति की तरह पुस्तकों में नहीं होगा। यदि स्वः अर्जित (आंतरिक रूप से अर्जित) ख्याति पुनर्गठन के समय पुस्तकों में विद्यमान है तो उसी वित्तीय वर्ष में अपलिखित की जाएगी और किसी भी स्थिति में इसे परिसंपत्ति के रूप में तुलन पत्र में नहीं लिखा जाएगा। वैकल्पिक रूप से ख्याति का समायोजन नए साझेदार के चालू खाते को नाम और त्याग अनुपात में पुराने साझेदारों के पूँजी खाते को जमा करके होगा। दोनों विधियों से अंतिम परिणाम समान होगा।

स्वयं जाँचिए 2

सही विकल्प छाँटिए –

1. साझेदार के प्रवेश पर, पुराने तुलन पत्र में दर्शाये गए सामान्य संचय हस्तांतरित करेंगे :
   (अ) सभी साझेदारों के पूँजी खातों में
   (ब) नए साझेदार के पूँजी खातों में
   (स) पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में
   (द) इनमें से कोई नहीं
2. आशा और निशा लाभों का विभाजन 2:1 में करते हैं। आशा के पुत्र, आशीष को 1/4 भाग के लिए जिसका 1/8 भाग आशा द्वारा उसके पुत्र को उपहार में दिया गया है। शेष योगदान निशा द्वारा दिया गया है। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 40,000 रु. किया गया। पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में कितनी ख्याति जमा की जाएगी।
   (अ) 2,500 रु. प्रत्येक
   (ब) 5,000 रु. प्रत्येक
   (स) 20,000 रु. प्रत्येक
   (द) इनमें से कोई नहीं
3. अ, ब और स एक फर्म में साझेदार हैं। द नए साझेदार के रूप में प्रवेश करता है।
   (अ) पुरानी फर्म का विघटन होगा
   (ब) पुरानी फर्म तथा पुरानी साझेदारी का विघटन होगा
   (स) पुरानी साझेदारी, पुनर्गठित होगी।
   (द) इनमें से कोई नहीं।
4. किसी नए साझेदार के प्रवेश पर, परिसंपत्तियों में हुई मूल्य की वृद्धि को नाम किया जाएगा :
   (अ) लाभ व हानि समायोजन खाते में
   (ब) परिसंपत्ति खाते में
   (स) पुराने साझेदारों के पूँजी खाते में
   (द) इनमें से कोई नहीं।
5. किसी नए साझेदार के प्रवेश पर अवितरित लाभों को जो कि पुराने फर्म के तुलन पत्र में दर्शाये गए हैं, पूँजी खातों में हस्तांतरित होंगी –
   (अ) पुराने साझेदारों को पुराने पूँजी विभाजन अनुपात में
   (ब) पुराने साझेदारों को नए लाभ विभाजन अनुपात में
   (स) सभी साझेदारी के नए लाभ विभाजन अनुपात में

© NCERT not to be republished

2.5.5.3 प्रचछन्न ख्याति

कभी–कभी नए साझेदार के प्रवेश पर ख्याति का मूल्य नहीं दिया गया होता। ऐसी स्थिति में पूँजी विनियोग की व्यवस्था और लाभ विभाजन अनुपात के आधार पर ख्याति का मूल्यांकन किया जाता है। मान लीजिए, अ और ब एक फर्म में साझेदार हैं और फर्म के लाभ को बराबर बाँटते हैं। प्रत्येक की पूँजी 45,000 रु. हैं। वे लाभ में 1/3 भाग के लिए फर्म में नए साझेदार को शामिल करते हैं। स 60,000 पूँजी के लिए आता है। अतः स की पूँजी के आधार पर नयी पुनर्गठित फर्म की कुल पूँजी 1,80,000 रु. होगी (60,000 रु. 3) जबकि फर्म में अ, ब और स की कुल वास्तविक पूँजी 1,50,000 रु. है। (45,000 रु. + 45,000 रु. + 60,000 रु.) इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यह अंतर ख्याति के कारण है जो कि 30,000 रु. है (1,80,000 रु. – 1,50,000 रु.) जिसे अ और ब बराबर भाग में बाँटेगे (पुराना अनुपात)। इससे उनका पूँजी खाता यदि 60,000 रु. होगा तथा फर्म की कुल पूँजी 1,80,000 रु. होगी। इस स्थिति में 'स' का चालू खाता 10,000 रु. से नाम किया जाएगा। (ख्याति का उसका भाग) और अ और ब प्रत्येक के पूँजी खाते में 5,000 रु. जमा में लिखेंगे।

उदाहरण 22

हेम और नेम एक फर्म में साझेदार हैं तथा 3:2 के अनुपात में लाभ का विभाजन करते हैं। उनकी पूँजी क्रमशः 80,000 रु. और 50,000 रु. हैं। वे 1 अप्रैल, 2017 को सेम को भावी लाभ में 1/5 भाग के लिए नया साझेदार शामिल करते हैं। सेम 60,000 रु. की पूँजी लेकर आता है। ख्याति के मूल्य की गणना कीजिए और सेम के प्रवेश पर फर्म की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ कीजिए यदि

(अ) जब सैम ख्याति का अंश लेकर आता है।

(ब) जब सैम ख्याति का अंश नहीं लेकर आता है।

हल

(अ) *जब सैम ख्याति का अंश लेकर आता है:*

तिथि	विवरण	ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
(i)	बैंक खाता नाम		82,000	
	सैम के खाते से			60,000
	ख्याति पर प्रतिफल खाते से			
	(सैम द्वारा लाई गई पूँजी और ख्याति की राशि)			
(ii)	ख्याति पर प्रतिफल खाता नाम		22,000	
	हेम के पूँजी खाते से			13,200
	नेम के पूँजी खाते से			8,800
	(ख्याति पर प्रतिफ पुराने साझेदारी के पूँजी खातों में त्याग अनुपात पर जमा किया गया)			

© NCERT not to be republished

(ब) *जब सैम ख्याति की राशि नहीं लेकर आता है :*

तिथि	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
(i)	बैंक खाता	नाम		60,000	
	सैम के पूँजी खाते से				60,000
	ख्याति पर प्रतिफल खाते से				
	(सैम द्वारा लाई गई पूँजी और ख्याति की गई)				
(ii)	सैम का चालू खाता	नाम		22,000	
	हेम का पूँजी खाता				13,200
	नेम का पूँजी खातो				8,800
	(नहीं लाई गई ख्याति की राशि का विभाजन)				

कार्यकारी टिप्पणी

फर्म की ख्याति का मूल्यांकन :

सैम की पूँजी = 60,000 रु.

सैम के लाभों का अंश = $\frac{1}{5}$

फर्म की कुल पूँजी = 60,000 रु. 5 = 3,00,0000 रु.

हेम+नेम+सैम = 80,000 रु. + 50,000 रु. + 60,000 रु.

= 1,90,000 रु.

फर्म की ख्याति = 3,00,000 रु. – 1,90,000 रु. = 1,10,000 रु.

सैम का अंश = 1,10,000 रु. $\frac{1}{5}$ = 22,000 रु.

स्वयं करें

1. एक फर्म के पिछले तीन वर्षों का लाभ 5,00,000 रु., 4,00,000 रु. और 6,00,000 रु. है। पिछले तीन वर्षों के औसत लाभ के चार वर्ष की क्रय के आधार पर ख्याति के मूल्य की गणना करें।
2. एक फर्म का लाभ वर्ष 2013, 2014, 2015 और 2016 के दौरान क्रमशः 16,000 रु., 20,000 रु. 24,000 रु. और 32,000 है। फर्म में 1,00,000 रु. का पूँजी विनियोग है। विनियोग पर प्रतिफल की सामान्य दर 18% वार्षिक है। पिछले चार वर्षों के औसत अधिलाभ के 3 वर्ष की क्रय के आधार पर ख्याति की गणना करें।

© NCERT not to be republished

3. उपरोक्त प्रश्न में दिए गए आँकड़ों के आधार पर ख्याति का मूल्यांकन अधिलाभ के पूँजीकरण विधि द्वारा कीजिए। क्या ख्याति की राशि का मूल्य भिन्न हो सकता है यदि इसकी गणना औसत लाभों के पूँजीकरण से की जाए? अपने उत्तर की सत्यता की पुष्टि संख्यात्मक आधार पर कीजिए।
4. गिरी और शांता फर्म में साझेदार हैं और लाभ का विभाजन बराबर करते हैं। वे साझेदारी में काचरू को प्रवेश देते हैं जोकि फर्म के 1/5 भाग के लाभ के लिए पूँजी के अतिरिक्त 20,000 रु. ख्याति के रूप में लाता है। रोज़नामचा प्रविष्टि क्या होगी, यदि
   (अ) फर्म की पुस्तकों में ख्याति खाता नहीं दर्शाया गया है।
   (ब) फर्म की पुस्तकों में ख्याति खाता 40,000 रु. से दर्शाया गया है।

2.6 संचित लाभों और हानियों का समायोजन

कभी-कभी फर्म में संचित लाभ विद्यमान होते हैं जिनको साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरित नही किया जाता है। यह सामान्यत: सामान्य संचय, संचय कोष और लाभ तथा हानि खातो के शेष के रूप में होते है। नया साझेदार इस तरह के संचित लाभों में भाग का अधिकारी नहीं है। इनका बंटवारा साझेदारों के पूँजी खातों में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित करके किया जाता हैं।

इसी प्रकार कुछ संचित हानियाँ जो कि लाभ तथा हानि खाते का नाम शेष के रूप में फर्म के तुलन पत्र में दर्शायी गई हैं। यह संभव है कि इन सब को भी पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में हस्तांतरित किया जाए।

(देखे उदाहरण 23)

उदाहरण 23

राजेन्द्र और सुरेन्द्र एक फर्म में साझेदार हैं तथा 4:1 के अनुपात में लाभ का विभाजन करते हैं। वे अप्रैल 15, 2017 को नरेन्द्र को फर्म में प्रवेश देते हैं। इस तिथि को फर्म के सामान्य संचय में 20,000 रु. और लाभ हानि खाते के नाम शेष में 10,000 रु. है। संचित लाभ व हानि को समायोजित करने के संदर्भ में आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

हल

राजेन्द्र, सुरेन्द्र और नरेन्द्र की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि *2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
15 अप्रैल	सामान्य संचय खाता नाम		20,000	
	राजेंद्र के पूँजी खाते से			16,000
	सुरेंद्र के पूँजी खाते से			4,000
	(नरेंद्र के प्रवेश पर सामान्य संचय का राजेंद्र और सुरेंद्र के पूँजी खातों में हस्तांतरण)			

	राजेंद्र के पूँजी खाता नाम			8,000	
	सुरेंद्र के पूँजी खाता नाम			2,000	
	लाभ और हानि खाते से				10,000
	(लाभ और हानि खाते के नाम शेष का पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में हस्तांतरण)				

2.7 परिसंपत्तियों का पुनर्मूल्यांकन और दायित्वों का पुनर्निर्धारण

नए साझेदार के प्रवेश पर, यह गणना करना कि क्या फर्म की परिसंपत्तियों को उनके वर्तमान मूल्य पर दर्शाया गया है, आवश्यक है। इस स्थिति में परिसंपत्तियों का मूल्य अधिक होगा या कम होगा। इनका पुनर्मूल्यांकन किया जाएगा। इसी प्रकार दायित्वों का पुनः निर्धारण भी किया जाएगा जिससे पुस्तकों में इनकों उनके सही मूल्य पर लाया जा सके। इस समय यहाँ पर कुछ गैर–अभिलेखित परिसंपत्तियों एवं दायित्व भी फर्म में हो सकते हैं। इनको भी फर्म की लेखा पुस्तकों में लाना होगा। इस उद्देश्य के लिए फर्म पुनर्मूल्यांकन खाता तैयार करती है। प्रत्येक परिसंपत्ति या दायित्व पर लाभ या हानि को इस खाते में हस्तांतरित किया जाता है तथा अन्त में इसके शेष को पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित करते हैं। दूसरे शब्दों में पुनर्मूल्यांकन खाते को प्रत्येक परिसंपत्ति के मूल्य में वृद्धि पर तथा दायित्व में कमी होने पर जमा किया जाएगा क्योंकि यह एक अभिलाभ है और परिसंपत्ति के मूल्य में कमी तथा दायित्व में वृद्धि होने पर नाम किया जाएगा क्योंकि यह एक हानि है। इसी प्रकार गैर–अभिलेखित परिसंपत्तियाँ जमा तथा गैर–अभिलेखित दायित्वों को पुनर्मूल्यांकन खाते में नाम पक्ष किया जाएगा। यदि पुनर्मूल्यांकन खाता अंत में जमा शेष दर्शाता है तो यह निवल लाभ और यदि नाम शेष दर्शाता है तो यह निवल हानि है, जिसको कि पुराने साझेदारों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित किया जाएगा।

परिसंपत्तियों के पुनर्मूल्यांकन और दायित्वों को पुनर्निर्धारण पर निम्न प्रविष्टियाँ अभिलेखित की जाएंगी।

(i) परिसंपत्तियों के मूल्य में वृद्धि पर
  परिसंपत्ति खाता नाम
    पुनर्मूल्यांकन खाते से (लाभ)

(ii) परिसंपत्तियों के मूल्य में कमी पर
  पुनर्मूल्यांकन खाता नाम
    परिसंपत्ति खाते से (हानि)

(iii) दायित्व के मूल्य में वृद्धि पर
  पुनर्मूल्यांकन खाता नाम
    दायित्व खाते से (हानि)

(iv) दायित्व के मूल्य में कमी पर
  दायित्व खाता नाम
  पुनर्मूल्यांकन खाते से (लाभ)

(v) गैर–अभिलेखित परिसंपत्ति के लिए

परिसंपत्ति खाता नाम

पुनर्मूल्यांकन खाते से (लाभ)

(vi) गैर–अभिलेखित दायित्व के लिए

पुनर्मूल्यांकन खाता नाम

देयता खाते से (हानि)

(vii) पुनर्मूल्यांकन पर लाभ को हस्तांतरण करने पर, यदि जमा शेष हो

पुनर्मूल्यांकन खाता नाम

पुराने साझेदारों के पूँजी खाते से (व्यक्तिगत) (पुराने अनुपात में)

(viii) पुनर्मूल्यांकन पर हानि को हस्तांतरित करने पर

पुराने साझेदारों के पूँजी खाते (व्यक्तिगत) नाम

पुनर्मूल्यांकन खाते से (पुराने अनुपात में)

टिप्पणी: प्रविष्टि (i), (ii), (iii) और (iv) को केवल परिसंपत्तियों और दायित्वों के मूल्य में वृद्धि या कमी की राशि से किया जाएगा।

उदाहरण 24

निम्न तुलन पत्र अ और ब का है, जो 3:2 के अनुपात में लाभ विभाजित करते हैं।

1 अप्रैल, 2017 को अ और ब का तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
विविध लेनदार		20,000	हस्तस्थ रोकड़	3,000
पूँजी:			देनदार	12,000
अ	30,000		स्टॉक	15,000
ब	20,000	50,000	फ़र्नीचर	10,000
			संयंत्र एवं मशीनरी	30,000
		70,000		**70,000**

इस तिथि को, निम्न शर्तों पर स को साझेदारी में प्रवेश दिया गया :

1. स लाभ में 1/6 भाग के लिए 15,000 रु. की पूँजी और 5,000 रु. ख्याति के लिए प्रीमियम के रूप में लाएगा।
2. स्टॉक के मूल्य में 10% कमी तथा संयंत्र एवं मशीनरी में 10% की वृद्धि हुई।

3. फ़र्नीचर का पुनर्मूल्यांकन 9,000 रु. पर किया गया।
4. विविध देनदारों पर 5% संदिग्ध ऋणों का प्रावधान किया गया और 200 रु. बिजली का बिल देने के लिए उपलब्ध रहेंगे।
5. 1,000 रु. मूल्य के विनियोग (जिन्हें तुलन पत्र में नहीं दर्शाया गया है) बही खातो में दर्शाया जाएगा।
6. एक लेनदार जिस पर 100 रु. देय है अपलिखित किया गया।

रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन करें और पुनर्मूल्यांकन खाता और साझेदारों के पूँजी खाते तैयार करें।

हल

अ, ब और स की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि 2017	विवरण	रो.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
अप्रैल 01	बैंक खाता नाम स के पूँजी खाते से ख्याति खाते से (स पूँजी और ख्याति की धनराशि लाया)		20,000	 15,000 5,000
02	ख्याति खाता नाम अ के पूँजी खाते से ब के पूँजी खाते से (प्रीमियम का अ और ब को 3:2 के त्याग अनुपात में बँटवारा)		5,000	 3,000 2,000
03	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम स्टॉक खाते से फ़र्नीचर खाते से संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान खाते से (परिसंपत्तियों के पुनर्मूल्यांकन पर)		3,100	 1,500 1,000 600
04	संयंत्र एवं मशीनरी खाता नाम विनियोग खाता नाम पुनर्मूल्यांकन खाते से (पुनर्मूल्यांकन पर परिसंपत्तियों के मूल्य में वृद्धि पर)		3,000 1,000	 4,000
05	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम बकाया बिजली खाते से (बकाया बिजली बिल के प्रावधान पर)		200	 200

06	विविध लेनदार खाता नाम पुनर्मूल्यांकन खाते से (लेनदार के दावा न करने पर राशि अपलिखित की गई)		100	 100
07	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम अ के पूँजी खाते से ब के पूँजी खाते से (परिसंपत्तियों के पुनर्मूल्यांकन व दायित्वों के पुनर्निर्धारण पर लाभ का अ और ब को पुराने लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरण)		800	 480 320

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम *जमा*

विवरण	*राशि (रु.)*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
स्टॉक	1,500	संयंत्र एवं मशीनरी	3,000
फर्नीचर	1,000	विनियोग	1,000
संदिग्ध ऋण के लिए	600	विविध लेनदार	100
प्रावधान बकाया बिजली	200		
पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का हस्तांतरणः			
अ की पूँजी	480		
ब की पूँजी	320		
	4,100		**4,100**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*अ (रु.)*	*ब (रु.)*	*स (रु.)*	*तिथि 2007*	*विवरण*	*अ (रु.)*	*ब (रु.)*	*स (रु.)*
अप्रैल 01	शेष आ/ला	33,480	22,320	15,000	अप्रैल 1	शेष आ/ला	30,000	20,000	
						बैंक	–	–	15,000
						ख्याति	3,000	2,000	–
						पुनर्मूल्यांकन (लाभ)	480	320	
		33,480	**22,320**	**15,000**			**33,480**	**22,320**	**15,000**

उदाहरण 25

नीचे दिया गया तुलन पत्र अ और ब का है जो 31 मार्च, 2017 को साझेदारी व्यापार चला रहे हैं तथा 2:1 के अनुपात में लाभ का विभाजन करते हैं।

31 मार्च, 2017 को अ और ब का तुलन-पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
देय विपत्र		10,000	हस्तस्थ रोकड़	10,000
विविध लेनदार		58,000	बैंकस्थ रोकड़	40,000
बकाया व्यय		2,000	विविध देनदार	60,000
पूँजी			स्टॉक	40,000
अ	1,80,000		संयंत्र एवं मशीनरी	1,00,000
ब	1,50,000	3,30,000	भवन	1,50,000
		4,00,000		**4,00,000**

तुलन पत्र की तिथि को स का निम्न शर्तों पर फर्म में प्रवेश होता हैं :

1. स फर्म में 1/4 भाग के लिए 1,00,000 रु. और 60,000 रु. ख्याति के रूप में लाएगा।
2. संयंत्र का मूल्य 1,20,000 रु. हुआ और भवन के मूल्य में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई।
3. स्टॉक 4,000 रु. से अधिक मूल्यांकित है।
4. देनदारों पर 5 प्रतिशत की दर से संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान बनाया जाएगा।
5. 1,000 रु. के लेनदारों का अभिलेखन नहीं हुआ था।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते और नए साझेदार के प्रवेश के बाद पुनर्गठित फर्म का तुलन पत्र तैयार करें।

हल

अ और ब की पुस्तकें

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम जमा

विवरण		राशि (रु.)	विवरण	राशि (रु.)
हस्तस्थ स्टॉक		4,000	संयंत्र एवं मशीनरी	20,000
संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान		3,000	भवन	15,000
लेनदार		1,000		
पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का हस्तांतरण				
अ की पूँजी	18,000			
ब की पूँजी	9,000	27,000		
		35,000		**35,000**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम जमा

तिथि 2017	विवरण	अ (रु.)	ब (रु.)	स (रु.)	तिथि 2017	विवरण	अ (रु.)	ब (रु.)	स (रु.)
31मार्च	शेष आ/ला	2,38,000	1,79,000	1,00,000	31मार्च	शेष आ/ला	1,80,000	1,50,000	
						बैंक	–	–	1,00,000
						ख्याति	40,000	20,000	–
						पुनर्मूल्यांकन	18,000	9,000	
		2,38,000	**1,79,000**	**1,00,000**			**2,38,000**	**1,79,000**	**1,00,000**

01 अप्रैल, 2015 को अ, ब और स का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ		राशि (रु.)
देय विपत्र		10,000	हस्तस्थ रोकड़		10,000
विविध लेनदार		59,000	बैंकस्थ रोकड़		2,00,000
बकाया व्यय		2,000	विविध देनदार	60,000	
पूँजी:			*घटाया:* संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	(3,000)	57,000
अ	2,38,000		स्टॉक		36,000
ब	1,79,000		संयंत्र एवं मशीनरी		1,20,000
स	1,00,000	5,17,000	भवन		1,65,000
		5,88,000			**5,88,000**

स्वयं करें

1. असलम, जेकब और हरी बराबर के साझेदार हैं उनकी पूँजी क्रमश 1,500 रु., 1,750 रु. और 2,000 रु. हैं। वे सतनाम को साझेदारी में बराबर भाग से प्रवेश देते हैं, जिसके लिए वह 1/4 भाग की ख्याति के 1,500 रु. तथा पूँजी के लिए 1,800 रु. का भुगतान करता हैं। दोनों राशि व्यापार में रहेगी। पुराने फर्म के दायित्व 3,000 रु. तथा परिसंपत्तियाँ, रोकड़ के अतिरिक्त शामिल हैं : मोटर 1,200 रु., फ़र्नीचर 400 रु., स्टॉक 2,650 रुपये, देनदार 3,780 रु. हैं। मोटर तथा फ़र्नीचर का पुनर्मूल्यांकन क्रमशः 250 रु. और 380 रु. हैं तथा मूल्यह्रास को अपलिखित किया गया हैं। हस्तस्थ रोकड़ का निर्धारण करें तथा सतनाम के प्रवेश के बाद तुलन पत्र तैयार करें।'.
2. बीनू तथा सुनील लाभ का विभाजन 3:2 में करते हुए साझेदार हैं। 01 अप्रैल, 2015 को ईना को 1/4 भाग के लिए साझेदार बनाते हैं जो कि पूँजी के रूप में 2,00,000 रु. तथा प्रीमियम के लिए 1,00,000 रु. रोकड़ लाती है। प्रवेश के समय सामान्य संचय 1,20,000 रु. तथा तुलन पत्र के

© NCERT not to be republished

परिसंपत्ति पक्ष में लाभ तथा हानि खाते की राशि 1,00,000 रु. दर्शायी गई है। निम्न व्यवहारों के अभिलेखन के लिए आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।

3. आशु तथा राहुल लाभों का विभाजन 5:3 में करते हुए साझेदार हैं। गौरव को 1/5 भाग के लिए प्रवेश दिया जाता है तथा उससे अंशदान के लिए आनुपातिक पूँजी तथा 4,000 रु. प्रीमियम (ख्याति) के लिए कहा जाता है। आशु और राहुल की पूँजी, पुनर्मूल्यांकन और ख्याति से संबंधित सभी समायोजनों के पश्चात क्रमश: 47,000 रु. तथा 35,000 रु. हैं।
आवश्यक: नए लाभ विभाजन अनुपात तथा गौरव द्वारा लाई गई पूँजी की गणना कीजिए तथा उपरोक्त के लिए आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।

2.8 पूँजी का समायोजन

कभी–कभी, साझेदार के प्रवेश के समय, साझेदार लाभ विभाजन अनुपात के आधार पर अपनी पूँजी के समायोजन के लिए सहमत होते हैं। ऐसी स्थिति में यदि नए साझेदार की पूँजी दी गई है तो उसके आधार पर पुराने साझेदारों की नयी पूँजी की गणना की जाती है। ख्याति, संचय और परिसंपत्तियों और दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन आदि के सभी समायोजनों के पश्चात निर्धारित की गई पूँजी की तुलना पुरानी पूँजी से की जाती हैं । यदि किसी साझेदार की पूँजी कम होती हैं तो वह कमी को पूरा करने के लिए आवश्यक राशि लेकर आता है और जिस साझेदार की राशि अधिक होगी वह पूँजी की अधिक राशि को निकाल कर ले जाएगा। (देखें उदाहरण 26)

उदाहरण 26

अ और ब एक फर्म में साझेदार हैं तथा 2:1 के अनुपात में लाभ का विभाजन करते हैं। वे स को लाभ में 1/4 भाग के लिए शामिल करते हैं। स 20,000 रु. पूँजी के लिए लाता है। ख्याति, परिसंपत्तियाँ एवं दायित्वों से संबंधित समायोजनों के पश्चात पुराने साझेदारों अ और ब की पूँजी क्रमश: 45,000 रु. 15,000 रु. होगी। यह निर्णय लिया गया कि साझेदारों की पूँजी नए लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार होगी। अ और ब की नई पूँजी ज्ञात कीजिए तथा यह मानते हुए रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें कि जिस साझेदार की पूँजी कम होगी वह आवश्यक राशि लेकर आएगा तथा पूँजी राशि अधिक होने पर निकाल ली जाएगी।

हल

1. नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना: यह माना गया है कि स ने अपना भाग, अ और ब से पुराने लाभ विभाजन अनुपात में लिया है, अर्थात 2:1

कुल भाग $= 1$

स का भाग $= \frac{1}{4}$

शेष भाग $= 1-\frac{1}{4}=\frac{3}{4}$

अ का नया भाग $= \frac{3}{4} \ \ \frac{2}{3} = \frac{6}{12}$

ब का नया भाग $= \frac{3}{4} \ \ \frac{1}{3} = \frac{3}{12}$

स का नया भाग $= \frac{1}{4} \ \ \frac{3}{3} = \frac{3}{12}$

अतः अ, ब और स के बीच नया लाभ विभाजन अनुपात 6:3:3 या 2:1:1 होगा।

2. अ और ब की नयी पूँजी:

स की पूँजी (जिसका लाभ में 1/4 भाग है) 20,000 रु. है। ब का लाभ में नया भाग 1/4 है। अतः उसकी पूँजी भी 20,000 रु. होगी। अ का नया भाग 2/4 है जो कि स के भाग का दोगुना होगा। इसलिए उसकी पूँजी 40,000 रु. होगी।

विकल्प के तौर पर स की पूँजी के आधार पर फर्म की कुल पूँजी 80,000 रु. है (4/1 20,000 रु.) अतः लाभ में भाग के आधार पर अ और ब की पूँजी होगी :

अ की पूँजी = 80,000 रु. का $\frac{2}{4}$ = 40,000 रु.

ब की पूँजी = 80,000 रु. का $\frac{1}{4}$ = 20,000 रु.

समस्त समायोजनों के पश्चात् अ और ब की पूँजी क्रमशः 45,000 रु. और 15,000 रु. हैं। अतः अ फर्म से 5,000 रु. (45,000 रु. – 40,000 रु.) निकाल कर ले जाएगा। जबकि ब 5,000 रु. (20,000 – 15,000 रु.) की राशि को लेकर आएगा। रोज़नामचा प्रविष्टि होगी :

रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	अ का पूँजी खाता नाम रोकड़ खाते से (अ द्वारा अधिक राशि को निकालने पर)		5,000	 5,000
	रोकड़ खाता नाम ब के पूँजी खाते से (ब द्वारा लाई गई कम राशि)		5,000	 5,000

कभी-कभी फर्म की कुल पूँजी दी गई होती है। यह निर्णय लिया जाता है कि प्रत्येक साझेदार की पूँजी, लाभ विभाजन अनुपात के अनुरूप हो। ऐसी स्थिति में प्रत्येक साझेदार की पूँजी का निर्धारण (नए साझेदार सहित) उसके लाभ विभाजन अनुपात के आधार पर किया जाता है। अतिरिक्त पूँजी लाकर या अतिरिक्त पूँजी निकाल कर प्रत्येक साझेदार की अंतिम पूँजी को ऐच्छिक स्तर पर लाया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

यह ध्यान देने योग्य है कि साझेदारों के पूँजी खाते में आधिक्य या कमी को साझेदारों के बीच अनुबंध के आधार पर संबंधित चालू खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता है। (देखें उदाहरण 27)

उदाहरण 27

अ, ब और स एक फर्म में साझेदार हैं तथा 3:2:1 के अनुपात में लाभ का विभाजन करते हैं। वे द को फर्म में 1/4 भाग के लिए प्रवेश देते है जिससे वह अ से 1/8 भाग तथा ब से 1/8 भाग प्राप्त करता है। फर्म की कुल पूँजी 1,20,000 रु. निर्धारित की जाती है तथा द को अपने 1/4 भाग के लिए फर्म में पूँजी लाना तय हुआ। अन्य साझेदारों की पूँजी का समायोजन भी उनके लाभ विभाजन अनुपात के आधार पर किया जाएगा। समस्त समायोजनों के पश्चात अ, ब और स की पूँजी क्रमश: 40,000 रु. 35,000 रु. और 30,000 रु. है। अ, ब और स की नयी पूँजी की राशि ज्ञात करें और आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि का अभिलेखन करें।

हल

1. नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना :

अ $= \frac{1}{2} - \frac{1}{8} = \frac{3}{8}$

ब $= \frac{1}{3} - \frac{1}{8} = \frac{5}{24}$

स को लाभ में पहले की तरह 1/6 भाग दिया जाएगा।

अत: अ, ब, स और द का नया लाभ विभाजन अनुपात होगा :

$\frac{3}{8} : \frac{5}{24} : \frac{1}{6} : \frac{1}{4}$ या $\frac{9}{24} : \frac{5}{24} : \frac{4}{24} : \frac{6}{24}$ या 9:5:4:6

2. सभी साझेदारों की पूँजी का निर्धारण :

अ की पूँजी = 1,20,000 रु. $\frac{9}{24}$ = 45,000 रु.

ब की पूँजी = 1,20,000 रु. $\frac{5}{24}$ = 25,000 रु.

स की पूँजी = 1,20,000 रु. $\frac{4}{24}$ = 30,000 रु.

द की पूँजी = 1,20,000 रु. $\frac{6}{24}$ = 30,000 रु.

अत: अ 5,000 रु. (4,50,000 रु. – 40,000 रु.) लायेगा, ब 10,000 रु. (35,000 रु. – 25,000 रु.) निकाल कर ले जाएगा। स 10,000 रु. (30,000 रु. – 20,000 रु.) निकाले और द 30,000 रु. लाएगा। विकल्प के रूप में अ, ब और स के द्वारा लाई गई या निकाली जाने वाली राशि के लिए चालू खाता खोलकर उनसे संबंधित चालू खाते में उनके बीच समझौते के अनुसार हस्तांतरित किया जाएगा। इस के लिए रोज़नामचा प्रविष्टि इस प्रकार की जाएगी:

अ, ब, स तथा द की पुस्तकें रोज़नामचा

तिथि	विवरण		रो.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
1.	रोकड़ खाता	नाम		5,000	
	अ के पूँजी खाते से				5,000
	(अतिरिक्त राशि द्वारा पूँजी में कमी को अ ने पूरा किया)				
2.	ब का पूँजी खाता	नाम		10,000	
	स का पूँजी खाता	नाम		10,000	
	रोकड़ खाते से				20,000
	(अधिक्य राशि को ब और स ने आहरित किया)				
3.	रोकड़ खाता	नाम		30,000	
	द के पूँजी खाते से				30,000
	(द से द्वारा धनराशि लाई गई)				

विकल्प के तौर पर उपरोक्त (2) तथा (3) के लिए प्रविष्टि

अ, ब, स और द की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	विवरण		रो.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
2.	अ का चालू खाता	नाम		5,000	
	अ का पूंजी खाते से				5,000
	(अ के पूँजी खाते की कमी को अ के चालू खाते में हस्तांतरण)				
3.	ब का पूँजी खाता	नाम		10,000	
	स का पूँजी खाता	नाम		10,000	
	ब के चालू खाते से				10,000
	स के चालू खाते से				10,000
	(ब और स की अधिक पूँजी का उनके चालू खाते में हस्तांतरण)				

उदाहरण 28

अ और ब एक फर्म में साझेदार हैं तथा 2:1 के अनुपात में लाभ का विभाजन करते हैं। स फर्म के लाभ में 1/4 भाग के लिए प्रवेश करता है। वह फर्म में 30,000 रु. की पूँजी लेकर आएगा और अ और ब की पूँजी उनके लाभ विभाजन अनुपात के आधार पर समायोजित की जाएगी। 31 मार्च, 2017 को स के प्रवेश से पूर्व फर्म का तुलन पत्र नीचे दिया गया है :

31 मार्च, 2017 को अ और ब का तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
लेनदार		8,000	हस्तस्थ रोकड़	2,000
देय विपत्र		4,000	बैंकस्थ रोकड़	10,000
सामान्य संचय		6,000	विविध देनदार	8,000
पूँजी:			स्टॉक	10,000
अ	50,000		फ़र्नीचर	5,000
ब	32,000	82,000	मशीनरी	25,000
			भवन	40,000
		1,00,000		**1,00,000**

समझौते की अन्य शर्ते इस प्रकार है:

1. स 12,000 रु. की राशि ख्याति के रूप में लेकर आएगा।
2. भवन को 45,000 रु. और मशीनरी को 23,000 रु. पर मूल्यांकित किया जाएगा।
3. देनदारों पर 6% की दर से डूबत ऋण के लिए प्रावधान करें।
4. चालू खाते खोलकर अ, ब और स की पूँजी का समायोजन किया जाएगा।

आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन करें और आवश्यक बही खाते तथा स के प्रवेश के पश्चात तुलन पत्र तैयार करें।

हल

अ, ब, और स की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि 2017	*विवरण*		*रो.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
1 मार्च	रोकड़ खाता	नाम		42,000	
	स के पूँजी खाते से				30,000
	ख्याति खाते से				12,000
	(स द्वारा लाई गई पूँजी और ख्याति की राशि)				
	ख्याति खाता	नाम		12,000	
	अ के पूँजी खाते से				8,000
	ब के पूँजी खाते से				4,000
	(ख्याति की राशि का साझेदारों के पूँजी खाते में उनके त्याग अनुपात में हस्तांतरण)				

© NCERT not to be republished

	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम मशीनरी खाते से संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान खाते से (मशीनरी के मूल्य में कमी और डूबत ऋण के लिए प्रावधान का सृजन)		2,480	 2,000 480
	भवन खाता नाम पुनर्मूल्यांकन खाते से (भवन के मूल्य में वृद्धि)		5,000	 5,000
	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम अ के पूँजी खाते से ब के पूँजी खाते से (पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का अ और ब के मध्य बँटवारा)		2,520	 1,680 840
	सामान्य संचय खाता नाम अ के पूँजी खाते से ब के पूँजी खाते से (अवितरित लाभ का अ और ब को हस्तांतरण)		6,000	 4,000 2,000
	अ का पूँजी खाता नाम अ के चालू खाते से (पूँजी पर आधिक्य का चालू खाते में हस्तांतरण)		3,680	 3,680
	ब का पूँजी खाता नाम ब के चालू खाते से (ब की पूँजी पर आधिक्य का चालू खाते में हस्तांतरण)		8,840	 8,840

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
मशीनरी		2,000	भवन	5,000
डूबत ऋण के लिए प्रावधान		480		
पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का हस्तांतरण :				
अ की पूँजी	1,680			
ब की पूँजी	840	2,520		
		5,000		**5,000**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*अ* (रु.)	*ब* (रु.)	*स* (रु.)	*तिथि*	*विवरण*	*अ* (रु.)	*ब* (रु.)	*स* (रु.)
	चालू खाता	3,680	8,840	–		शेष आ/ला	50,000	32,000	–
	शेष आ/ले	60,000	30,000	30,000		रोकड़	–	–	30,000
						ख्याति	8,000	4,000	–
						सामान्य संचय	4,000	2,000	–
						पुनर्मूल्यांकन	1,680	840	
		63,680	**38,840**	**30,000**			**63,680**	**38,840**	**30,000**

साझेदारों के चालू खाते

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*अ* (रु.)	*ब* (रु.)	*स* (रु.)	*तिथि*	*विवरण*	*अ* (रु.)	*ब* (रु.)	*स* (रु.)
	शेष आ/ले	3,680	8,840	–		पूँजी	3,680	8,840	–

31 मार्च, 2017 को अ, ब और स का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ		राशि (रु.)
लेनदार		8,000	हस्तस्थ रोकड़		44,000
देय विपत्र		4,000	बैंकस्थ रोकड़		10,000
साझेदारों के चालू खाते:			विविध देनदार	8,000	
अ	3,680		*घटाया:* संदिग्ध ऋण	480	7,520
ब	8,840	12,520	के लिए प्रावधान		
पूँजी:			स्टॉक		10,000
अ	60,000		फ़र्नीचर		5,000
ब	30,000		मशीनरी		23,000
स	30,000	1,20,000	भवन		45,000
		1,44,520			**1,44,520**

टिप्पणी :

1. नया लाभ विभाजन अनुपात :
   यह नहीं दिया गया है कि स ने अ और ब से कितना भाग प्राप्त किया है। अत: यह माना गया है कि अ और ब पुराने अनुपात में ही लाभ का विभाजन करेंगे जो कि 2:1 है।

स का लाभ में भाग = $\frac{1}{4}$

शेष भाग = $1-\frac{1}{4}=\frac{3}{4}$

अ का नया भाग = $\frac{3}{4}$ का $\frac{2}{3}=\frac{6}{12}=\frac{1}{2}$

ब का नया भाग = $\frac{3}{4}$ का $\frac{1}{3}=\frac{3}{12}=\frac{1}{4}$

अतः अ, ब और स के मध्य नया लाभ विभाजन अनुपात 2:1:1 होगा।

2. अ और ब की नयी पूँजी:

स फर्म में 1/4 भाग के लिए 30,000 रु. लेकर आता है। अतः स की पूँजी के आधार पर फर्म की कुल पूँजी 1,20,000 (4/1   30,000) होगी तथा अ और ब की पूँजी इस प्रकार होगी

अ की पूँजी = $\frac{2}{4}$ 1,20,000 = 60,000 रु.

ब की पूँजी = $\frac{1}{4}$ 1,20,000 = 30,000 रु.

उदाहरण 29

1 अप्रैल, 2017 को डब्लू और आर का तुलन पत्र नीचे दिया गया है जो कि लाभ का विभाजन 3:2 के अनुपात में करते हैं।

1 अप्रैल, 2017 को डब्लू और आर का तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*		*राशि (रु.)*
विविध लेनदार		20,000	हस्तस्थ रोकड़		5,000
साझेदारों की पूँजी:			विविध देनदार	20,000	
डब्लू	40,000		*घटाया:* संदिग्ध ऋणों	(700)	19,300
आर	30,000	70,000	के लिए प्रावधान		
			स्टॉक		25,000
			संयंत्र व यंत्र		35,000
			पेटेंट		5,700
		90,000			**90,000**

इस तिथि को बी साझेदारी में निम्न शर्तों पर प्रवेश करता है:

© NCERT not to be republished

1. उसको लाभ में 4/15 भाग मिलेगा।
2. वह पूँजी के लिए 30,000 रु. लाएगा।
3. वह ख्याति के लिए रोकड़ का भुगतान करेगा जो कि चार वर्षों के औसत लाभ के 2½ वर्ष के क्रय के आधार पर होगा।
4. डब्लू और आर, बी द्वारा लाई ख्याति की राशि का आधा भाग निकाल कर ले जाएँगे।
5. परिसंपत्तियों का पुनर्मूल्यांकन इस प्रकार है : विविध देनदार को पुस्तक मूल्य से 5% प्रावधान कम करेंगे। स्टॉक 20,000 रु., संयंत्र व यंत्र 40,000 रु. तथा पेटेंट 12,000 रु.।
6. दायित्वों का मूल्यांकन 23,000 रु. हुआ; वस्तुओं के क्रय का एक बिल पुस्तकों में भूल से वही लिखा गया।
7. गत चार वर्षों का लाभ:

2013	15,000 रु.	2015	14,000 रु.
2014	20,000 रु.	2016	17,000 रु.

आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें तथा उपरोक्त का अभिलेखन खाता बही में करें और बी के प्रवेश के पश्चात् तुलन पत्र तैयार करें।

© NCERT not to be republished

हल

फर्म की ख्याति की गणना 41,250 रु. इस प्रकार की गई है:

वर्ष	लाभ
2013	15,000
2014	14,000
2015	20,000
2016	17,000
	66,000

औसत लाभ = $\frac{66,000 \text{ रु.}}{4}$ = 16,500 रु.

ख्याति 2½ वर्ष के क्रय पर = 16,500 रु. $\frac{5}{2}$ = 41,250 रु.

ख्याति में बी का भाग = 41,250 $\frac{4}{15}$ = 11,000 रु.

डब्लू, आर और बी की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि 2017	विवरण		रो.पृ.सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
01 जनवरी	रोकड़ खाता	नाम		41,000	
	बी के पूँजी खाते से				30,000
	ख्याति खाते से				11,000
	(बी द्वारा लाई गई पूँजी और 4/15 भाग की ख्याति)				
	ख्याति खाता	नाम		11,000	
	डब्लू के पूँजी खाते से				6,600
	आर के पूँजी खाते से				4,400
	(बी द्वारा लाई गई ख्याति का डब्लू और आर के पूँजी खाते में उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में जमा 3:2)				
	डब्लू का पूँजी खाता	नाम		3,300	
	आर का पूँजी खाता			2,200	
	रोकड़ खाते से				5,500
	(ख्याति की आधी राशि पुराने साझेदारों द्वारा निकालने पर)				
	पुनर्मूल्यांकन खाता	नाम		5,300	
	संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान खाते से				300
	स्टॉक खाते से				5,000
	(संदिग्ध ऋण प्रावधान में 1,000 रु. की वृद्धि (2,000 रु. का 5 प्रतिशत) और स्टॉक के मूल्य में कमी)				
	संयंत्र और मशीनरी खाता	नाम		5,000	
	पेटेंट खाता	नाम		6,300	
	पुनर्मूल्यांकन खाते से				11,300
	(संयंत्र व मशीनरी और पेटेंट के मूल्य में वृद्धि				
	पुनर्मूल्यांकन खाता	नाम		3,000	
	विविध लेनदार खाते से				3,000
	(दायित्वों में वृद्धि)				
	पुनर्मूल्यांकन खाता	नााम		3,000	
	डब्लू के पूँजी खाते से				1,800
	आर के पूँजी खाते से				1,200
	(समायोजन पर लाभ साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरित)				

© NCERT not to be republished

रोकड़ खाता

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
1 अप्रैल	शेष आ/ला		5,000	1 अप्रैल	डब्लू की पूँजी		3,300
	ब की पूँजी		30,000		आर की पूँजी		2,200
	ख्याति		11,000		शेष आ/ले		40,500
			46,000				**46,000**

बी का पूँजी खाता

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
1 अप्रैल	शेष आ/ले		30,000	1 अप्रैल	रोकड़		30,000
			30,000				**30,000**

डब्लू का पूँजी खाता

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
1 अप्रैल	रोकड़		3300	1 अप्रैल	शेष आ/ला		40,000
	शेष आ/ला		45,100		ख्याति		6,600
					पुनर्मूल्यांकन		1,800
			48,400				**48,400**

आर का पूँजी खाता

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
1 अप्रैल	रोकड़		2,200	1 अप्रैल	शेष आ/ला		30,000
	शेष आ/ले		33,400		ख्याति		4,400
					पुनर्मूल्यांकन		1,200
			35,600				**35,600**

© NCERT not to be republished

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम *जमा*

विवरण	*राशि (रु.)*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान	300	संयंत्र और यंत्र	5,000
स्टॉक	5,000	पेटेंट	6,300
विविध लेनदार	3,000		
लाभ का हस्तांतरणः			
डब्लू 3/5 1,800			
आर 2/5 1,200	3,000		
	11,300		**11,300**

01 अप्रैल, 2017 को डब्लू, आर और बी का तुलन पत्र

दायित्व	*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
विविध लेनदार	23,000	हस्तस्थ रोकड़	40,500
पूँजीः		विविध देनदार 20,000	
डब्लू 45,100		*घटाया:* संदिग्ध ऋणों	
आर 33,400		के लिए प्रावधान 1,000	19,000
बी 30,000	1,08,500	स्टॉक	20,000
		संयंत्र और मशीनरी	40,000
		पेटेंट	12,000
	1,31,500		**1,31,500**

नया लाभ विभाजन अनुपात होगा :

डब्लू $= (1 - \frac{4}{15}) \quad \frac{3}{5} = \frac{11}{15} \quad \frac{3}{5} = \frac{33}{75}$

आर $= (1 - \frac{4}{15}) \quad \frac{2}{5} = \frac{11}{15} \quad \frac{2}{5} = \frac{22}{75}$

बी $= \frac{4}{15} = \frac{20}{75}$

नया अनुपात : 33 : 22 : 20

© NCERT not to be republished

2.9 वर्तमान साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन

कभी–कभी फर्म के साझेदार, साझेदार के प्रवेश तथा सेवानिवृत्ति के बिना भी विद्यमान लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन का निर्णय लेते हैं। परिणामस्वरूप कुछ साझेदारों को भविष्य में लाभों में अतिरिक्त भाग अभिलाभ के रूप में मिल सकता है जबकि अन्य साझेदारों को कुछ भाग की हानि होती है। उदाहरण के लिए, अ, ब और स किसी फर्म में लाभों का विभाजन 8: 5:3 में करते हुए साझेदार हैं। यह समझा जाता है कि अ फर्म के कार्यों में सक्रिय रूप से भाग नहीं ले रहा है, इसलिए वह 01 अप्रैल, 2007 से भविष्य के लाभों का विभाजन 5:6:5 के अनुपात में करेंगे। परिणामस्वरूप अ को लाभ में 3/16 [8/16 – 5/16], हानि होगी जबकि ब और स को क्रमश: 1/16 [6/16 – 5/16], तथा 2/16 [5/16 –3/16], का अभिलाभ होगा। इस प्रकार की स्थिति में हानि उठाने वाले साझेदार के जमा पक्ष और लाभ उठाने वाले साझेदार के नाम पक्ष में लिखेंगे। पुस्तकों में ख्याति खाता खोले बिना पर्याप्त राशि से नाम किया जाएगा। किसी भी प्रकार का परिवर्तन लाभ विभाजन अनुपात के संबंध में समायोजन, साझेदारों के पूँजी खातों में संचित लाभों तथा हानियों का हस्तांतरण उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में और साझेदारों की पूँजी का समायोजन (यदि वर्णित हो) भी इस संबंध में सम्मिलित किया जाएगा, जिससे कि लाभ विभाजन अनुपात को उनके आनुपातिक बनाया जा सके। यह सभी उसी प्रकार होगा जैसे कि साझेदारों के प्रवेश की स्थिति में किया जाता है।

उदाहरण 30

दिनेश, रमेश और सुरेश एक फर्म में साझेदार हैं लाभ का विभाजन 3 : 3 : 2 में करते हैं। वे निर्णय लेते हैं कि 1 अप्रैल, 2016 से लाभ का विभाजन बराबर करेंगे। 31 मार्च, 2017 उनका तुलन पत्र इस प्रकार हैं:

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
विविध लेनदार		1,50,000	बैंक में रोकड़	40,000
सामान्य संचय		80,000	प्राप्य विपत्र	50,000
साझेदारों का ऋण:			विविध देनदार	60,000
दिनेश	40,000		स्टॉक	1,20,000
रमेश	30,000	70,000	स्थायी परिसंपत्तियाँ	2,80,000
साझेदारों की पूँजी:				
दिनेश	1,00,000			
रमेश	80,000			
सुरेश	70,000	2,50,000		
		5,50,000		**5,50,000**

यह निर्णय लिया गया :

1. स्थायी परिसंपत्तियों का मूल्यांकन 3,31,000 रु. होगा।
2. विविध देनदारों पर संदिग्ध ऋण के लिए 5% का प्रावधान बनाया जाएगा।
3. इस तिथि को फर्म की ख्याति पिछले पाँच वर्षो के औसत निवल लाभ के 4½ वर्ष निवल क्रय के मूल्य पर होगी जो कि क्रमश: 14,000 रु., 17,000 रु., 20,000 रु., 22,000 और 27,000 रु. है।
4. स्टॉक का मूल्य 1,12,000 रु. तक कम हुआ।
5. ख्याति को फर्म की पुस्तकों में नहीं दर्शाया जाएगा। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें तथा फर्म का संशोधित तुलन पत्र तैयार करें।

हल

दिनेश, रमेश और सुरेश की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि 2016	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
01 अप्रैल	स्थायी परिसंपत्तियाँ खाता नाम		51,000	
	पुनर्मूल्यांकन खाते से			51,000
	(स्थायी परिसंपत्तियों के मूल्य में वृद्धि)			
	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम		11,000	
	स्टॉक खाते से			8,000
	संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान खाते से			3,000
	(स्टॉक के मूल्य में कमी व संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान)			
	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम		40,000	
	दिनेश के पूँजी खाते से			15,000
	रमेश के पूँजी खाते से			15,000
	सुरेश के पूँजी खाते से			10,000
	(पुनर्मूल्यांकन पर लाभ साझेदारों के पूँजी खातों में उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित)			
	सामान्य संचय खाता नाम		80,000	
	दिनेश के पूँजी खाते से			30,000
	रमेश के पूँजी खाते से			30,000
	सुरेश के पूँजी खाते से			20,000
	(सामान्य संचय का साझेदारों के पूँजी खाते में उनके पुराने अनुपात में हस्तांतरण)			

© NCERT not to be republished

	सुरेश का पूँजी खाता नाम रमेश के पूंजी खाते दिनेश के पूँजी खाते से (ख्याति का समायोजन साझेदारों के पूँजी खातों में उनके त्याग/अभिलाभ अनुपात में)		7,500	 3,750 3,750

कार्यकारी टिप्पणी :

1. साझेदार को अभिलाभ/त्याग

	दिनेश	रमेश	सुरेश
पुराना भाग	3/8	3/8	2/8
नया भाग	1/3	1/3	1/3
अंतर	1/24	1/24	2/24
	(त्याग)	(त्याग)	(अभिलाभ)

2. ख्याति

कुल लाभ = 14,000 रु. + 17,000 रु. + 20,000 रु. + 22,000 रु. + 27,000 रु.
= 1,00,000 रु.

औसत लाभ = 1,00,000 रु. /5
= 20,000 रु.

ख्याति = 20,000 रु. 4½
= 90,000 रु.

सुरेश लाभ में 2/24 भाग अभिलाभ के लिए 7,500 रु. लेकर आएगा।

दिनेश लाभ में 1/24 भाग के त्याग के लिए 3,750 रु. प्राप्त करेगा।

रमेश लाभ में 1/24 भाग के त्याग के लिए 3,750 रु. प्राप्त करेगा।

हम पुराने अनुपात में ख्याति खाता खोलेंगे तथा नए अनुपात में अपलिखित करेंगे। इसका निवल प्रभाव एक जैसा होगा ।

3. साझेदारों के पूँजी खाते

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*दिनेश (रु.)*	*रमेश (रु.)*	*सुरेश (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*दिनेश (रु.)*	*रमेश (रु.)*	*सुरेश (रु.)*
	दिनेश का खाता				3,750		शेष आ/ला		1,00,000	80,000	70,000
	रमेश का खाता				3,750		पुनर्मल्यांकन		15,000	15,000	10,000
	शेष आ/ला		1,48,750	1,28,750	92,500		सामान्य संचय		30,000	30,000	20,000
							सुरेश का खाता		3,750	3,750	
			1,48,750	**1,28,750**	**1,00,000**				**1,48,750**	**1,28,750**	**1,00,000**

© NCERT not to be republished

01 अप्रैल, 2016 को तुलन पत्र

दायित्व		*राशि* (रु.)	*परिसंपत्तियाँ*		*राशि* (रु.)
विविध लेनदार		1,50,000	बैंक में रोकड़		40,000
साझेदार को ऋण:			प्राप्य विपत्र		50,000
दिनेश	40,000		विविध देनदार	60,000	
रमेश	30,000	70,000	*घटाया:* संदिग्ध ऋण		
पूँजी:			के लिए प्रावधान	3,000	57,000
दिनेश	148,750		स्टॉक		1,12,000
रमेश	128,750		स्थायी परिसंपत्तियाँ		3,31,000
सुरेश	92,500	3,70,000			
		5,90,000			**5,90,000**

इस अध्याय में प्रयुक्त शब्द

1. साझेदारी फर्म का पुर्नगठन
2. परिसंपत्तियों का पूनर्मूल्यांकन
3. दायित्वों का पुनर्निर्धारण
4. अवितरित और संचित लाभ और हानि
5. ख्याति
6. लाभ विभाजन अनुपात
7. संचय
8. पुनर्मूल्यांकन खाता
9. त्याग अनुपात
10. लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन

सारांश

1. *साझेदार प्रवेश के समय समायोजन :* नए साझेदार के प्रवेश के समय ख्याति, परिसंपत्तियों और देयताओं का पुनर्मूल्यांकन, संचय, लाभ (हानि), पुराने साझेदारों के पूँजी खाते के संदर्भ में फर्म की पुस्तकों में समायोजन किए जाते हैं।

2. *नए लाभ विभाजन अनुपात और त्याग अनुपात की गणना :* नया साझेदार पुराने साझेदारों से लाभ में अपना भाग प्राप्त करता है। इससे पुराने साझेदारों के लाभ अनुपात में कमी आती है। अत:, पुनर्गठित फर्म के साझेदारों के नए लाभ विभाजन अनुपात और पुराने साझेदारों के त्याग अनुपात का निर्धारण करना आवश्यक होता है। नए साझेदार के लाभ विभाजन अनुपात की गणना जिसे उसने पुराने साझेदारों के त्याग से पाया है, पुराने साझेदारों के

© NCERT not to be republished

पुराने भाग से नए भाग को घटाकर की जाती है। वह अनुपात जिसमें पुराने साझेदार प्रवेशी साझेदार के समक्ष त्याग करते हैं, त्याग अनुपात कहलाता है। यह अनुपात सामान्यत: पुराने लाभ विभाजन अनुपात के समान होता है, किंतु आपसी समझौते के आधार पर यह अनुपात भिन्न भी हो सकता है।

3. *ख्याति का लेखांकन व्यवहार :* ख्याति एक आभासी परिसंपत्ति है जिस पर व्यवसाय के स्वामी का अधिकार होता है। साझेदार के प्रवेश पर, ख्याति पर पुराने साझेदारों का अधिकार होता है। अत: प्रवेश के समय, ख्याति के लिए साझेदारों के पूँजी खातों में समायोजन किया जाता है ताकि नए साझेदारों को उस लाभ में से बिना कोई भुगतान किए हिस्सेदारी न मिल पाए जो कि फर्म ने अपनी ख्याति के परिणामस्वरूप अर्जित की है। वह राशि जिसका नया साझेदार ख्याति के लिए भुगतान करता है, ख्याति कहलाती है। लेखांकन दृष्टिकोण से, प्रवेश पर ख्याति व्यवहार भिन्न-भिन्न प्रकार से किया जा सकता है। प्रवेशी साझेदार द्वारा लाई गई ख्याति को पुराने साझेदार त्याग अनुपात में बाँटते हैं। यदि नया साझेदार नकद ख्याति लाने में असमर्थ हो तो नए साझेदार के पूँजी खाते को उसके लाभ के भाग से नाम और पुराने साझेदारों के पूँजी खातों को त्याग में जमा किया जाता है।

4. *परिसंपत्तियों और दायित्वों का पुनर्मुल्यांकन :* नए साझेदार के प्रवेश पर परिसंपत्तियों और दायित्वों का पुनर्मुल्यांकन आवश्यक होता है। इस प्रक्रिया में यदि कोई गैर-अभिलेखित परिसंपत्ति या दायित्व विद्यमान होता है तो उसकी समायोजन प्रविष्टि पुनर्मूल्यांकन खाते के माध्यम से की जाती है। पुनर्मूल्यांकन प्रक्रिया से उत्पन्न लाभ अथवा हानि को पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित कर दिया जाता है। साझेदार के प्रवेश के बाद पूँजी निर्धारण के अन्य आधार भी हो सकते हैं, जैसे कि प्रवेश के तुरंत बाद व्यवसाय की कुल पूँजी में हिस्सेदारी।

5. *संचय और संचित लाभ हानि का समायोजन:* यदि नए साझेदार के प्रवेश के समय फर्म की पुस्तकों में संचय और संचित लाभ (हानि) विद्यमान होते हैं, तो उन्हें पुराने लाभ विभाजन अनुपात में पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में हस्तांतरित कर दिया जाता है।

6. *साझेदारों के पूँजी खातों का समायोजन :* यदि समस्त साझेदारों के मध्य समझौता किया जाता हो तो नए लाभ विभाजन अनुपात में सभी साझेदारों की पूँजी का निर्धारण किया जाता है। इस प्रक्रिया में फर्म की कुल पूँजी को आधार मानकर नए लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार नयी पूँजी की राशि निर्धारित की जाती है तथा इस संदर्भ में समायोजन रोकड़ अथवा चालू खाते के माध्यम से किया जाता है।

7. *लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन:* कभी कभी फर्म के साझेदार वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन करने हेतु सहमत हो जाते हैं। परिणामस्वरूप, कुछ साझेदारों को लाभ और कुछ को हानि होता है। ऐसी स्थिति में, वह साझेदार जिसे लाभ होता है, दूसरे साझेदारों से अपने लाभ के भाग का क्रय करता है। क्षतिपूर्ति भुगतान के अतिरिक्त, लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन अविभाजित लाभ एवं संचय में समायोजन और परिसंपत्तियों और दायित्वों के पुनर्मुल्यांकन की भी आवश्यकता होती है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

लघु उत्तर प्रश्न

1. उन मदों की पहचान कीजिए जिनके संदर्भ में प्रवेश के समय समायोजन किया जाता है।
2. नए साझेदार के प्रवेश पर पुराने साझेदारों के नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना क्यों आवश्यक होती है।

3. त्याग अनुपात क्या है। इसमें गणना क्यों की जाती है?
4. किन अवसरों पर त्याग अनुपात का प्रयोग होता है?
5. यदि प्रवेश के समय ख्याति, फर्म की पुस्तकों के विद्यमान हो और नया साझेदार अपने लाभ में भाग के लिए नकद ख्याति लेकर आता है तो विद्यमान ख्याति हेतु लेखांकन व्यवहार क्या होगा?
6. साझेदार के प्रवेश के समय परिसंपत्तियों और दायित्वों के पुर्नमुल्यांकन की आवश्यकता क्यों होती है?

दीर्घ उत्तर प्रश्न

1. क्या आप यह उचित समझते हैं कि साझेदार के प्रवेश के समय परिसंपत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मुल्यांकन किया जाना चाहिए। साथ ही यह भी बताएँ इसका लेखांकन व्यवहार क्या होगा?
2. ख्याति क्या है? ख्याति को प्रभावित करने वाले तत्त्व कौन से हैं?
3. ख्याति के मुल्यांकन की विधियों की व्याख्या करें।
4. यदि समस्त साझेदारों के मध्य यह समझोता होता है कि प्रत्येक साझेदार की पूँजी नए लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार निर्धारित की जाएगी तो आप सभी साझेदारों की नयी पूँजी कैसे निकालेगें।
5. विस्तारपूर्वक बताएँ कि ख्याति का लेखांकन व्यवहार किस प्रकार होगा यदि नया साझेदार ख्याति में अपना भाग नकद लाने में असमर्थ है।
6. साझेदार के प्रवेश के समय ख्याति के लेखांकन व्यवहार की विभिन्न विधियों को विस्तारपूर्वक बताएँ।
7. साझेदार के प्रवेश पर संचित लाभ और हानि का लेखांकन व्यवहार क्या होगा?
8. पुनर्मूल्यांकन के पश्चात फर्म की परिसंपत्तियों एवं दायित्व किस मूल्य पर फर्म की पुस्तकों में दर्शाये जाते हैं। काल्पनिक तुलन पत्र की सहायता से समझाएँ।

संख्यात्मक प्रश्न

1. अ और ब फर्म में साझेदार हैं उनका लाभ विभाजन अनुपात 3:2 है। वे स को साझेदारी में 1/6 भाग के लाभ के लिए प्रवेश देते हैं। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** 3:2:1)
2. अ, ब और स एक फर्म में साझेदार हैं। लाभ विभाजन अनुपात 3:2:1 है। वे द को 10% लाभ के लिए प्रवेश देते हैं। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** 9:6:3:2)
3. एक्स और वाई साझेदार हैं लाभ विभाजन अनुपात 5:3 है। जेड को 1/10 भाग के लिए प्रवेश देते हैं जो कि वह एक्स और वाई से समाान रूप से अधिग्रहण करता है। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** 23:13:4)
4. अ, ब और स साझेदार हैं लाभ का विभाजन 2:2:1 के अनुपात से करते हैं। वे द को 1/8 भाग के लिए प्रवेश देते हैं जो कि वह अ से अधिग्रहित करता है। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** 11:16:8:5)
5. पी और क्यु साझेदार हैं उनका लाभ विभाजन अनुपात 2:1 है। वे आर को साझेदारी में 1/5 भाग के लिए प्रवेश देते हैं जिसे आर, पी और क्यु से 1:2 के अनुपात में अधिग्रहण करता है। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** 3:1:1)

© NCERT not to be republished

6. अ, ब और स साझेदार हैं लाभ का विभाजन 3:2:2 के अनुपात में करते हैं। वे द को 1/5 भाग के लिए साझेदारी में प्रवेश देते हैं जो कि वह अ, ब और स से क्रमश 2:2:1 के अनुपात में अधिग्रहण करता है। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** 61:36:43:35)
7. अ और ब फर्म में साझेदार हैं लाभ का विभाजन 3:2 के अनुपात में करते हैं वे स को 3/4 भाग के लिए प्रवेश देते हैं जो कि वह अ से 2/7 और ब से 1/7 भाग लेता है। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** 11:9:15)
8. अ, ब और स एक फर्म में साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 3:3:2 के अनुपात में करते हैं। वे द को 4/7 भाग के लिए प्रवेश देते हैं। द अपना भाग अ से 2/7, ब से 1/7 और स से 1/7 लेता है। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** 5:13:6:32)
9. राधा और रुकमणी फर्म में साझेदार हैं तथा लाभ का विभाजन 3:2 के अनुपात में करती हैं। वे गोपी को साझेदारी में प्रवेश देती हैं। राधा अपने भाग का 1/3 और रुकमणी अपने भाग का 1/4 भाग गोपी के पक्ष में समर्पित करती हैं। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** 4:3:3)
10. सिंह, गुप्ता और खान एक फर्म में साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 3:2:3 के अनुपात में करते हैं। वे जैन को साझेदारी में प्रवेश देते हैं। सिंह अपने भाग का 1/3 भाग, गुप्ता अपने भाग का 1/4 भाग और खान अपने भाग का 1/5 भाग जैन के पक्ष में त्याग करता है नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** 20:15:24:21)
11. संदीप और नवदीप फर्म में साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 5:3 के अनुपात में करते हैं। वे स को फर्म में प्रवेश देते हैं और नए विभाजन लाभ को 4:2:1 के अनुपात में विभाजित करने के लिए सहमत हैं। त्याग अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** 3:5)
12. राव और स्वामी फर्म में साझेदार हैं लाभ का विभाजन 3:2 के अनुपात मे करते हैं। वे रवि को 1/8 भाग के लाभ के लिए साझेदार बनाते हैं। राव और स्वामी के बीच नया विभाजन अनुपात 4:3 है। नए लाभ विभाजन अनुपात और त्याग अनुपात की गणना करें।
(**उत्तर** नया लाभ अनुपात 4:3:1 और त्याग अनुपात 4:1)
13. ख्याति के मूल्य की गणना पाँच वर्षों के औसत लाभ के 4 वर्षों के क्रय के आधार पर करें। पिछले पाँच वर्षों का लाभ इस प्रकार है:

	राशि (रु.)
2012	40,000
2013	50,000
2014	60,000
2015	50,000
2016	60,000

(**उत्तर** 2,08,000 रुपये)

14. व्यवसाय में विनियोजित पूँजी 2,00,000 रुपये है। फर्म की पूँजी पर प्रत्याय की दर 15% है। वर्ष 2016-17 के दौरान फर्म में 48,000 रु. का लाभ अर्जित किया। ख्याति की गणना अधिलाभ के 3 वर्षों के क्रम के आधार पर करें।

(**उत्तर** 54,000 रुपये)

15. 31 मार्च 2017 को राम और भारत की पुस्तकें 5,00,000 रुपये फर्म की पूँजी को दर्शाती हैं और गत 5 वर्षों का लाभ क्रमशः 40,000 रुपये, 50,000 रुपये, 70,000 रुपये और 25,000 रुपये है ख्याति के मूल्य की गणना गत 5 वर्षों के औसत अधिलामों के 3 वर्ष के क्रय के आधार पर यह मानते हुए करें कि सामान्य प्रतिफल दर 10% है।

(**उत्तर** 30,000 रुपये)

16. राजन और रजनी फर्म में साझेदार है। उनकी पूँजी राजन 3,00,000 रुपये और रजनी 2,00,000 रुपये है। वर्ष 2015–16 के दौरान पूँजीगत विधि से ख्याति की गणना यह मानते हुए करें कि सामान्य प्रत्याय दर 20% है।

(**उत्तर** 2,50,000 रुपये)

17. गत कुछ वर्षो के दौरान व्यापार ने 1,00,000 रुपये औसत लाभ अर्जित किया। ख्याति के रूप की गणना पूँजी करण विधि द्वारा करें यदि व्यवसाय की परिसंपत्तियाँ 10,00,000 रुपये और बाध्य दायित्व 1,80,000 रुपये हैं। सामान्य प्रतिफल दर 10% है।

(**उत्तर** 1,80,000 रुपये)

18. वर्मा और शर्मा एक फर्म में साझेदार हैं लाभ और हानि का विभाजन 5:3 के अनुपात में करते हैं। वे घोष को 1/5 भाग के लाभों के लिए साझेदार बनाते हैं। घोष पूँजी के रूप में 20,000 रुपये और अपने भाग की ख्याति के लिये 4,000 रुपये लाता है। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

(अ) जब ख्याति की राशि का व्यवसाय में रखा जाएगा।

(ब) जब ख्याति की पूर्ण राशि को निकाला जाए।

(स) जब ख्याति की राशि का 50% निकाला जाए।

(द) जब ख्याति का भुगतान निजी रूप से कर दिया जाए।

19. अ और ब फर्म में साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 3:2 के अनुपात से करते हैं। वे स को लाभ में 1/4 भाग के लिए साझेदारी में प्रवेश देते हैं। स पूँजी के लिए 30,000 रुपये और ख्याति की आवश्यक राशि रोकड़ में लाता है। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 20,000 रुपये किया गया। नया लाभ विभाजन 2:1:1 है। अ और ब अपने भाग की राशि को निकाल लेते हैं। रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।

20. आरती और भारती फर्म में साझेदार है। लाभ का विभाजन 3:2 के अनुपात में करते हैं। वे सारथी को लाभ में 1/4 भाग के लिए फर्म में प्रवेश देते हैं। सारथी अपनी पूँजी के लिए 50,000 रुपये और 1/4 भाग की ख्याति के लिये 10,000 रुपये लाती है। आरती और भारती की पुस्तकों में ख्याति का मूल्य 5,000 रुपये विद्यमान है। आरती, भारती और सारथी के मध्य का लाभ विभाजन का अनुपात 2:1:1 है। नयी फर्म की पुस्तकों में आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलेखन करें।

[संकेत : विद्यमान ख्याति को लाभ विभाजन अनुपात में अपलिखित किया जाएगा]

21. एक्स और वाई साझेदार हैं और 4:3 के अनुपात में लाभ व हानि का विभाजन करते हैं। वे जैड को लाभ में 1/8 भाग के लिए प्रवेश देते हैं। जैड 20,000 रुपये पूँजी के लिए और 1/8 भाग ख्याति के लिए 7,000 रुपये दर्शाने का निर्णय लेते हैं। एक्स, वाई और जैड की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

22. आदित्य और बालन साझेदार हैं तथा 3:2 के अनुपात में लाभ व हानि का विभाजन करते हैं। वे क्रिसटॉफर को लाभ में 1/4 भाग के लिए प्रवेश देते हैं। स्वीकृत लाभ विभाजन अनुपात 2:1:1 है। क्रिसटॉफ़र पूँजी के रूप में 50,000 रुपये लाता है। उसका ख्याति में भाग का मूल्य 15,000 रुपये स्वीकृत हुआ है। क्रिसटॉफ़र केवल 10,000 रुपये ख्याति के रूप में ला सका। फर्म की पुस्तकों में आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।
23. अमर और समर एक फर्म में साझेदार हैं और उनका लाभ हानि विभाजन अनुपात 3:1 है। वे कुँवर को लाभ में 1/4 भाग के लिए प्रवेश देते हैं। कुँवर ख्याति में अपने भाग को नकद लाने में असमर्थ है। कुँवर के प्रवेश पर फर्म की ख्याति 80,000 रुपये पर मूल्यांकित की गई है। कुँवर के प्रवेश पर ख्याति संबंधित रोज़नामचा प्रविष्टि दें।
24. मोहन लाल और सोहन लाल फर्म में साझेदार हैं तथा लाभ व हानि का विभाजन 3:2 के अनुपात में करते हैं वे राम लाल को लाभ में 1/4 भाग के लिए प्रवेश देते हैं। यह स्वीकृत हुआ है कि फर्म की ख्याति को गत 4 वर्षों के औसत लाभों के 3 वर्षों के लाभ इस प्रकार हैं: 2013-50,000 रुपये, 2014-60,000 रुपये, 2015-90,000 रुपये, 2016-70,000 रुपये। राम लाल ख्याति में अपना भाग लाने में असमर्थ है। रामलाल के प्रवेश पर आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें, जब:
    (अ) ख्याति 2,02,500 रुपयों पर पुस्तकों में विद्यमान है।
    (ब) ख्याति पुस्तकों में 2,500 रुपये पर दर्शायी गई है।
    (स) ख्याति पुस्तकों में 2,05,000 रुपये पर दर्शायी गई है।
25. राजेश और मुकेश बराबर के साझेदार हैं। वे फर्म में हरी को प्रवेश देते हैं तथा राजेश, मुकेश और हरी के मध्य नया लाभ विभाजन अनुपात 4:3:2 है। हरी के प्रवेश पर ख्याति की गणना 36,000 रुपये पर की गई है। हरी ख्याति में अपना भाग लाने में असमर्थ है। राजेश, मुकेश और हरी ख्याति तुलन पत्र में न दर्शाने पर सहमत हैं। हरी के प्रवेश पर आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।
26. अमर और अकबर फर्म में बराबर के साझेदार हैं। एंथोनी नए साझेदार के रूप में प्रवेश करता है तथा नया लाभ विभाजन अनुपात 4:3:2 है। ऐंथोनी ख्याति में अपना भाग, जोकि 45,000 रुपये है, लाने में असमर्थ है। ख्याति खाता खोले बगैर ख्याति के समायोजन का निर्णय लिया गया है। ख्याति के व्यवहार हेतु आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि दें।
27. दिया गया तुलन पत्र अ और ब का है जो 31 मार्च, 2017 को साझेदारी व्यवसाय चला रहे हैं। अ और ब 2:1 के अनुपात में लाभ हानि का बँटवारा करते हैं।

31 मार्च, 2017 को अ और ब का तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
देय विपत्र		10,000	हस्थस्थ रोकड़	10,000
लेनदार		58,000	बैंकस्थ रोकड़	40,000
बकाया व्यय		2,000	विविध देनदार	60,000
पूँजी :			स्टॉक	40,000
अ	1,80,000		संयंत्र	1,00,000
ब	1,50,000	3,30,000	भवन	1,50,000
		4,00,000		4,00,000

© NCERT not to be republished

निम्न शर्तों पर स नए साझेदार के रूप में प्रवेश करता है:

(i) लाभ में 1/4 भाग के लिए स 1,00,000 रुपये पूँजी और 60,000 रुपये ख्याति में अपने भाग के लिए लाएगा।

(ii) संयंत्र का मूल्य 1,20,000 रु. आंका गया और भवन के मूल्य में 10% की वृद्धि हुई।

(iii) स्टॉक का मूल्य 4,000 रुपये अधिक आंका गया।

(iv) देनदारों पर 5% की दर से संदिग्ध-ऋणों के लिए प्रावधान बनाया गया।

(v) गैर-अभिलेखित लेनदारों की राशि 1,000 रुपये पाई गई। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें। साथ ही स के प्रवेश पर पूनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते और तुलन पत्र तैयार करें।

(**उत्तर** पुनर्मूल्यांकन पर लाभ 27,000 रु., तुलन पत्र का योग 5,88,000 रु.)

28. लीला और मीना फर्म में साझेदार हैं और लाभ व हानि का विभाजन 5:3 अनुपात में करती हैं। अप्रैल 2017 को वे ओम को फर्म में प्रवेश देती हैं। ओम के प्रवेश तिथि पर लीला और मीता के तुलन पत्र में सामान्य संचय 16,000 रुपये और लाभ व हानि खाता 24,000 (जमा) रुपये दर्शा रहा था। ओम के प्रवेश पर उपरोक्त मदों के व्यवहार हेतु आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें। लीला और ओम के मध्य नया लाभ विभाजन अनुपात 5:3:2 है।

29. अमित और विनय फर्म में साझेदार हैं। उनका लाभ विभाजन अनुपात 3:1 है। 01 अप्रैल 2017 को वे रंजन को फर्म में प्रवेश देते हैं। रंजन के प्रवेश पर लाभ व हानि खाता 40,000 रुपये (नाम शेष) दर्शा रहा है। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि दें।

30. अ और ब 3/4 और 1/4 अनुपात में लाभों का विभाजन करते हैं। 31 मार्च, 2017 को उनका तुलन पत्र इस प्रकार है:

31 मार्च, 2017 को अ और ब का तुलन पत्र

दायित्व	*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
विविध लेनदार	41,500	बैंकस्थ रोकड़	26,500
संचय निधि	4,000	प्राप्य विपत्र	3,000
पूँजी खाते:		देनदार	16,000
अ	30,000	स्टॉक	20,000
ब	16,000	फ़िक्सचर	1,000
		भूमि व भवन	25,000
	91,500		**91,500**

01 अप्रैल, 2017 को निम्न शर्तों पर स ने प्रवेश किया:

(i) स पूँजी के रूप में 10,000 रुपये देगा।

(ii) स ख्याति के 5,000 रुपये देगा, जिसकी आधी राशि अ और ब आहरित करेंगें।

(iii) स्टॉक और फ़िक्सचर्स के मूल्य में 10% की दर से कमी होगी तथा विविध देनदारों और प्राप्य विपत्र पर 5% की दर से संदिग्ध ऋणों से प्रावधान बनाया जाएगा।

(iv) भूमि और भवन के मूल्य में 10% की दर से वृद्धि होगी।

(v) फर्म के विरुद्ध क्षतिपूर्ति का दावा है। जिसके लिए 1,000 रुपये तक के दायित्व का सृजन किया जाएगा।

(vi) विविध लेनदारों में सम्मिलित 650 रुपये की एक मद जिस पर कोई दावा नहीं है, अपलिखित की जाएगी।

यह मानते हुऐ कि अ और ब के मध्य लाभ विभाजन अनुपात में कोई परिवर्तन नहीं आया है, उपरोक्त सूचनाओं के आधार पर फर्म की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें और नया तुलन पत्र तैयार करें।

(**उत्तर** पुनर्मूल्यांकन पर लाभ 1,600 रु. तुलन पत्र का योग 1,05,950 रु.)

31. अ और ब साझेदार हैं 3:1 के अनुपात में लाभ व हानि का विभाजन करते हैं। 01 अप्रैल, 2017 को वे स को लाभों में भाग के लिए फर्म में प्रवेश देते हैं। स लाभ में अपने 1/4 भाग के लिए 20,000 रुपये लाता है। ख्याति, परिसंपत्तियों और दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन आदि समायोजनों के पश्चात अ और ब की पूँजी क्रमशः 50,000 रुपये और 12,000 रुपये है। यह भी निर्णय लिया गया है कि साझेदारों को पूँजी नए लाभ विभाजन अनुपात के अनुरूप होगी। अ और ब की नयी पूँजी की गणना को यह मानते हुए कि अ और ब नए लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार पूँजी रखते हुए अतिरिक्त धनराशि लाएँगे या आहरित करेंगे, जैसी भी स्थिति हो, आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।

32. पिंकी, कुमार और रूपा साझेदार हैं और 3:2:1 के अनुपात में लाभ हानि का बँटवारा करते हैं। वे लाभों में 1/4 भाग के लिए सीमा को प्रवेश देते हैं जिसे वह पिंकी से 1/8 तथा कुमार और रूपा से 1/16 के अनुपात में प्राप्त करेगी। सीमा के प्रवेश पर नयी फर्म की कुल पूँजी 2,40,000 रुपये निर्धारित की गई है। सीमा नयी फर्म की कुल पूँजी के 1/4 भाग के बराबर नकद धनराशि लेकर आएगी। पूराने साझेदारों की पूँजी लाभ विभाजन अनुपात के अनुरूप होगी। ख्याति और परिसंपत्तियों और दायित्वों मे पुनर्मूल्यांकन संबंधी समस्त समायोजनों के पश्चात पिंकी, कुमार और रूपा को पूँजी क्रमशः 80,000 रुपये, 30,000 रुपये और 20,000 रुपये है। सभी साझेदारों की पूँजी की गणना करें और उपरोक्त समायोजनों के पश्चात पूँजी निर्धारित करने के लिए आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें।

33. नीचे दिया गया तुलन पत्र अरूण, बबलू और चेतन का है जो क्रमशः 6/14, 5/14 और 3/14 के अनुपात में लाभ व हानि का विभाजन करते हैं।

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
लेनदार		9,000	भूमि और भवन	24,000
देय–विपत्र		3,000	फ़र्नीचर	3,500
पूँजी खाते:			स्टॉक	14,000
अरूण	19,000		देनदार	12,600
बबलू	16,000		रोकड़	900
चेतन	8,000	43,000		
		55,000		**55,000**

वे दीपक को लाभ में 1/8 भाग के लिए निम्न शर्तों पर साझेदारी फर्म में प्रवेश देते हैं:

(i) दीपक 4,200 रुपये ख्याति और 7,000 रुपये पूँजी के रूप में लाएगा।

(ii) फ़र्नीचर में 12% की दर से कमी आएगी।

(iii) स्टॉक में 10% की दर से कमी आएगी

(iv) 5% की दर से संदिग्ध ऋणों पर प्रावधान बनाया जाएगा।
(v) भूमि और भवन में 31,000 रुपये की वृद्धि होगी।
(vi) समस्त समायोजनों के पश्चात पुराने साझेदारों के पूँजी खातों को (जो पुराने अनुपात में लाभों का विभाजन करेंगें) दीपक द्वारा व्यवसाय में लगाई गई पूँजी के आधार पर समायोजित किया जाएगा, अर्थात पुराने साझेदारों द्वारा वास्तविक धनराशि लेकर आना अथवा आहरण, जैसी भी स्थिति हो।
रोकड़ खाता, लाभ व हानि समायोजन खाता (पुनर्मूल्यांकन खाता) और नयी फर्म का प्रारंभिक तुलन पत्र तैयार करें। (**उत्तरः** पुनर्मूल्यांकन पर लाभ 4,550 रुपये, तुलन पत्र का योग 68,000 रुपये)

34. आज़ाद और बबली साझेदार हैं तथा लाभ व हानि का बँटवारा 2:1 के अनुपात में करते हैं। चिंतन लाभों में 1/4 भाग के लिए प्रवेश लेता है। चिंतन 30,000 रुपये पूँजी लाएगा और आज़ाद और बबली की पूँजी लाभ विभाजन अनुपात पर समायोजित होगी। चिंतन के प्रवेश से पूर्व 31 मार्च, 2017 को आज़ाद और बबली का तुलन पत्र इस प्रकार हैं।

31 मार्च, 2017 को आज़ाद और बबली का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
लेनदार		8,000	हस्तस्थ रोकड़	2,000
देय विपत्र		4,000	बैंकस्थ रोकड़	10,000
सामान्य संचय		6,000	विविध देनदार	8,000
पूँजी खाते			स्टॉक	10,000
आज़ाद	50,000		फ़र्नीचर	5,000
बबली	32,000	82,000	मशीनरी	25,000
			भवन	40,000
		1,00,000		**1,00,000**

यह सहमति हुई है कि :
(i) चिंतन 12,000 रुपये ख्याति में अपने भाग के लिए लाएगा।
(ii) भवन का मूल्य 45,000 रुपये और मशीनरी का मूल्य 23,000 रुपये है।
(iii) देनदारों पर 6% की दर से संदिग्ध ऋणों पर प्रावधान बनाएँ।
(iv) आज़ाद और बबली के पूँजी खाते को चालू खाते से समायोजित करें।
आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें और नयी फर्म के तुलन पत्र सहित आवश्यक खाते तैयार करें।
(**उत्तरः** पुनर्मूल्यांकन पर लाभ 2,525 रुपये, तुलन पत्र का योग 1,44,520 रुपये)

35. आशीष और दत्ता फर्म में साझेदार हैं तथा 3:2 के अनुपात में लाभों का विभाजन करते हैं। 01 अप्रैल, 2017 को वे 1/5 भाग के लिए विमल को फर्म में प्रवेश देते हैं। 01 अप्रैल, 2017 को आशीष और दत्ता का तुलन पत्र इस प्रकार है:

© NCERT not to be republished

01 अप्रैल, 2017 को आशीष और दत्ता का तुलन पत्र

दायित्व	*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*		*राशि (रु.)*
लेनदार	15,000	भूमि व भवन		35,000
देय–विपत्र	10,000	संयंत्र		45,000
आशीष की पूँजी	80,000	संचय		
दत्ता की पूँजी	35,000	देनदार	22,000	
		घटाया: प्रावधान	(2,000)	20,000
		स्टॉक		35,000
		रोकड़		5,000
	1,40,000			**1,40,000**

यह सहमति हुई कि :

(i) भूमि और भवन के मूल्य में 15,000 रुपये से वृद्धि हुई है।

(ii) संचय के मूल्य में 10,000 रुपये से वृद्धि हुई है।

(iii) फर्म की ख्याति की गणना 20,000 की गई हैं।

(iv) विमल नयी फर्म की कुल पूँजी के 1/5 भाग के बराबर पूँजी लेकर आएगा।

आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दें और विमल के प्रवेश के पश्चात तुलन पत्र तैयार करें।

(**उत्तर:** पुनर्मूल्यांकन पर लाभ 25,000 रुपये, तुलन पत्र का योग 2,25,000 रुपये।

स्वयं जाँचिए हेतु जाँच सूची

स्वयं जाँचिए 1

1. अ 2. अ 3. ब

स्वयं जाँचिए 2

1. स 2. ब 3. स 4. ब 5. ब

© NCERT not to be republished

12120CH04

साझेदारी फर्म का पुनर्गठन — साझेदार की सेवानिवृत्ति/मृत्यु

3

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के उपरांत आप:

- *साझेदार की सेवानिवृत्ति/मृत्यु के पश्चात शेष साझेदारों का नया लाभ विभाजन अनुपात तथा अभिलाभ अनुपात की गणना कर सकेंगे*
- *साझेदार की सेवानिवृत्ति/ मृत्यु पर ख्याति के लेखांकन व्यवहार की व्याख्या कर सकेंगे।*
- *परिसंपत्तियों का पुनर्मूल्यांकन तथा दायित्वों के पुनर्निर्धारण के लेखांकन व्यवहार की व्याख्या कर सकेंगे।*
- *गैर-अभिलेखित परिसंपत्तियों तथा दायित्वों के संबंध में आवश्यक प्रविष्टियाँ कर सकेंगे।*
- *संचित लाभों तथा हानियों के संबंध में आवश्यक समायोजन प्रविष्टियाँ कर सकेंगे।*
- *सेवानिवृत्त/ मृत्त साझेदार का फर्म पर दावे का निर्धारण तथा उसके निपटारे की विधि का वर्णन कर सकेंगे।*
- *यदि आवश्यक हो तो सेवानिवृत्त साझेदार का पूँजी खाता तैयार कर सकेंगे।*
- *साझेदार की मृत्यु की स्थिति में, मृत्त साझेदार के उत्तराधिकारी का खाता तथा पुनर्गठित फर्म का तुलन पत्र तैयार कर सकेंगे।*

आप पढ़ चुके हैं कि किसी साझेदार के सेवानिवृत्त होने या मृत्यु होने पर एक साझेदारी के पुनर्गठन की आवश्यकता होती है। किसी साझेदार के सेवानिवृत्त या मृत्यु होने पर साझेदारी विलेख का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, और इसके स्थान पर एक नया साझेदारी विलेख लागू होता है जिसके अनुसार शेष साझेदार अपना व्यवसाय परिवर्तित शर्तों के अनुसार जारी रखते हैं। यहाँ साझेदार के सेवानिवृत्त होने या मृत्यु के समय लेखा व्यवहार करते समय कुछ ज़्यादा अंतर नहीं होता। दोनों स्थितियों में हमें साझेदार की सेवानिवृत्त (सेवानिवृत्ति के समय) और कानूनी उत्तराधिकारी (मृत्यु के समय) को ख्याति, परिसंपत्तियों तथा दायित्व का पुनर्मूल्यांकन और लाभ तथा हानियों के संबंध में सभी ज़रूरी समायोजन करने के पश्चात कुल राशि का निर्धारण किया जाता है। इनके अतिरिक्त हमें नया लाभ अनुपात शेष साझेदारों के बीच तथा साथ ही उनका अभिलाभ अनुपात ज्ञात करना होगा।

3.1 सेवानिवृत्त/मृत्त साझेदार को देय राशि का निर्धारण

साझेदार की सेवानिवृत्ति/मृत्यु के समय देय राशि का निर्धारण सेवानिवृत्त साझेदार (सेवानिवृत्ति के समय) और कानूनी उत्तराधिकारी (मृत्यु के समय) को देय राशि में शामिल है:

(i) उसके पूँजी खातों का जमा शेष;

(ii) उसके चालू खातों का जमा शेष (यदि कोई हो);

(iii) उसकी ख्याति का भाग;

(iv) उसके निर्धारित लाभ का भाग (संचय);

(v) परिसंपत्तियों तथा दायित्व के पुनर्मूल्यांकन में उसके अभिलाभ का भाग;

© NCERT not to be republished

(vi) उसके सेवानिवृत्ति/मृत्यु की तारीख तक उसके लाभ का भाग;
(vii) सेवानिवृत्ति/मृत्यु की तिथि तक उसके पूँजी पर ब्याज (यदि शामिल है) का भाग; तथा
(viii) वेतन/कमीशन, यदि कोई हो तो, सेवानिवृत्ति/मृत्यु की तिथि तक उसको देय राशि।

दी गई कटौतियाँ, यदि कोई हो, तो उसके भाग में से ली जाएँगी:

(i) उसके चालू खातों का नाम शेष (यदि हो);
(ii) अपलिखित ख्याति का भाग (यदि ज़रूरी हो);
(iii) उसकी निर्धारित हानियों का भाग;
(iv) परिसंपत्तियों तथा दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन पर उसकी हानियों का भाग;
(v) सेवानिवृत्ति/मृत्यु की तिथि तक उसके हानियों का भाग;
(vi) सेवानिवृत्ति/मृत्यु की तिथि तक उसके द्वारा आहरित राशि का भाग;
(vii) आहरण पर ब्याज, यदि शामिल है, सेवानिवृत्ति/मृत्यु की तिथि तक।

अत:, जैसे कि साझेदार के प्रवेश के समय, उसी प्रकार साझेदारों की सेवानिवृत्ति अथवा मृत्यु के समय विभिन्न लेखाकरण पक्ष इस प्रकार है:

1. नया लाभ अनुपात तथा अभिलाभ अनुपात का निर्धारण;
2. ख्याति का व्यवहार;
3. परिसंपत्तियों तथा दायित्व का पुनर्मूल्यांकन;
4. लेखा न की गई परिसंपत्तियों तथा दायित्व के संबंध में समायोजन;
5. लाभ तथा हानियों का वितरण;
6. सेवानिवृत्ति/मृत्यु की तिथि तक उसके लाभ तथा हानियों के भाग का निर्धारण;
7. पूँजी का समायोजन (यदि आवश्यक हो);
8. सेवानिवृत्त/मृत्यु होने वाले साझेदार के देय राशि का निपटारा।

3.2 नया लाभ विभाजन अनुपात

नया लाभ विभाजन अनुपात एक ऐसा अनुपात है जिसके अनुसार शेष साझेदार किसी साझेदार के सेवानिवृत्ति या मृत्यु के बाद भविष्य के लाभों का बँटवारा करेंगे। प्रत्येक शेष साझेदार का नया भाग, फर्म में उसके भाग में, सेवानिवृत्त साझेदार/मृत साझेदार से लिया गया भाग जोड़कर ज्ञात करेंगे।

निम्न स्थितियों को मानते हुए:

(अ) विद्यमान साझेदार, सेवानिवृत्त साझेदार अथवा मृत साझेदार का भाग पुराने लाभ विभाजन अनुपात में अधिग्रहित करेंगे और यहाँ उनके मध्य नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह उनके बीच पुराने लाभ विभाजन अनुपात के समान होगी। वास्तव में लाभ विभाजन अनुपात, जिसमें कि शेष साझेदार सेवानिवृत्त/मृत साझेदार से भाग का अधिग्रहण करते हैं, की सूचना के अभाव में यह मान लिया जाएगा कि वह उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में ही उसके भाग का अधिग्रहण करेंगे और इसी प्रकार भविष्य के लाभों का विभाजन इसी अनुपात

© NCERT not to be republished

में करेंगे। उदाहरण के लिए, आशा, दीप्ति और निशा एक फर्म में भविष्य के लाभ को 3:2:1 के अनुपात में बाँटते हुए साझेदार हैं। यदि दीप्ति सेवानिवृत्त होती है तो आशा और निशा के मध्य नया लाभ विभाजन अनुपात 3:1 होगा। जब तक कि वह कोई निर्णय न ले।

(ब) विद्यमान साझेदार,सेवानिवृत्त/मृत साझेदार के लाभ का भाग अपने पुराने लाभ अनुपात के अतिरिक्त अन्य अनुपात में भी अधिग्रहित कर सकते हैं। इस स्थिति में उनके मध्य नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करने की आवश्यकता नहीं है और यह क्रमश: उनके पुराने भाग और सेवानिवृत्त/मृत साझेदार से अधिग्रहित किए गए भाग के योग के बराबर होगी। *उदाहरण के लिए*, नवीन, सुरेश और तरुण लाभों का विभाजन 5:3:2 के अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। सुरेश फर्म से सेवानिवृत्त होता है तथा उसका भाग नवीन तथा तरुण 2:1 के अनुपात में अधिग्रहित करते हैं। इस स्थिति में नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना इस प्रकार की जाएगी:

विद्यमान साझेदार का नया भाग = पुराना भाग + जाने वाले साझेदार से अधिग्रहित किया गया भाग

अभिलाभ अनुपात = 2:1

नवीन द्वारा अधिग्रहित किया गया भाग $= \frac{3}{10}$ का $\frac{2}{3}$

$= \frac{2}{3} \quad \frac{3}{10} = \frac{2}{10}$

नवीन का नया भाग $= \frac{5}{10} + \frac{2}{10} = \frac{7}{10}$

तरुण द्वारा अधिग्रहित किया गया भाग $= \frac{3}{10}$ का $\frac{1}{3}$

$= \frac{1}{3} \quad \frac{3}{10} = \frac{1}{10}$

तरुण का नया भाग $= \frac{2}{10} + \frac{1}{10} = \frac{3}{30}$

अत: नवीन और तरुण के बीच नया लाभ विभाजन अनुपात होगा = 7:3

(स) विद्यमान साझेदार किसी दिए गए नए लाभ विभाजन अनुपात के लिए सहमत हो सकते हैं। इस स्थिति में दिया गया अनुपात ही नया लाभ विभाजन अनुपात होगा।

3.3 अभिलाभ अनुपात

विद्यमान साझेदार जिस अनुपात में सेवानिवृत्त/मृत साझेदार से प्राप्त भाग का अधिग्रहण करेंगे, अभिलाभ अनुपात कहलाता है। सामान्यत: विद्यमान साझेदार/सेवानिवृत्त/मृत साझेदार के भाग को पुराने लाभ विभाजन अनुपात में अधिग्रहित करते हैं। इस स्थिति में विद्यमान साझेदारों का अभिलाभ अनुपात, उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात की तरह होगा और यहाँ अभिलाभ अनुपात की गणना करने की कोई आवश्यकता नहीं है। विकल्प के तौर पर वह अनुपात जिसमें वह सेवानिवृत्त/मृत साझेदार का भाग अधिग्रहित करते हैं। उस स्थिति में, दोबारा, यहाँ अभिलाभ अनुपात ज्ञात करने की जरूरत नहीं होगी, चूँकि वह अनुपात ही जिसमें विद्यमान साझेदारों ने

© NCERT not to be republished

सेवानिवृत्त/मृत साझेदार के हिस्से का अधिग्रहण किया है, अभिलाभ अनुपात होगा। प्राथमिक रूप से लाभ, प्राप्ति अनुपात की गणना करने की समस्या वहाँ उत्पन्न होती है जहाँ पर विद्यमान साझेदारों का नया लाभ विभाजन अनुपात दिया होता है। इस प्रकार की स्थिति में, अभिलाभ अनुपात की गणना, विद्यमान साझेदारों के पुराने हिस्से को, उसके नए हिस्से में से घटाकर की जाएगी अर्थात नये लाभ के भाग को पुराने लाभ के भाग से घटाकर। उदाहरण के लिए, अमित, दिनेश और गगन लाभ विभाजन 5:3:2 के अनुपात में बाँटते हुए साझेदार हैं।

दिनेश सेवानिवृत्ति लेता है। अमित और गगन, नए फर्म के लाभ को 3:2 के अनुपात में बाँटना निर्धारित करते है। अभिलाभ अनुपात की गणना इस प्रकार होगी।

अमित का अभिलाभ अनुपात $= \frac{3}{5} - \frac{5}{10} = \frac{6-5}{10} = \frac{1}{10}$

गगन का अभिलाभ अनुपात $= \frac{2}{5} - \frac{2}{10} = \frac{4-2}{10} = \frac{2}{10}$

अमित और गगन का अभिलाभ अनुपात = 1:2

यह प्रदर्शित करता है कि अमित लाभ का $\frac{1}{3}$ भाग तथा दिनेश $\frac{2}{3}$ भाग प्राप्त करेगा।

विद्यमान साझेदारों का लाभ में हिस्सा = नया हिस्सा – पुराना हिस्सा

स्वयं करें

अभिलाभ अनुपात तथा त्याग अनुपात में अंतर निम्न बिंदुओं पर स्पष्ट करें

1. अर्थ
2. साझेदार
3. गणना विधि
4. कब गणना की जाएगी

उदाहरण 1

मधु, नेहा और टीना लाभ का भाग 5:3:2 में बाँटते हुए साझेदार हैं। नए लाभ अनुपात तथा अभिलाभ अनुपात की गणना कीजिए, यदि

1. मधु सेवानिवृत्त होती है।
2. नेहा सेवानिवृत्त होती है।
3. टीना सेवानिवृत्त होती है।

हल

पुराना अनुपात मधु : नेहा : टीना के बीच 5:3:2 दिया गया है।

1. यदि मधु सेवानिवृत्त होती है, तो नेहा और टीना के बीच नया लाभ अनुपात होगा

   नेहा : टीना =3:2 और अभिलाभ अनुपात = 3:2

2. यदि नेहा सेवानिवृत्त होती है, तो नया लाभ अनुपात मधु और टीना के मध्य होगा

मधु : टीना = 5:2

अभिलाभ अनुपात मधु तथा टीना =5:2

3. यदि टीना सेवानिवृत्त होती है तो

मधु : नेहा = 5:3

अभिलाभ अनुपात, मधु और नेहा = 5:3

उदाहरण 2

अलका, हरप्रीत तथा श्रेया लाभ को 3:2:1 में बाँटते हुए साझेदार हैं। अलका सेवानिवृत्त होती है तथा उसका भाग हरप्रीत तथा श्रेया द्वारा 3:2 के अनुपात में ले लिया जाता है। नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात कीजिए।

हल

अभिलाभ अनुपात, हरप्रीत तथा श्रेया = 3:2 = $\frac{3}{5}:\frac{2}{5}$

अलका, हरप्रीत तथा श्रेया का पुराना लाभ विभाजन अनुपात 3:2:1 = $\frac{3}{6}:\frac{2}{6}:\frac{1}{6}$

हरप्रीत के द्वारा अधिग्रहित भाग = $\frac{3}{6}$ का $\frac{3}{5} = \frac{9}{30}$

श्रेया के द्वारा अधिग्रहित भाग = $\frac{3}{6}$ का $\frac{2}{5} = \frac{6}{30}$

नया भाग = पुराना भाग + अधिग्रहित भाग

हरप्रीत का नया भाग = $\frac{2}{6}+\frac{9}{30}=\frac{19}{30}$

श्रेया का नया भाग = $\frac{1}{6}+\frac{6}{30}=\frac{11}{30}$

हरप्रीत तथा श्रेया का नया लाभ विभाजन अनुपात = 19:11

उदाहरण 3

मुरली, नवीन तथा ओमप्रकाश लाभ को $\frac{3}{8}$, $\frac{1}{2}$ और $\frac{1}{8}$ अनुपात में बाँटते हुए साझेदार हैं। मुरली सेवानिवृत्त होता है तथा अपने हिस्से का 2/3 भाग नवीन को तथा शेष भाग ओमप्रकाश को समर्पित करता है। शेष साझेदारों के नए लाभ विभाजन अनुपात तथा अभिलाभ अनुपात की गणना कीजिए।

© NCERT not to be republished

हल

	नवीन	ओमप्रकाश
(i) पुराना भाग	$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{8}$
(ii) नवीन तथा ओमप्रकाश द्वारा मुरली के भाग का अधिग्रहण	$= \frac{3}{8}$ का $\frac{2}{3} = \frac{2}{8}$	$\frac{3}{8}$ का $\frac{1}{3} = \frac{1}{8}$
(iii) नया भाग = (i) + (ii)	$= \frac{1}{2} + \frac{2}{8}$	$\frac{1}{8} + \frac{1}{8}$
	$= \frac{6}{8}$ या $\frac{3}{4}$	$= \frac{2}{8}$ या $\frac{1}{4}$

इसलिए नया लाभ विभाजन अनुपात $\frac{3}{4} : \frac{1}{4}$ या 3:1 और अभिलाभ अनुपात $\frac{2}{8} : \frac{1}{8}$ या 2:1 [जैसा (ii) में दर्शाया गया है]।

उदाहरण 4

कुमार, लक्ष्य और मनोज तथा नरेश लाभ का बँटवारा 3:2:1:4 अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। कुमार सेवानिवृत्त होता है तथा उसके भाग को लक्ष्य तथा मनोज द्वारा 3:2 में अधिग्रहित किया जाता है। शेष साझेदारों का नया लाभ विभाजन अनुपात तथा अभिलाभ अनुपात ज्ञात कीजिए।

हल

	लक्ष्य	मनोज	नरेश
(i) पुराना भाग	$\frac{2}{10}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{4}{10}$
(ii) कुमार से अधिग्रहित भाग	$\frac{3}{10}$ का $\frac{3}{5}$	$\frac{3}{10}$ का $\frac{2}{5}$	–
	$= \frac{9}{50}$	$= \frac{6}{50}$	–
(iii) नया भाग = (i) + (ii)	$\frac{2}{10} + \frac{9}{50}$	$= \frac{1}{10} + \frac{6}{50}$	$= \frac{4}{10} +$ कुछ नहीं
	$= \frac{19}{50}$	$= \frac{11}{50}$	$= \frac{20}{50}$

नया लाभ विभाजन अनुपात = 19 : 11 : 20

अभिलाभ अनुपात = 3 : 2 : 0

नोट: 1. कुमार के लाभ का हिस्सा, लक्ष्य तथा मनोज के द्वारा 3 : 2 अनुपात में अधिग्रहित किया गया है, इसलिए लक्ष्य तथा मनोज का अभिलाभ अनुपात 3 : 2 होगा।

2. नरेश न तो त्याग करेगा न ही अन्य अभिलाभ प्राप्त करेगा।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 5

रंजना, साधना और कामना लाभ का बँटवारा 4 :3 :2 में करते हुए साझेदार हैं। रंजना सेवानिवृत्त होती है तथा साधना और कामना भविष्य के लाभों का बँटवारा 5: 3 के अनुपात में करने का निर्णय लेती हैं। अभिलाभ अनुपात ज्ञात कीजिए।

हल

अभिलाभ अंश = नया हिस्सा – पुराना हिस्सा

साधना का अभिलाभ अंश $= \frac{5}{8} - \frac{3}{9} = \frac{45-24}{72} = \frac{21}{72}$

कामना का अभिलाभ अंश $= \frac{3}{8} - \frac{2}{9} = \frac{27-16}{72} = \frac{11}{72}$

साधना तथा कामना के बीच अभिलाभ अनुपात = 21:11

स्वयं करें

1. अनीता, जया तथा निशा एक फर्म में बराबर के साझेदार हैं। जया फर्म से सेवानिवृत्त होती है तथा अनीता और निशा भविष्य के लाभों को 4 :3 के अनुपात में बाँटने का निर्णय लेती हैं। नया अभिलाभ अनुपात ज्ञात कीजिए।
2. आज़ाद, विजय और अमित लाभों का बँटवारा $\frac{1}{4}, \frac{1}{8}$ तथा $\frac{10}{16}$ के अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। विद्यमान साझेदारों का नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात कीजिए, यदि- (अ) आज़ाद सेवानिवृत्त होता है (ब) विजय सेवानिवृत्त होता है (स) अमित सेवानिवृत्त होता है।
3. उपरोक्त स्थिति में प्रत्येक के लिए अभिलाभ अनुपात ज्ञात कीजिए।
4. अनु, प्रभा और मिली साझेदार हैं। अनु सेवानिवृत्त होती है। विद्यमान साझेदारों के भविष्य के लाभों के लिए अभिलाभ अनुपात की गणना कीजिए। यदि वह उसके भाग को अधिग्रहित करें (अ) 5 :3 के अनुपात में (ब) बराबर।
5. राहुल, रोबिन और राजेश लाभों का विभाजन 3 :2 :1 में करते हुए साझेदार हैं, शेष साझेदारों के नया लाभ विभाजन अनुपात की गणना कीजिए। यदि (अ) राहुल सेवानिवृत्त होता है। (ब) रोबिन सेवानिवृत्त होता है। (स) राजेश सेवानिवृत्त होता है।
6. पूजा, प्रिया तथा प्रतिष्ठा लाभों का विभाजन 5 :3 :2 में करते हुए साझेदार हैं। प्रिया सेवानिवृत्त होती है। उसके भाग को पूजा तथा प्रतिष्ठा के द्वारा 2 :1 में लिया जाता है। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना कीजिए।
7. अशोक, अनिल तथा अजय लाभों का विभाजन $\frac{1}{2}, \frac{3}{10}$ तथा $\frac{1}{5}$, के अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। अनिल सेवानिवृत्त होता है। अशोक तथा अजय द्वारा भविष्य के लाभों तथा हानियों का विभाजन 3 :2 में करने का निर्णय लेते हैं। नए अभिलाभ अनुपात की गणना कीजिए।

3.4 ख्याति का व्यवहार

सेवानिवृत्त/मृत साझेदार, ख्याति के भाग को जो कि विद्यमान साझेदारों के सामूहिक प्रयत्नों का फल होता है, पाने का अधिकारी है। इसलिए किसी साझेदार के सेवानिवृत्ति/मृत्यु के समय, साझेदारों के मध्य ख्याति का मूल्यांकन समझौते की शर्तों के अनुसार किया जाएगा। सेवानिवृत्त/मृतक को उसके हिस्से की क्षतिपूर्ति विद्यमान साझेदारों के द्वारा (जिसको सेवानिवृत्त/मृत साझेदार के हिस्से को अधिग्रहित करने के कारण अभिलाभ हुआ हो) उसके अभिलाभ अनुपात में करेंगे।

ख्याति के लिए, इस स्थिति में लेखा उपचार निर्भर करता है, चाहे ख्याति दर्शायी गई है या फर्म की लेखा पुस्तकों में ख्याति पहले से नहीं दर्शायी गई है।

3.4.1 जब ख्याति पुस्तकों में विद्यमान नहीं है :

ऐसी स्थिति में ख्याति की राशि अधिलाभ अनुपात में प्रत्येक वर्तमान (शेष) साझेदार के खाते के नाम पक्ष और सेवानिवृत्त साझेदार के खाते के जमा पक्ष की ओर दर्शायी जाएगी। रोजनामचा प्रवृष्टि होगी :

नये साझेदार का चालू खाता नाम
    सेवानिवृत्त साझेदार के पूँजी खाते से
    (सेवानिवत्त साझेदार की ख्याति के अंश का समायोजन)

उदाहरण के लिए, अ ब और स एक फर्म में साझेदार हैं और 3:2:1 के अनुपात में लाभों का विभाजन करते हैं। 'ब' सेवानिवृत्त का निर्णय लेता है। इस अवसर पर फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 60,000 रू. पर किया जाता है। 'अ' और 'स' व्यवसाय को 3:1 लाभ विभाजन अनुपात में चालू रखने का निर्णय लेते हैं। ख्याति के समायोजन की रोजनामचा प्रविष्टी इस प्रकार होगी :

	अ का पूँजी खाता नाम		15,000	
	स का पूँजी खाता		5,000	
	ब के पूँजी खाते से			20,000
	(अधिलाभ अनुपात में ख्याति का समायोजन)			

ऐसा भी हो सकता है कि नए लाभ विभाजन अनुपात हेतु शेष साझेदारों के मध्य लिए गए निर्णय के परिणामस्वरूप कोई एक साझेदार भावी लाभों में अपने अंश में से कुछ भाग का त्याग करें। एंसी परिस्थिति में ऐसे साझेदार के पूँजी खाते को सेवानिवृत्त/मृत साझेदार के पूँजी खाते सहित उसके त्याग के समानुपात जमा किया जाएगा तथा बाकी बचे साझेदारों के पूँजी खातों को भावी लाभों में उनके अभिलाभ अनुपात से नाम किया जाएगा।

उदाहरण 6

केशव, निर्मल तथा पंकज लाभ का विभाजन 4 :3 :2 के अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। निर्मल सेवानिवृत्त करता है तथा ख्याति का मूल्यांकन 72,000 रुपये किया गया। केशव तथा पंकज भविष्य के लाभों का विभाजन 5:3 में करने का निर्णय लेते हैं। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल

तिथि	विवरण		ब.पृ.स.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	केशव का पूँजी खाता	नाम		13,000	
	पंकज का पूँजी खाता	नाम		11,000	
	निर्मल पूंजी खाते से				24,000
	(निर्मल के भाग की ख्याति को केशव तथा पंकज के अभिलाभ अनुपात 13:11 में बाँटने पर)				

कार्यकारी टिप्पणी

1. निर्मल का ख्याति में भाग = 72,000 रुपये $\frac{3}{9}$ = 24,000 रुपये
2. अभिलाभ अनुपात की गणना

   अभिलाभ भाग = नया भाग – पुराना भाग

   केशव का अभिलाभ भाग = $\frac{5}{8}-\frac{4}{9}=\frac{13}{72}$

   पंकज का अभिलाभ भाग = $\frac{3}{8}-\frac{2}{9}=\frac{11}{72}$

   इसलिए, अभिलाभ अनुपात केशव तथा पंकज का 13:11 है, अर्थात $\frac{13}{24}:\frac{11}{24}$

उदाहरण 7

जया, कीर्ति, एकता तथा श्वेता किसी फर्म में लाभ तथा हानि का विभाजन 2:1:2:1 में करते हुए साझेदार हैं। जया की सेवानिवृत्ति पर, फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 36,000 रुपये किया गया। कीर्ति, एकता तथा श्वेता ने भविष्य के लाभों को समान रूप से विभाजन करने का निर्णय लिया। ख्याति खाता खोले बिना ख्याति के व्यवहार के संबंध में आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल

कीर्ति, एकता तथा श्वेता की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	विवरण		ब.पृ.सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	कीर्ति का पूँजी खाता	नाम		6,000	
	श्वेता का पूँजी खाता	नाम		6,000	
	जया के पूँजी खाते से				12,000
	(शेष साझेदारों में जया की ख्याति का भाग अभिलाभ अनुपात में विभाजन करने पर)				

not to be republished © NCERT

कार्यकारी टिप्पणी

1. जया का ख्याति में भाग 36,000 रु. $\frac{2}{6}$ = 12,000 रुपये
2. अभिलाभ अनुपात की गणना
   अभिलाभ भाग = नया भाग – पुराना भाग

   कीर्ति का अभिलाभ $= \frac{1}{3} - \frac{1}{6} = \frac{2-1}{6} = \frac{1}{6}$

   एकता का अधिलाभ $= \frac{1}{3} - \frac{2}{6} = \frac{2-2}{6} = \frac{0}{6}$ (न तो अभिलाभ न ही त्याग)

   श्वेता का अभिलाभ $= \frac{1}{3} - \frac{1}{6} = \frac{2-1}{6} = \frac{1}{6}$

   इसलिए कीर्ति और श्वेता के मध्य अभिलाभ अनुपात $\frac{1}{6} : \frac{1}{6}$ = 1:1

उदाहरण 8

दीपा, नीरू और शिल्पा एक फर्म में लाभों का विभाजन 5 :3 :2 के अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। नीरू की सेवानिवृत्ति के बाद दीपा और शिल्पा का नया लाभ विभाजन अनुपात 2:3 है। नीरू की सेवानिवृत्ति पर फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 1,20,000 रुपये किया गया। नीरू की सेवानिवृत्ति पर ख्याति के व्यवहार से संबंधित आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल

दीपा और शिल्पा की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	शिल्पा का पूँजी खाता नाम नीरू के पूँजी खाते से दीपा के पूँजी खाते से (शिल्पा ख्याति में नीरू के भाग के लिए तथा दीपा को त्याग के लिए नीरू की सेवानिवृत्ति पर क्षतिपूर्ति करेगी)		48,000	 36,000 12,000

कार्यकारी टिप्पणी

1. अभिलाभ अनुपात की गणना
   अभिलाभ भाग = नया भाग – पुराना भाग

   दीपा का अभिलाभ भाग = $\frac{2}{5} - \frac{5}{10} = \frac{4-5}{10} = -\frac{1}{10}$ या $\left(\frac{1}{10}\right)$, अर्थात त्याग

शिल्पा का अभिलाभ भाग = $\frac{3}{5} - \frac{2}{10} = \frac{6-2}{10} = \frac{4}{10}$, अर्थात अभिलाभ

2. इसलिए शिल्पा, नीरू (सेवानिवृत्त साझेदार) और दीपा (विद्यमान साझेदार जिसने त्याग किया है) दोनों को उनके त्याग की राशि तक की क्षतिपूर्ति करेगी।

दीपा त्याग करेगी = फर्म की ख्याति   त्याग वाला भाग = 1,20,000 रु. $\frac{1}{10}$ = 12,000 रु.

नीरू (सेवानिवृत्त साझेदार का त्याग) = 1,20,000 रु. $\frac{3}{10}$ = 36,000 रुपये

स्वयं जाँचिए

प्रत्येक प्रश्न के लिए सही विकल्प चुनिए

1. अभिषेक, रजत और विवेक लाभों का विभाजन 5 : 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। यदि विवेक सेवानिवृत्त होता है, तो अभिषेक तथा रजत का नया लाभ विभाजन अनुपात होगा।
   (अ) 3:2
   (ब) 5:3
   (स) 5:2
   (द) उपरोक्त में कोई नहीं
2. राजेंदर, सतीश तथा तेजपाल का पुराना लाभ विभाजन अनुपात 2 : 2 : 1 है। सतीश की सेवानिवृत्ति के बाद उनका लाभ विभाजन अनुपात 3 : 2 है। नया अभिलाभ अनुपात है–
   (अ) 3:2
   (ब) 2:1
   (स) 1:1
   (द) 2:2
3. आनंद, बहादुर और चंदर लाभों का विभाजन समान रूप से करते हुए साझेदार हैं। आनंद और बहादुर ने उसके भाग का अधिग्रहण 3 : 2 के अनुपात में किया। आनंद और बहादुर का नया लाभ विभाजन अनुपात होगा।
   (अ) 8:7
   (ब) 4:5
   (स) 3:2
   (द) 2:3
4. विद्यमान साझेदारों के द्वारा, सेवानिवृत्त/मृत साझेदार के भाग का अधिग्रहण करने पर किसी भी सूचना के अभाव में यह माना जाएगा कि उन्होंने अपना भाग अधिग्रहित किया है:
   (अ) पुराने लाभ विभाजन अनुपात में
   (ब) नए लाभ विभाजन अनुपात में
   (स) समान अनुपात में
   (द) उपरोक्त में कोई नहीं।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 9

हनी, पम्मी और सन्नी लाभों का विभाजन 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। ख्याति को पुस्तकों में 60,000 रुपये के मूल्य से दर्शाया गया है। पम्मी सेवानिवृत्त होती है तथा पम्मी की सेवानिवृत्ति के समय ख्याति का मूल्यांकन 84,000 रुपये में किया गया। हनी और सन्नी ने भविष्य के लाभों का विभाजन 2:1 के अनुपात में करने का निर्णय लिया। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल

तिथि	*विवरण*		*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	हनी का पूँजी खाता	नाम		30,000	
	पम्मी का पूँजी खाता	नाम		20,000	
	सन्नी का पूँजी खाता	नाम		10,000	
	ख्याति खाते से				60,000
	(विद्यमान ख्याति को पुराने अनुपात में अपलिखित करने पर)				
	हनी पूँजी खाता	नाम		14,000	
	सन्नी पूँजी खाता	नाम		14,000	
	पम्मी के पूँजी खाते से				28,000
	(पम्मी के भाग की ख्याति को हनी तथा सन्नी के पूँजी खाते में उनके अभिलाभ तक समायोजन करने पर)				

कार्यकारी टिप्पणी

(i) ख्याति में वर्तमान मूल्य पर पम्मी का भाग = 84,000 का $\frac{1}{3}$

= 84,000 रु. $\times \frac{1}{3}$ = 28,000 रुपये

अभिलाभ भाग = नया भाग – पुराना भाग

(ii) हनी का अभिलाभ भाग = $\frac{2}{3} - \frac{3}{6} = \frac{1}{6}$

सन्नी का अभिलाभ भाग = $\frac{1}{3} - \frac{1}{6} = \frac{1}{6}$

हनी और सन्नी का अभिलाभ अनुपात $\frac{1}{6} - \frac{1}{6} = 1:1$

© NCERT not to be republished

3.4.2 प्रछन्न ख्याति

यदि फर्म सेवानिवृत्त/मृत साझेदार को भुगतान के रूप में एकमुश्त राशि देने का निर्णय लेती है तो उसको देय राशि से अधिक भुगतान को उसके पूँजी खातों में, संचित लाभ व हानि और परिसंपत्तियों तथा दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन संबंधी सभी आवश्यक समायोजन करने के पश्चात, उसके भाग को ख्याति के रूप में माना जाएगा। उदाहरण के लिए पी, क्यू और आर लाभों का बँटवारा 3:2:1 के अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। आर, सेवानिवृत्त होता है और उसके पूँजी खातों में संचय, परिसंपत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन करने के बाद उसके पूँजी खाते का शेष 60,000 रुपये निकलता है। पी और क्यू उसके दावे के पूर्ण निपटारे के लिए 75,000 रुपये देने को सहमत होते हैं। यह प्रदर्शित करता है कि फर्म में आर की ख्याति का भाग 15,000 रुपये है जिसको पी और क्यू के पूँजी खातों में उनके अभिलाभ अनुपात (3:2 यह मानते हुए कि उनके लाभ विभाजन अनुपात में कोई परिवर्तन नहीं है) के नाम किया जाएगा और आर के पूँजी खातों में जमा इस प्रकार किया जाएगा:

			(रु.)	(रु.)
	पी का पूँजी खाता नाम क्यू का पूँजी खाता नाम आर के पूँजी खाते से (आर के भाग की ख्याति को पी तथा क्यू के पूँजी खाते में उनके त्याग अनुपात 3:2 में समायोजित करने पर)		9,000 6,000	 15,000

स्वयं जाँचिए 2

निम्न प्रश्नों के लिए सही विकल्प छाँटिए:

1. किसी साझेदार की सेवानिवृत्ति/मृत्यु पर, सेवानिवृत्त/मृत साझेदार के पूँजी खाते को जमा किया जाएगा।
   (अ) उसके भाग की ख्याति के साथ;
   (ब) फर्म की ख्याति के साथ;
   (स) शेष साझेदारों के भाग की ख्याति के साथ;
   (द) कोई नहीं;
2. गोबिंद, हरी और प्रताप साझेदार हैं। गोबिंद की सेवानिवृत्ति पर तुलन पत्र में ख्याति को 24,000 रुपये से पहले से ही दर्शाया गया है। ख्याति को अपलिखित किया जाएगा।
   (अ) सभी साझेदारों के पूँजी खातों को उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में जमा करके।
   (ब) शेष साझेदारों के पूँजी खातों को उनके नए लाभ विभाजन अनुपात में जमा करके।
   (स) सेवानिवृत्त साझेदार के पूँजी खाते को उसके भाग की ख्याति से जमा करने पर।
   (द) इनमें से कोई नहीं।
3. चमन, रमन और सुमन लाभों का विभाजन 5:3:2 के अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। रमन सेवानिवृत्त होता है तथा चमन और सुमन का नया लाभ विभाजन अनुपात 1:1 होगा। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 1,00,000 रुपये किया गया। रमन के भाग की ख्याति को समायोजित किया जाएगा।

© NCERT not to be republished

(अ) चमन तथा रमन के पूँजी खातों को 1,500 रुपये प्रत्येक से नाम करके।
(ब) चमन तथा रमन के पूँजी खातों को क्रमशः 21,429 रुपये तथा 8,571 रुपये से नाम करके।
(स) केवल सुमन के पूँजी खाते को 30,000 रुपये से नाम करके।
(द) केवल रमन के पूँजी खाते को 30,000 रुपये से नाम करके।

4. किसी साझेदार की सेवानिवृत्ति/मृत्यु पर, शेष साझेदार, जिन्होंने लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन के कारण अभिलाभ किया है। क्षतिपूर्ति करेंगे
(अ) केवल सेवानिवृत्त साझेदार की।
(ब) शेष साझेदार (जिन्होंने त्याग किया) साथ ही साथ सेवानिवृत्त साझेदार की।
(स) केवल शेष साझेदारों की (जिन्होंने त्याग किया है)।
(द) इनमें से कोई नहीं।

3.5 परिसंपत्तियों तथा दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन के लिए समायोजन

साझेदार की सेवानिवृत्ति या मृत्यु पर कुछ परिसंपत्तियाँ ऐसी हो सकती हैं जिन्हें उनके वर्तमान मूल्य पर नहीं दर्शाया जाता तथा इसी प्रकार कुछ दायित्वों के मूल्य तथा फर्म द्वारा भुगतान किए जाने वाले मूल्यों में अंतर होता है, इतना ही नहीं यहाँ कुछ ऐसी गैर–अभिलेखित परिसंपत्तियाँ भी होती हैं जिनको पुस्तकों में लाए जाने की आवश्यकता होती है, जैसा कि साझेदार के प्रवेश की स्थिति में पढ़ा गया है। पुनर्मूल्यांकन खाते को परिसंपत्तियों और दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन करने तथा गैर–अभिलेखित मदों को फर्म की पुस्तकों में लाकर अभिलाभ (हानि) की गणना करने के लिए तैयार किया जाता है और इसे सभी साझेदारों के, जिसमें सेवानिवृत्त/मृत साझेदार को उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित कर दिया जाता है। इस उद्देश्य के लिए निम्न रोज़नामचा प्रविष्टियाँ इस प्रकार की जाएँगी।

1. *परिसंपत्तियों के मूल्य में वृद्धि पर*
   परिसंपत्ति खाता (व्यक्तिगत) नाम
   पुनर्मूल्यांकन खाते से
   (परिसंपत्तियों के मूल्य में वृद्धि पर)
2. *परिसंपत्तियों के मूल्य में कमी पर*
   पुनर्मूल्यांकन खाता नाम
   संपत्ति खाते से (व्यक्तिगत)
   (परिसंपत्तियों के मूल्य में कमी)
3. *दायित्वों की राशि में वृद्धि पर*
   पुनर्मूल्यांकन खाता नाम
   दायित्व खाते से (व्यक्तिगत) जमा
   (दायित्वों की राशि में वृद्धि)
4. *दायित्वों की राशि में कमी होने पर*
   दायित्व खाता (व्यक्तिगत) नाम
   पुनर्मूल्यांकन खाते से
   (दायित्वों की राशि में कमी)

© NCERT not to be republished

5. *गैर–अभिलेखित परिसंपत्तियों के लिए*
परिसंपत्ति खाता नाम
पुनर्मूल्यांकन खाते से
(गैर–अभिलेखित परिसंपत्तियों को पुस्तकों में दर्शाने पर)

6. *गैर–अभिलेखित दायित्वों के लिए*
पुनर्मूल्यांकन खाता नाम
दायित्व खाते से
(गैर–अभिलेखित दायित्वों को पुस्तकों में लाने पर)

7. *पुनर्मूल्यांकन पर लाभ या हानि के वितरण के लिए*
पुनर्मूल्यांकन खाता नाम
सभी साझेदारों के पूँजी खाते से (व्यक्तिगत)
(पुनर्मूल्यांकन पर लाभ को साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरित करने पर)
(या)
सभी साझेदारों का पूँजी खाता (व्यक्तिगत)नाम
पुनर्मूल्यांकन खाते से
(पुनर्मूल्यांकन पर हानि को साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरित करने पर)

उदाहरण 10

मिताली, इंदू और गीता लाभो तथा हानि का बँटवारा 5 :3 :2 के अनुपात में करते हुए साझेदार हैं। 31 मार्च, 2017 को उनका तुलन पत्र निम्न था:

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
पूँजी खाते:			ख्याति	25,000
मिताली	1,50,000		भवन	1,00,000
इंदू	1,25,000		पेटेंट	30,000
गीता	75,000	3,50,000	मशीनरी	1,50,000
विविध लेनदार		55,000	स्टॉक	50,000
सामान्य संचय		30,000	देनदार	40,000
			रोकड़	40,000
		4,35,000		**4,35,000**

गीता उपरोक्त तिथि पर सेवानिवृत्त होती है। मशीन का मूल्यांकन 1,20,000 रुपये, पेटेंट 40,000 रुपये और भवन 1,25,000 रुपये हुआ। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन करें तथा पुनर्मूल्यांकन खाता तैयार कीजिए।

हल

गीता, मिताली तथा इंदू की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि 2017	*विवरण*		*ब.पृ. स.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
31 मार्च	पुनर्मूल्यांकन खाता	नाम		10,000	
	मशीनरी खाते से				10,000
	(मशीनरी के मूल्य में कमी)				
	पेटेंट खाता	नाम		10,000	
	भवन खाते से	नाम		25,000	
	पुनर्मूल्यांकन खाता				35,000
	(पेटेंट तथा भवन के मूल्य में वृद्धि पर)				
	पुनर्मूल्यांकन खाता	नाम		25,000	
	मिताली खाते से				12,500
	इंदू के खाते से				7,500
	गीता के खाते से				5,000
	(पुनर्मूल्यांकन पर लाभ को साझेदारों के पूँजी खाते में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित करने पर)				

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम *जमा*

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
मशीनरी		10,000	पेटेंट	10,000
लाभ का हस्तांतरण:			भवन	25,000
मिताली का पूँजी खाता	12,500			
इंदू का पूँजी खाता	7,500			
गीता का पूँजी खाता	5,000	25,000		
		35,000		**35,000**

3.6 संचित लाभों तथा हानियों का समायोजन

कभी–कभी तुलन पत्र में संचित लाभों को, सामान्य संचय और संचय कोष तथा संचित हानियों को लाभ तथा हानि खाते के जमा शेष के रूप में दर्शाया जाता है। सेवानिवृत्त/मृत साझेदार अपने भाग के संचित लाभों का तथा संचित हानियों (यदि कोई है) का अधिकारी होगा। यह संचित लाभ या हानि सभी साझेदारों से संबंधित है तथा इनको सभी साझेदारों के पूँजी खातों में उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित कर दिया जाएगा। इस उद्देश्य के लिए निम्न रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन किया जाएगा।

(i) *संचित लाभों (संचय) का हस्तांतरण करने पर*

संचय खाता नाम

सभी साझेदारों के पूँजी खाते से (व्यक्तिगत)

(संचय का हस्तांतरण सभी साझेदारों के पूँजी खाते में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में)

(ii) *संचित हानियों के हस्तांतरण पर*

सभी साझेदारों का पूँजी खाता (व्यक्तिगत) नाम

लाभ व हानि खाते से

(संचित हानियों का साझेदारों के पूँजी खाते में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरण)

उदाहरण के लिए, इंद्र, गजेंद्र तथा हरेंद्र साझेदार हैं जिनका लाभ विभाजन अनुपात 3:2:1 है। इंद्र सेवानिवृत्त होता है तथा इस तिथि को फर्म का तुलन पत्र इस प्रकार है:

इंद्र, गजेंद्र तथा हरेंद्र की पुस्तकें
31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
लेनदार		50,000	स्टॉक	30,000
सामान्य संचय		90,000	बैंक	10,000
पूँजी खाते:			रोकड़	5,000
इंद्र	1,00,000		भूमि व भवन	3,00,000
गजेंद्र	55,000			
हरेंद्र	50,000	2,05,000		
		3,45,000		**3,45,000**

© NCERT not to be republished

सामान्य संचय के व्यवहार का अभिलेखन करने के लिए निम्न रोज़नामचा प्रविष्टि की जाएँगी:

गजेंद्र तथा हरेंद्र की पुस्तकें

तिथि	*विवरण*		*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	सामान्य संचय खाता	नाम		90,000	
	इंद्र का पूँजी खाता				45,000
	गजेंद्र का पूँजी खाता				30,000
	हरेंद्र का पूँजी खाता				15,000
	(सामान्य संचय का हस्तांतरण सभी साझेदारों के पूँजी खाते में उनके पुराने अनुपात में इंद्र के सेवानिवृत्त होने पर)				

जब साझेदार वर्ष के मध्य सेवानिवृत्त होता है —

सामान्यत: एक साझेदार की सेवानिवृत्ति लेखांकन वर्ष के अंत में ही होती है जहाँ एक साझेदार लेखांकन वर्ष के बीच में सेवानिवृत्ति का निर्णय लेता है। ऐसा परिस्थिति में उस साझेदार को हिस्सेदारी स्वरूप पिछले लेखांकन वर्ष के तुलन पत्र तिथि से लेकर सेवानिवृत्ति की तिथि तक व हानि का अंश, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज, यदि है तो, देय होगा। यहाँ मध्य अवधि के लिए लाभ (अथवा हानि) की गणना मुख्य समस्या हो सकती है जिसे पूर्वदत्त तुलन पत्र तिथि से लेकर सेवानिवृत्ति की तिथि तक ज्ञात किया जाएगा। इस परिस्थिति को जब हम उदाहरण के माध्यम से समझते हैं —

31 मार्च, 2019 को समाप्त हो रहे वर्ष के लिए माईरा, शबनम और विपुल साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं। वे 5:4:1 के अनुपात में लाभों का विभाजन करते हैं। इस वर्ष की समाप्ति पर फर्म का लाभ 1,00,000 रु. है। विपुल किन्हीं कारणवश 30 जून 2019 को सेवानिवृत्ति का निर्णय लेता है। विपुल की सेवानिवृत्ति के पश्चात् नया लाभ अनुपात 1:1 तय हुआ है।

अप्रैल 01 से जून 30, 2019 तक विपुल की हिस्सेदारी की गणना इस प्रकार होगी —

मार्च 31, 2017 तक कुल लाभ = 1,00,000 रु.

विपुल का अंश $= 1{,}00{,}000 \text{ रु.} \times \frac{3}{12} \times \frac{4}{10} \text{ रु.} = 10{,}000 \text{ रु.}$

रोज़नामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी —

लाभ व हानि उचती खाता	नाम	10,000	
विपुल के पूँजी खाते से			10,000

(विपुल का लाभों में अंश, पूँजी खाते में हस्तांतरित)

वैकल्पिक रूप से यदि विपुल का लाभों में हिस्सेदारी की गणना पिछले तीन वर्षों के औसत लाभ के आधार पर की जाती है, जो कि इस प्रकार है —

2016–2017 1,36,000 रु.

2017–2018 1,54,000 रु.

2018–2019 1,00,000 रु.

अत: अप्रैल, 01 से 30 जून तक लाभ की गणना इस प्रकार है —

$$\text{औसत लाभ} = \frac{\text{कुल लाभ}}{\text{वर्षों की संख्या}} = \frac{1,36,000 \text{ रु.} + 1,54,000 \text{ रु.} + 1,00,000 \text{ रु.}}{3}$$

$$= \frac{3,90,000}{3} \text{ रु.} = 1,30,000 \text{ रु.}$$

$$\text{विपुल का लाभों में अंश} = 1,30,000 \text{ रु.} \times \frac{3 \text{ माह}}{12 \text{ माह}} \times \frac{4}{10}$$

$$= 13,000 \text{ रु.}$$

रोज़नामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी —

लाभ व हानि उंचती खाता	नाम	13,000	
विपुल के पूँजी खाते से			13,000

यदि अनुबंध यह कहता है कि सेवानिवृत्त साझेदार का हिस्सा बिक्री के आधार पर ज्ञात किया जाएगा, तो हिस्सेदारी की गणना इस प्रकार होगी —

वर्ष	विक्रय राशि
2018–2019	8,00,000
अप्रैल–जून 30, 2019	1,50,000

यदि विक्रय 8,000 रु. है तो लाभ 1,00,000 रु. है।

$$\text{यदि विक्रय 1 रु. है तो लाभ} = \frac{1,00,000}{8,00,000}$$

$$\text{यदि विक्रय 1,50,000 रु. है तो लाभ} = \frac{1,00,000}{8,00,000} \times 1,50,000$$

$$= 18,750 \text{ रु.}$$

रोज़नामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी —

लाभ व हानि उचंती खाता	नाम	7,500	
विपुल के पूँजी खाते से		7,500	

© NCERT not to be republished

संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि मध्य अवधि के लिए सेवानिवृत्त साझेदार के लाभ की प्रविष्टि इस प्रकार होगी —

लाभ व हानि उचंती खाता नाम
सेवानिवृत्त साझेदार के पूँजी खाते से

इसके पश्चात् लाभ व हानि उचंती खाते की राशि को लाभकारी साझेदारों के पूँजी खातों में अधिलाभ अनुपात से हस्तांतरित कर बंद किया जाता है।

रोज़नामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी —

लाभकारी साझेदारी पूँजी खाता नाम (अधिलाभ अनुपात से)
लाभ व हानि उचंती खाता से

वैकल्पिक रूप से, राज़नामचा प्रविष्टि ऐसी भी हो सकती है —

लाभकारी साझेदारी पूँजी खाता नाम
सेवानिवृत्त साझेदार के पूँजी खाते से

3.7 सेवानिवृत्त साझेदार को देय राशि का निपटारा

जाने वाले साझेदार के खातों का निपटारा साझेदारी समझौते में दी गई शर्तों के अनुसार, जैसे कि एकमुश्त भुगतान या ब्याज सहित या ब्याज रहित जैसे भी स्वीकृत हो विभिन्न किश्तों द्वारा भिन्न-भिन्न अंतरालो में भुगतान या कुछ भुगतान नकद में तुरंत और कुछ किश्तों द्वारा जैसे भी स्वीकृत हो, किया जाता है। किसी साझेदारी समझौते के अभाव में, भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 37 लागू होगी, जो कि यह तय करती है कि जाने वाले साझेदार के पास एक विकल्प होगा, जिसके अनुसार वह या तो 6% प्रतिवर्ष की दर से भुगतान की तिथि तक या इस प्रकार लाभ का भाग जो उसने अपनी पूँजी से उपार्जित किया है (पूँजी अनुपात आधारित) प्राप्त करने का अधिकारी है। इसलिए सेवानिवृत्त साझेदार को कुल देय राशि का निर्धारण, जो कि सभी समायोजन करने के पश्चात किया गया है, का भुगतान तुरंत किया जाएगा। यदि फर्म तुरंत भुगतान करने की स्थिति में नहीं है तो इस स्थिति में, सेवानिवृत्त साझेदार को देय कुल राशि को उसके ऋण खाते में हस्तांतरित कर दिया जाएगा और जैसे ही राशि का भुगतान किया जाएगा, यह उसके खाते में नाम किया जाएगा। आवश्यक समायोजन प्रविष्टियाँ निम्न है:

1. *जब सेवानिवृत्त साझेदार को पूर्ण भुगतान रोकड़ में किया जाता है।*
   सेवानिवृत्त साझेदार का पूँजी खाता नाम
   रोकड़/ बैंक खाते से
2. *जब सेवानिवृत्त साझेदार की समस्त राशि को ऋण मान लिया जाता है।*
   सेवानिवृत्त साझेदार का पूँजी खाता नाम
   सेवानिवृत्त साझेदार के ऋण खाते से
3. *जब सेवानिवृत साझेदार को आंशिक रूप से रोकड़ भुगतान किया जाता है तथा शेष राशि को ऋण माना जाता है।*

सेवानिवृत्त साझेदार का पूँजी खाता नाम (कुल देय राशि)
रोकड़/ बैंक खाते से (भुगतान की राशि)
सेवानिवृत्त साझेदार के ऋण खाते से (ऋण की राशि)

4. *जब ऋण खाते का निपटारा किश्तों में मूल राशि में ब्याज सहित भुगतान किया जाता है।*

(अ) ऋण पर ब्याज के लिए

ब्याज खाता नाम
सेवानिवृत्त साझेदार के ऋण खाते से

(ब) किश्त के भुगतान पर

सेवानिवृत्त साझेदार के ऋण खाता नाम
रोकड़/ बैंक खाते से

टिप्पणी

1. सेवानिवृत्त साझेदार के ऋण खाते का शेष तुलन पत्र में दायित्व पक्ष की ओर अंतिम किश्त के भुगतान तक दर्शाया जाएगा।
2. प्रविष्टि संख्या (ब) तथा (स), उपरोक्त को ऋण के भुगतान की तिथि तक दोहराया जाएगा।

उदाहरण 11

अमरिंद्र महेंद्र तथा जोगिंद्र एक फर्म में साझेदार हैं। महेंद्र फर्म से सेवानिवृत होता है। उसकी सेवानिवृत्ति की तिथि को उसको 60,000 रुपये देय हैं। अमरिंद्र तथा जोगिंद्र ने यह वचन दिया कि उसको प्रत्येक वर्ष के अंत में किश्तों में भुगतान किया जाएगा। निम्न स्थितियों में महेंद्र का ऋण खाता तैयार करें:

1. जब शेष राशि का भुगतान चार वार्षिक किश्तों में 12% प्रतिवर्ष ब्याज के साथ किया जाएगा।
2. जब पहले तीन सालों के दौरान, बकाया शेष पर 20,000 रुपये की तीन वार्षिक किश्तों में, 12% प्रतिवर्ष ब्याज सहित और शेष ब्याज सहित चौथे वर्ष में भुगतान करने पर सहमत होते हैं।
3. जब शेष राशि का भुगतान 4 समान वार्षिक किश्तों में 12% ब्याज सहित किया जाए।

हल

(अ) जब भुगतान 4 वार्षिक किश्तों में ब्याज के साथ किया जाता है।

अमरिंद्र, महेंद्र तथा जोगिंद्र की पुस्तकें
महेंद्र का ऋण खाता

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
वर्ष–1	बैंक (15,000रु.+7,200रु.)		22,200	वर्ष–1	महेंद्र की पूँजी		60,000
					ब्याज		7,200
	शेष आ/ला		45,000				
			67,200				**67,200**

वर्ष–2	बैंक (15,000रु.+5,400रु.)		20,400	वर्ष–2	शेष आ/ला		45,000
	शेष आ/ला		30,000		ब्याज		5,400
			50,400				50,400
वर्ष–3	बैंक (15,000रु. +3,600रु.)		18,600	वर्ष–3	शेष आ/ला		30,000
	शेष आ/ला		15,000		ब्याज		3,600
			33,600				33,600
वर्ष–4	बैंक (15,000रु.+1,800रु.)		16,800	वर्ष–4	शेष आ/ला		15,000
					ब्याज		1,800
			16,800				16,800

(ब) जब भुगतान 20,000 रुपये प्रत्येक की 3 वार्षिक किश्तों में ब्याज सहित किया जाता है।

अमरिंद्र, महेंद्र और जोगिंद्र की पुस्तकें
महेंद्र का ऋण खाता

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
वर्ष–1	बैंक		20,000	वर्ष–1	महेंद्र की पूँजी		60,000
	शेष आ/ला		47,200		ब्याज		7,200
			67,200				67,200
वर्ष–2	बैंक		20,000	वर्ष–2	शेष आ/ला		47,200
	शेष आ/ला		32,864		ब्याज		5,664
			52,864				52,864
वर्ष–3	बैंक		20,000	वर्ष–3	शेष आ/ला		32,864
	शेष आ/ला		16,808		ब्याज		3,944
			36,808				36,808
वर्ष–4	बैंक		18,825	वर्ष–4	शेष आ/ला		16,808
					ब्याज		2,017
			18,825				18,825

(स) जब भुगतान 4 वार्षिक बराबर किश्तों में 12% (वार्षिक) ब्याज सहित किया जाता है:

© NCERT not to be republished

अमरिंद्र तथा जोगिंद्र की पुस्तकें
महेंद्र का ऋण खाता

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
वर्ष–1	बैंक		19,754	वर्ष–1	महेंद्र की पूँजी		60,000
	शेष आ/ला		47,446		ब्याज		7,200
			67,200				67,200
वर्ष–2	बैंक		19,754	वर्ष–2	शेष आ/ला		47,446
	शेष आ/ला		33,386		ब्याज		5,694
			53,140				53,140
वर्ष–3	बैंक		19,754	वर्ष–3	शेष आ/ला		33,386
	शेष आ/ला		17,638		ब्याज		4,006
			37,392				37,392
वर्ष–4	बैंक		19,754	वर्ष–4	शेष आ/ला		17,638
					ब्याज		2,116
			19,754				19,754

टिप्पणी: 19,754 रुपये पर 12% प्रतिवर्ष की दर से 4 सालों के भुगतान का निर्धारण [सालाना 0.329234 रुपये वार्षिकी सारणी के अनुसार 60,000 रुपये]

यह ध्यान देने योग्य है कि सेवानिवृत्त साझेदार और मृत साझेदार को देय राशि का लेखा व्यवहार समान होगा, केवल अंतर यह है कि साझेदार की मृत्यु के समय, जो राशि उसको दी जानी है, का हस्तांतरण उसके उत्तराधिकारी खाते में कर दिया जाएगा और इस प्रकार उसको राशि का भुगतान किया जाएगा। यह इस अध्याय के अंत में समझाया जाएगा।

स्वयं करें

विजय, अजय और मोहन मित्र हैं। उन्होंने जून, 2015 को दिल्ली विश्वविद्यालय से बी. काम (आनर्स) पास किया है। वे निर्णय लेते हैं कि कंप्यूटर हार्डवेयर का व्यापार आरंभ करें।

1 अगस्त, 2015 को वे पूँजी के लिए क्रमशः 50,000 रुपये , 30,000 रुपये 20,000 रुपये लगाते हैं तथा दिल्ली में साझेदारी में व्यापार आरंभ करते हैं। उनके बीच लाभ का विभाजन 4:2:1 के अनुपात में होगा। व्यापार सफलता से चलता है, 1 फरवरी, 2016 को कुछ पारिवारिक कारणों की वजह से अजय पूना में बसने का निर्णय लेता है और 31 मार्च, 2016 को साझेदारी से सेवानिवृत्त होने का निर्णय लेता है। साझेदारों की सहमती से अजय 31 मार्च, 2016 को सेवानिवृत्त हो जाता है। परिसंपत्तियों और दायित्वों की स्थिति इस प्रकार है:

© NCERT not to be republished

31 मार्च, 2016
को विजय, अजय और मोहन का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
पूँजी खाते:			ख्याति	56,000
विजय	1,80,000		भूमि व भवन	1,20,000
अजय	1,20,000		मशीनरी	1,59,000
मोहन	1,00,000	4,00,000	मोटर वैन	31,000
देय विपत्र		12,000	स्टॉक	90,000
सामान्य संचय		42,000	देनदार	66,000
लेनदार		90,000	बैंक में रोकड़	22,000
		5,44,000		**5,44,000**

सेवानिवृत्ति की तिथि को निम्न समायोजन किए गए:
1. फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 1,48,000 रुपये हुआ।
2. परिसंपत्तियों और दायित्वों का मूल्य निम्न है: स्टॉक 72,000 रुपये; भूमि व भवन 1,35,600 रुपये, देनदार 63,000 रुपये, मशीनरी 1,50,000 रुपये; लेनदार 84,000 रुपये ।
3. विजय अतिरिक्त पूँजी 1,20,000 रुपये तथा मोहन 30,000 रुपये लाया।
4. अजय को 97,200 रुपये रोकड़ दिया जाएगा तथा पूँजी खाते के शेष को ऋण खाते में हस्तांतरित किया जाएगा।

अजय को देय राशि का निर्धारण करें तथा इसके खाते का निपटारा आप किस प्रकार करेंगे।

उदाहरण 12

31 मार्च, 2017 को आशीष, सुरेश और लोकेश का तुलन पत्र नीचे दिया गया है जो कि अपना लाभ 5:3:2 के अनुपात में विभाजित करते हैं:

31 मार्च, 2017 को
आशीष, सुरेश और लोकेश का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
पूँजी:			भूमि	4,00,000
आशीष	7,20,000		भवन	3,80,000
सुरेश	4,15,000		संयंत्र व मशीनरी	4,65,000
लोकेश	3,45,000	14,80,000	फ़र्नीचर व फ़िटिंगस	77,000
सामान्य संचय		1,80,000	विविध देनदार	1,72,000
विविध लेनदार		1,24,000	हस्तस्थ रोकड़	1,21,000
अन्य व्यय		16,000	स्टॉक	1,85,000
		18,00,000		**18,00,000**

सुरेश उपरोक्त तिथि को सेवानिवृत्त होता है तथा उसकी सेवानिवृत्ति पर निम्न समायोजनों के लिए सहमती हुई:

1. स्टॉक का मूल्यांकन 1,72,000 रुपये पर हुआ।
2. फ़र्नीचर व फ़िटिंग्स का मूल्यांकन 80,000 रुपये हुआ।
3. 10,000 रुपये की राशि एक देनदार दीपक द्वारा देय है, यह संदिग्ध राशि है जिसके लिए प्रावधान की आवश्यकता है।
4. ख्याति का मूल्यांकन 2,00,000 रुपये हुआ लेकिन निर्णय लिया गया की ख्याति को लेखा पुस्तकों में नहीं दर्शाया जाएगा।
5. सेवानिवृत्ति के समय सुरेश को 40,000 रुपये का भुगतान तुरंत किया जाएगा तथा शेष को उसके ऋण खाते में हस्तांतरित किया जाएगा।
6. आशीष और लोकेश भविष्य में लाभ का विभाजन 3:2 के अनुपात में करेंगे।

पुनर्मूल्यांकन खाता, पूँजी खाता तथा पुनर्गठित फर्म का तुलन पत्र तैयार करें।

हल

आशीष, सुरेश और लोकेश की पुस्तकें

पुनर्मूल्यांकन खाता

विवरण	*राशि (रु.)*	*विवरण*		*राशि (रु.)*
स्टॉक	13,000	फ़र्नीचर		3,000
संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान	10,000	पुनर्मूल्यांकन पर हानि का हस्तांतरण:		
		आशीष की पूँजी	10,000	
		सुरेश की पूँजी	6,000	
		लोकेश की पूँजी	4,000	20,000
	23,000			**23,000**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*आशीष (रु.)*	*सुरेश (रु.)*	*लोकेश (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*आशीष (रु.)*	*सुरेश (रु.)*	*लोकेश (रु.)*
31 मार्च	पुनर्मूल्यांकन		10,000	6,000	4,000	31 मार्च	शेष आ/ला		7,20,000	4,15,000	3,45,000
	सुरेश की पूँजी		20,000	-	40,000		संचय कोष		90,000	54,000	36,000
	ख्याति										
	रोकड़		-	40,000	–		आशीष की पूँजी			20,000	
	सुरेश से ऋण			4,83,000			लोकेश की पूँजी			40,000	
	शेष आ/ला		7,80,000	-	3,37,000						
			8,10,000	**5,29,000**	**3,81,000**				**8,10,000**	**5,29,000**	**3,81,000**

© NCERT not to be republished

01 अप्रैल, 2016 को
आशीष और लोकेश का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ		राशि (रु.)
पूँजी:			भूमि		4,00,000
आशीष	7,80,000		भवन		3,80,000
लोकेश	3,37,000	11,17,000	संयंत्र व मशीनरी		4,65,000
सुरेश का ऋण		4,83,000	फ़र्नीचर		80,000
विविध लेनदार		1,24,000	स्टॉक		1,72,000
अभिव्यक्त बकाया		16,000	विविध देनदार	1,72,000	
			घटाया: संदिग्ध ऋणों	(10,000)	
			के लिए प्रावधान		1,62,000
			रोकड़ (1,21,000 रु. – 40,000 रु.)		81,000
		17,40,000			**17,40,000**

कार्यकारी टिप्पणी

1. अभिलाभ भाग = नया भाग – पुराना भाग

   आशीष का अभिलाभ $= \frac{3}{5} - \frac{5}{10} = \frac{6-5}{10} = \frac{1}{10}$

   लोकेश का अभिलाभ $= \frac{2}{5} - \frac{2}{10} = \frac{4-2}{10} = \frac{2}{10}$

   आशीष और लोकेश के बीच अभिलाभ अनुपात = 1:2

2. सुरेश का ख्याति में भाग $= \frac{3}{10}$ 2,00,000 रु. = 60,000 रु.

उदाहरण 13

श्याम, गगन और राम साझेदार हैं जिनका लाभ विभाजन अनुपात 2 : 2 : 1 है। 31 मार्च, 2017 को उनका तुलन पत्र निम्न है:

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
विविध लेनदार		49,000	रोकड़	8,000
संचय		14,500	देनदार	19,000
पूँजी:			स्टॉक	42,000
श्याम	80,000		मशीनरी	85,000
गगन	62,500		भवन	1,22,000
राम	75,000	2,17,500	पेटेंट	9,000
कर्मचारी भविष्य कोष		4,000		
		2,85,000		**2,85,000**

© NCERT not to be republished

गगन को एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में मौका मिलता है। वह इस तिथि को सेवानिवृत्त होने का निर्णय लेता है तथा यह निर्णय लिया जाता है कि श्याम और राम भविष्य में लाभ का विभाजन 5:3 के अनुपात में करेंगे। ख्याति का मूल्यांकन 70,000 रुपये; मशीनरी का 78,000 रुपये; भवन का 1,52,000 रुपये; स्टॉक का 30,000 रुपये तथा डूबत ऋण की राशि 1,550 रुपये को अपलिखित किया जाएगा। फर्म की पुस्तकों में रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन करें तथा नए फर्म का तुलन पत्र तैयार करें।

हल

श्याम, राम और गगन की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि 2017	*विवरण*		*रो.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
31 मार्च	पुनर्मूल्यांकन खाता	नाम		20,550	
	मशीनरी खाते से				7,000
	स्टॉक खाते से				12,000
	देनदार खाते से				1,550
	(गगन के सेवानिवृत्त होने पर परिसंपत्तियों के पुनर्मूल्यांकन पर हानि का अभिलेखन)				
	भवन खाता	नाम		30,000	
	पुनर्मूल्यांकन खाते से				30,000
	(गगन के सेवानिवृत्त होने पर भवन के मूल्य में वृद्धि)				
	पुनर्मूल्यांकन खाता	नाम		9,450	
	श्याम के पूँजी खाते से				3,780
	गगन के पूँजी खाते से				3,780
	राम के पूँजी खाते से				1,890
	(पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का पूँजी खाते में हस्तांतरण 2 : 2 : 1 के अनुपात में)				
	संचय खाता	नाम		14,500	
	श्याम के पूँजी खाते से				5,800
	गगन के पूँजी खाते से				5,800
	राम के पूँजी खाते से				2,900
	(संचय का साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरण)				

© NCERT not to be republished

	श्याम का पूँजी खाता नाम राम का पूँजी खाता नाम गगन के पूँजी खाते से (गगन की ख्याति का श्याम और राम के खातों से समायोजन 9 : 7 के अनुपात में)		15,750 12,250	 28,000
	गगन का पूँजी खाता नाम गगन के ऋण खाते से (सेवानिवृत्त साझेदार को देय राशि का ऋण खाते में हस्तांतरण)		1,00,080	 1,00,080

31 मार्च, 2017 को
श्याम और राम का तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
विविध लेनदार		49,000	रोकड़	8,000
कर्मचारी भविष्य कोष		4,000	देनदार	17,450
पूँजी:			स्टॉक	30,000
श्याम	73,830		मशीनरी	78,000
राम	67,540	1,41,370	भवन	1,52,000
गगन से ऋण		1,00,080	पेटेंट	9,000
		2,94,450		**2,94,450**

कार्यकारी टिप्पणी

1. अभिलाभ भाग = नया भाग – पुराना भाग

श्याम का अभिलाभ भाग $= \frac{5}{8} - \frac{2}{5} = \frac{25 - 16}{40} = \frac{9}{40}$

राम का अभिलाभ भाग $= \frac{3}{8} - \frac{1}{5} = \frac{15 - 8}{40} = \frac{7}{40}$

इसलिए श्याम और राम का अभिलाभ अनुपात = 9 : 7

© NCERT not to be republished

पुनर्मूल्यांकन खाता

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
मशीनरी		7,000	भवन	30,000
स्टॉक		12,000		
देनदार		1,550		
पुनर्मूल्यांकन पर लाभ				
श्याम	3,780			
गगन	3,780			
राम	1,890	9,450		
		30,000		**30,000**

साझेदारों के पूँजी खाते

तिथि 2017	विवरण	रो.पृ.सं.	श्याम (रु.)	गगन (रु.)	राम (रु.)	तिथि 2017	विवरण	रो.पृ.सं.	श्याम (रु.)	गगन (रु.)	राम (रु.)
31मार्च	गगन की पूँजी		15,750		12,250	31मार्च	शेष आ/ला		80,000	62,500	75,000
	गगन से ऋण		-	1,00,080	-		पुनर्मूल्यांकन		3,780	3,780	1,890
	शेष आ/ला		73,830	-	67,540		लाभ संचय		5,800	5,800	2,900
							श्याम की पूँजी		-	15,750	-
							राम की पूँजी			12,250	
			89,580	**1,00,080**	**79,790**				**89,580**	**1,00,080**	**79,790**

टिप्पणी: गगन को देय राशि के लिए, पर्याप्त राशि उपलब्ध नहीं होने पर, उसके पूँजी खाते का शेष उसके ऋण खाते में हस्तांतरित कर दिया जाएगा।

3.8 साझेदारों की पूँजी का समायोजन

साझेदार की सेवानिवृत्ति या मृत्यु के समय शेष साझेदार पूँजी का समायोजन अपने लाभ अनुपात से कर सकते हैं। इस प्रकार की स्थिति में यदि कुछ अन्य सूचना न हो तो, शेष साझेदारों के शेषों का योग नई फर्म की कुल पूँजी होगी। तब शेष साझेदारों की नयी पूँजी का निर्धारण करने के लिए, फर्म की कुल पूँजी को शेष साझेदारों में नए लाभ अनुपात के अनुसार बाँटा जाएगा तथा पूँजी से अधिक या कमी को साझेदार के वैयक्तिक खाते से ज्ञात किया जाएगा। इस प्रकार के आधिक्य या कमी साझेदार द्वारा रोकड़ निकाल कर या रोकड़ लाकर जैसी भी स्थिति हो, द्वारा समायोजित की जाएगी।

उपरोक्त स्थिति में निम्न रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलेखित की जाएँगी:

(i) आधिक्य राशि का साझेदार द्वारा आहरण करने पर:

साझेदार का पूँजी खाता नाम
    रोकड़ / बैंक खाते से

© NCERT not to be republished

(ii) साझेदार द्वारा पूँजी के लिए राशि लाने पर

रोकड़/बैंक खाता नाम

साझेदार के पूँजी खाते से

निम्न स्थिति में:

शेष साझेदारों की पूँजी का समायोजन तीन में से किसी भी एक प्रकार से किया जा सकता है। जैसा कि निम्न उदाहरण में है:

1. जब नयी फर्म की पूँजी का निर्धारण साझेदारों द्वारा पहले से निश्चित किया जाता है।

उदाहरण 14

मोहित, नीरज तथा सोहन फर्म में साझेदार हैं। अपने लाभ का विभाजन 2:1:1 अनुपात में करते हैं। नीरज सेवानिवृत्त होता है। मोहित और सोहन ने निर्णय लिया कि नयी फर्म की पूँजी 1,20,000 रुपये होगी। सभी समायोजन करने के पश्चात मोहित और सोहन के पूँजी खातों का जमा शेष क्रमश: 82,000 रुपये तथा 41,000 रुपये है। शेष साझेदारों द्वारा लाई गई या उनको भुगतान की गई राशि की गणना करें तथा आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

हल

मोहित और सोहन के बीच नया लाभ विभाजन अनुपात = 2:1

	मोहित (*रु.*)	*सोहन* (*रु.*)
नए अनुपात के आधार पर नयी पूँजी	80,000	40,000
वर्तमान पूँजी (समायोजन के बाद)	82,000	41,000
रोकड़ लाना (भुगतान)	2,000	1,000

मोहित और सोहन की पुस्तकें

रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि* (*रु.*)	*जमा राशि* (*रु.*)
	मोहित का पूँजी खाता नाम		2,000	
	सोहन का पूँजी खाता नाम		1,000	
	रोकड़ खाते से			3,000
	(अधिक पूँजी का निकलना)			

2. जब नयी फर्म की कुल पूँजी नहीं दी गई हो।

उदाहरण 15

आशा, दीपा और लता एक फर्म में साझेदार हैं, अपने लाभ को 3:2:1 के अनुपात में विभाजित करते हैं। पुनर्मूल्यांकन, ख्याति तथा संचित लाभों से संबंधित सभी समायोजन करने के पश्चात आशा व लता के पूँजी खातों का जमा शेष क्रमशः 1,60,000 रुपये तथा 80,000 रुपये है। यह निर्णय लिया गया कि आशा व लता के पूँजी खाते नए लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार समायोजित किए जाएँगे। साझेदारों की नयी पूँजी की गणना करें तथा रोकड़ लाने या निकालने से संबंधित आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन करें।

हल

(अ) शेष साझेदारों की नयी पूँजी की गणना

आशा के पूँजी खाते में शेष (सभी समायोजन के बाद) = 1,60,000 रु.

लता के पूँजी खाते में शेष = 80,000 रु.

नयी फर्म की कुल पूँजी = 2,40,000 रु.

नया लाभ विभाजन अनुपात 3:1 के आधार पर

आशा की नयी पूँजी 2,40,000 रु. $\frac{3}{4}$ = 1,80,000 रु.

लता की नयी पूँजी 2,40,000 रु. $\frac{1}{4}$ = 60,000 रु.

टिप्पणी: नयी फर्म की कुल पूँजी शेष साझेदारों के पूँजी खातों में शेष के योग के आधार पर होगी।

(ब) शेष साझेदारों द्वारा लाई गई या निकाली गई पूँजी की गणना:

	आशा (रु.)	*लता* (रु.)
नयी पूँजी	1,80,000	60,000
विद्यमान पूँजी	1,60,000	80,000
(स) रोकड़ लाना (भुगतान)	20,000	20,000

आशा और लता की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ. सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
	बैंक खाता नाम		20,000	
	आशा के पूँजी खाते से			20,000
	(आशा द्वारा रोकड़ लाई गई)			
	लता का पूँजी खाता नाम		20,000	
	बैंक खाते से			20,000
	(आधिक्य पूँजी को लता द्वारा निकालने पर)			

© NCERT not to be republished

3. जब सेवानिवृत्त साझेदार को देय राशि उनके पूँजी खातों को नए लाभ विभाजन अनुपात के रूप में समायोजित करने पर विद्यमान साझेदारों द्वारा दी जाती है:

उदाहरण 16

ललित, पंकज और राहुल साझेदार हैं, लाभ का विभाजन 4:3:3 के अनुपात में करते हैं। ललित के सेवानिवृत्त होने पर, सामान्य संचय ख्याति तथा पुनर्मूल्यांकन से संबंधित सभी समायोजन करने के पश्चात उनके पूँजी खातों का शेष क्रमशः 70,000 रुपये, 60,000 रुपये तथा 50,000 रुपये है। यह निर्णय लिया गया कि ललित को देय राशि पंकज तथा राहुल द्वारा लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार आनुपातिक रूप से पूँजी लाई जाएगी। पंकज और राहुल द्वारा लाई गई राशि की गणना करें तथा इससे संबंधित आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें। ललित के भुगतान की आवश्यक प्रविष्टि भी अभिलेखित करें।

ललित के सेवानिवृत्त होने के बाद पंकज और राहुल के बीच नया लाभ विभाजन अनुपात 3:3, अर्थात 1:1 होगा।

हल

(अ) *नयी फर्म की कुल पूँजी की गणना* (रु.)

पंकज के पूँजी खाते का शेष (समायोजन के बाद) = 60,000

राहुल के पूँजी खाते का शेष (समायोजन के बाद) = 50,000

ललित को देय राशि (सेवानिवृत्त साझेदार) = 70,000

नयी फर्म की कुल पूँजी = 1,80,000

(ब) *विद्यमान साझेदारों की नयी पूँजी की गणना*

पंकज की नयी पूँजी 1,80,000 रु. $\frac{1}{2}$ = 90,000

राहुल की नयी पूँजी 1,80,000 रु. $\frac{1}{2}$ = 90,000

(स) *विद्यमान साझेदारों द्वारा लाई गई या निकाली गई राशि की गणना*

	पंकज (रु.)	*राहुल (रु.)*
नयी पूँजी (1,80,000 रुपये को 1:1 के अनुपात में)	90,000	90,000
विद्यमान पूँजी (समायोजन के बाद)	60,000	50,000
लाया गया रोकड़	**30,000**	**40,000**

not to be republished © NCERT

पंकज और राहुल की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	विवरण	ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	बैंक खाता नाम		70,000	
	पंकज के पूँजी खाते से			30,000
	राहुल के पूँजी खाते से			40,000
	(पंकज तथा राहुल से प्राप्त राशि)			
	ललित का पूँजी खाता नाम		70,000	
	बैंक खाते से			70,000
	(सेवानिवृत्ति पर ललित को रोकड़ का भुगतान)			

उदाहरण 17

31 मार्च, 2017 को मोहित, नीरज और सोहन का तुलन पत्र नीचे दिया गया है जो कि फर्म में साझेदार हैं और लाभ का विभाजन अपनी पूँजी के अनुसार करते हैं।

दायित्व	राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ		राशि (रु.)
लेनदार	21,000	भवन		1,00,000
मोहित की पूँजी	80,000	मशीनरी		50,000
नीरज की पूँजी	40,000	स्टॉक		18,000
सोहन की पूँजी	40,000	देनदार	20,000	
सामान्य संचय	20,000	*घटाया:* डूबत ऋण के लिए प्रावधान	(1,000)	19,000
		बैंक में रोकड़		14,000
	2,01,000			**2,01,000**

इस तिथि को नीरज ने फर्म से सेवानिवृत्त होने का निर्णय लिया तथा फर्म में उसके हिस्से का भुगतान निम्न के अनुसार किया जाएगा:

1. भवन का मूल्य 20% अधिक है।
2. देनदारों पर डूबत ऋण के लिए प्रावधान को 15% तक बढ़ाएँगे।
3. मशीनरी पर 20% ह्रास लगाया।
4. फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 72,000 रुपये हुआ तथा सेवानिवृत्त साझेदार का भाग, शेष साझेदारों के पूँजी खातों द्वारा समायोजित किया जाएगा।
5. नयी फर्म की पूँजी 1,20,000 रुपये होगी।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा नीरज के सेवानिवृत्त होने के बाद तुलन पत्र तैयार करें।

हल

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम | *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान		2,000	भवन	20,000
मशीनरी		10,000		
पूँजी (पुनर्मूल्यांकन पर लाभ):				
मोहित	4,000			
नीरज	2,000			
सोहन	2,000	8,000		
		20,000		**20,000**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम | *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*मोहित (रु.)*	*नीरज (रु.)*	*सोहन (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*मोहित (रु.)*	*नीरज (रु.)*	*सोहन (रु.)*
31मार्च	नीरज		12,000	-	6,000	31 मार्च	शेष आ/ला		80,000	40,000	40,000
	शेष आ/ले		82,000	65,000	41,000		सामान्य संचय		10,000	5,000	5,000
							पुनर्मूल्यांकन (लाभ)		4,000	2,000	2,000
							मोहित की पूँजी		-	12,000	-
							सोहन की पूँजी		-	6,000	-
			94,000	**65,000**	**47,000**				**94,000**	**65,000**	**47,000**
	बैंक		-	65,000	-		शेष आ/ला		82,000	65,000	41,000
	बैंक		2,000	-	1,000						
	शेष आ/ले		80,000	-	40,000						
			82,000	**65,000**	**41,000**				**82,000**	**65,000**	**41,000**

31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*		*राशि (रु.)*
पूँजी:			भवन		1,20,000
मोहित	80,000		मशीनरी		40,000
सोहन	40,000	1,20,000	स्टॉक		18,000
लेनदार		21,000	देनदार	20,000	
बैंक अधिविकर्ष		54,000	*घटाया:* संदिग्ध ऋण के लिए		
			प्रावधान (1,000रु.+2,000रु.)	(3,000)	17,000
		1,95,000			**1,95,000**

कार्यकारी टिप्पणी

1. **बैंक खाता**

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
	शेष आ/ला		14,000		मोहित की पूँजी		2,000
	शेष आ/ला (अधिविकर्ष)		54,000		सोहन की पूँजी		1,000
					नीरज की पूँजी		65,000
			68,000				**68,000**

2. यह मान लिया गया है कि सेवानिवृत्त साझेदार को भुगतान के लिए बैंक अधिविकर्ष लिया गया है।

3. मोहित और सोहन द्वारा लाई गई या निकाली गई रोकड़:

		मोहित (रु.)	*सोहन (रु.)*
(अ)	नयी पूँजी (1,20,000 रुपये को 2:1 के अनुपात में)	80,000	40,000
(ब)	विद्यमान पूँजी (समायोजनों के बाद)	82,000	41,000
	लाई गई रोकड़ (भुगतान हेतु)	**2,000**	**1,000**

स्वयं करें

1. 31 मार्च, 2017 को अ, ब और स का तुलन पत्र निम्न है जो अपने लाभ का विभाजन पूँजी के अनुसार करते हैं:

31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*		*राशि (रु.)*
देय विपत्र		6,250	भूमि व भवन		12,000
विविध लेनदार		10,000	देनदार	10,500	
सामान्य संचय		2,750	*घटाया:* संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान	500	10,000
पूँजी					
अ	20,000		प्राप्य विपत्र		7,000
ब	15,000		स्टॉक		15,500
स	15,000	50,000	संयंत्र व यंत्र		11,500
			बैंकस्थ रोकड़		13,000
		69,000			**69,000**

© NCERT not to be republished

ब तुलन पत्र की तिथि को सेवानिवृत्त होता है तथा निम्न समायोजन किए जाते हैं:

(अ) स्टॉक 10% से कम होगा।

(ब) भवन का मूल्य 12% अधिक होगा।

(स) संदिग्ध ऋण के लिए 5% का प्रावधान बनाया जाएगा।

(द) कानूनी व्यय के लिए 265 रुपये का प्रावधान बनाइए।

(य) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 10,000 रुपये होगा।

(फ) नए फर्म की पूँजी 30,000 रुपये होगी। विद्यमान साझेदार ने यह निर्णय लिया कि वे अपनी पूँजी को 3:2 के नए अनुपात के अनुसार रखेंगे।

पूँजी खातों में अंतिम शेष का निर्धारण करें तथा अ और स द्वारा नए लाभ विभाजन के अनुसार आनुपातिक पूँजी के लिए लाई गई या निकाली गई राशि की गणना करें।

2. आर, एस और एम साझेदारी में व्यापार करते हैं उनका लाभ विभाजन अनुपात क्रमशः 3:2 : 1 है। 31 मार्च, 2017 को फर्म का तुलन पत्र निम्न है:

31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
विविध लेनदार		16,000	भवन	23,000
पूँजी:			देनदार	7,000
आर	20,000		स्टॉक	12,000
एस	7,500		पेटेंट	8,000
एम	12,500	40,000	बैंक	6,000
		56,000		**56,000**

उपरोक्त शर्तों पर दी गई तिथि को श्याम सेवानिवृत्त होता है:

(अ) भवन का मूल्य 8,800 रुपये अधिक होगा।

(ब) देनदारों पर संदिग्ध ऋण के लिए 5% का प्रावधान करें।

(स) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 9,000 रुपये होगा।

(द) एस को 5,000 रुपये का तुरंत भुगतान होगा तथा देय शेष को ऋण माना जायेगा जिस पर 6% वार्षिक की दर से ब्याज मिलेगा। पुनर्गठित फर्म का तुलन पत्र तैयार करें।

3.9 साझेदार की मृत्यु

जैसा कि पहले वर्णित है कि साझेदार की मृत्यु की स्थिति में लेखांकन व्यवहार (उपचार) उसी प्रकार से किया जाता है, जैसा कि साझेदार के सेवानिवृत्त होने पर और साझेदार की मृत्यु की स्थिति में उसका दावा उसके उत्तराधिकारी को हस्तांतरित हो जाएगा, जैसा कि साझेदार के सेवानिवृत्त होने पर किया जाता है। हालाँकि इसमें एक मुख्य अंतर है, सेवानिवृत्ति सामान्यत: लेखांकन वर्ष के अंत में होती है, जबकि साझेदार की मृत्यु किसी भी समय हो सकती है। इसलिए मृत्यु की स्थिति में उसको दावे में लाभ या हानि का भाग, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज, (यदि कोई है तो), अंतिम तुलन पत्र की तिथि से उसकी मृत्यु तक समायोजित किया जाएगा। अब मुख्य समस्या इस समय अंतराल के लाभ की गणना से संबंधित है (अंतिम तुलन पत्र से साझेदार की मृत्यु की तिथि की अवधि तक)। जैसे कि यह माना जाता है कि पुस्तकों को आगे ले जाने

© NCERT not to be republished

में परेशानी हो सकती है तथा मृत साझेदार के लाभ का भाग निकालने के लिए इस अवधि के अंतिम खाते बनाए जाएँगे। लाभ की गणना पिछले वर्षों के आधार पर (पिछले कुछ वर्षों के औसत के आधार पर) और क्रय के आधार पर की जा सकती है।

उदाहरण के लिए, बकुल, चंपक और दर्शन फर्म में साझेदार हैं, लाभ का विभाजन **5 : 4 : 1** के अनुपात में करते हैं। **31** मार्च, **2017** को समाप्त वर्ष के लिए लाभ **1,00,000** रुपये है। **30** जून, **2016** को चंपक की मृत्यु होती है। बकुल और दर्शन ने फर्म के लाभों को बराबर बाँटने का निर्णय लिया। **1** अप्रैल, से **30** जून, **2016** तक की अवधि के लिए चंपक के लाभ में भाग की गणना निम्न प्रकार होगी:

31 मार्च, **2016** को समाप्त वर्ष के लिए कुल लाभ = **1,00,000** रुपये

चंपक के भाग का लाभ:

पिछले वर्ष का लाभ   आनुपातिक अवधि   मृत साझेदार का भाग

$$1,00,000 \text{ रु.} \times \frac{3}{12} \times \frac{4}{10} = 10,000 \text{ रु.}$$

रोज़नामचा प्रविष्टि निम्न प्रकार अभिलेखित की जाएगी:

लाभ और हानि उचंती खाता	नाम	10,000	
चंपक के पूँजी खाते से		10,000	
(चंपक के भाग के लाभ का उसके पूँजी खाते में हस्तांतरण)			

विकल्प के तौर पर, यदि चंपक के भाग के लाभ की गणना अंतिम तीन वर्षों के औसत लाभ के आधार पर की जाती है, जो कि **1,36,000** रुपये **2013–14** के लिए, **1,54,000** रुपये **2014–15** के लिए तथा **1,00,000** रुपये **2015–16** के लिए है। चंपक के भाग के लाभ की गणना औसत लाभ के आधार पर अंतिम वर्ष की अवधि **1** अप्रैल, **2016** से **30** जून, **2016** के लिए निम्न होगी:

$$\text{औसत लाभ} = \frac{\text{कुल लाभ}}{\text{वर्षों की संख्या}} = \frac{1,36,000 \text{ रु.} + 1,54,000 \text{ रु.} + 1,00,000 \text{ रु.}}{3}$$

$$= \frac{3,90,000 \text{ रु.}}{3} = 1,30,000 \text{ रु.}$$

$$\text{चंपक के भाग का लाभ} = 1,30,000 \text{ रु.} \times \frac{3 \text{ महीने}}{12 \text{ महीने}} \times \frac{4}{10}$$

$$= 13,000 \text{ रु.}$$

रोज़नामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी:

लाभ व हानि उचंती खाता	नाम	13,000	
चंपक के पूँजी खाते से			13,000

यदि समझोते के अनुसार, मृत साझेदार के भाग के लाभ की गणना विक्रय के आधार पर की जानी है तथा यह दिया है कि **2015–16** वर्ष के दौरान विक्रय **80,000** रुपये था और **01** अप्रैल, **2016** से **30** जून, **2016** में विक्रय **1,50,000** रुपये था।

01 अप्रैल, **2016** से **30** जून, **2016** की अवधि में चंपक के भाग के लिए लाभ की गणना निम्न प्रकार होगी:

यदि विक्रय **8,00,000** रुपये है, तो लाभ = **1,00,000** रु.

$$\text{यदि विक्रय 1 रु. हो, तो लाभ} = \frac{1,00,000}{8,00,000}$$

यदि विक्रय 1,50,000 रु. हो, तो लाभ $= \frac{1,00,000}{8,00,000}$ 1,50,000

चंपक के भाग का लाभ = 18,750 रु.

= 7,500 रु.

रोज़नामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी:

लाभ व हानि उचंती खाता	नाम	7,500	
चंपक के पूँजी खाते से			7,500

मृत साझेदार के मध्य अवधि के लिए लाभ के भाग के लिए लेखा पुस्तकों में निम्न रोज़नामचा प्रविष्टि अभिलेखित करेंगे।

लाभ व हानि

लाभ व हानि उचंती खाता नाम

मृत साझेदार के पूँजी खाते से

(मध्य अवधि के भाग का लाभ)

तत्पश्चात् लाभ व हानि उचंती खाते को लाभकारी साझेदारों के पूँजी खातों में उनके अधिलाभ अनुपात में हस्तांतरित करके बंद किया जाता है। इस संदर्भ में निम्न रोज़नामचा प्रविष्टि होती है:

लाभकारी साझेदारों के पूँजी खाते नाम

लाभ व हानि उचंती खाते से

(लाभ व हानि उचंती खाते का हस्तातंरण)

वैकल्पिक रूप से, निम्नलिखित रोज़नामचा प्रविष्टि भी हो सकती है:

लाभकारी साझेदारों के पूँजी खाता नाम

मृतक साझेदार के पूँजी खाते से

(मृतक साझेदार के लाभ में अंश उसके पूँजी खाते में जमा किया गया)

उदाहरण 18

अनिल, भानू और चंदू फर्म में साझेदार हैं। लाभ विभाजन अनुपात 5 : 3 : 2 है। 31 मार्च, 2017 को उनका तुलन पत्र निम्न है:

अनिल, भानू और चंदू की पुस्तकें
31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपतियाँ*	*राशि (रु.)*
लेनदार		11,000	भवन	20,000
संचय कोष		6,000	मशीनरी	30,000
अनिल की पूँजी	30,000		स्टॉक	10,000
भानू की पूँजी	25,000		पेटेंट	11,000
चंदू की पूँजी	15,000	70,000	देनदार	8,000
			रोकड़	8,000
		87,000		**87,000**

01 अक्तूबर, 2017 को अनिल की मृत्यु हो गई। शेष साझेदारों और उसके उत्तराधिकारी के बीच सहमति हुई कि:

(अ) ख्याति का मूल्यांकन पिछले चार वर्षों के औसत लाभ के 2½ वर्ष के क्रय के बराबर होगी जो कि:
वर्ष 2013-14 – 13,000 रु., वर्ष 2014-15 – 12,000 रु.
वर्ष 2015-16 – 20,000 रु., वर्ष 2016-17 – 15,000 रु.

(ब) पेटेंट का मूल्यांकन 8,000 रुपये, मशीनरी का 28,000 रुपये तथा भवन का 25,000 रुपये।

(स) वर्ष 2016–17 के लिए लाभ पिछले वर्ष के समान दर पर होगा।

(द) पूँजी पर 10% वार्षिक से ब्याज लगेगा।

(य) अनिल को देय राशि के आधे का भुगतान तुरंत किया जाएगा।

1 अक्तूबर, 2017 को अनिल का पूँजी खाता तथा अनिल के उतराधिकारी का खाता तैयार करें।

हल

अनिल, भानू और चंदू की पुस्तकें
अनिल का पूँजी खाता

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
01 अक्तूबर	अनिल का उत्तराधिकारी		57,000	01अप्रैल	शेष आ/ला		30,000
				01अक्तूबर	संचय कोष		3,000
					भानू की पूँजी		11,250
					चंदू की पूँजी		7,500
					लाभ और हानि (उचंती)		3,750
					पूँजी पर ब्याज		1,500
			57,000				**57,000**

अनिल के उत्तराधिकारी का खाता

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
01अक्तूबर	बैंक		28,500	01अक्तूबर	अनिल की पूँजी		57,000
	शेष आ/ला		28,500				
			57,000				**57,000**

© NCERT not to be republished

कार्यकारी टिप्पणी:

1. पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम जमा

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
	पेटेंट		3,000		भवन		5,000
	मशीनरी		2,000				
			5,000				**5,000**

2. ख्याति = 2½ वर्ष का क्रय   औसत लाभ

औसत लाभ $= \dfrac{13{,}000\text{ रु.} + 12{,}000\text{ रु.} + 20{,}000\text{ रु.} + 15{,}000\text{ रु.}}{4}$

$= \dfrac{60{,}000\text{ रु.}}{4} = 15{,}000$ रु.

$= 15{,}000$ रु.

ख्याति $= \dfrac{5}{2} \quad 15{,}000$ रु.

ख्याति में अनिल का भाग $= \dfrac{5}{10} \quad 37{,}500$ रु.

$= 18{,}750$ रु.

3. अंतिम तुलन पत्र की तिथि से मृत्यु की तिथि तक का लाभ:
(01 अप्रैल, 2017 से 1 अक्तूबर, 2017 = 6 महीने)

6 महीने का लाभ $= 15{,}000 \quad \dfrac{6}{12} = 7{,}500$ रु.

लाभ में अनिल का भाग $= 7{,}500$ रु. $\quad \dfrac{5}{10} = 3{,}750$ रु.

4. पूँजी पर ब्याज
(1 अप्रैल, 2017 से 1 अक्तूबर, 2017)

$= 30{,}000 \quad \dfrac{10}{100} \quad \dfrac{6}{12}$

=15,000 रुपये

© NCERT not to be republished

उदाहरण 19

31 मार्च, 2017 को मोहित, सोहन और राहुल का तुलन पत्र नीचे दिया गया है, जो फर्म में साझेदार हैं तथा 2:2:1 के अनुपात में लाभ व हानि का विभाजन करते हैं।

मोहित, सोहन और राहुल की पुस्तकें
31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
लेनदार		40,000	ख्याति	30,000
सामान्य संचय		25,000	स्थायी परिसंपत्तियाँ	60,000
पूँजी:			स्टॉक	10,000
मोहित	30,000		विविध देनदार	20,000
सोहन	25,000		बैंकस्थ रोकड़	15,000
राहुल	15,000	70,000		
		1,35,000		**1,35,000**

15 जून, 2016 को सोहन की मृत्यु हुई। साझेदारी विलेख के अनुसार उसके उत्तराधिकारी को मिलेगा:

(अ) पूँजी खाते का शेष

(ब) पिछले 4 वर्ष के औसत लाभ के तीन गुणा के आधार पर ख्याति में हिस्सा।

(स) पिछले 4 वर्षों के औसत के आधार पर मृत्यु की तिथि तक के लाभ में भाग।

(द) पूँजी पर 12% वार्षिक की दर से ब्याज।

31 मार्च, 2014, 2015, 2016, 2017 को समाप्त वर्षों के लाभ क्रमश: 15,000 रु., 17,000 रु, 19,000 रु. तथा 13,000 रु. हैं।

सोहन के कानूनी उत्तराधिकारी को देय राशि का भुगतान किया गया। मोहित और राहुल ने सोहन के भाग को बराबर बाँट लिया तथा वे साझेदार रहेंगे। सोहन के उत्तराधिकारी की देय राशि को निकालें।

हल

मोहित, सोहन, और राहुल की पुस्तकें
सोहन का पूँजी खाता

नाम *जमा*

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
	ख्याति		12,000	1 अप्रैल	शेष आ/ला		25,000
	सोहन का उत्तराधिकारी		44,158	15 जून	संचय निधि		10,000
					मोहित की पूँजी		9,600
					राहुल की पूँजी		9,600
					लाभ तथा हानि		1,333
					पॉलिसी		
					पूँजी पर ब्याज		625
			56,158				**56,158**

कार्यकारी टिप्पणी

1. ख्याति में सोहन का भाग

= फर्म की ख्याति $\frac{2}{5}$

= 48,000 रु. $\frac{2}{5}$ = 19,200 रु.

फर्म की ख्याति = 3 औसत लाभ

= 3 $\frac{64,000 \text{ रु.}}{4}$ = 48,000 रु.

2. लाभ तथा हानि

(अंतिम तुलन पत्र से मृत्यु की तिथि तक लाभ में भाग) $2\frac{1}{2}$ महीने

= $\frac{64,000}{4}$ रु. $\frac{2}{5}$ $\frac{2.5}{12}$

= 1,333 रुपये

3. संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी = 1,25,000 रुपये

सोहन का भाग = $\frac{2}{5}$ 1,25,000 रु.

© NCERT not to be republished

= 50,000 रु.

4. पूँजी पर ब्याज = 25,000 $\frac{12}{100}$ $\frac{2.5}{12}$

= 625 रुपये

स्वयं करें

31 मार्च, 2017 को पिंकी, कुरेशी और राकेश का तुलन पत्र नीचे दिया है:

31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
संचय कोष		20,000	भवन	26,000
पूँजी:			विनियोग	15,000
पिंकी	15,000		देनदार	15,000
कुरेशी	10,000		प्राप्य विपत्र	6,000
राकेश	10,000	35,000	स्टॉक	12,000
विविध लेनदार		25,000	रोकड़	6,000
		80,000		**80,000**

साझेदारी संलेख में लाभ विभाजन अनुपात 2:1:1 है तथा साझेदार की मृत्यु की स्थिति में, उसके उतराधिकारी को भुगतान दिया जाएगा।

(अ) अंतिम तुलन पत्र की तिथि को पूँजी खाते का जमा शेष।

(ब) अंतिम तुलन पत्र की तिथि को संचय का भाग।

(स) मृत्यु की तिथि को लाभ में आनुपातिक भाग। पूरे हुए 3 वर्षों का औसत लाभ जमा 10%।

(द) ख्याति के रूप में पिछले 3 वर्षों के कुल लाभ में आनुपातिक भाग। पिछले 3 वर्षों का निवल लाभ निम्न है:

	रुपये
2015	16,000
2016	16,000
2017	15,400

01 अप्रैल, 2017 को राकेश की मृत्यु हो गई। उसने मृत्यु की तिथि 5,000 रु. तक निकाले हैं। विनियोग को सम मूल्य पर बेचा गया तथा राकेश के उत्तराधिकारी को भुगतान किया गया। राकेश के उत्तराधिकारी के लिए पूँजी खाता तैयार करें।

इस अध्याय में प्रयुक्त शब्द

- साझेदार की सेवानिवृत्ति
- साझेदार की मृत्यु
- अभिलाभ अनुपात
- मृत साझेदार के उत्तराधिकारी
- उत्तराधिकारी खाता

सारांश

1. *नया लाभ विभाजन अनुपात:* नया लाभ विभाजन अनुपात वह अनुपात है जिसके अंतर्गत एक साझेदार के सेवानिवृत्त होने/मृत्यु के बाद शेष साझेदार भविष्य के लाभों का विभाजन करते हैं।

   नया भाग = पुराना भाग + सेवानिवृत्त साझेदार के भाग का अधिग्रहण

2. *अभिलाभ अनुपात:* अभिलाभ अनुपात वह अनुपात है जिसके अंतर्गत विद्यमान साझेदार, किसी साझेदार की सेवानिवृत्ति/ मृत्यु के बाद उसके भाग का अधिग्रहण करते हैं।

3. *ख्याति का व्यवहार:* मूलभूत नियम यह है कि अभिलाभ करने वाले साझेदार, त्याग करने वाले साझेदार को ख्याति की राशि की क्षतिपूर्ति उनके (शेष साझेदारों) को होने वाले लाभ की राशि जितना ही करेंगे।

   यदि ख्याति को पुस्तकों में पहले से ही दर्शाया गया है, तो साझेदारों के पूँजी खाते में उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में नाम करके अपलिखित किया जाएगा।

4. *परिसंपत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन:* किसी साझेदार के सेवानिवृत्त होने/ मृत्यु के समय कुछ परिसंपत्तियाँ ऐसी रह जाती हैं जिनको उनके वर्तमान मूल्य पर नहीं दर्शाया जा सकता। इसी प्रकार यहां कुछ दायित्व ऐसे होते हैं जिनके फर्म द्वारा दर्शाये गए मूल्य तथा भुगतान किए जाने वाले मूल्य में अंतर होता है।

   इसके अलावा, यहाँ कुछ गैर-अभिलिखित परिसंपत्तियाँ और दायित्वों को भी अभिलेखित किया जाना होता है।

5. *संचित लाभ और हानियाँ:* संचय (संचित लाभ) और हानियाँ सभी साझेदारों से संबंधित होती है तथा इनको साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरित किया जाना चाहिए।

6. सेवानिवृत्त/मृत साझेदार को राशि का भुगतान एकमुश्त या किश्तों के द्वारा ब्याज सहित किया जाना चाहिए।

7. किसी साझेदार के सेवानिवृत्त होने/मृत्यु के समय, शेष साझेदार उनकी पूँजी का योगदान उनके लाभ विभाजन अनुपात में करने का निर्णय ले सकते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. किन-किन परिस्थितियों में एक साझेदार फर्म से सेवानिवृत्त हो सकता है।
2. एक साझेदार की सेवानिवृत्ति के समय किए जाने वाले विभिन्न समायोजनों का वर्णन कीजिए।

© NCERT not to be republished

3. त्याग अनुपात तथा अभिलाभ अनुपात में अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. किसी साझेदार के सेवानिवृत्ति/मृत्यु के समय फर्म को अपनी परिसंपत्तियों का मूल्यांकन और दायित्वों के दोबारा निर्धारण की आवश्यकता क्यों होती है?
5. सेवानिवृत्त/मृत साझेदार फर्म की ख्याति में उसका भाग पाने का अधिकारी क्यों होता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सेवानिवृत्त साझेदारों को भुगतान करने के विभिन्न विधियों को समझाइए।
2. आप मृत साझेदार के देय राशि की गणना किस प्रकार करेंगे।
3. किसी साझेदार के सेवानिवृत्ति के समय या उसकी मृत्यु की दशा में ख्याति के व्यवहार का वर्णन कीजिए।
4. एक साझेदार की मृत्यु की घटना पर लाभ में से उसके भाग की गणना करने की विभिन्न विधियों का वर्णन कीजिए।

संख्यात्मक प्रश्न

1. अपर्णा, मनीषा और सोनिया लाभ का विभाजन 3:2:1 में करते हुए साझेदार हैं। मनीषा सेवानिवृत्त करती है तथा फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 1,80,000 रुपये किया गया। अपर्णा तथा सोनिया भविष्य के लाभों का बँटवारा 3:2 के अनुपात में करने का निर्णय लेती हैं। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।
(**उत्तर:** अपर्णा पूँजी खाता नाम 18,000 रुपये, सोनिया पूँजी खाता नाम, 42,000 रुपये, मनीषा पूँजी खाता जमा 60,000 रुपये)

2. संगीता, सरोज तथा शांति साझेदार हैं लाभ व हानि का विभाजन अनुपात 2:3:5 है, फर्म की पुस्तकों में ख्याति का मूल्य 60,000 रु. है। संगीता सेवानिवृत्त होती है। ख्याति का मूल्यांकन 90,000 रु. हुआ। सरोज तथा शांति भविष्य में लाभ का विभाजन बराबर करने का निर्णय लेते हैं। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि का अभिलेखन करें।

3. हिमांशू, गगन और नमन साझेदार हैं, उनका लाभ व हानि विभाजन अनुपात 3:2:1 है। 31 मार्च, 2019 को नमन सेवानिवृत्त होता है। इस तिथि को फर्म की विभिन्न परिसंपत्तियाँ तथा दायित्व इस प्रकार हैं:

रोकड़ 10,000 रुपये, भवन 1,00,000 रुपये, संयत्र तथा मशीनरी 40,000 रुपये, स्टॉक 20,000 रुपये, देनदार 20,000 रुपये तथा विनियोग 30,000 रुपये है।
नमन के सेवानिवृत्त होने पर साझेदारों के बीच निम्न पर सहमति हुई:
(i) भवन पर 20% ह्रास लगेगा।
(ii) संयत्र तथा मशीनरी पर 10% का ह्रास लगेगा।
(iii) देनदारों पर डूबत तथा संदिग्ध ऋण के लिए 5% का प्रावधान होगा।
(iv) स्टॉक का मूल्यांकन 18,000 रुपये तथा विनियोगों का 35,000 रुपये हुआ। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि का अभिलेखन करते हुए इनका प्रभाव दर्शाइए तथा पुनर्मूल्यांकन खाता तैयार करें।

4. नरेश, राजकुमार तथा विश्वजीत बराबर के साझेदार हैं। राजकुमार सेवानिवृत्त होने का निर्णय लेता है। सेवानिवृत्ति की तिथि को फर्म का तुलन पत्र इस प्रकार दर्शाया जाता है:

सामान्य संचय 36,000 रुपये तथा लाभ एवं हानि खाता (नाम) 15,000 रुपये ।

उपर्युक्त का प्रभाव दर्शाते हुए आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि का अभिलेखन करें।

5. दिग्विजय, बृजेश तथा पराक्रम फर्म में साझेदार हैं जिनका लाभ विभाजन अनुपात 2:2:1 है। 31 मार्च, 2017 को उनका तुलन पत्र इस प्रकार है:

दायित्व	*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
लेनदार	49,000	रोकड़	8,000
संचय	18,500	देनदार	19,000
दिग्विजय की पूँजी	82,000	स्टॉक	42,000
बृजेश की पूँजी	60,000	भवन	2,07,000
पराक्रम की पूँजी	75,500	पेटेंट	9,000
	2,85,000		**2,85,000**

31 मार्च, 2020 को बृजेश निम्न शर्तों पर सेवानिवृत्त होता है:

(i) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 70,000 रुपये हुआ तथा पुस्तकों में नहीं दर्शाया जाएगा।

(ii) 2,000 रुपये मूल्य के डूबत ऋण को अपलिखित किया।

(iii) पेटेंट को मूल्य रहित माना जाएगा।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के खाते तथा बृजेश के सेवानिवृत्त होने के बाद दिग्विजय तथा पराक्रम का तुलन पत्र तैयार करें।

(**उत्तर:** पुनर्मूल्यांकन पर हानि 11,000 रुपये, पूँजी खातों के शेष: दिग्विजय 66,333 रुपये तथा पराक्रम 67,667 रुपये तथा तुलन पत्र का योग 2,74,000 रुपये)

6. राधा, शीला तथा मीना साझेदार हैं उनका लाभ तथा हानि विभाजन अनुपात 3:2:1 है। 01 अप्रैल, 2019 को शीला फर्म से सेवानिवृत होती है। इस तिथि को फर्म का तुलन पत्र निम्न प्रकार है:

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
व्यापारिक लेनदार		3,000	हस्तस्थ रोकड़	1,500
देय विपत्र		4,500	बैंकस्थ रोकड़	7,500
बकाया व्यय		4,500	देनदार	15,000
सामान्य संचय		13,500	स्टॉक	12,000
पूँजी:			कारखाना परिसर	22,500
राधा	15,000		यंत्र	8,000
शीला	15,000		खुले औज़ार	4,000
मीना	15,000	45,000		
		70,500		**70,500**

शर्तें निम्न हैं:

(अ) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 13,000 रुपये है।

(ब) बकाया व्यय 3,750 रुपये तक कम हुए।

(स) मशीनरी तथा खुले औज़ार का मूल्यांकन पुस्तक मूल्य से 10% कम होगा।

(द) कारखाना परिसर का पुनर्मूल्यांकन 24,300 रुपये हुआ।

तैयार करें:

1. पुनर्मूल्यांकन खाता;
2. साझेदारों के पूँजी खाते; तथा
3. शीला के सेवानिवृत्त होने के बाद फर्म का तुलन पत्र।

(**उत्तर:** पुनर्मूल्यांकन पर लाभ 13,500 रुपये, पूँजी खातों का शेष: राधा 19,050 रुपये तथा मीना 16,350 रुपये, तुलन पत्र का योग 71,100 रुपये)

7. पंकज, नरेश तथा सौरभ साझेदार हैं उनका लाभ विभाजन अनुपात 3:2:1 है। नरेश ने बीमारी के कारण फर्म से सेवानिवृत्ति ली। इस तिथि को फर्म का तुलन पत्र निम्न है:

पंकज, नरेश और सौरभ की पुस्तकें
31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*		*राशि (रु.)*
सामान्य संचय		12,000	बैंक		7,600
विविध लेनदार		15,000	देनदार	6,000	
देय विपत्र		12,000	घटाया: संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	(400)	5,600
बकाया वेतन		2,200			
कानूनी हानि के लिए प्रावधान		6,000	स्टॉक		9,000
पूँजी:			फ़र्नीचर		41,000
पंकज	46,000		परिसर		80,000
नरेश	30,000				
सौरभ	20,000	96,000			
		1,43,200			**1,43,200**

अतिरिक्त सूचनाएँ

(i) परिसर का मूल्य 20% अधिक हुआ, स्टॉक 10% से कम हुआ तथा देनदारों पर संदिग्ध ऋण के लिए 5% का प्रावधान करें। कानून से हानि के लिए 1,200 रुपये का प्रावधान बनाएँ तथा फ़र्नीचर का मूल्य 45,000 रुपये अधिक हुआ।

(ii) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 42,000 रुपये किया गया।

(iii) नरेश के पूँजी खाते से 26,000 रुपये का ऋण में हस्तांतरण किया गया तथा शेष का भुगतान बैंक से किया गया। यदि आवश्यक हुआ तो बैंक से ऋण लिया जाएगा।

(iv) पंकज तथा सौरभ ने यह निर्णय लिया कि लाभ व हानि के विभाजन का नया अनुपात 5:1 होगा। नरेश के सेवानिवृत्त होने के बाद आवश्यक बही खाता तथा तुलन पत्र तैयार करें।
(**उत्तर:** पुनर्मूल्यांकन पर लाभ 8,000 रुपये , पंकज के पूँजी खाते का शेष 47,000 रुपये तथा सौरभ 25,000 रुपये, नरेश के पूँजी खाते का योग 54,000 रुपये, तुलन पत्र का योग 1,54,800 रुपये)

8. पुनीत, पंकज तथा पम्मी व्यापार में साझेदार हैं, अपना लाभ तथा हानि विभाजन 2:2:1 के अनुपात में करते हैं। 31 मार्च, 2019 को तुलन पत्र इस प्रकार है:

पुनीत, पंकज तथा पम्मी की पुस्तकें
31 मार्च, 2019 को तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
विविध लेनदार		1,00,000	बैंकस्थ रोकड़	20,000
पूँजी खाते:			स्टॉक	30,000
पुनीत	60,000		विविध देनदार	80,000
पंकज	1,00,000		विनियोग	70,000
पम्मी	40,000	2,00,000	फ़र्नीचर	35,000
संचय		50,000	भवन	1,15,000
		3,50,000		**3,50,000**

30 सितंबर, 2017 को पम्मी की मृत्यु हो गई। साझेदारी संलेख में निम्न पूर्व निर्दिष्ट हैं:

(i) मृत साझेदार मृत्यु की तिथि तक के लाभ का अधिकारी होगा जिसकी गणना पिछले वर्ष के लाभ आधार पर होगी।

(ii) वह फर्म में अपने भाग की ख्याति का अधिकारी होगा जिसकी गणना अंतिम चार वर्षों के औसत लाभ के तीन वर्षों में क्रय के आधार पर की जाएगी। अंतिम चार वित्तीय वर्षों का लाभ इस प्रकार है– 2015-16 के लिए 80,000 रुपये , 2016-17 के लिए 50,000 रुपये , 2017-18 के लिए 40,000 रुपये, 2018-19 के लिए 30,000 रुपये, मृत्यु की तिथि तक मृत साझेदार के आहरण 10,000 रुपये में। पूँजी पर ब्याज 12% प्रति वर्ष दिया जाएगा।

शेष साझेदार उसके उत्तराधिकारी को 15,400 रुपये का भुगतान तुरंत करने के लिए सहमत हो जाते हैं और बकाया शेष 12% प्रतिवर्ष ब्याज सहित चार बराबर वार्षिक किश्तों में दिया जाएगा। पम्मी का पूँजी खाता, उसके उत्तराधिकारी का खाता देय राशि के निपटारे की तिथि तक दिखाइए।
(**उत्तर:** कुल देय राशि 75,400 रु.)

9. 31 मार्च, 2020 को प्रतीक, रॉकी तथा कुशल का तुलन पत्र निम्न प्रकार है:

प्रतीक, रॉकी और कुशल की पुस्तकें
31 मार्च, 2020 को तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
विविध लेनदार		16,000	प्राप्य विपत्र	16,000
सामान्य संचय		16,000	फ़र्नीचर	22,600
पूँजी खाते:			स्टॉक	20,400
प्रतीक	30,000		विविध देनदार	22,000
रॉकी	20,000		बैंकस्थ रोकड़	18,000
कुशल	20,000	70,000	हस्तस्थ रोकड़	3,000
		1,02,000		**1,02,000**

30 जून, 2017 को रॉकी की मृत्यु हो गई। साझेदारी संलेख की शर्तों के अनुसार, मृत साझेदार का उत्तराधिकारी निम्न का अधिकारी होगा:

(अ) साझेदार के पूँजी खाते के नाम शेष का।

(ब) पूँजी पर 5% प्रतिवर्ष ब्याज का।

(स) गत तीन वर्षो के औसत लाभ के दोगुने के आधार पर ख्याति में भाग।

(द) गत वर्ष के लाभ के आधार पर गत वित्तीय वर्ष की समाप्ति से मृत्यु की तिथि तक लाभ में भाग।

31 मार्च, 2018, 31 मार्च, 2016 तथा 31 मार्च, 2019 को समाप्त वर्ष के लाभ क्रमशः 12,000 रुपये, 16,000 रुपये, तथा 2020 को 14,000 रुपये है। लाभ का विभाजन पूँजी अनुपात में किया जाएगा।

आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दे तथा रॉकी का पूँजी खाता बनाए जो कि उसके उत्तराधिकारी को दिया जाएगा।

(**उत्तर**:- रॉकी के उत्तराधिकारी का खाता 33,821 रुपये)

10. नारंग, सूरी और बजाज एक फर्म में साझेदार है। उनका लाभ तथा हानि विभाजन क्रमशः $\frac{1}{2}$, $\frac{1}{6}$ और $\frac{1}{3}$ है। 01 अप्रैल, 2017 को तुलन पत्र इस प्रकार है:

नारंग, सूरी और बजाज की पुस्तकें
01 अप्रैल, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ		राशि (रु.)
देय विपत्र		12,000	पूर्ण स्वामित्व परिसर		40,000
विविध लेनदार		18,000	मशीनरी		30,000
संचय		12,000	फ़र्नीचर		12,000
पूँजी खाते:			स्टॉक		22,000
नारंग	30,000		विविध देनदार	20,000	
सूरी	20,000		*घटाया:* संदिग्ध ऋणों		
बजाज	38,000	88,000	के लिए प्रावधान	(1,000)	19,000
			रोकड़		7,000
		1,30,000			**1,30,000**

बजाज फर्म से सेवानिवृत हुआ तथा साझेदार निम्न पर सहमत हुए:

(अ) पूर्ण स्वामित्व परिसर तथा फ़र्नीचर का मूल्यांकन क्रमशः 20% तथा 15% अधिक पर हुआ।

(ब) मशीनरी तथा फर्नीचर का मूल्यांकन क्रमशः 10% तथा 7% कम पर हुआ।

(स) डूबत ऋण के लिए प्रावधान 1,500 रुपये तक बढ़ाया गया।

(द) बजाज के सेवानिवृत्त होने पर ख्याति का मूल्यांकन 21,000 रुपये पर हुआ।

(य) विद्यमान साझेदारों ने यह निर्णय लिया कि बजाज की सेवानिवृत्ति के बाद पूँजी को नए लाभ हानि विभाजन अनुपात के अनुसार समायोजित करेंगे।

पूँजी खाते में आधिक्य/कमी को वर्तमान खाते के द्वारा समायोजित किया जाएगा।

पुनर्गठित फर्म का तुलन पत्र तथा आवश्यक बही खाते तैयार करें।

(**उत्तर:** पुनर्मूल्यांकन पर लाभ 6,960 रुपये , पूँजी खातों में शेष: नारंग 49,230 रुपये तथा सूरी 16,410 रुपये। बजाज के पूँजी खाते में जमा शेष 41,320 रुपये)

11. 31 मार्च, 2017 को राजेश, प्रमोद तथा निशांत का तुलन पत्र निम्न है, जो कि अपने लाभ को पूँजी के अनुसार विभाजित करते हैं:

राजेश, प्रमोद तथा निशांत की पुस्तकें
31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*		*राशि (रु.)*
देय विपत्र		6,250	कारखाना भवन		12,000
विविध लेनदार		10,000	देनदार	10,500	
सामान्य संचय		2,750	*घटाया:* संदिग्ध ऋणों पर प्रावधान	500	10,000
पूँजी खाते:			प्राप्य विपत्र		7,000
राजेश	20,000		स्टॉक		15,500
प्रमोद	15,000		संयंत्र व मशीनरी		11,500
निंशात	15,000	50,000	बैंक शेष		13,000
		69,000			**69,000**

तुलन पत्र की तिथि को प्रमोद सेवानिवृत्त होता है तथा निम्न समायोजन किए जाएँगे:

(अ) स्टॉक का मूल्यांकन पुस्तक मूल्य से 10% कम पर होगा।

(ब) कारखाना भवन का 12% अधिक पर मूल्यांकन होगा।

(स) संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान का 5% तक प्रावधान करें।

(द) कानूनी प्रभार का संचय 265 रुपये तक बनाया जाएगा।

(य) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 10,000 रुपये होगा।

(फ) नयी फर्म की पूँजी 30,000 रुपये होगी। विद्यमान साझेदार निर्णय लेते हैं कि उनकी पूँजी नए लाभ विभाजन अनुपात 3:2 के अनुसार होगी।

प्रमोद के पूँजी खाते को ऋण खाते में हस्तांतरित करने के पश्चात पुनर्गठित फर्म का तुलन पत्र तैयार करें तथा रोज़नामचा प्रविष्टि दें।

(**उत्तर**: पुनर्मूल्यांकन पर हानि 400 रुपये, पूँजी खातों का शेष: राजेश 18,940 रुपये तथा निशांत 14,705 रुपये, प्रमोद का ऋण 18,705 रुपये, तुलन पत्र का योग 65,220 रुपये)

12. 31 मार्च, 2020 को जैन, गुप्ता और मलिक का तुलन पत्र निम्न है:

जैन, गुप्ता और मलिक की पुस्तकें
31 मार्च, 2020 को तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
विविध लेनदार		19,800	भूमि और भवन	26,000
टेलीफ़ोन बिल बकाया		300	बाँड	14,370
देय खाते		8,950	रोकड़	5,500
लाभ व हानि		16,750	प्राप्य विपत्र	23,450
पूँजी:			विविध देनदार	26,700
जैन	40,000		स्टॉक	18,100
गुप्ता	60,000		कार्यालय फ़र्नीचर	18,250
मलिक	20,000	1,20,000	संयंत्र व मशीनरी	20,230
			कंपयूटर	13,200
		1,65,800		**1,65,800**

साझेदार अपने लाभ का विभाजन 5:3:2 के अनुपात में करते हैं। 01 अप्रैल, 2019 को मलिक सेवानिवृत होने का निर्णय लेता है तथा व्यापार में उसके भाग की गणना परिसंपत्तियों और दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन निम्न शर्तों पर करेंगे:

स्टॉक 20,000 रुपये, कार्यालय फ़र्नीचर 14,250 रुपये, संयंत्र तथा मशीनरी 23,530 रुपये, भूमि और भवन 20,000 रुपये ।

संदिग्ध ऋण के लिए 1,700 रुपये का प्रावधान बनाएँगे। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 9,000 रुपये होगा। विद्यमान साझेदार मलिक को सेवानिवृत्ति पर 16,500 रुपये का रोकड़ भुगतान करने के लिए सहमत हुए। रोकड़ का योगदान विद्यमान साझेदार 3:2 के अनुपात में करेंगे। मलिक के पूँजी खाते के शेष को ऋण मानेंगे। पुनर्गठित फर्म का पुनर्मूल्यांकन खाता, पूँजी खाते तथा तुलन पत्र तैयार करें।

(**उत्तर**: पुनर्मूल्यांकन पर हानि 6,500 रु., पूँजी खातों का शेष: जैन 53,900 रु., गुप्ता 69,000 रु., मलिक का ऋण 7,350 रु., तुलन पत्र 1,59,300 रु.)

13. आरती, भारती और सीमा साझेदार हैं। उनका लाभ विभाजन अनुपात 3:2:1 है। मार्च 31, 2020 को उनका तुलन पत्र इस प्रकार है:

© NCERT not to be republished

आरती, भारती और सीमा की पुस्तकें
31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
देय विपत्र		12,000	भवन	21,000
लेनदार		14,000	हस्तस्थ रोकड़	12,000
सामान्य संचय		12,000	बैंक	13,700
पूँजी:			देनदार	12,000
आरती	20,000		प्राप्य विपत्र	4,300
भारती	12,000		स्टॉक	1,750
सीमा	8,000	40,000	विनियोग	13,250
		78,000		**78,000**

12 जून, 2019 को भारती की मृत्यु हो गई, साझेदारी संलेख के अनुसार उसके उत्तराधिकारी को निम्न का भुगतान किया जाएगा:

(अ) उसकी मृत्यु के समय पूँजी खाते का शेष 10% प्रति वर्ष की दर से ब्याज सहित।

(ब) संचय कोष में उसका आनुपातिक हिस्सा।

(स) इस समयावधि के लिए उसके भाग का लाभ इस समय हुए विक्रय पर आधारित है, जो कि 1,00,000 रुपये है। पिछले तीन वर्षों के दौरान विक्रय पर लाभ की दर 10% है।

(द) ख्याति की गणना उसके लाभ में भाग के अनुसार पिछले तीन वर्षों के औसत लाभ में से 20% घटाकर उसके दोगुने के बराबर की जाएगी। पिछले वर्षों का लाभ इस प्रकार है:

2016	8,200 रुपये
2017	9,000 रुपये
2018	9,800 रुपये

विनियोग को 16,200 में विक्रय किया गया तथा उसके उत्तराधिकारी को भुगतान हुआ।

आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि करें तथा भारती के उत्तराधिकारी का खाता बनाइए।

(**उत्तर:** भारती के उत्तराधिकारी को भुगतान 23,436 रु.)

14. नित्य, सत्य, तथा मिथ्य साझेदार हैं जिनका लाभ व हानि विभाजन अनुपात 5:3:2 है। 31 मार्च, 2020 को उनका तुलन पत्र इस प्रकार है:

© NCERT not to be republished

नित्य, सत्य और मिथ्य की पुस्तकें
31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
लेनदार		14,000	विनियोग	10,000
सामान्य संचय		6,000	फ़र्नीचर	5,000
पूँजी:			परिसर	20,000
नित्य	30,000		पेटेंट	6,000
सत्य	30,000		मशीनरी	30,000
मिथ्य	20,000	80,000	स्टॉक	13,000
			देनदार	8,000
			बैंक	8,000
		1,00,000		**1,00,000**

01 मई, 2017 को मिथ्य की मृत्यु होती है। साझेदारों तथा मिथ्य के उत्तराधिकारी के बीच में समझौता इस प्रकार है:

(अ) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन चार वर्ष के औसत लाभ के 2½ गुणें के बराबर होगा। चार वर्ष का लाभ है: 2017 में 13,000 रुपये, 2018 में 12,000 रुपये, 2019 में 16,000 रुपये तथा 2020 में 15,000 रुपये ।

(ब) पेटेंट का मूल्यांकन 8,000 रुपये, मशीनरी 25,000 रुपये तथा परिसर 25,000 रुपये हुआ।

(स) मिथ्य के हिस्से के लाभ की गणना वर्ष 2020 के लाभ के आधार पर होगी।

(य) 4,200 रुपये का तुरंत भुगतान किया जाएगा तथा शेष राशि को 4 बराबर अर्ध-वार्षिक किश्तों में 10% की दर से ब्याज सहित किया जाएगा।

ऊपरलिखित के प्रभाव को दर्शाते हुए आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन करें तथा उत्तराधिकारी के खाते को दर्शाइये जब तक उसका पूर्ण भुगतान न हो। 31 मार्च, 2020 को समायोजनों के प्रभाव के पश्चात, नित्य तथा सत्य का तुलन पत्र तैयार करें।

(**उत्तर:** मिथ्य के उत्तराधिकारी की भुगतान 25,400 रु.)

स्वयं जाँचिए की जाँच सूची

स्वयं जाँचिए 1

1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ)

स्वयं जाँचिए 2

1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब)

© NCERT not to be republished

12120CH05

साझेदारी फर्म का विघटन

4

आपने साझेदार के प्रवेश, सेवानिवृत्ति तथा मृत्यु के पश्चात साझेदारी फर्म के पुनर्गठन के संदर्भ में अध्ययन किया है। ऐसी स्थिति में वर्तमान साझेदारी का विघटन होता है, किंतु फर्म उसी नाम से अपने क्रियाकलापों को जारी रखती है। दूसरे शब्दों में यह साझेदारी का विघटन है न कि फर्म का। साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 39 के अनुसार सभी साझेदारों के मध्य साझेदारी के विघटन को फर्म का विघटन कहते हैं। इससे आशय है कि अधिनियम समस्त साझेदारों के मध्य और कुछ साझेदारों के मध्य संबंध विच्छेद में भेद करता है, तथा समस्त साझेदारों के बीच संबंधों के समापन को साझेदारी फर्म का विघटन कहा जाता है। इस तरह फर्म का अस्तित्व समाप्त हो जाता है तथा विघटन के पश्चात फर्म पुस्तकों को बंद करने की गतिविधियों के अतिरिक्त कोई और कार्य नहीं किया जाता फर्म के विघटन के पश्चात समस्त परिसंपत्तियों को बेचा तथा सभी दायित्वों का भुगतान कर दिया जाता है।

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के उपरांत आप :

- *साझेदारी फर्म के विघटन के अर्थ को समझ सकेंगे;*
- *साझेदारी के विघटन तथा साझेदारी फर्म के मध्य अंतर कर पाएँगे;*
- *साझेदारी फर्म के विघटन की विभिन्न विधियों का वर्णन कर सकेंगे;*
- *सभी साझेदारों के मध्य दावों के निर्धारण के नियमों का वर्णन कर सकेंगे;*
- *वसूली खाता तैयार कर पाएँगे;*
- *खातों को बंद करने के लिए तथा साझेदारों के दावों का निपटारा करने के लिए आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टि तथा बही खातों को तैयार कर सकेंगे।*

4.1 साझेदारी का विघटन

जैसा पहले भी वर्णित किया गया है कि साझेदारी के विघटन से साझेदारों के मध्य संबंध पुनर्गठित हो जाते हैं। परंतु फर्म अपने व्यवसाय को पहले की भाँति करती है। साझेदारी का विघटन निम्न प्रकार से हो सकता है:

(1) साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन;
(2) नए साझेदार का प्रवेश;
(3) साझेदार का अवकाश ग्रहण करना;
(4) साझेदार की मृत्यु;
(5) साझेदार का दिवालिया होना;

© NCERT not to be republished

(6) निर्दिष्ट कार्य का समापन, यदि साझेदारी इसी के लिए गठित की गई हो; तथा

(7) साझेदारी की अवधि का समापन यदि साझेदारी एक निर्धारित समय अवधि के लिए की गई थी।

4.2 फर्म का विघटन

साझेदारी फर्म का विघटन न्यायालय के आदेश से या न्यायालय के दखल के बिना या इस खंड में बाद में वर्णित अन्य तरीकों से हो सकता है। उल्लेखनीय है कि फर्म का विघटन होने पर साझेदारी का विघटन अवश्य हो जाएगा। हालांकि साझेदारी का विघटन फर्म के विघटन को नहीं दर्शाता है।

फर्म का विघटन निम्न में से किसी भी प्रकार हो सकता है:

1. *समझौते द्वारा विघटन :* फर्म का विघटन निम्न परिस्थितियों में हो सकता है:
   (अ) सभी साझेदारों की सहमति द्वारा;
   (ब) साझेदारों के मध्य अनुबंध के अनुसार।
2. *अनिवार्य विघटन :* फर्म का अनिवार्य विघटन निम्न परिस्थितियों में होता है:
   (अ) जब कोई एक साझेदार या सभी साझेदार दिवालिया हो जाएँ, या किसी अनुबंध को करने में अक्षम हो जाएँ;
   (ब) जब फर्म का व्यवसाय गैर–कानूनी हो जाए; अथवा
   (स) जब कोई ऐसी स्थिति पैदा हो जाए कि साझेदारी फर्म का व्यवसाय गैर–कानूनी हो जाए, उदाहरणार्थ जब एक साझेदार ऐसे देश का नागरिक हो जिसका भारत के साथ युद्ध घोषित हो जाए।
3. *अनिश्चितता की स्थिति में :* साझेदारों के बीच अनुबंध की स्थिति में फर्म का विघटन :
   (अ) यदि एक निर्धारित अवधि के लिए गठित है तो उस अवधि के समापन पर;
   (ब) यदि एक या अधिक उपक्रम के लिए गठित है तो उसके पूरा होने पर;
   (स) साझेदार की मृत्यु पर; अथवा
   (द) साझेदार के दिवालिया घोषित होने पर होता है।
4. *सूचना द्वारा विघटन :* स्वैच्छिक साझेदारी की स्थिति में यदि एक साझेदार अन्य साझेदारों को लिखित सूचना देकर साझेदारी फर्म के विघटन की इच्छा व्यक्त करता है।
5. *न्यायालय द्वारा विघटन :* एक साझेदार की याचिका पर, निम्न स्थितियों में न्यायालय फर्म के विघटन का आदेश दे सकता है:
   (अ) जब कोई साझेदार मानसिक संतुलन खो दे;
   (ब) जब कोई साझेदार स्थायी रूप से साझेदार के कर्त्तव्यों का पालन करने में अक्षम हो;
   (स) जब कोई साझेदार कुप्रबंध का दोषी हो जिससे कि फर्म के व्यापार पर विपरीत प्रभाव पड़ने की आशंका हो;
   (द) जब कोई साझेदार जानबूझ कर बार–बार साझेदारी अनुबंध का उल्लंघन करता है;
   (इ) जब कोई साझेदार फर्म में अपना संपूर्ण हित किसी तीसरे पक्ष को हस्तांतरित कर दे;
   (फ) जब फर्म को व्यवसाय चलाने से हानि के अतिरिक्त कुछ न हो; अथवा
   (ज) जब न्यायालय फर्म के विघटन को ठीक व न्यायसंगत समझे।

साझेदारी का विघटन और साझेदारी फर्म के विघटन में अंतर

आधार	*साझेदारी का विघटन*	*साझेदारी फर्म का विघटन*
1. व्यवसाय की समाप्ति	व्यवसाय का समापन नहीं होता।	फर्म का व्यवसाय बंद हो जाता है।
2. परिसंपत्तियों एवं दायित्वों की व्यवस्था	परिसंपत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है और नया तुलन पत्र तैयार किया जाता है।	परिसंपत्तियों का विक्रय किया जाता है तथा दायित्वों का भुगतान किया जाता हैं।
3. न्यायालय का हस्तक्षेप	न्यायालय का हस्तक्षेप नहीं होता क्योंकि साझेदारी का विघटन आपसी समझौते के द्वारा होता है।	फर्म का विघटन न्यायालय के आदेश द्वारा किया जा सकता है।
4. आर्थिक संबंधों में परिवर्तन	साझेदारों के मध्य आर्थिक संबंध जारी रहते हैं किंतु परिवर्तित रूप में।	साझेदारों के आर्थिक संबंध समाप्त हो जाते हैं।
5. पुस्तकों का बंद होना	व्यवसाय के समाप्त न होने के कारण इसकी आवश्यकता नहीं होती।	बहियों को बंद कर दिया जाता है।

स्वंय जाँचिए 1

निम्न कथनों में कारण सहित सत्य या असत्य का उल्लेख करे :

1. साझेदारी का विघटन, फर्म के विघटन से भिन्न है।
2. साझेदार की मृत्यु पर साझेदारी का विघटन हो जाता है।
3. सभी साझेदारों की सहमति से फर्म का विघटन हो जाता है।
4. साझेदार के अवकाश ग्रहण करने पर फर्म का निश्चित विघटन हो जाता है।
5. फर्म के विघटन पर साझेदारी का विघटन निश्चित होता है।
6. फर्म का अनिवार्य समापन हो जाता है जब सभी साझेदार या एक के अतिरिक्त सभी साझेदार दिवालिया हो जाएँ।
7. एक साझेदार के विक्षिप्त होने की स्थिति में न्यायालय फर्म के समापन का आदेश दे सकता है।
8. न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना साझेदारी का विघटन संभव नहीं है।

4.3 खातों का निपटारा

फर्म का विघटन होने पर, फर्म अपना व्यवसाय बंद कर देती है और खातों का निर्धारण कर दिया जाता है। इसके लिए फर्म अपनी परिसंपत्तियों का निपटारा, अपने विरुद्ध सभी दायित्वों का भुगतान कर देती है। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि साझेदारों के मध्य समझौते के आधार पर साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 48 के अनुसार निम्न नियम लागू होंगे:

© NCERT not to be republished

(अ) *हानियों का व्यवहार*

हानि, पूँजी में कमी सहित देय होंगे:

(i) प्रथम लाभ में से;

(ii) इसके पश्चात साझेदारों की पूँजी में से; तथा

(iii) अंततः यदि आवश्यक हो तो साझेदारों द्वारा अपने लाभ-विभाजन अनुपात में व्यक्तिगत रूप में।

(ब) *परिसंपत्तियों का उपयोग*

फर्म की परिसंपत्तियाँ, साझेदारों द्वारा पूँजी में कमी को पूरा करने के लिए किए गए अंशदान सहित निम्न प्रकार तथा क्रम से प्रयुक्त होगा:

(i) फर्म के ऋण का अन्य पक्षों को भुगतान;

(ii) साझेदारों द्वारा फर्म को दिए गए अग्रिम जो कि पूँजी से भिन्न है (उदाहरणार्थ साझेदार से ऋण) को प्रत्येक साझेदार को आनुपातिक भुगतान करेगा;

(iii) पूँजी खाते में जो साझेदारों को देय हैं, प्रत्येक साझेदार का आनुपातिक भुगतान होगा; तथा

(iv) शेष राशि यदि कोई है, सभी साझेदारों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में विभाजित होगी।

इस तरह परिसंपत्तियों से वसूल राशि, साझेदारों से अंशदान के साथ यदि आवश्यक हो तो, इसका उपयोग सर्वप्रथम फर्म के बाह्य दायित्वों के भुगतान जैसे लेनदार, ऋण, बैंक अधिविकर्ष, देय-विपत्र आदि के लिए किया जाएगा। (यह ध्यान रहे कि सुरक्षित ऋण का भुगतान असुरक्षित ऋण से पहले होगा) शेष राशि का उपयोग साझेदारों द्वारा फर्म को दिए गए ऋण तथा अग्रिम के भुगतान के लिए होगा (यदि शेष राशि अपर्याप्त हो तो ऋण का भुगतान अनुपातिक रूप से होगा)और बची हुई राशि का उपयोग पूँजी खातों के शेष के निपटान के लिए किया जाएगा। यदि अतिरिक्त राशि बचती है तो इसे लाभ विभाजन अनुपात में साझेदारों के मध्य बाँटा जाएगा।

व्यक्तिगत ऋण तथा फर्म के ऋण: जब साझेदारों के व्यक्तिगत ऋण तथा फर्म के ऋण साथ-साथ होते हैं वहाँ अधिनियम की धारा 49 के निम्न नियम लागू होंगे:

(अ) फर्म की परिसंपत्तियों का प्रयोग सर्वप्रथम फर्म के ऋणों के भुगतान के लिए किया जाएगा तथा अधिक्य राशि, यदि कोई हो तो, साझेदारों में उनके दावों के अनुसार विभाजित होगी जिसका उपयोग अनेक निजी दायित्वों के भुगतान के लिए किया जाएगा।

(ब) साझेदार की निजी परिसंपत्तियों का उपयोग सर्वप्रथम उसके निजी ऋणों के भुगतान के लिए किया जाएगा तथा शेष राशि यदि कोई है तो उसका उपयोग फर्म के ऋणों के भुगतान के लिए उस स्थिति में होगा यदि फर्म के दायित्व फर्म की परिसंपत्तियों से अधिक है।

यह ध्यान रहे कि साझेदारों की निजी परिसंपत्तियों में उसकी पत्नी और बच्चों की निजी परिसंपत्तियों को शामिल नहीं किया जाएगा। अतः यदि फर्म की परिसंपत्तियाँ फर्म के दायित्वों का भुगतान करने के लिए पर्याप्त नहीं है तो साझेदारों को अपनी निवल निजी परिसंपत्तियों (निजी परिसंपत्तियों में से निजी दायित्वों को घटाकर) में अभिदान किया जाएगा।

किसी साझेदार की उसके पूँजी खाते में कमी होने पर योगदान में असमर्थता

साझेदारों के मध्य लेखों के निर्धारण के संबंध में यह एक ध्यान देने योग्य तथ्य है – जब एक साझेदार उसके पूँजी खातों में कमी के प्रति योगदान देने में असमर्थ होता है (खाता *नाम शेष* दर्शाता है) तो ऐसी स्थिति में वह दिवालिया कहलाता है और वह राशि जो उससे प्राप्त नहीं हुई है एक फर्म के लिए पूँजीगत हानि मानी जाती है। किसी समझौते के अभाव में, इस पूँजीगत हानि को शेष साझेदारों द्वारा जो कि *गारनर बनाम मरे* के सिद्धांत की तरह सहन किया जाएगा, जो कि यह दर्शाता है कि फर्म के विघटन की तिथि पर यह पूँजीगत हानि शोध्य साझेदारों द्वारा उनके पूँजी के अनुपातिक सहन करनी होगी। हालाँकि दिवालिया साझेदार के संबंध में साझेदारी फर्म के विघटन पर लेखा व्यवहार, इस स्थिति में नहीं लिया जाएगा।

4.4 लेखांकन व्यवहार

जब फर्म का विघटन होता है तो फर्म की पुस्तकें बंद कर दी जाती है और परिसंपत्तियों की वसूली तथा दायित्वो के भुगतान के पश्चात होने वाली हानि या लाभ की गणना की जाती है, जिसके लिए वसूली खाता तैयार किया जाता है। इस खाते के माध्यम द्वारा परिसंपत्तियों से वसूली तथा दायित्वों के भुगतान के पश्चात निवल प्रभाव (लाभ या हानि) का निर्धारण करके साझेदारों के पूँजी खाते में उनके लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित किया जाता है इस कारणवश, सभी परिसंपत्तियाँ (हस्तस्थ रोकड़, बैंक शेष तथा काल्पनिक परिसंपत्तियों के अतिरिक्त यदि कोई हो) तथा सभी बाह्य दायित्वों को इस खाते में हस्तांतरित किया जाता है। यह खाता परिसंपत्तियों की बिक्री, दायित्वों का भुगतान तथा वसूली व्ययों का अभिलेखन करता है। इस खाते के शेष को वसूली पर लाभ या हानि कहा जाता है जो कि साझेदारों के पूँजी खाते में इनकी लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित किया जाता है (देखें चित्र 5.1)।

वसूली खाता

नाम *जमा*

विवरण	*राशि (रु.)*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
अमूर्त संपत्ति	xxx	बैंक ऋण	xxx
भूमि व भवन	xxx	विविध लेनदार	xxx
संयंत्र व यंत्र	xxx	देय विपत्र	xxx
फ़र्नीचर व फ़िटिंगस	xxx	बैंक अधिविकर्ष	xxx
अन्य पक्षों को ऋण	xxx	बकाया व्यय	xxx
प्राप्य विपत्र	xxx	संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	xxx
विविध देनदार	xxx	रोकड़/बैंक (परिसंपत्तियों का विक्रय)	xxx
रोकड़/बैंक (दायित्वों का भुगतान)	xxx	साझेदारों के पूँजी खाते	xxx
रोकड़/बैंक	xxx	(साझेदार द्वारा ली गई परिसंपत्ति)	
(गैर-अभिलिखित दायित्वों का भुगतान)		हानि (साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरण)	xxx
साझेदारों के पूँजी खाते (साझेदार द्वारा	xxx	निवेश बढ़-घट निधि	xxx
दायित्व का भुगतान)			
विनियोग	xxx		
लाभ (साझेदारों के पूँजी खातों में	xxx		
लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरण)	xxx		
योग	**xxxx**	**योग**	**xxxx**

चित्र 5.1: *वसूली खाते का प्रारूप*

© NCERT not to be republished

स्वयं जाँचिए 2

सही उत्तर को चिह्नित (✓) कीजिए

1. फर्म के विघटन पर बैंक अधिविकर्ष को हस्तांतरित करेंगे:
   (अ) रोकड़ खाते में
   (ब) बैंक खाते में
   (स) वसूली खाते में
   (द) साझेदार के पूँजी खातों में
2. फर्म के विघटन पर, साझेदार के ऋण खाते को हस्तांतरित करेंगे:
   (अ) वसूली खाते में
   (ब) साझेदार के पूँजी खाते में
   (स) साझेदार के चालू खाते में
   (द) इनमें से कोई नहीं
3. लेनदार और देय विपत्र जैसे दायित्वों को वसूली खाते में हस्तांतरित करने के पश्चात, भुगतान के संबंध में सूचना के अभाव में, ऐसे दायित्वों का :
   (अ) भुगतान नहीं होगा
   (ब) पूर्ण भुगतान होगा
   (स) आंशिक भुगतान होगा
   (द) इनमें से कोई नहीं
4. जब साझेदार की तरफ से फर्म द्वारा वसूली व्यय का भुगतान किया जाता है। यह व्यय नाम होंगे:
   (अ) वसूली खाते में
   (ब) साझेदार के पूँजी खाते में
   (स) साझेदार के ऋण खाते में
   (द) इनमें से कोई नहीं
5. जब गैर-अभिलेखित परिसंपत्ति साझेदार द्वारा ली जाती है तो उसे दर्शाएँगे:
   (अ) वसूली खाते के नाम पक्ष में
   (ब) बैंक खाते के नाम पक्ष में
   (स) वसूली खाते के जमा पक्ष में
   (द) बैंक खाते के जमा पक्ष में
6. जब गैर-अभिलेखित दायित्वों का भुगतान किया जाता है तो दर्शाएँगे:
   (अ) वसूली खाते के नाम पक्ष में
   (ब) बैंक खाते के नाम पक्ष में
   (स) वसूली खाते के जमा पक्ष में
   (द) बैंक खाते के जमा पक्ष में

© NCERT not to be republished

7. संचित लाभ और संचय का हस्तांतरण किया जाएगा:
   (अ) वसूली खाते में
   (ब) साझेदारों के पूँजी खाते में
   (स) बैंक खाते में
   (द) इनमें से कोई नहीं
8. फर्म के विघटन पर, साझेदारों के पूँजी खाते बंद किए जाते हैं:
   (अ) वसूली खाते में
   (ब) आहरण खाते में
   (स) बैंक खाते में
   (द) ऋण खाते में

उदाहरण 1

सुप्रिया और मोनिका साझेदार हैं, उनका लाभ विभाजन अनुपात 3:2 है। 31 मार्च, 2020 को उनका तुलन पत्र इस प्रकार है:

31 मार्च, 2020 को सुप्रिया और मोनिका का तुलन पत्र

दायित्व	*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*		*राशि (रु.)*
सुप्रिया की पूँजी	32,500	रोकड़ और बैंक		40,500
मोनिका की पूँजी	11,500	स्टॉक		7,500
विविध लेनदार	48,000	विविध देनदार	21,500	
संचय निधि	13,500	*घटाया* : संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	500	21,000
		स्थायी परिसंपत्तियाँ		36,500
	1,05,500			**1,05,500**

31 मार्च, 2020 को फर्म का विघटन हुआ। निम्न सूचनाओं से फर्म की पुस्तकों को बंद करें:

(i) देनदारों से 5 प्रतिशत छूट पर वसूली हुई।

(ii) स्टॉक से वसूली 7,000 रु. पर की गई।

(iii) स्थायी परिसंपत्तियों से वसूली 42,000 रु. प्राप्त हुए।

(iv) वसूली व्यय 1,500 रु.।

(v) लेनदारों को पूर्ण भुगतान किया गया।

आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ दें।

© NCERT not to be republished

हल

सुप्रिया और मोनिका की पुस्तकें
वसूली खाता

तिथि 2017	विवरण		ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
मार्च, 31	वसूली खाता	नाम		65,000	
	रहतिया खाते से				7,500
	देनदार खाते से				21,500
	स्थिर परिसंपत्ति खाते से				36,500
	(परिसंपत्तियाँ का वसूली खाते में हस्तांतरण)				
मार्च, 31	लेनदार खाता	नाम		48,000	
	संदिग्ध ऋण का प्रावधान	नाम		500	
	वसूली खाते से				48,500
	(देनदारियों का वसूली खाते में हस्तांतरण)				
मार्च, 31	बैंक खाता	नाम		69,425	
	वसूली खाते से				69,425
	(परिसंपत्तियाँ की वसूली)				
मार्च, 31	वसूली खाता	नाम		49,500	
	बैंक खाते से				49,500
	(लेनदारों और वसूली व्ययों का भुगतान)				
मार्च, 31	वसूली खाता	नाम		2,925	
	सुप्रिया के पूँजी खाते से				1,755
	मोनिका के पूँजी खाते से				1,170
	(वसूली पर लाभ का पूँजी खातों में हस्तांतरण)				
मार्च, 31	सामान्य संचय खाता	नाम		13,500	
	सुप्रिया के पूँजी खाते से				8,100
	मोनिका के पूँजी खाते से				5,400
	(वसूली पर लाभ का पूँजी खातों में हस्तांतरित)				
मार्च, 31	सुप्रिया का पूँजी खाता	नाम		42,355	
	मोनिका का पूँजी खाता	नाम		18,070	
	बैंक खाते से				60,425
	(साझेदारों को अंतिम भुगतान)				

© NCERT not to be republished

4.4.1 रोज़नामचा प्रविष्टियाँ

1. *परिसंपत्तियों के हस्तांतरण पर*

   रोकड़, बैंक और अवास्तविक परिसंपत्तियों के अतिरिक्त सभी परिसंपत्तियों के खाते पुस्तक मूल्य पर वसूली खाते के नाम पक्ष में हस्तांतरित किए जाते हैं। ध्यान देने योग्य है कि विविध देनदारों को सकल मूल्य पर हस्तांतरित किया जाता है और डूबत व संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान को दायित्वों के साथ वसूली खाते के जमा पक्ष में हस्तांतरित किया जाता है। यही प्रक्रिया स्थायी परिसंपत्तियों पर लागू होगी यदि ह्रास के लिए प्रावधान खाता बनाया गया हो।

   वसूली खाता नाम

   परिसंपत्तियाँ (व्यक्तिगत तौर पर) खाते से

2. *दायित्वों के हस्तांतरण पर*

   प्रावधान सहित सभी बाह्य दायित्वों, जिन्हें वसूली खाते के जमा पक्ष में हस्तांतरित करके बंद किया जाता है।

   दायित्व (व्यक्तिगत आधार पर) नाम] समान राशि से

   वसूली खाते से

3. *परिसंपत्तियों की बिक्री पर*

   बैंक खाता नाम] परिसंपत्ति के अधिकरण राशि से

   वसूली खाते से

4. *साझेदार द्वारा ली गई परिसंपत्तियों के लिए*

   साझेदार का पूँजी खाता नाम] निपटान की राशि से

   वसूली खाते से

5. *दायित्वों के भुगतान करने पर*

   वसूली खाता नाम

   बैंक खाते से

6. *साझेदार द्वारा दायित्वों का भुगतान करने का उत्तरदायित्व लेने पर*

   वसूली खाता नाम

   साझेदार के पूँजी खाते से

7. परिसंपतियों के हस्तांतरण द्वारा लेनदारों का भुगतान जब लेनदार पूर्ण रूप से अपने खाते का भुगतान प्राप्त करने के लिए परिसंपत्ति को स्वीकार करता है तो कोई रोज़नामचा प्रविष्टि नहीं की जाती है, परंतु यदि लेनदार आंशिक रूप में परिसंपत्ति को स्वीकार करता है तब केवल रोकड़ भुगतान की प्रविष्टि की जाएगी। उदाहरणार्थ एक लेनदार जिसे 10,000 रुपये देय है, 8,000 रुपये के कार्यालय उपकरण तथा 2,000 रुपये रोकड़ का भुगतान स्वीकार कर लेता है तो केवल रोकड़ भुगतान के लिए निम्न प्रविष्टि की जाएगी।

   वसूली खाता नाम

   बैंक खाते से

   हालाँकि जब लेनदार ने परिसंपत्ति स्वीकार कर ली है, जिसका मूल्य देय राशि से अधिक है तो वह अंतर की राशि का फर्म को भुगतान करेगा। इसकी प्रविष्टि इस प्रकार होगी:

   बैंक खाता नाम

   वसूली खाते से

8. *वसूली व्यय के भुगतान पर*

(अ) जब परिसंपत्तियों की वसूली और दायित्वों के भुगतान की प्रक्रिया में कुछ व्ययों का भुगतान फर्म द्वारा किया जाता है:

वसूली खाता नाम

बैंक खाते से

(ब) जब फर्म की ओर से वसूली व्ययों का भुगतान एक साझेदार के द्वारा किया गया है:

वसूली खाता नाम

साझेदार के पूँजी खाते से

(स) जब एक साझेदार किसी स्वीकृत पारितोषिक पर विघटन कार्य से संबंधित व्ययों को वहन करने के लिए सहमत होता है:

(i) जब फर्म द्वारा वसूली व्यय दिया जाता है

साझेदार का पूँजी खाता नाम

बैंक खाते से

(ii) यदि साझेदार वसूली व्यय का स्वंय भुगतान करता है तब कोई प्रविष्टि आवश्यक नहीं है।

नोट: सूचना के अभाव में यह माना जाता है कि व्ययों का निपटान उसी साझेदार ने किया जिसने व्ययों को वहन करने की ज़िम्मेदारी ली है।

9. *साझेदार को पारितोषिक देने पर*

वसूली खाता नाम

साझेदार के पूँजी खाते से

10. *किसी भी ख्याति सहित गैर अभिलेखित परिसंपत्तियों की वसूली पर*

बैंक खाता नाम

वसूली खाते से

11. *गैर-अभिलेखित दायित्वों के भुगतान पर*

वसूली खाता नाम

बैंक खाते से

साझेदार को फर्म द्वारा ऋण का निपटारा

बैंक खाता नाम

साझेदार के ऋण से

12. *वसूली पर लाभ हानि का हस्तांतरण करने पर:*

(अ) वसूली पर लाभ होने पर

वसूली खाता नाम

साझेदार के पूँजी खाते से (व्यक्तिगत आधार पर)

(ब) वसूली पर हानि होने पर

साझेदार का पूँजी खाता (व्यक्तिगत आधार पर) नाम

वसूली खाते से

(स) साझेदार को फर्म द्वारा ऋण का निपटान

बैंक खाता नाम

साझेदार के ऋण खाते से

13. *संचित लाभों का हस्तांतरण करने पर जो कि संचय कोष या सामान्य संचय के रूप में है:*

संचय निधि/सामान्य संचय खाता नाम

साझेदार के पूँजी खाते से (व्यक्तिगत आधार पर)

14. *आभासी परिसंपत्तियों को साझेदारों के पूँजी खाते में उनके लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित करने पर:*

साझेदार का पूँजी खाता (व्यक्तिगत आधार पर) नाम

आभासी परिसंपत्ति खाते से

15. *साझेदारों से लिए गए ऋणों के भुगतान पर:*

साझेदार का ऋण खाता नाम

बैंक खाते से

16. *साझेदारों के खातों के भुगतान पर:*

यदि साझेदार का पूँजी खाता नाम शेष दर्शाता है तथा वह आवश्यक रोकड़ लाता है तो ऐसी स्थिति में प्रविष्टि इस प्रकार होगी:

बैंक खाता नाम

साझेदार के पूँजी खाते से

जब साझेदार का खाता जमा शेष दर्शाए और राशि का भुगतान कर दिया जाए तब निम्न प्रविष्टि अभिलेखित की जाएगी

साझेदार का पूँजी खाता (व्यक्तिगत आधार पर) नाम

बैंक खाते से

यह ध्यान रहे कि वह कुल राशि जो साझेदारों को अंततः देय है बैंक में उपलब्ध रकम और रोकड़ खाते के बराबर होनी चाहिए। अतः विघटन क्रिया पूर्ण होने पर फर्म के सभी खाते स्वतः बंद हो जाते हैं।

उदाहरण 2

सीता, रीटा और मीता साझेदार हैं। उनका लाभ व हानि विभाजन अनुपात 2:2:1 है। 31 मार्च, 2019 को तुलन पत्र इस प्रकार है :

31 मार्च, 2019 को तुलन पत्र

दायित्व		*राशि* (रु.)	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि* (रु.)
सामान्य संचय		2,500	बैंक में रोकड़	2,500
लेनदार		2,000	स्टॉक	2,500
पूँजी:			फ़र्नीचर	1,000
सीता	5,000		देनदार	2,000
रीटा	2,000		संयंत्र व मशीनरी	4,500
मीता	1,000	8,000		
		12,500		**12,500**

वे फर्म के विघटन का फ़ैसला करते हैं। निम्न राशि वसूल हुई : संयंत्र व यंत्र 4,250 रुपये, स्टॉक 3,500 रुपये, देनदार 1,850 रुपये तथा फ़र्नीचर 750 रुपये।

सीता सभी वसूली व्यय करने के लिए सहमत हुई। इस कार्य के लिए सीता को 60 रुपये का भुगतान किया गया।

वसूली व्यय की वास्तविक राशि 450 रुपये है जिसे फर्म द्वारा दिया गया है। लेनदारों को 2 प्रतिशत कम भुगतान हुआ। 250 रुपये की परिसंपत्ति का लेखा पुस्तकों में नहीं है, जो कि रीटा द्वारा 200 रुपये में ली गई।

फर्म की पुस्तकों को बंद करते हुए आवश्यक खाते तैयार करें।

हल

सीता, रीटा व मीता की पुस्तकें

वसूली खाता

नाम *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*		*राशि (रु.)*
स्टॉक		2,500	लेनदार		2,000
फ़र्नीचर		1,000	रीटा की पूँजी		200
देनदार		2,000	(अलिखित परिसंपत्ति)		
संयंत्र व यंत्र		4,500	बैंक (परिसंपत्तियों से वसूली)		
बैंक (लेनदार)		1,960	संयंत्र व यंत्र	4,250	
सीता की पूँजी(वसूली व्यय)		60	देनदार	1,850	
लाभ का हस्तांतरण:			स्टॉक	3,500	
सीता की पूँजी	212		फ़र्नीचर	750	10,350
रीटा की पूँजी	212				
मीता की पूँजी	106	530			
		12,550			**12,550**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*सीता (रु.)*	*रीटा (रु.)*	*मीता (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*सीता (रु.)*	*रीटा (रु.)*	*मीता (रु.)*
मार्च	बैंक		450	–	–	मार्च	शेष आ/ला		5,000	2,000	1,000
31	वसूली		–	200	–	31	संचय निधि		1,000	1,000	500
	(परिसंपत्तियाँ)						वसूली(लाभ)		212	212	106
	बैंक		5,822	3,012	1,606		वसूली (व्यय)		60	–	–
			6,272	**3,212**	**1,606**				**6,272**	**3,212**	**1,606**

बैंक खाता

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
मार्च	शेष आ/ला		2,500	मार्च	वसूली (लेनदार)		1,960
31	वसूली(परिसंपत्तियों से वसूली)		10,350	31	सीता की पूँजी(व्यय)		450
					सीता की पूँजी		5,822
					रीता की पूँजी		3,012
					मीता की पूँजी		1,606
			12,850				**12,850**

उदाहरण 3

विभा, शोभा और अनुभा की साझेदारी फर्म के विघटन पर रोजनामचा प्रविष्टियाँ दें :

(i) विघटन व्यय 6,500 रु.

(ii) अनुभा ने 7,800 के विघटन व्ययों का भुगतान किया

(iii) विभा की नियुक्ति विघटन प्रक्रिया को सुचारू रूप से करने के लिए 12,000 का भुगतान तय हुआ।

(iv) शोभा की नियुक्ति विघटन कार्यों को पूरा करने के लिए की गई जिसके लिए उसे 15,000 रु. का भुगतान तय हुआ। शोभा ने समस्त विघटन व्ययों को वहन करने की स्वीकृति भी दी। उसके द्वारा 11,800 रु. के वास्तविक व्ययों का भुगतान किया गया।

(v) अनुभा को विघटन प्रक्रिया की देखरेख के लिए 12,000 का भुगतान तय किया गया। अनुभा ने विघटन व्ययों के निपटान की ज़िम्मेदारी ली। 9,500 रु. के वास्तविक व्ययों का भुगतान फर्म द्वारा किया गया।

(vi) अनुभा ने विघटन कार्यों के निपटान के लिए 8,500 रु. का परितोषक स्वीकार किया और 6,000 रु. तक के व्ययों के वहन की ज़िम्मेदारी ली। उसके द्वारा भुगतान किये गए वास्तविक व्यय की राशि 7,600 रु. है।

(vii) विभा की नियुक्ति 14,000 रु. के भुगतान पर विघटन कार्यों के निपटान के लिए गई। उसने इस परितोषक भुगतान के लिए 13,000 रु. के विनियोग स्वीकार किये। इन विनियोगों को वसूली खाते में हस्तांतरित कर दिया गया है।

© NCERT not to be republished

विभा, शोभा और अनुभा की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि	विवरण	ब.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
(i)	वसूली खाता नाम रोकड़/बैंक खाते से (वसूली व्ययों का फर्म द्वारा भुगतान)		6,500	6,500
(ii)	वसूली खाता नाम अनुभा के पूँजी खाते (वसूली व्ययों का फर्म द्वारा भुगतान)		7,800	7,800
(iii)	वसूली खाता नाम विभा के पूँजी खाते (विभा का भुगतान)		12,000	12,000
(iv)	वसूली खाता नाम शोभा के पूँजी खाते (शोभा का भुगतान)		15,000	15,000
(v)	(अ) वसूली खाता नाम अनुभा के पूँजी खाते (अनुभा का भुगतान)		12,000	12,000
	(ब) अनुभा का पूँजी खाता नाम रोकड़/बैंक खाते से (विघटन व्ययों का फर्म द्वारा भुगतान)		9,500	9,500
(vi)	(अ) वसूली खाता नाम अनुभा के पूँजी खाते (अनुभा का भुगतान)		8,500	8,500
	(ब) वसूली खाता नाम अनुभा के पूँजी खाते से (फर्म की ओर से अनुभा ने व्ययों का भुगतान किया)		1,600	1,600
(vii)	कोई प्रविष्टि नहीं			

उदाहरण 4

नयना और आरूशी बराबर के साझेदार हैं। 31 मार्च, 2020 को उनका तुलन पत्र नीचे दिया गया है:

31 मार्च, 2020 को नयना और आरूशी का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
पूँजी:			बैंक	30,000
नयना	1,00,000		देनदार	25,000
आरूशी	50,000	1,50,000	स्टॉक	35,000
लेनदार		20,000	फ़र्नीचर	40,000
आरूशी का चालू खाता		10,000	यंत्र (मशीनरी)	60,000
कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय		15,000	नयना का चालू खाता	10,000
बैंक अधिविकर्ष		5,000		
		2,00,000		**2,00,000**

इस तिथि को फर्म का विघटन हुआ:

1. नयना ने 50% स्टॉक को पुस्तक मूल्य से 10% कम पर लिया और शेष स्टॉक को 15% लाभ पर बेच दिया गया। फ़र्नीचर और मशीनरी से क्रमश: 30,000 रुपये व 50,000 रुपये वसूल हुए।
2. गैर-अभिलेखित विनियोग को 34,000 रुपये में बेचा गया।
3. देनदारों से 31,500 रुपये (ब्याज सहित) वसूली हुई और 1,200 रुपये पिछले वर्ष अपलिखित डूबत ऋण से प्राप्त हुए।
4. मरम्मत के बकाया बिल का 2,000 रुपये भुगतान किया गया।

फर्म की पुस्तकों को बंद करने के लिए आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियों का अभिलेखन करें तथा बही खाते तैयार करें।

हल

नयना और आरूशी की पुस्तकें
रोज़नामचा

तिथि 2020	विवरण		रो.पृ. सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
	वसूली खाता	नाम		1,60,000	
	देनदार खाते से				25,000
	स्टॉक खाते से				35,000
	फ़र्नीचर खाते से				40,000
	मशीनरी खाते से				60,000
	(वसूली खाते में परिसंपत्तियों का हस्तांतरण)				

	लेनदार खाता नाम		20,000	
	बैंक अधिविकर्ष खाता नाम		5,000	
	वसूली खाते से			25,000
	(वसूली खाते में दायित्वों का हस्तांतरण)			
	वसूली खाता नाम		27,000	
	बैंक खाते से			27,000
	(लेनदार, बैंक अधिविकर्ष, बकाया मरम्मत बिल का भुगतान)			
	बैंक खाता नाम		1,57,825	
	वसूली खाते से			1,57,825
	(परिसंपत्तियों को बेचा तथा डूबत ऋण वसूली)			
	नयना का चालू खाता नाम		15,750	
	वसूली खाते से			15,750
	(नयना द्वारा आधे स्टॉक का 10% कम पर अधिग्रहण)			
	वसूली खाता नाम		11,575	
	नयना के चालू खाते से			5,788
	आरूशी के चालू खाते से			5,787
	(वसूली से लाभ का साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरण)			
	कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय खाता नाम		15,000	
	नयना के चालू खाते से			7,500
	आरूशी के चालू खाते से			7,500
	(क्षतिपूर्ति निधि का साझेदारों के चालू खाते में हस्तांतरण)			
	आरूशी का चालू खाता नाम		23,287	
	आरूशी का पूँजी खाते से			23,287
	(चालू खाते के शेष का पूँजी खाते में हस्तांतरण)			
	नयना का पूँजी खाता नाम		12,462	
	नयना के चालू खाते से			12,462
	(चालू खाते के शेष का पूँजी खाते में हस्तांतरण)			
	नयना का पूँजी खाता नाम		87,538	
	आरूशी का पूँजी खाता नाम		73,287	
	बैंक खाते से			1,60,825
	(अंतिम देय राशि का साझेदारों को भुगतान)			

© NCERT not to be republished

वसूली खाता

नाम जमा

विवरण		राशि (रु.)	विवरण		राशि (रु.)
			लेनदार		20,000
देनदार	25,000		बैंक अधिविकर्ष		5,000
स्टॉक	35,000		बैंक :		
फ़र्नीचर	40,000		विनियोग	34,000	
मशीन	60,000	1,60,000	फ़र्नीचर	30,000	
बैंक:			मशीनरी	50,000	
लेनदार	20,000		देनदार (90%)	22,500	
बैंक अधिविकर्ष	5,000		स्टॉक :	20,125	
बकाया बिल	2,000	27,000	डूबत ऋण से प्राप्त	1,200	1,57,825
लाभ का हस्तांतरण			नयना की पूँजी		
नयना की पूँजी	5,788		(स्टॉक का अधिग्रहण)		15,750
आरूशी की पूँजी	5,787	11,575			
		1,98,575			**198,575**

साझेदारों के चालू खाते

नाम जमा

तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	नयना (रु.)	आरूशी (रु.)	तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	नयना (रु.)	आरूशी (रु.)
	शेष अ/ला		10,000	–		शेष आ/ला		–	10,000
	वसूली		15,750			कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय		7,500	7,500
	आरूशी की पूँजी			23,287		वसूली (लाभ)		5,788	5,787
						नयना की पूँजी		12,462	
			25,750	**23,287**				**25,750**	**23,287**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम जमा

तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	नयना (रु.)	आरूशी (रु.)	तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	नयना (रु.)	आरूशी (रु.)
	नयना का चालू खाता		12,462			शेष आ/ला		1,00,000	50,000
	बैंक		87,538	73,287		आरूशी का चालू खाता			23,287
			1,00,000	**73,287**				**1,00,000**	**73,287**

© NCERT not to be republished

बैंक खाता

नाम *जमा*

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (रु.)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (रु.)
	शेष आ/ला		30,000		वसूली		27,000
	वसूली		1,57,825		नयना की पूँजी		87,538
					आरूशी की पूँजी		73,287
			1,87,825				**1,87,825**

स्वयं जाँचिए 3

सही शब्द भरिए :

1. सभी परिसंपत्तियाँ (हस्तस्थ/बैंकस्थ और आभासी परिसंपत्तियों के अतिरिक्त) .... खाते (वसूली खाते/पूँजी) के .... (नाम/जमा) पक्ष की ओर हस्तांतरित की जाती हैं।
2. सभी .... (अंतः/बाह्य) दायित्व .... (बैंक/वसूली खाते) के .... (नाम/जमा) पक्ष की ओर हस्तांतरित किए जाते हैं।
3. संचित हानियों को .... (चालू/पूँजी खाते) में (समान अनुपात/लाभ विभाजन अनुपात) में हस्तांतरित किया जाता है।
4. यदि एक दायित्व किसी साझेदार के द्वारा लिया गया है, उस साझेदार के पूँजी खाते को .... (नाम/जमा) किया जाएगा।
5. यदि एक साझेदार किसी परिसंपत्ति को लेता है तो उस साझेदार के पूँजी खाते को .... (नाम/जमा) किया जाएगा।
6. जब एक .... (साझेदार/लेनदार) उसके भुगतान के रूप में किसी स्थायी परिसंपत्ति को स्वीकार करता है तो इस स्थिति में किसी प्रविष्टी की आवश्यकता नहीं होती।
7. जब एक लेनदार किसी परिसंपत्ति को स्वीकार करता है जिसका मूल्य उसको देय भुगतान से अधिक है, वह आधिक्य राशि का .... (भुगतान करेगा/भुगतान नहीं करेगा), जिसे .... (रोकड़/लेनदार) खाते के नाम पक्ष में दर्शाया जाएगा।
8. जब एक फर्म किसी साझेदार को वसूली के संबंध में वास्तविक राशि के स्थान पर एक निश्चित राशि का भुगतान करना स्वीकार करती है तो यह निश्चित राशि को .... (वसूली/पूँजी) खाते में नाम किया जाएगा तथा .... (पूँजी/बैंक) खाते में जमा किया जाएगा।
9. किसी साझेदार के ऋण को वसूली खाते में .... (अभिलेखित/गैर-अभिलेखित) किया जाएगा।
10. साझेदार के चालू खाते को साझेदार के .... (ऋण/पूँजी) खाते में हस्तांतरित किया जाएगा।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 5

31 मार्च, 2020 को अश्वनी और भारत का तुलन पत्र नीचे दिया गया है।

31 मार्च, 2020 को अश्वनी और भारत का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ		राशि (रु.)
लेनदार		76,000	बैंक में रोकड़		17,000
श्रीमती अश्वनी का ऋण		10,000	स्टॉक		10,000
श्रीमती भारत का ऋण		20,000	विनियोग		20,000
विनियोग घट-बढ़ संचय		2,000	देनदार	40,000	
सामान्य संचय		20,000	*घटाया* : संदिग्ध ऋण के लिए		
पूँजीः			प्रावधान	(4,000)	36,000
अश्वनी	20,000		भवन		70,000
भारत	20,000	40,000	ख्याति		15,000
		1,68,000			**1,68,000**

इस तिथि को फर्म का विघटन हुआ तथा निम्न व्यवहारों के लिए सहमती हुईः

(i) अश्वनी ने अपनी पत्नी का ऋण चुकाने का फ़ैसला लिया और स्टॉक का 8,000 रुपये में अधिग्रहण किया।

(ii) भारत ने आधे विनियोग को 10% कम पर लिया। देनदारों से 38,000 रुपये की वसूली हुई। लेनदारों को 380 रुपये कम भुगतान किया गया। भवन से 1,30,000 रुपये, ख्याति से 12,000 रुपये वसूल हुए और शेष विनियोग को 9,000 रुपये में बेचा गया। एक पुराना टाइपराइटर जिसका पुस्तकों में अभिलेखन नहीं था भारत द्वारा 600 रुपये में लिया गया। वसूली व्यय 2,000 रुपये हुआ।

वसूली खाता, साझेदारों के पूँजी खाते व बैंक खाता तैयार कीजिए।

© NCERT not to be republished

हल

अश्वनी व भारत की पुस्तकें
वसूली खाता

नाम *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*		*राशि (रु.)*
विनियोग	20,000		संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान		4,000
देनदार	40,000		लेनदार		76,000
भवन	70,000		श्रीमति अश्वनी का ऋण		10,000
स्टॉक	10,000		श्रीमति भारत का ऋण		20,000
ख्याति	15,000	1,55,000	विनियोग घट-बढ़ संचय		2,000
			अश्वनी की पूँजी(स्टॉक)		8,000
अश्वनी की पूँजी (श्रीमती अश्वनी का ऋण)		10,000	भारत की पूँजी (टाईपराईटर)		600
			भारत की पूँजी(विनियोग)		9,000
बैंक (श्रीमती भारत का ऋण)		20,000	बैंक		
बैंक (लेनदार)		75,620	विनियोग	9,000	
बैंक (वसूली व्यय)		2,000	देनदार	38,000	
लाभ का हस्तांतरण :			भवन	1,30,000	
अश्वनी की पूँजी	27,990		ख्याति	12,000	1,89,000
भारत की पूँजी	27,990	55,980			
		3,18,600			**3,18,600**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम *जमा*

तिथि 2020	*विवरण*	*रो. पृ.सं.*	*अश्वनी (रु.)*	*भारत (रु.)*	*तिथि 2020*	*विवरण*	*रो. पृ.सं.*	*अश्वनी (रु.)*	*भारत (रु.)*
	वसूली(स्टॉक)		8,000	–		शेष आ/ला		20,000	20,000
	वसूली(टाइपराइटर का विक्रय)			600		सामान्य संचय		10,000	10,000
						वसूली(श्रीमती अश्वनी का ऋण)		10,000	
	वसूली (विनियोग)			9,000		वसूली (लाभ)		27,990	27,990
	बैंक		59,990	48,390					
			67,990	**57,990**				**67,990**	**57,990**

बैंक खाता

नाम *जमा*

तिथि 2020	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि 2020*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
	शेष आ/ला		17,000		वसूली (लेनदार)		75,620
	वसूली		1,89,000		वसूली (व्यय)		2,000
					वसूली (श्रीमती भारत का ऋण)		20,000
					अश्वनी की पूँजी		59,990
					भारत की पूँजी		48,390
			2,06,000				**2,06,000**

स्वयं कीजिए

साझेदारी फर्म के विघटन पर निम्न की रोज़नामचा प्रविष्टि दीजिए।

1. परिसंपत्ति खातों को बंद करने पर।
2. दायित्व खातों को बंद करने पर।
3. परिसंपत्तियों के विक्रय पर।
4. लेनदारों के खातों का भुगतान परिसंपत्तियों के हस्तांतरण द्वारा।
5. वसूली व्यय के लिए यदि वास्तविक व्यय का भुगतान साझेदार द्वारा फर्म की तरफ से किया जाता है।
6. यदि साझेदार फर्म के दायित्वों का भुगतान करता है।
7. साझेदार के ऋण के भुगतान पर।
8. पूँजी खातों के भुगतान पर।

उदाहरण 5

सोनिया, रोहित और उदित साझेदार हैं। उनका लाभ अनुपात 5 :3:2 है। 31 मार्च, 2017 को उनका तुलन पत्र इस प्रकार है:

31 मार्च, 2020 को सोनिया, रोहित और उदित का तुलन पत्र

दायित्व		*राशि(रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि(रु.)*
लेनदार		30,000	भवन	2,00,000
देय विपत्र		30,000	मशीनरी	40,000
बैंक ऋण		1,20,000	स्टॉक	1,60,000
सोनिया के पति से ऋण		1,30,000	प्राप्य विपन्न	1,20,000
सामान्य संचय		80,000	फ़र्नीचर	80,000
पूँजी :			बैंक से रोकड़	60,000
सोनिया	70,000			
रोहित	90,000			
उदित	1,10,000	2,70,000		
		6,60,000		**6,60,000**

© NCERT not to be republished

उक्त तिथि को फर्म का विघटन हुआ। निम्न सूचनाओं से फर्म की पुस्तकों को बंद करें:

1. भवन से वसूली 1,90,000 रुपये, प्राप्य विपत्र से वसूली 1,10,000 रुपये, स्टॉक से वसूली 1,50,000 रुपये और मशीनरी का 48,000 रुपये में तथा फ़र्नीचर का 75,000 रुपये में विक्रय हुआ।
2. बैंक ऋण का निपटारा 1,30,000 रुपये में हुआ। लेनदार व देय विपत्र का निपटारा 10% बट्टे पर हुआ।
3. रोहित ने 10,000 रुपये वसूली व्यय का भुगतान किया व विघटन प्रक्रिया को पूरा करने के लिए उसे 12,000 रुपये पारितोषिक दिया गया।

आवश्यक बही खाते तैयार करें।

हल

सोनिया, रोहित और उदित की पुस्तकें

वसूली खाता

नाम *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*		*राशि (रु.)*
भवन	2,00,000		लेनदार		30,000
मशीनरी	40,000		देय विपत्र		30,000
स्टॉक	1,60,000		बैंक ऋण		1,20,000
प्राप्य विपत्र	1,20,000		सोनिया के पति से ऋण		1,30,000
फ़र्नीचर	80,000	6,00,000	बैंक:		
बैंक (बैंक ऋण)		1,30,000	भवन	1,90,000	
बैंक (लेनदार व देय विपत्र)		54,000	प्राप्य विपत्र	1,10,000	
बैंक (सोनिया के पति का ऋण)		1,30,000	स्टॉक	1,50,000	
रोहित की पूँजी		12,000	मशीनरी	48,000	
(वसूली व्यय)			फ़र्नीचर	75,000	5,73,000
			हानि का पूँजी खाते में हस्तांतरण		
			सोनिया	21,500	
			रोहित	12,900	
			उदित	8,600	43,000
		9,26,000			**9,26,000**

© NCERT not to be republished

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम जमा

तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	सोनिया (रु.)	रोहित (रु.)	उदित (रु.)	तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	सोनिया (रु.)	रोहित (रु.)	उदित (रु.)
	वसूली (हानि)		21,500	12,900	8,600		शेष आ/ला		70,000	90,000	1,10,000
	बैंक		88,500	1,13,100	1,17,400		वसूली (परितोषक)		-	12,000	-
							सामान्य संचय		40,000	24,000	16,000
			1,10,000	**1,26,000**	**1,26,000**				**1,10,000**	**1,26,000**	**1,26,000**

बैंक खाता

नाम जमा

तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (रु.)	तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (रु.)
	शेष आ/ला		60,000		वसूली (बैंक ऋण)		1,30,000
	वसूली (परिसंपत्तियों से वसूली)		5,73,000		वसूली (लेनदार व देय विपत्र)		54,000
					वसूली (सोनिया के पति का ऋण)		1,30,000
					सोनिया की पूँजी		88,500
					रोहित की पूँजी		1,13,100
					उदित की पूँजी		1,17,400
			6,33,000				**6,33,000**

टिप्पणी: रोहित द्वारा वास्तविक वसूली व्यय की फर्म की पुस्तकों में कोई भी प्रविष्टि नहीं की जाएगी क्योंकि उसको इसके लिए 12,000 रुपये का पारितोषिक उसके खातों में दिया गया है।

उदाहरण 6

रोमेश और भवन साझेदार हैं, उनका लाभ विभाजन अनुपात 3 :2 है। 31 मार्च, 2017 को उनका तुलन पत्र इस प्रकार है:

31 मार्च, 2017 को रोमेश और भवन का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
बैंक से ऋण		60,000	हस्तस्थ रोकड़	30,000
लेनदार		80,000	देनदार	70,000
देय विपत्र		40,000	स्टॉक	2,00,000
भवन से ऋण		20,000	विनियोग	1,40,000
पूँजी:			भवन	60,000
रोमेश	1,00,000			
भवन	2,00,000	3,00,000		
		5,00,000		**5,00,000**

उन्होंने फर्म के विघटन का निर्णय लिया। निम्न सूचनाएँ उपलब्ध हैं :

1. देनदारों से वसूली 5% छूट पर की गई। स्टॉक का पुस्तक मूल्य वसूल हुआ और भवन को 51,000 रुपये पर बेचा गया।
2. यह पाया गया कि 10,000 रुपये के विनियोग का पुस्तक में अभिलेखन नहीं था, जिसको एक लेनदार ने इसी मूल्य पर स्वीकार कर लिया तथा अन्य लेनदारों को 10% कम भुगतान किया गया। देय विपत्र को पूरा भुगतान किया गया।
3. रोमेश ने कुछ विनियोगों को 8,100 रुपये में लिया (पुस्तक मूल्य से 10% कम), शेष विनियोगों को भवन ने पुस्तक मूल्य के 90% में 900 रुपये की छूट पर लिया।
4. भवन ने बैंक ऋण का भुगतान 6% वार्षिक ब्याज के साथ किया।
5. एक अभिलेखन नहीं हुए दायित्व को 5,000 रुपये का भुगतान किया।

फर्म की पुस्तकों को बंद करते हुए आवश्यक बही खाते तैयार करें।

हल

रोमेश और भवन की पुस्तकें

वसूली खाता

नाम *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*		*राशि (रु.)*
देनदार	70,000		बैंक ऋण		60,000
स्टॉक	2,00,000		लेनदार		80,000
विनियोग	1,40,000		देय विपत्र		40,000
भवन	60,000	4,70,000	रोमेश की पूँजी(विनियोग)		8,100
बैंक(देय विपत्र)		40,000	भवन की पूँजी(विनियोग)		1,17,000
बैंक(लेनदार)		63,000	बैंक:		
भवन की पूँजी		63,600	देनदार	66,500	
(ब्याज सहित ऋण)			स्टॉक	2,00,000	
बैंक(गैर अभिलेखित दायित्व)		5,000	भवन	51,000	3,17,500
			हानि का हस्तांतरण:		
			रोमेश की पूँजी	11,400	
			भवन की पूँजी	7,600	19,000
		6,41,600			**6,41,600**

© NCERT not to be republished

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*रोमेश (रु.)*	*भवन (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*रोमेश (रु.)*	*भवन (रु.)*
	वसूली(विनियोग)		8,100	1,17,000		शेष आ/ला		1,00,000	2,00,000
	वसूली(हानि)		11,400	7,600		वसूली(बैंक ऋण)		–	63,600
	बैंक		80,500	1,39,000					
			1,00,000	**2,63,600**				**1,00,000**	**2,63,600**

बैंक खाता

नाम *जमा*

तिथि 2017	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि 2017*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
	शेष आ/ला		30,000		वसूली(लेनदार)		63,000
	वसूली (परिसंपत्तियों से वसूली)		3,17,500		वसूली (गैर–अभिलेखित दायित्व)		5,000
					भवन का ऋण		20,000
					वसूली (देय विपत्र)		40,000
					रोमेश की पूँजी		80,500
					भवन की पूँजी		1,39,000
			3,47,500				**3,47,500**

टिप्पणी : नियम के अनुसार लेनदार द्वारा गैर अभिलेखित विनियोग को भुगतान के रूप में स्वीकार करने के लिए कोई भी प्रविष्टि नहीं की जाएगी।

उदाहरण 7

सोनू और आशू लाभ का 3:1 में विभाजन करते हैं तथा वे फर्म के विघटन के लिए सहमत हैं। 31 मार्च, 2020 को तुलन पत्र नीचे दिया गया है:

31 मार्च, 2020 को सोनू और आशू का तुलन पत्र

नाम *जमा*

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
ऋण		12,000	हस्तस्थ रोकड़	15,000
लेनदार		18,000	स्टॉक	45,000
पूँजी:			फर्नीचर	16,000
सोनू	1,10,000		देनदार	70,000
आशू	68,000	1,78,000	संयंत्र व यंत्र	52,000
			आशू का ऋण	10,000
		2,08,000		**2,08,000**

© NCERT not to be republished

सोनू ने संयंत्र व यंत्र 60,000 रुपये के सहमती मूल्य पर लिया। स्टॉक और फ़र्नीचर के क्रमशः 42,000 रुपये व 13,900 रुपये में बेचा गया। देनदारों को आशू ने 69,000 रुपये में लिया। लेनदारों का 900 रुपये की छूट पर भुगतान किया गया। वसूली व्यय 1,600 रुपये हुए।

वसूली खाता, बैंक खाता व साझेदारों के पूँजी खाते तैयार करें।

हल

सोनू और आशु की पुस्तकें

वसूली खाता

नाम *जमा*

विवरण		*राशि (रु.)*	*विवरण*		*राशि (रु.)*
स्टॉक		45,000	ऋण		12,000
फ़र्नीचर		16,000	लेनदार		18,000
देनदार		70,000	सोनू की पूँजी (संयंत्र व यंत्र)		60,000
संयंत्र व यंत्र		52,000	आशू की पूँजी(देनदार)		69,000
बैंक (लेनदार)		17,100	बैंक :		
सोनू की पूँजी(ऋण)		12,000	स्टॉक	42,000	
बैंक (वसूली व्यय)		1,600	फ़र्नीचर	13,900	55,900
लाभ का हस्तांतरण					
सोनू की पूँजी	900				
आशू की पूँजी	300	1,200			
		2,14,900			**2,14,900**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम *जमा*

तिथि 2020	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*सोनू (रु.)*	*आशू (रु.)*	*तिथि 2020*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*सोनू (रु.)*	*आशू (रु.)*
	वसूली (संयंत्र व यंत्र)		60,000			शेष आ/ला		1,10,000	68,000
	वसूली (देनदार)			69,000		वसूली(ऋण)		12,000	
	बैंक		62,900			वसूली (लाभ)		900	300
						बैंक			700
			1,22,900	**69,000**				**1,22,900**	**69,000**

© NCERT not to be republished

बैंक खाता

नाम *जमा*

तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (रु.)	तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (रु.)
	शेष आ/ला		15,000		वसूली(लेनदार)		17,100
	वसूली		55,900		वसूली(व्यय)		1,600
	(परिसंपत्तियों से वसूली)				सोनू की पूँजी		62,900
	आशू का ऋण		10,000		सोनू की पूँजी		62,900
	आशू की पूँजी		700				
			81,600				**81,600**

उदाहरण 8

अंजू, मंजू और संजू लाभ व हानि विभाजन 3:1:1 अनुपात में करते हैं और फर्म को विघटित करने का निर्णय लेते है। 31 मार्च, 2020 को उनकी स्थिति इस प्रकार है :

31 मार्च, 2020 को अंजू, मंजू, और संजू का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ		राशि (रु.)
लेनदार		60,000	बैंकस्थ रोकड़		55,000
ऋण		15,000	स्टॉक		83,000
पूँजी :			फ़र्नीचर		12,000
अंजू	2,75,000		देनदार	2,42,000	
मंजू	1,10,000		*घटाया:* संदिग्ध ऋणों	(12,000)	2,30,000
संजू	1,00,000	4,85,000	के लिए प्रावधान		
मंजू का ऋण		20,000	भवन		2,00,000
		5,80,000			**5,80,000**

अतिरिक्त सूचनाएँ

1. अंजू ने फ़र्नीचर को 10,000 रुपये में और 2,00,000 रुपये के देनदार 1,85,000 में लिए। अंजू लेनदारों को भुगतान करने के लिए सहमत हुई।
2. मंजू ने स्टॉक को पुस्तक मूल्य पर और भवन को पुस्तक मूल्य से 10 प्रतिशत कम पर लिया।
3. संजू ने शेष देनदारों को पुस्तक मूल्य के 80 प्रतिशत पर लिया और ऋण का भुगतान करने का उत्तरदायित्व लिया।
4. फर्म के विघटन की व्यय राशि 2,200 रुपये है।

   वसूली खाता, बैंक खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तैयार करें।

हल

अंजू, मंजू और संजू की पुस्तकें
वसूली खाता

नाम *जमा*

विवरण		राशि (रु.)	विवरण		राशि (रु.)
स्टॉक	83,000		संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान		12,000
फ़र्नीचर	12,000		लेनदार		60,000
देनदार	2,42,000		ऋण		15,000
भवन	2,00,000	5,37,000	अंजू की पूँजी:		
अंजू की पूँजी(लेनदार)		60,000	फ़र्नीचर	10,000	
संजू की पूँजी(ऋण)		15,000	देनदार	185,000	1,95,000
बैंक (वसूली व्यय)		2,200	मंजू की पूँजी:		
			स्टॉक	83,000	
			भवन	1,80,000	2,63,000
			संजू की पूँजी: (शेष देनदार पुस्तक मूल्य से 20% कम)		33,600
			हानि का हस्तांतरण:		
			अंजू की पूँजी	21,360	
			मंजू की पूँजी	7,120	
			संजू की पूँजी	7,120	35,600
		6,14,200			**6,14,240**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम *जमा*

तिथि 2017	विवरण	रो.पृ. सं.	संजू (रु.)	अंजू (रु.)	मंजू (रु.)	तिथि 2017	विवरण	रो.पृ. सं.	अंजू (रु.)	मंजू (रु.)	संजू (रु.)
	वसूली (परिसंपत्तियाँ)		1,95,000	2,63,000	33,600		शेष आ/ला		2,75,000	1,10,000	1,00,000
							वसूली(लेनदार)		60,000		
	वसूली(हानि)		21,360	7,120	7,120						
	बैंक		1,18,640		74,280		वसूली(ऋण)				15,000
							मंजू का ऋण			20,000	
							बैंक			1,40,120	
			3,35,000	**2,70,120**	**1,15,000**				**3,35,000**	**2,70,120**	**1,15,000**

वैकल्पिक रूप से मंजू का ऋण सर्वप्रथम बैंक खाते से दिया जाएगा तद्पश्चात 1,40,120 रु. मंजू के पूँजी खाते के नाम पक्ष में संयोजित होंगे।

© NCERT not to be republished

बैंक खाता

नाम *जमा*

तिथि 2020	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि 2020*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
	शेष आ/ला		55,000		वसूली (व्यय)		2,200
	मंजू की पूँजी		1,40,120		अंजू की पूँजी		1,18,640
					संजू की पूँजी		74,280
			1,95,120				**1,95,120**

उदाहरण 9

सुमित, अमित और विनित साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 5 :3 :2 के अनुपात में करते हैं। 31 मार्च, 2020 को उनका तुलन पत्र इस प्रकार हैं :

31 मार्च, 2020 को सुमित, अमित और विनित का तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
पूँजी :			मशीनरी	80,000
सुमित	40,000		विनियोग	1,50,000
अमित	50,000		स्टॉक	10,000
विनित	<u>60,000</u>	1,50,000	देनदार	35,000
लाभ व हानि		10,000	हस्तस्थ रोकड़	15,000
श्रीमती अमित से ऋण		40,000		
विविध लेनदार		90,000		
		2,90,000		**2,90,000**

इस तिथि को फर्म का विघटन हुआ। अमित अपनी पत्नी के ऋण के भुगतान के लिए सहमत हुआ। एक लेनदार जिसकी राशि 2,600 रुपये है उसने राशि का दावा नहीं किया। अन्य परिसंपत्तियों से निम्न वसूली की गईः

1. मशीनरी का विक्रय 70,000 रुपये में किया।
2. विनियोग जिसका पुस्तक मूल्य 1,00,000 रुपये हैं लेनदारों के खातों के पूर्ण भुगतान के लिए दी गई। शेष विनियोग को विनित ने 45,000 रुपये के मूल्य पर ले लिया।
3. स्टॉक को 11,000 रुपये में विक्रय कर दिया तथा देनदारों से 3,000 रुपये नहीं प्राप्त हुए।
4. वसूली व्यय 1,500 रुपये है।

फर्म की पुस्तकों को बंद करने के लिए बही खाते तैयार करें।

© NCERT not to be republished

हल

अमित, सुमित और विनित की पुस्तकें
वसूली खाता

नाम जमा

विवरण		राशि (रु.)	विवरण		राशि (रु.)
मशीनरी	80,000		विविध लेनदार		90,000
विनियोग	1,50,000		श्रीमती अमित से ऋण		40,000
स्टॉक	10,000		बैंक :		
देनदार	35,000	2,75,000	मशीनरी	70,000	
अमित की पूँजी(पत्नी का ऋण)		40,000	स्टॉक	11,000	
बैंक (वसूली व्यय)		1,500	देनदार	32,000	1,13,000
			विनित की पूँजी (विनियोग)		45,000
			हानि का हस्तांतरण		
			अमित की पूँजी	14,250	
			सुमित की पूँजी	8,550	
			विनित की पूँजी	5,700	28,500
		3,16,500			**3,16,500**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम जमा

तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	अमित (रु.)	सुमित (रु.)	विनित (रु.)	तिथि 2020	विवरण	रो.पृ. सं.	अमित (रु.)	सुमित (रु.)	विनित (रु.)
	वसूली (विनियोग)				45,000		शेष आ/ला		40,000	50,000	60,000
	वसूली(हानि)		14,250	8,550	5,700		वसूली (श्रीमती अमित का ऋण)		40,000	–	–
	बैंक		70,750	44,450	11,300						
							लाभ व हानि		5,000	3,000	2,000
			85,000	**53,000**	**62,000**				**85,000**	**53,000**	**62,000**

बैंक खाता

नाम *जमा*

तिथि 2020	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि 2020*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (रु.)*
	शेष आ/ला		15,000		वसूली (व्यय)		1,500
	वसूली		1,13,000		अमित की पूँजी		70,750
	(परिसंपत्तियों से वसूली)				सुमित की पूँजी		44,450
					विनित की पूँजी		11,300
			1,28,000				**1,28,000**

टिप्पणी : नियम के अनुसार विनियोगों को लेनदारों द्वारा लेने पर कोई भी प्रविष्टि नहीं की जाएगी।

उदाहरण *10*

मीना और टीना फर्म में साझेदार हैं, उनका लाभ विभाजन अनुपात 3 : 2 है। वे फर्म का विघटन करने का निर्णय लेते हैं। 31 मार्च, 2017 को तुलन पत्र निम्न है:

31 मार्च, 2017 को मीना और टीना का तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
पूँजी :			मशीनरी	70,000
मीना	90,000		विनियोग	50,000
टीना	80,000	1,70,000	स्टॉक	22,000
विविध लेनदार		60,000	विविध देनदार	1,03,000
देय विपत्र		20,000	हस्तस्थ रोकड़	5,000
		2,50,000		**2,50,000**

परिसंपत्तियों और दायित्वो का निपटारा इस प्रकार हुआ :

(अ) मशीनरी को लेनदारों के खातों के पूर्ण भुगतान के लिए दिया गया और स्टॉक को देय विपत्र के पूर्ण भुगतान के लिए दिया गया।

(ब) विनियोग को टीना ने पुस्तक मूल्य पर ले लिया। विविध देनदारों को मीना ने पुस्तक मूल्य 50,000 रुपये से 10% कम पर ले लिया और शेष देनदारों से 51,000 रुपये वसूली हुई।

(स) वसूली व्यय की राशि 2,000 रुपये है।

फर्म की पुस्तकों को बंद करने के लिए आवश्यक बही खाते तैयार करें।

हल

मीना और टीना की पुस्तकें
वसूली खाता

नाम | जमा

विवरण		राशि (रु.)	विवरण		राशि (रु.)
परिसंपत्तियों का हस्तांतरण:			विविध लेनदार		60,000
मशीनरी	70,000		देय विपत्र		20,000
विनियोग	50,000		टीना की पूँजी(विनियोग)		50,000
स्टॉक	22,000		मीना की पूँजी		45,000
विविध देनदार	1,03,000	2,45,000	बैंक :		
बैंक (वसूली व्यय)		2,000	देनदार		51,000
			हानि का हस्तांतरण:		
			मीना की पूँजी	12,600	
			टीना की पूँजी	8,400	21,000
		2,47,000			**2,47,000**

साझेदारों के पूँजी खाते

नाम | जमा

विवरण	मीना (रु.)	टीना (रु.)	विवरण	मीना (रु.)	टीना (रु.)
वसूली (विनियोग)		50,000	शेष आ/ला	90,000	80,000
वसूली (देनदार)	45,000				
वसूली (हानि)	12,600	8,400			
बैंक	32,400	21,600			
	90,000	**80,000**		**90,000**	**80,000**

बैंक खाता

नाम | जमा

विवरण	राशि (रु.)	विवरण	राशि (रु.)
शेष आ/ला	5,000	वसूली (व्यय)	2,000
वसूली (परिसंपत्तियाँ)	51,000	मीना की पूँजी	32,400
		टीना की पूँजी	21,600
	56,000		**56,000**

इस अध्याय में प्रयुक्त शब्द

1. साझेदारी का विघटन
2. साझेदारी फर्म का विघटन
3. इच्छा से साझेदारी
4. अनिवार्य विघटन
5. सूचना द्वारा विघटन
6. वसूली व्यय
7. वसूली खाता

सारांश

1. *साझेदारी फर्म का विघटन :* फर्म के विघटन से आशय साझेदारों के मध्य व्यापार समापन और आर्थिक संबंधों का विच्छेद है। फर्म के विघटन की दशा में फर्म अपना व्यवसाय बंद कर देती है तथा समस्त परिसंपत्तियों की वसूली की जाती है और देयताओं का पूर्णत: भुगतान कर दिया जाता है। लेनदारों को सर्वप्रथम भुगतान परिसंपत्तियों की वसूली राशि से किया जाता है; तत्पश्चात यदि किसी प्रकार का भुगतान बाकी रहता है तो वह साझेदारों की निवेशित पूँजी, जो लाभ विभाजन अनुपात में निवेश की गई है, में से किया जाता है। साझेदारों के अंतिम भुगतान के बाद, फर्म की पुस्तकें बंद कर दी जाती हैं।

2. *साझेदारी का विघटन :* साझेदारी, साझेदार के प्रवेश, सेवानिवृत्ति तथा मृत्यु आदि के समय समाप्त हो जाती है। इससे फर्म का विघटन अनिवार्य नहीं है।

3. *वसूली खाता :* विक्रय, परिसंपत्तियों की वसूली और लेनदारों को भुगतान से संबंधित लेनदेनों के लिए वसूली खाता तैयार किया जाता है। इस प्रक्रिया से उत्पन्न लाभ अथवा हानि को साझेदारों के बीच लाभ-हानि विभाजन, अनुपात में बाँट दिया जाता है। साझेदारों के खातों का समायोजन कर दिया जाता है और रोकड़/बैंक खाता बंद कर दिया जाता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

लधु उत्तर प्रश्न

1. साझेदारी का विघटन और साझेदारी फर्म के विघटन के मध्य अंतर को स्पष्ट कीजिए।
2. लेखा व्यवहार कीजिए :
   (i) गैर-अभिलेखित परिसंपत्तियाँ
   (ii) गैर-अभिलेखित दायित्व
3. विघटन के समय आप साझेदार के ऋण का किस प्रकार व्यवहार करेंगे यदि यह;
   (i) तुलन पत्र के परिसंपत्ति पक्ष की ओर दर्शायी गई है
   (ii) तुलन पत्र के दयित्व पक्ष की ओर दर्शायी गई है।
4. फर्म के ऋण और साझेदारों के व्यक्तिगत ऋणों के मध्य अंतर समझाएँ
5. विघटन पर खातों के भुगतान का क्रम लिखें।
6. वसूली खाता पुनर्मूल्यांकन खाते से किस प्रकार भिन्न है।

निबंधात्मक प्रश्न

1. साझेदारी फर्म के विघटन की प्रक्रिया समझाएँ?
2. वसूली खाता किसे कहते हैं?
3. वसूली खाते का प्रारूप बनाइए।
4. लेनदारों को कमी का भुगतान किस प्रकार से करेंगे?

आंकिक प्रश्न

1. वसूली व्यय से संबंधित निम्न व्यवहारों का रोज़नामचा बनाइए:
   (अ) वसूली व्यय की राशि 2,500 रुपये।
   (ब) वसूली व्यय की राशि 3,000 रुपये का भुगतान अशोक द्वारा जो कि एक साझेदार है।
   (स) वसूली व्यय 2,300 रुपये तरुण द्वारा व्यक्तिगत तौर पर किए गए।
   (द) साझेदार अमित को परिसंपत्तियों की वसूली के लिए 4,000 रुपये में नियुक्त किया गया। वास्तविक वसूली व्यय की राशि 3,000 रुपये है।
2. निम्न स्थिति में आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि दें;
   (अ) 85,000 रुपये के लेनदारों ने 40,000 रुपये रोकड़ और 43,000 रुपये के विनियोग का अपने दावे का पूर्ण भुगतान स्वीकार किया।
   (ब) लेनदार 16,000 रुपये के हैं। वे 18,000 रुपये मूल्य की मशीनरी को अपने दावे का भुगतान स्वीकार करते हैं।
   (स) लेनदार 90,000 रुपये के हैं। वे 1,20,000 रुपये के भवन तथा 30,000 रुपये के रोकड़ को फर्म का भुगतान स्वीकार करते हैं।
3. एक पुराने कंप्यूटर को पिछले वर्ष के लेखा पुस्तकों में अपलिखित किया गया। एक साझेदार नितिन द्वारा उसी को 3,000 रुपये में लिया गया। यह मानते हुए कि फर्म का विघटन हो चुका है, उपरोक्त के संबंध में रोज़नामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।
4. फर्म के विघटन पर निम्न व्यवहारों की क्या रोज़नामचा प्रविष्टियाँ अभिलेखित की जाएँगी:
   (अ) गैर-अभिलेखित दायित्व का भुगतान 3,200 रुपये।
   (ब) साझेदार रोहित द्वारा 7,500 रुपये के स्टॉक को लेना।
   (स) वसूली पर लाभ की राशि 18,000 को साझेदार आशीष और तरुण को 5:7 के अनुपात में विभाजित किया गया।
   (द) गैर-अभिलेखित परिसंपत्ति से 5,500 रुपये की वसूली।
5. निम्न व्यवहारों की रोज़नामचा प्रविष्टियाँ दीजिए:
   1. विभिन्न परिसंपत्तियों और दायित्वों की वसूली का अभिलेखन।
   2. फर्म के पास 1,60,000 रुपये का स्टॉक है। साझेदार अज़ीज़ द्वारा 50% स्टॉक को 20% छूट पर ले लिया गया।
   3. शेष स्टॉक का विक्रय लागत मूल्य पर 30% लाभ पर हुआ।
   4. भूमि और भवन (पुस्तक मूल्य 1,60,000 रुपये) का विक्रय 3,00,000 रुपये में एक दलाल के द्वारा किया गया जिसने सौदे पर 2% कमीशन लिया।

5. संयंत्र और मशीनरी (पुस्तक मूल्य 60,000 रुपये) एक लेनदार को पुस्तक मूल्य से 10% कम के स्वीकृत मूल्यांकन पर दिया गया।
6. विनियोग जिसका मूल्य 4,000 रुपये था से 50% वसूली हुई।

6. निम्न परिस्थितियों में आप रश्मि और बिंदु के वसूली व्ययों का किस प्रकार लेखा व्यवहार करेंगे:
   1. वसूली व्यय की राशि 1,00,000 रुपये।
   2. वसूली व्यय की राशि 30,000 रुपये का भुगतान साझेदार रश्मि ने किया।
   3. विघटन प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए रश्मि ने वसूली व्यय का वहन किया जिसके लिए पारितोषिक 70,000 रुपये दिया गया। रश्मि द्वारा वास्तविक व्यय 1,20,000 रुपये किया गया।

7. 1,00,000 रुपये की परिसंपत्तियों का हस्तांतरण (रोकड़ और बैंक के अतिरिक्त) वसूली खाते में किया गया। परिसंपत्तियों को 50% साझेदार अतुल द्वारा 20% छूट पर ले लिया। शेष परिसंपत्तियों में से 40% को, लागत पर 30% लाभ पर विक्रय किया गया। शेष का 5% बेकार हो गया, कुछ वसूली नहीं हुई और बाकी परिसंपत्तियाँ एक लेनदार को उसके दावे का पूर्ण भुगतान के लिए दी गई।
   परिसंपत्तियों से वसूली की रोज़नामचा प्रविष्टि का अभिलेखन करें।

8. पारस और प्रिया की पुस्तकों में निम्न गैर-अभिलेखित परिसंपत्तियों और दायित्वों की आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टि का अभिलेखन करें:
   1. एक पुराने फ़र्नीचर को फर्म में पूर्ण रूप से अपलिखित किया गया। यह फ़र्नीचर 3,000 रुपये में बेचा गया।
   2. आशीष जो कि एक पुराना ग्राहक है जिसका खाता 1,000 रुपये से पिछले वर्ष के डूबत ऋण के तौर पर अपलिखित किया गया, ने 6% का भुगतान किया।
   3. पारस फर्म की ख्याति को लेता है (जिसका लेखा पुस्तकों में नहीं है) जिसे 3,000 रुपये पर मूल्यांकित किया गया।
   4. एक पुरानी टंकण मशीन (टाइपराइटर) जो कि पूर्ण रूप से लेखा पुस्तकों में अपलिखित किया गया। इसका अनुमानित वसूली मूल्य 400 रुपये था। इसको प्रिया के द्वारा अनुमानित मूल्य से 25% छूट पर लिया गया।
   5. 100 शेयर, 10 रुपये प्रत्येक को स्टार लिमिटेड ने 2,000 रुपये की कीमत पर अधिगृहित किया था, जिसको लेखा पुस्तकों में पूर्ण रूप से अपलिखित किया गया। इन अंशों का मूल्यांकन 6 रुपये प्रत्येक किया तथा साझेदारों के मध्य उनके लाभ विभाजन अनुपात में बाँटा गया।

9. सभी साझेदारों ने फर्म के विघटन की इच्छा व्यक्त की। यासिन एक साझेदार 2,00,000 रुपये के ऋण को साझेदारों के पूँजी भुगतान से पहले भुगतान चाहता है। लेकिन अमर, एक अन्य साझेदार पूँजी का भुगतान, यासिन के ऋण के भुगतान से पहले चाहता है। कारण बताते हुए उनके बीच उपाय का सुझाव दें।

10. समस्त दायित्वों को वसूली खाते में हस्तांतरित करने तथा विभिन्न परिसंपत्तियों (रोकड़ के अतिरिक्त) तीसरे पक्ष को किसी फर्म के विघटन पर निम्न लेनदेनों के संबंध में क्या रोज़नामचा प्रविष्टियाँ की जाएँगी।
    1. आरती ने 80,000 रुपये के मूल्य का स्टॉक 68,000 रुपये में लिया।
    2. 40,000 रुपये की गैर-अभिलेखित मोटर साइकिल जो कि करीम द्वारा ली गई।
    3. फर्म ने कर्मचारियों को 40,000 रुपये की क्षतिपूर्ति का भुगतान किया।
    4. विभिन्न दायित्व को जो कि 36,000 रुपये के थे, को 15% छूट पर भुगतान किया गया।

5. वसूली पर हानि 42,000 रुपये को आरती और करीम के मध्य 3 : 4 के अनुपात में विभाजन किया जाऐगा।

11. रोज़ और लिली का लाभ विभाजन अनुपात 2 : 3 है। 31 मार्च, 2017 को उनका तुलन पत्र निम्न है:

दायित्व	राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ		राशि (रु.)
लेनदार	40,000	रोकड़		16,000
लिली से ऋण	32,000	देनदार	80,000	
लाभ व हानि	50,000	*घटाया*: संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान	3,600	76,400
पूँजी:				
लिली	1,60,000	स्टॉक		1,09,600
रोज़	2,40,000	प्राप्य विपत्र		40,000
		भवन		2,80,000
	5,22,000			**5,22,000**

रोज़ और लिली इस तिथि को फर्म के विघटन का निर्णय करते हैं। परिसंपत्तियों (प्राप्य विपत्र को छोड़कर) से वसूली 4,84,000 रुपये लेने के लिए सहमत है। लेनदार 38,000 रु. पर सहमत है। वसूली की लागत 2,400 रुपये। फर्म में मोटर साईकल है जिसको फर्म के रुपयों से लिया गया लेकिन फर्म की पुस्तकों में नहीं दर्शाया गया। इसका विक्रय 10,000 रुपये में किया गया। बकाया बिजली बिल के संबंध में संभावित दायित्व 5,000 रुपये हैं। प्राप्य विपत्र रोज़ ने 33,000 रुपये में ले लिया।

वसूली खाता, साझेदारों के पूँजी खाते, ऋण खाता और रोकड़ खाता तैयार करें।

(**उत्तर** : वसूली से लाभ 15,000 रु., रोकड़ खाते का योग 5,10,000 रु.; लिली और रोज़ की पूँजी क्रमशः 199360 रु. और 2,33,240 रु.)

12. शिल्पा, मीना और नंदा ने 31 मार्च, 2020 को फर्म के विघटन का निर्णय लिया। इनका लाभ विभाजन अनुपात 3:2:1 है और उनका तुलन पत्र इस प्रकार है:

31 मार्च, 2020 को शिल्पा, मीना और नंदा का तुलन पत्र

दायित्व	राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
पूँजी:		भूमि	81,000
शिल्पा	80,000	स्टॉक	56,760
मीना	40,000	देनदार	18,600
बैंक ऋण	20,000	नंदा की पूँजी	23,000
लेनदार	37,000	रोकड़	10,840
संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान	1,200		
सामान्य संचय	12,000		
	1,90,200		**1,90,200**

not to be republished © NCERT

शिल्पा ने 41,660 रुपये मूल्य का स्टॉक 35,000 रुपये में ले लिया और बैंक ऋण का भुगतान करने को सहमत हुई। शेष स्टॉक का विक्रय 14,000 रुपये में किया गया और 10,000 रुपये के देनदारों से 8,000 रुपये वसूली हुई । भूमि का विक्रय 1,10,000 रुपये में किया। शेष देनदारों से पुस्तक मूल्य की 50% वसूली हुई। वसूली की लागत राशि 1,200 रुपये है। 6,000 रुपये मूल्य की एक टंकण मशीन पुस्तकों में गैर-अभिलेखित है, को एक लेनदार ने इसी मूल्य पर ले लिया। वसूली खाता तैयार करें।

(**उत्तर**: वसूली से लाभ 20,940 रुपये, रोकड़ खाते का योग 1,64,650 रुपये)

13. सुरजीत और राही का लाभ व हानि विभाजन अनुपात 3:2 है। 31 मार्च, 2020 को उनका तुलन पत्र इस प्रकार है:

31 मार्च, 2020 को सुरजीत और राही का तुलन पत्र

दायित्व	*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
लेनदार	38,000	बैंक	11,500
श्रीमती सुरजीत से ऋण	10,000	स्टॉक	6,000
संचय	15,000	देनदार	19,000
राही का ऋण	5,000	फ़र्नीचर	4,000
पूँजी:		संयंत्र	28,000
सुरजीत	10,000	विनियोग	10,000
राही	8,000	लाभ व हानि	7,500
	86,000		**86,000**

31 मार्च, 2017 को फर्म का विघटन निम्न शर्तों पर हुआ :

1. सुरजीत ने विनियोगों को 8,000 रुपये में लिया और वह श्रीमती सुरजीत के ऋण का भुगतान करेगा।
2. अन्य परिसंपत्तियों से वसूली निम्न हैं :

   स्टॉक 5,000 रु.
   देनदार 18,500 रु.
   फ़र्नीचर 4,500 रु.
   संयंत्र 25,000 रु.
3. वसूली व्यय की राशि 1,600 रुपये है।
4. लेनदारों ने पूर्ण भुगतान के 37,000 रुपये स्वीकार किए।
5. आप वसूली खाता, साझेदारों के पूँजी खाते और बैंक खाता तैयार करें।

   (**उत्तर**: वसूली पर हानि 6,600 रु., रोकड़ खाते का योग 64,500 रु.; सुरजीत 12,540 रु., राही 8,360 रु.)

14. रीटा, गीता और आशीष फर्म में साझेदार हैं, उनका लाभ / हानि विभाजन अनुपात 3:2:1 है। 31 मार्च, 2017 को उनका तुलन पत्र इस प्रकार है:

© NCERT not to be republished

31 मार्च, 2017 को रीता, गीता और आशीष का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
पूँजी:			रोकड़	22,500
रीटा	80,000		देनदार	52,300
गीता	50,000		स्टॉक	36,000
आशीष	30,000	1,60,000	विनियोग	69,000
लेनदार		65,000	संयंत्र	91,200
देय विपत्र		26,000		
सामान्य संचय		20,000		
		2,71,000		**2,71,000**

ऊपर दी गई तिथि को फर्म का विघटन हो गया।

1. रीटा को परिसंपत्तियों की वसूली के लिए नियुक्त किया गया। रीटा को परिसंपत्तियों की वसूली के लिए 5% कमीशन (रोकड़ के अतिरिक्त) मिलेगा और वह सारे वसूली व्यय करेगी।
2. परिसंपत्तियों से वसूली निम्न है :
   देनदार 30,000 रु.
   स्टॉक 26,000 रु.
   संयंत्र 42,750 रु.
3. विनियोग से पुस्तक मूल्य के 85% की वसूली हुई।
4. वसूली व्यय की राशि 4,100 रुपये है।
5. फर्म ने बकाया वेतन 7,200 रुपये का भुगतान किया जिसका प्रावधान पहले नहीं किया गया था।
6. एक विपत्र बैंक से छूट के संबंध में आकस्मिक दायित्व है जिसका भुगतान 9,800 रुपये किया गया।
   वसूली खाता, साझेदारों के पूँजी खाते, रोकड़ खाता तैयार करें।
   (**उत्तर** : वसूली पर हानि 1,15,970 रु.; रीता और गीता को भुगतान क्रमशः 39,885 रु. और 18,010 रु.)

15. अनूप और सुमित फर्म में बराबर के साझेदार हैं। वे 31 मार्च, 2017 को फर्म के समापन का निर्णय लेते हैं, जब तुलन पत्र निम्न है:

31 मार्च, 2017 को अनूप और सुमित का तुलन पत्र

दायित्व	राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
विविध लेनदार	27,000	हस्तस्थ रोकड़	11,000
संचय कोष	10,000	विविध देनदार	12,000
ऋण	40,000	संयंत्र	47,000

पूँजीः			स्टॉक	42,000
अनुप	60,000		पट्टाकृत भूमि	60,000
सुमित	60,000	1,20,000	फ़र्नीचर	25,000
		1,97,000		**1,97,000**

परिसंपत्तियों से वसूली निम्न है:

पट्टाकृत भूमि	72,000 रु.
फ़र्नीचर	22,500 रु.
स्टॉक	40,500 रु.
संयंत्र	48,000 रु.
विविध देनदार	10,500 रु.

लेनदारों को 25,500 रुपये का भुगतान पूर्ण निपटारे के लिए किया गया। वसूली व्ययों की राशि 2,500 रुपये है। फर्म की पुस्तकों को बंद करने के लिए वसूली खाता, बैंक खाता तथा साझेदारों के पूँजी खाते तैयार करें।
(**उत्तर** : वसूली पर लाभ 6,500 रु.; बैंक खाता 2,04,500 रु.; अनूप और सुमित को भुगतान क्रमशः 68,250 रु. और 68,250 रु.)

16. आशू और हरीश साझेदार हैं। वे अपना लाभ और हानि 3:2 में विभाजित करते हैं। 31 मार्च, 2017 को फर्म के विघटन का निर्णय लिया गया। इस तिथि को फर्म का तुलन पत्र इस प्रकार है :

31 मार्च, 2017 को आशु और हरीश का तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
पूँजीः			भवन	80,000
आशू	108,000		मशीनरी	70,000
हरीश	54,000	162,000	फ़र्नीचर	14,000
लेनदार		88,000	स्टॉक	20,000
बैंक अधिविकर्ष		50,000	विनियोग	60,000
			देनदार	48,000
			हस्तस्थ रोकड़	8,000
		3,00,000		**3,00,000**

आशू ने भवन को 95,000 रुपये में और हरीश ने मशीनरी और फ़र्नीचर को 80,000 रुपये के मूल्य पर लिया। आशू लेनदारों का भुगतान करने के लिए सहमत हुआ और हरीश ने बैंक अधिविकर्ष का भुगतान किया। स्टॉक और विनियोग को दोनों साझेदारों ने लाभ विभाजन अनुपात में ले लिया। देनदारों से 46,000 रुपये वसूली हुई। वसूली व्ययों की राशि 3,000 रुपये हैं। आवश्यक बही खाता तैयार करें।
(**उत्तर**: वसूली पर लाभ 6,000 रु., रोकड़/बैंक 59,600 रुपये; आशू 56,600 रु., हरीश 5,600 रु.)

© NCERT not to be republished

17. संजय, तरुण और विनित लाभ 3: 2:1 के अनुपात में विभाजित करते हैं। 31 मार्च, 2017 को उनका तुलन पत्र निम्न है:

31 मार्च, 2016 को तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
पूँजी:			संयंत्र	90,000
संजय	1,00,000		देनदार	60,000
तरुण	1,00,000		फ़र्नीचर	32,000
विनित	70,000	2,70,000	स्टॉक	60,000
लेनदार		80,000	विनियोग	70,000
देय विपत्र		30,000	प्राप्य विपत्र	36,000
			हस्तस्थ रोकड़	32,000
		3,80,000		**3,80,000**

इस तिथि को फर्म का विघटन हो गया। संजय को परिसंपत्तियों से वसूली के लिए नियुक्त किया गया। संजय को परिसंपत्तियों से वसूली पर (रोकड़ के अतिरिक्त) 6% कमीशन दिया जाएगा और वह वसूली पर व्यय का भुगतान करेगा। संजय द्वारा परिसंपत्तियों से निम्न वसूली की गई:

संयंत्र 72,000 रुपये, देनदार 54,000 रुपये फ़र्नीचर 18,000 रुपये, स्टॉक पुस्तक मूल्य का 90%, विनियोग 76,000 रुपये और प्राप्य विपत्र 31,000 रुपये वसूली व्यय की राशि 4,500 रुपये है।

वसूली खाता, पूँजी खाते, रोकड़ खाता तैयार करें।

(**उत्तर** : वसूली पर हानि 61,300 रु., रोकड़ खाते का योग 3,37,000 रु.; संजय 87,650 रु., तनु 79,567 रु., विनीत 59,783 रु.)

18. 31 मार्च, 2017 को गुप्ता और शर्मा का तुलन पत्र निम्न है :

31 मार्च, 2017 को गुप्ता और शर्मा का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
विविध लेनदार		38,000	बैंक में रोकड़	12,500
श्रीमती गुप्ता से ऋण		20,000	विविध देनदार	55,000
श्रीमती शर्मा से ऋण		30,000	स्टॉक	44,000
सामान्य संचय		6,000	प्राप्य विपत्र	19,000
डूबत ऋण के लिए प्रावधान		4,000	मशीनरी	52,000
पूँजी:			विनियोग	38,500
गुप्ता	90,000		फ़िक्सचर्स	27,000
शर्मा	60,000	1,50,000		
		2,48,000		**2,48,000**

31 मार्च, 2017 को फर्म का विघटन हो गया और परिसंपत्तियों से वसूली व दायित्वों का भुगतान निम्न है:

(अ) परिसंपत्तियों से वसूली:

विविध देनदार	52,000
स्टॉक	42,000
प्राप्य विपत्र	16,000
मशीनरी	49,000
फिक्सचर	20,000

(ब) गुप्ता द्वारा विनियोग 36,000 रुपये के स्वीकृत मूल्य पर लिए गए और वह श्रीमती गुप्ता के ऋण का भुगतान करने के लिए सहमत है।

(स) विविध लेनदारों को 3% छूट पर भुगतान किया गया।

(द) वसूली व्यय 120 रुपये किए गए।

विघटन पर रोज़नामचा प्रविष्टि करें और वसूली खाता, बैंक खाता और साझेदारों के पूँजी खाते तैयार करें।

(**उत्तर** : वसूली पर हानि 36,560 रु., बैंक खाते का योग 1,91,500 रु.; गुप्ता का भुगतान 68,750 रु., शर्मा का भुगतान 54,720 रु.)

19. अशोक, बाबू और चेतन साझेदार हैं। लाभ/हानि का विभाजन अनुपात क्रमश: 1/2, 1/3, 1/6 है। 31 मार्च, 2017 को फर्म का विघटन हो गया जबकि तुलन पत्र निम्न है:

31 मार्च, 2017 को अशोक, बाबू और चेतन का तुलन पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
विविध लेनदार		20,000	बैंक	7,500
देय विपत्र		25,500	विविध देनदार	58,000
चेतन से ऋण		30,000	स्टॉक	39,500
पूँजी:			मशीनरी	48,000
अशोक	70,000		विनियोग	42,000
बाबू	55,000		स्वतंत्र परिसंपत्ति	50,500
चेतन	27,000	152,000		
चालू खाते:				
अशोक	10,000			
बाबू	5,000			
चेतन	3,000	18,000		
		2,45,500		**2,45,500**

बाबू ने मशीनरी को 45,000 रुपये में ले लिया। अशोक ने विनियोग 40,000 में लिया तथा पूर्णस्वामित्व परिसंपत्ति को चेतन ने 55,000 रुपये में लिया। शेष परिसंपत्तियों से वसूली इस प्रकार है : विविध देनदार 56,500 रुपये

और स्टॉक 36,500 रुपये। विविध लेनदारों का भुगतान 7% छूट पर किया। गैर-अभिलेखित कंप्यूटर से 9,000 रुपये वसूल हुए। वसूली व्यय की राशि 3,000 रुपये है।

वसूली खाता, साझेदारों के पूँजी खाते व बैंक खाता तैयार करें।

(**उत्तर** : वसूली पर लाभ 2,400 रु., रोकड़ खाते का योग 1,34,100 रु.; अशोक का भुगतान 41,800 रु., बाबू का भुगतान 15,800 रु., चेतन के ऋण का भुगतान 5,400 रु.)

20. तनु और मनु का तुलन पत्र निम्न है जो कि अपना लाभ व हानि 5:3 के अनुपात में विभाजित करते हैं:

31 मार्च, 2020 को तनु और मनु का तुलन पत्र

दायित्व		राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
विविध लेनदार		62,000	बैंक में रोकड़	16,000
देय विपत्र		32,000	विविध लेनदार	55,000
बैंक ऋण		50,000	स्टॉक	75,000
संचय कोष		16,000	मोटर कार	90,000
पूँजी:			मशीनरी	45,000
तनु	1,10,000		विनियोग	70,000
मनु	90,000	2,00,000	फ़िक्सचर्स	9,000
		3,60,000		**3,60,000**

इस तिथि को फर्म का विघटन हो गया और निम्न समझौता हुआ :

तनु ने विविध देनदार लिए और बैंक ऋण का भुगतान करने के लिए सहमत हुई। विविध लेनदारों ने स्टॉक स्वीकार किया और फर्म को 10,000 रुपये का भुगतान किया। मनु ने मशीनरी को 40,000 रुपये में लिया और देय विपत्र का 5% छूट पर भुगतान के लिए सहमत हुआ। मोटर कार को तनु ने 60,000 रुपये में लिया। विनियोग से 76,000 रुपये व फ़िक्सचर्स से 4,000 रुपये वसूल हुए। वसूली व्यय की राशि 2,200 रुपये हैं।

वसूली खाता, बैंक खाता व साझेदारों के पूँजी खाते तैयार करें।

(**उत्तर** : वसूली से हानि 37,600 रु., रोकड़ खाते का योग 1,06,000 रु.; तनु का भुगतान 31,500 रु., मनु का भुगतान 72,300 रु.)

स्वयं जाँचिए की जाँच सूची

स्वयं जाँचिए 1

1. सत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. असत्य 5. सत्य 6. सत्य 7. सत्य 8. असत्य

स्वयं जाँचिए 2

1. (स) 2. (द) 3. (ब) 4. (ब) 5. (स) 6. (अ) 7. (ब) 8. (स)

स्वयं जाँचिए 3

1. नाम, वसूली 2. बाह्य, जमा, वसूली 3. पूँजी खाते, लाभ विभाजन अनुपात 4. जमा 5. नाम 6. लेनदार 7. भुगतान, वसूली 8. वसूली, पूँजी 9. गैर-अभिलेखित 10. पूँजी

© NCERT not to be republished

टिप्पणी

© NCERT not to be republished

टिप्पणी

© NCERT
not to be republished